मसीही परिवार

shepherds
GLOBAL CLASSROOM

Shepherds Global Classroom का अस्तित्व इस पूरे संसार में उभरते हुए मसीही अगुवों के लिए एक पाठ्यक्रम प्रदान करके यीशु मसीह की देह को तैयार करने के लिए है। हमारा लक्ष्य संसार के हर देश में आत्मिक प्रशिक्षकों के हाथों में 20-पाठ्यक्रमीय पाठ्यक्रम उपकरण को देकर स्वदेशी प्रशिक्षण कार्यक्रमों की संख्या को बढ़ाना है।

यह पुस्तक https://www.shepherdsglobal.org/courses से निःशुल्क डाउनलोड के लिए उपलब्ध है।

मुख्य लेखक: Dr. Stephen K. Gibson डॉ. स्टीफन के. गिब्सन

कॉपीराइट© 2023 Shepherds Global Classroom
पहले अंग्रेज़ी संस्करण से हिन्दी भाषा में अनुवादित

सर्वाधिकार सुरक्षित।

तृतीय-पक्ष पाठ्यसामग्री पर उनके सम्बन्धित प्रकाशकों का कॉपीराइट है और उन्हें विभिन्न लाइसेंसों के अन्तर्गत साझा किया गया है।

जब तक संकेत न दिया जाए, सभी पवित्रशास्त्र के उद्धरण HINDI OV (RE-EDITED) बाइबल से लिए गए हैं। कॉपीराइट ©2012 द बाइबल सोसायटी ऑफ इंडिया। इन्हें अनुमति के साथ प्रयोग किया गया है। पूरे विश्व में सर्वाधिकार सुरक्षित।

अनुमति सूचना:

इस पुस्तक को निम्नलिखित दिशानिर्देशों के अन्तर्गत प्रिंट और डिजिटल प्रारूप में स्वतंत्रपूर्वक छापा और वितरित किया जा सकता है: (1) पुस्तक की सामग्री में किसी भी तरह से बदलाव नहीं किया जाना चाहिए; (2) इसकी प्रतियाँ मुनाफ़े के लिए बेची न जाएँ; (3) शैक्षणिक संस्थान इस पुस्तक का उपयोग/प्रतिलिपि बनाने के लिए स्वतंत्र हैं, भले ही वे शिक्षा शुल्क ही क्यों न लेते हों; और (4) Shepherds Global Classroom की अनुमति और पर्यवेक्षण के बिना इस पुस्तक का अनुवाद न किया जाए।

विषय-वस्तु

पाठ्यक्रम अवलोकन 5

सम्बन्धों के लिए बनाए गए 7

एक बाइबल आधारित परिवार 19

विवाह सम्बन्धी बाइबल आधारित सिद्धान्त 35

लैंगिकता के विषय 47

अविवाहित रहना 71

विवाह की तैयारी 85

एक मजबूत विवाह का निर्माण करना 99

प्रेम की पाँच भाषाएँ - भाग 1 113

प्रेम की पाँच भाषाएँ - भाग 2 127

निःसंतान होने का मुद्दा 145

एक बच्चे का विकास और देखभाल 157

उद्देश्य के साथ बच्चे का पालन-पोषण 167

बच्चों के पालन-पोषण के मुद्दे 181

किशोरावस्था तक पालन-पोषण 195

युवा वयस्क 207

महिलाओं का सम्मान करना 221

जन्म नियंत्रण 225

अनुशंसित संसाधन 229

पाठ सम्बन्धी नियत कार्यों के अभिलेख 231

पाठ्यक्रम अवलोकन

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम जीवन और पारिवारिक सम्बन्धों, विशेषकर विवाह और बच्चे के पालन-पोषण सम्बन्धी चरणों के लिए परमेश्वर के सिद्धान्तों की शिक्षा देता है। इस अध्ययन के द्वारा, छात्र अपने जीवन के वर्तमान चरण और अपने-अपने सम्बन्धों में परमेश्वर का आदर करने के लिए तैयार हो जाएँगे। वे दूसरों को को भी बाइबल के सिद्धान्त और उन सिद्धान्तों के व्यावहारिक अनुप्रयोग सिखाने के लिए तैयार हो जाएँगे। छात्र प्रेरित होकर अपनी स्थानीय कलीसिया के साथ मिलकर काम करेंगे जिससे उनके समाज और समुदाय के परिवारों में भक्तिपूर्ण जीवन जीने का प्रभाव पड़ेगा।

दूसरी बातों के साथ ही, छात्र बच्चों और किशोरों के पारिवारिक शिष्यत्व सम्बन्धी विषय के बारे में सीखेंगे। पाठ 12, सत्र कार्य 3 उन माता-पिता को निर्देश देता है, जो इस पाठ्यक्रम को ले रहे हैं, जिससे कि वे अपने परिवार के लिए दैनिक मनन समय की योजना बना सकें। Shepherds Global Classroom ने एक पारिवारिक शिष्यत्व पुस्तक, *पारिवारिक शिक्षण संसाधन* का निर्माण किया है, जिसका माता-पिता चाहे तो अपने पारिवारिक मनन के दौरान उपयोग कर सकते हैं। यह पुस्तक shepherdsglobal.org पर डाउनलोड के लिए उपलब्ध है।

कक्षा के अगुवों के लिए दिशा-निर्देश

चर्चा के प्रश्नों और **कक्षा में होने वाली गतिविधियों** को ►द्वारा दर्शाया गया है। चर्चा सम्बन्धी प्रश्नों के लिए, कक्षा के अगुवे को प्रश्न पूछना चाहिए और छात्रों को उत्तर पर चर्चा करने के लिए समय देना चाहिए। आम तौर पर यदि वही छात्र पहले उत्तर देता है, या यदि कुछ छात्र नहीं बोलते हैं, तो अगुवा किसी से इस प्रकार प्रश्न पूछ सकता है: "मुकेश, तुम इस प्रश्न का उत्तर कैसे दोगे?"

प्रत्येक पाठ सामूहिक चर्चा के लिए कई वैकल्पिक प्रश्नों के साथ समाप्त होता है। कक्षा का अगुवा यह चुनाव कर सकता है कि वह समूह के साथ किन प्रश्नों पर चर्चा करेगा।

पाठ्यक्रम में बहुत अधिक **वचनों** का प्रयोग किया गया है। जिन परिच्छेदों को कक्षा में ज़ोर से पढ़ा जाना चाहिए उन्हें तीरनुमा चिन्ह के द्वारा दर्शाया गया है। समूह में जब कोई छात्र ज़ोर से वचन पढ़े तो अन्य छात्रों को बाइबल में ध्यान देना चाहिए। अन्य समयों पर, मूलपाठ में आने वाले पवित्रशास्त्र के संदर्भों को कोष्ठक में दिए गया है। उदाहरण के लिए: (इफिसियों 6:1)। वे संदर्भ पाठ में कथनों के सहायक हैं। यह आवश्यक नहीं है कि कोष्ठक में दिए गए परिच्छेदों को हमेशा ही पढ़ा जाए।

इस पाठ्यक्रम के अन्त में दो विशेष विषयों पर संक्षिप्त चर्चाओं को शामिल किया गया है। ये विषय पूरी तरह से किसी अन्य पाठ से सम्बन्धित नहीं हैं और न ही ये अपने आप में सम्पूर्ण पाठ हैं। फिर भी, ये विषय मसीही दृष्टिकोण से समझने के लिए

महत्वपूर्ण हैं। कक्षा को पाठ 3 के बाद आने वाले परिशिष्ट क का अध्ययन करके उस पर चर्चा करनी चाहिए और पाठ 10 के बाद आने वाले परिशिष्ट ख का अध्ययन करना चाहिए। उन दो पाठों के अन्त में अनुस्मारक दिए गए हैं।

प्रत्येक पाठ का अन्त पाठ सम्बन्धी नियत कार्यों के साथ होता है। पाठ सम्बन्धी नियत कार्यों को पूरा किया जाना चाहिए और आपके पाठ के समय से पहले उनकी सूचना दी जानी चाहिए। यदि कोई छात्र पाठ सम्बन्धी कार्य नहीं कर पाता, तो वह उसे बाद में कर सकता है। हालाँकि, अगुवे को छात्रों को प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे समय-सारणी का पालन करें, जिससे कि वे कक्षा से अधिक से अधिक सीख सकें। प्रत्येक पाठ के पाठ सम्बन्धी नियत कार्य को पूरा करने के अलावा, छात्रों को अगली कक्षा की तैयारी के लिए अगला पाठ भी पढ़े।

यदि छात्र Shepherds Global Classroom से प्रमाणपत्र पाना चाहते हैं, तो उन्हें कक्षा सत्र में भाग लेना चाहिए और सत्र कार्यों को पूरा करना चाहिए। पाठ्यक्रम के अन्त में पूर्ण किए गए पाठ सम्बन्धी नियत कार्यों का लेखा रखने के लिए एक फॉर्म दिया गया है।

पाठ 1
सम्बन्धों के लिए बनाए गए

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में, छात्र यह करने लगेंगे:

(1) उस सम्बन्ध को समझना तथा उसे महत्व देना जो परमेश्वर हमारे साथ रखना चाहता है।

(2) प्रत्येक व्यक्ति में परमेश्वर के स्वरूप को समझना और उसे महत्व देना।

(3) यह जानना कि हम अपने सम्बन्धों में जो चुनाव करते हैं, उनके लिए हम परमेश्वर के प्रति जवाबदेह हैं।

(4) यह जानना कि बाइबल भक्तिपूर्ण सम्बन्धों के लिए हमारी नियमावली है, और हमें अपने सम्बन्धों में परमेश्वर का अनुकरण करना है।

परमेश्वर के साथ सम्बन्ध

पवित्रशास्त्र में, हम जानते हैं कि परमेश्वर एक निजी परमेश्वर है, जिसका दूसरों से सम्बन्ध है और उनसे बातचीत करता है (इब्रानियों 1:1-2)। पवित्रशास्त्र हमें दिखाता है कि परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र, और परमेश्वर पवित्र आत्मा अनन्तकाल से एक दूसरे के साथ सम्बन्ध में रहे हैं।[1]

परमेश्वर ने आकाश, पृथ्वी, समुद्र और हर उस वस्तु को बनाया जो उनमें हैं (निर्गमन 20:11) भजन संहिता 8:3-8 हमें दिखाती है कि हम अर्थात् मनुष्यजाति परमेश्वर की सर्वोत्तम और सबसे महत्वपूर्ण सृष्टि थी। परमेश्वर ने लोगों को उसी प्रकार सम्बन्ध रखने वाले प्राणियों के रूप में बनाया, जैसा कि आपस में सम्बन्ध रखने वाला जन है। सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में, परमेश्वर लोगों को उसके साथ जीवनदायी सम्बन्ध में आमंत्रित करता है।[2]

यह जानना कितना अद्भुत है कि, जगत का सृजनहार, आपके और मेरे साथ एक सम्बन्ध चाहता है!

► एक छात्र को समूह के लिए उत्पत्ति 3:8-9 पढ़ना चाहिए।।

---

[1] उदाहरण के लिए, ये वचन हमें पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा के बीच के सम्बन्धों को दिखाते हैं: यूहन्ना 17:22-24; यूहन्ना 14:16-26; और यूहन्ना 15:26। ये आयतें इस विषय में बात नहीं करती कि पवित्र आत्मा अनन्त कैसे है, परन्तु हमें अन्य आयतों, जैसे कि इब्रानियों 9:14 से पता चलता है कि वह भी अनन्त है।

[2] उदाहरण के लिए, देखें यशायाह 55:3, यूहन्ना 1:12-13, यूहन्ना 3:36, यूहन्ना 17:3, 2 कुरिन्थियों 6:16-18, 1 यूहन्ना 1:3, प्रकाशितवाक्य 3:20।

एक क्षण के लिए रुकें, अपनी आँखें बंद करें और उस दृश्य की कल्पना करें जिसे आपने अभी-अभी पढ़ा है। इन आयतों को जीवन में लाने के लिए अपनी कल्पना का प्रयोग करें। आप दिन के ठण्डे समय में सबसे सुन्दर वाटिका में खड़े हैं, अपने चेहरे पर मधुर हवा के झोके को महसूस करें। परमेश्वर के कदमों की आवाज़ को सुने और उसके दो प्रिय प्राणियों के मूक प्रत्युत्तर को सुनें, फिर परमेश्वर पूछता है, "तू कहाँ है?"

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि वह किस प्रकार का क्षण रहा होगा, क्योंकि परमेश्वर पुरुष और स्त्री को उसके साथ संगति के रखने के लिए बुला रहा था? फिर से रुकें और परमेश्वर के मन पर विचार करें। परमेश्वर आदम और हव्वा के साथ, आपके साथ, और मेरे साथ संगति रखने की इच्छा रखता है—और चाहता है!

यद्यपि हमने अपनी अनाज्ञाकारिता के कारण अपने आप को परमेश्वर से अलग कर लिया है (यशायह 59:2), तौभी परमेश्वर प्रत्येक जीवित व्यक्ति से सम्बन्ध चाहता है। लूका 19:10 हमें दिखाता है कि वह प्रत्येक पापी को खोज रहा है। परमेश्वर अब भी पूछता है, "तू कहाँ है?" क्योंकि यीशु हमारे लिए मरा, इसलिए हम परमेश्वर के साथ फिर से सही सम्बन्ध में वापस आ सकते हैं (इफिसियों 2:13, 19)। आपको और मुझे परमेश्वर के साथ सम्बन्ध के लिए बनाया गया है।

हमारे सृष्टिकर्ता की रचना

जो लोग परमेश्वर की प्रेम पूर्ण और उद्देश्य पूर्ण सृष्टि में विश्वास नहीं रखते वे अपनी स्वयं की पहचान और उद्देश्य बनाने के लिए संघर्ष करते हैं। परमेश्वर से सम्बन्ध से परे मनुष्यजाति को सही रीति से समझ पाना असम्भव है। ऐसा व्यक्ति जो सांसारिक ज्ञान की सम्मति—मानव-केन्द्रित आनन्द की खोज—के अनुसार जीता है, वह जीवन को वास्तव में नहीं समझ सकता।

वास्तव में हमारी पहचान (हम कौन हैं), हमारे उद्देश्य (हम क्यों अस्तित्व में हैं), और हम कैसे रचे गए हैं, को समझने के लिए, हमें अपने सृष्टिकर्ता के उद्देश्य को जानना चाहिए, जो कि पवित्र बाइबल में पाया जाता है। परमेश्वर ने हमारी पहचान पहले से ही स्थापित कर दी है; यह कोई ऐसी वस्तु नहीं है, जिसका हम आविष्कार करते हैं। उसने हमें एक उद्देश्य के साथ बनाया है और हमें सोच-समझकर रचा है। जब हम अपने जीवनों और सम्बन्धों के लिए उसकी योजना को समझ जाते हैं, केवल ताकि हम वह बन सकते हैं, जो हमें बनना और हमारे अस्तित्व के उद्देश्य को पूरा कर सकते हैं।

परमेश्वर के स्वरूप में बनाने का अर्थ यह है कि लोगों को निराले ढंग से परमेश्वर के साथ सम्बन्ध के लिए बनाया गया था। जैसा कि परमेश्वर सम्बन्धपरक है, ठीक वैसे ही उसने लोगों को भी सम्बन्धपरक प्राणी बनाया है। परमेश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति के प्राण, आत्मा, और देह को परमेश्वर और दूसरों के साथ सम्बन्धों के लिए रचा है।

मानव सम्बन्धों के लिए हमारी निर्देश-पुस्तिका

यह सच है कि परमेश्वर ने लोगों को सम्बन्ध के लिए बनाया है, जो संकेत करता है कि उसके पास हमारे सम्बन्धों के लिए सिद्धान्त और दिशा निर्देश हैं। किसी भी उत्पाद का निर्माता उस उत्पाद के लिए एक निर्देश पुस्तिका देता है, जो उस उत्पाद

की रचना और उसके उपयोग के तरीके के विषय में बताती है। उसी तरह, परमेश्वर ने हमें उसका वचन, बाइबल, दिया है, जो हमारी रचना के विषय में बताती है और यह बताती है कि हमारे जीवन और सम्बन्ध उचित रीति से कैसे कार्य कर सकते हैं।

बाइबल स्पष्टता से उन भूमिकाओं का वर्णन करती है, जो परमेश्वर ने मानव सम्बन्धों के लिए ठहराई हैं। बाइबल पतियों और पत्नियों; पिताओं, माताओं, और बच्चों; बहनो और भाइयो; दादा-दादियों; मित्रों; शत्रुओं; पड़ोसियों; सरकारों और नागरिकों; मालिको और कर्मचारियों की भूमिकाओं और सम्बन्धों के विषय में बताती है। परमेश्वर के वचन के सिद्धान्त हमें हमारे लिए उसकी रचना के विषय में सिखाते हैं, भले ही हमारी परिस्थितियाँ या माहौल कुछ भी क्यों न हो। बाइबल हमें हमारे जीवन के प्रत्येक चरण के लिए परमेश्वर की इच्छा के विषय में सिखाती है।

मानव समाज और संस्कृतियाँ यद्यपि सिद्ध नहीं है, तो भी वे परमेश्वर की रचना को दर्शाती हैं। संस्कृतियाँ सारे सम्बन्धों और परिस्थितियों के लिए सामान्य मानवीय आचरण के विषय में बताती हैं। प्रत्येक संस्कृति में बच्चों का पालन पोषण करने और वैवाहिक सम्बन्धों को बनाए रखने के अपने तरीके होते हैं। संस्कृतियों की परम्पराओं, वातावरण, अनुवांशिकियों, और मुख्य त्यौहारों इत्यादि में अत्याधिक विविधताएँ होती है, परन्तु प्रत्येक संस्कृति एक मूल नैतिकता साझा करती है। उदाहरण के लिए, प्रत्येक संस्कृति में विवाह का एक स्वरूप होता है। हालाँकि, सभी आचरणों को बाइबल के सिद्धांतों के द्वारा आंका जाना चाहिए, न कि सांस्कृतिक रीतियों के आधार पर। बाइबल हमारी अधिकारी है; न कि संस्कृति (रोमियों 12:2)।

यह आवश्यक नहीं कि सांस्कृतिक विशेषताएँ तटस्थ हों, और हमें उनके ऐसा होने की अपेक्षा भी नहीं करनी चाहिए (इफिसियों 2:2)। संस्कृतियों को ऐसे पतित लोगों के द्वारा विकसित किया गया है, जिन्हें बुरी इच्छाओं और स्व-केंद्रिता के द्वारा आकार मिला है। एक समाज को बाइबल के सत्य का ज्ञान हो सकता है, परन्तु फिर भी एक समाज निरन्तर परमेश्वर के सही और गलत के पैमाने पर खरा नहीं उतरता। किसी भी बात को इसलिए उचित नहीं ठहराना चाहिए, क्योंकि वह सांस्कृतिक है। केवल बाइबल ही सिद्धता से हमें परमेश्वर के पैमाने को दिखाती है (भजन संहिता 19:7-11)।

यदि आप लीबिया देश में जाएँ और देखें के लिबियावासी सुरक्षा की परवाह की बिना गाड़ी चलाते हैं, तो शायद आप सोचेंगे कि, “यह उनकी संस्कृति है; उनका गाड़ी चलाने का तरीका उनके लिए ठीक है।” यह सच है कि उन्होंने गाड़ी चलाने के अपने ही सांस्कृतिक तरीके को विकसित कर लिया है। हालाँकि, लीबिया में यातायात से होने वाली मृत्यु दर संसार में सबसे अधिक है। उनकी यातायात मृत्यु दर संसार के दूसरे सर्वाधिक यातायात मृत्यु दर वाले देश से दुगनी है। स्पष्ट है, उनकी संस्कृति ने गाड़ी चलाने की अच्छी शैली को विकसित नहीं किया है।

परमेश्वर जानता है कि जीवन को कैसे काम करना चाहिए और इसके लिए उसने हमें नियम दिए हैं। हमें प्रयोग या खोजबीन नहीं करनी है। हमें बस वह नहीं करना जिससे हमें लगे कि हमें वह मिलेगा जो हमें चाहते हैं। हमें वह हासिल करने का प्रयास नहीं करना चाहिए, जिसके विषय में हम सोचते हैं कि एक सुखी जीवन होगा। हमें निश्चय ही सम्बन्धों के लिए परमेश्वर की रचना का पालन करना चाहिए।

सुन्दर बात यह है कि परमेश्वर के निर्देशों के प्रति वह आज्ञाकारिता हमारे लिए भली है। परमेश्वर ने हमें आज्ञाएँ इसलिए दी हैं, क्योंकि वह हमसे प्रेम करता है (व्यवस्थाविवरण 6:24)। उनका पालन करने के द्वारा, हम अच्छे परिणामों का आनन्द लेते हैं और बहुत से बुरे परिणामों से बच जाते हैं। हमारा रचयिता जानता है कि हमारे लिए क्या उत्तम है, और जब हम उसकी योजना का अनुसरण करते हैं, तो हमें आशीष मिलती है।

सम्बन्धों में परमेश्वर के प्रति जवाबदेही

►दूसरे लोगों के प्रति हमारे व्यवहार से परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्धों पर कैसे प्रभाव पड़ता है?

►छात्र को समूह के लिए निम्नलिखित परिच्छेदों में से प्रत्येक को पढ़ें। संक्षिप्त रूप से चर्चा करें कि परमेश्वर इन मानव सम्बन्धों में क्या चाहता है, और आज्ञाकारिता परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्धों को कैसे प्रभावित करती है। परमेश्वर के निर्देशों का पालन न करना परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्धों पर प्रभाव कैसा प्रभाव डालेगा?

दूसरों के साथ हमारा सम्बन्ध और परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध			
पवित्रशास्त्र परिच्छेद	**व्यक्ति/ भूमिका**	**परमेश्वर मानव सम्बन्ध में जिस बात की माँग करता है**	**उसका प्रभाव परमेश्वर के साथ सम्बन्ध**
1 पतरस 3:7	पति	पत्नी को समझने वाला और उसका सम्मान करने वाला हो।	एक पति की प्रार्थनाएँ रुकनी नहीं चाहिए।
इफिसियों 5:22, 24, 33; 1 पतरस 3:1-6	पत्नी	पति के अधीन रहे।	इस प्रकार एक पत्नी परमेश्वर के प्रति समर्पित रहती है। परमेश्वर उसके भीतर इस मनोभाव और व्यवहार को महत्व देता है।
कुलुस्सियों 3:20	बच्चे	सब बातों में माता-पिता के आज्ञाकारी हों।	इस व्यवहार से प्रभु प्रसन्न होता है।
मत्ती 6:12-15	सब लोग	अपने अपराधियों को क्षमा करें।	परमेश्वर हमें क्षमा कर सकता है।
रोमियों 13:1-5	सब लोग	सांसारिक अधिकारियों के अधीन रहें।	इस प्रकार हम परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं।
1 पतरस 2:18-20	सेवक	धीरज से अन्यायपूर्ण व्यवहार को सहें।	इससे परमेश्वर सेवक पर कृपा करता है।

हम नैतिक प्राणी हैं, जिसका अर्थ है कि हम जानते हैं कि कुछ काम गलत होते हैं और कुछ सही होते हैं, और हम अपने चुनावों के लिए परमेश्वर के प्रति जवाबदेह हैं। यह बात हमें बड़ी क्षमता और बड़ी जिम्मेदारी प्रदान करती है। हमारे चुनाव परमेश्वर

के साथ हमारे सम्बन्ध को प्रभावित करते हैं। सम्बन्धों के विषय में परमेश्वर के निर्देशों का पालन करना केवल इस पर आधारित एक व्यावहारिक विषय नहीं है कि हम कैसे खुश रह सकते हैं और जीवन से सर्वश्रेष्ठ कैसे प्राप्त कर सकते हैं। हम अपने निर्णयों और सम्बन्धों में अपने व्यवहार के लिए परमेश्वर के प्रति जवाबदेह हैं (रोमियों 14:10, 12)।

परमेश्वर ने हमें दूसरों के साथ उचित व्यवहार करने और प्रेम और दया से कार्य करने के लिए बुलाया है (मीका 6:8)। समस्या यह है कि, आदम के पाप के कारण, उसके सभी वंशज पापी स्वभाव के साथ जन्मे हैं (रोमियों 5:12, 19)। इस कारण, हम निरन्तर प्रेमपूर्ण, दयालु और उचित तरीके से कार्य नहीं कर सकते हैं (रोमियों 7:15-24)। परन्तु जब हम नया जन्म पा लेते हैं, तब परमेश्वर का अनुग्रह हमें बदल देता है। पवित्र आत्मा हमें परमेश्वर की आवश्यकताओं को पूरा करने के योग्य बनाता है (रोमियों 8:3-4)।

प्रत्येक व्यक्ति का मूल्य

► छात्रों को समूह के लिए यशायाह 44:24, भजन संहिता 139:13-16, उत्पत्ति 9:6, और याकूब 3:9 पढ़ना चाहिए।। ये वचन हमें प्रत्येक जीवन के मूल्य के बारे में क्या बताते हैं? कौन सी बात किसी व्यक्ति को मूल्य प्रदान करती है?

दूसरों के साथ स्वस्थ सम्बन्ध रखने के लिए, हमें लोगों को वैसे ही महत्व देना चाहिए, जैसा परमेश्वर देता है। **प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर के स्वरूप में बना है और केवल इसी कारण से वह मूल्यवान है।** प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर की एक अनोखी सृष्टि है, चाहे वह पुरुष हो या महिला, स्वस्थ हो या बीमार, सम्पूर्ण हो या विकलांग या अपंग, जवान हो या बूढ़ा, धनी हो या निर्धन (नीतिवचन 14:31), पहले ही जन्म ले चुका हो या अब भी अपनी माँ के गर्भ में हो; उनकी त्वचा का रंग चाहे जो भी हो; और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उनकी मानसिक या शारीरिक क्षमताएँ या सीमाएँ क्या हैं (निर्गमन 4:11)।

ऐसी संस्कृतियाँ हैं, जहाँ वृद्धों को भुला दिया जाता है, महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम मूल्यवान माना जाता है, या बच्चों को परेशान करने वाला माना जाता है। कुछ संस्कृतियों में, अपंगों को शापित माना जाता है और उन्हें समाज से छिपाया या त्याग दिया जाता है। संसार भर में नस्लवाद सामान्य है: एक जनजाति या जातीय समूह स्वयं को दूसरे से श्रेष्ठ मानता है और दूसरे के साथ अपमानजनक व्यवहार करता है। इनमें से प्रत्येक कार्य उन लोगों के मूल्य को कम करना है, जो परमेश्वर की सारी सृष्टि में सबसे मूल्यवान हैं। स्वस्थ, परमेश्वर का आदर करने वाले सम्बन्ध बनाने के लिए, हमें सबसे पहले सभी लोगों के बारे में यह सोचना चाहिए कि वे क्या हैं – यानी परमेश्वर के स्वरूप के धारक।

परमेश्वर के लिए बनाए गए, दूसरों के लिए बनाए गए

प्रकाशितवाक्य 4:11 हमें बताता है कि परमेश्वर ने सभी वस्तुएँ अपने लिए बनाई थीं। इसमें निश्चित रूप से मनुष्यजाति भी शामिल है। हमें परमेश्वर के द्वारा, परमेश्वर के लिए बनाया गया। हम जो कुछ भी करते हैं, उसे हमें परमेश्वर की महिमा के लिए करना चाहिए (1 कुरिन्थियों 10:31, 1 पतरस 2:12)। हम भी दूसरे लोगों की भलाई करने के लिए बनाए गए हैं।

हमें अन्य लोगों के साथ काम करने के लिए बनाया गया था, जिससे कि परमेश्वर के उद्देश्य पूरे हों। विवाह परमेश्वर के

लोगों के एक साथ काम करने के अभिप्राय का एक उदाहरण है। परमेश्वर ने जैसे ही प्रथम मनुष्य को बनाया उसके ठीक बाद, परमेश्वर ने कहा, “आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊँगा जो उस से मेल खाए” (उत्पत्ति 2:18)। स्त्री एक महत्वपूर्ण तरीके से पुरुष के समान है, परन्तु अन्य महत्वपूर्ण तरीकों से उससे भिन्न है। वे साथ मिलकर अपने अस्तित्व के लिए परमेश्वर के उद्‌देश्यों को पूरा कर सकते हैं। परमेश्वर ने उन्हें—एक साथ—वह कार्य दिया जो उन्हें करना था (उत्पत्ति 1:26-28)।

कलीसिया भी लोगों के साथ मिलकर काम करने के परमेश्वर के अभिप्राय का एक और उदाहरण है। प्रेरित पौलुस ने इसके लिए देह के अंगों का उदाहरण दिया (1 कुरिन्थियों 12:12-26)। एक व्यक्ति को यह नहीं सोचना चाहिए कि वह अकेले काम करके परमेश्वर का उद्‌देश्य पूरा कर सकता है या उसे अन्य लोगों की आवश्यकता नहीं है। विवाह और कलीसिया लोगों के एक साथ काम करने के परमेश्वर के अभिप्राय के कई उदाहरणों में से केवल दो उदाहरण हैं।

हमें दूसरे लोगों की सेवा करने के लिए बनाया गया था (गलातियों 5:13-14)। हमें परमेश्वर के साथ प्रेम से भरे सम्बन्धों के बनाया गया है, जिसमें हमें दूसरों के लाभ के लिए स्वयं को देना है।

► छात्र को समूह के लिए नीतिवचन 17:17, गलातियों 6:2, और फिलिप्पियों 2:4 पढ़ें।

हम परमेश्वर और अन्य लोगों के लिए बनाए गए थे। परमेश्वर अपने वचन में हमसे जो भी अपेक्षा करता है, वह या तो उसके साथ हमारे सम्बन्ध, दूसरों के साथ हमारे सम्बन्ध, या दोनों सम्बन्धों से सम्बन्धित होती है। वास्तव में, यीशु ने कहा था कि परमेश्वर हम से जो भी अपेक्षा करता है, उसे इस आदेश द्‌वारा संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है कि हम जो हैं, उसके साथ परमेश्वर से प्रेम करें और अन्य लोगों से उसी प्रकार प्रेम करें जैसे हम स्वयं से करते हैं।

► एक छात्र को समूह के लिए मत्ती 22:36-39 पढ़ना चाहिए।।

हम परमेश्वर के लिए बनाए गए हैं, और हम दूसरों के लिए भी बनाए गए हैं; ये सच्चाईयाँ आपस में घनिष्ठता से जुड़ी हुई हैं। उन प्रमुख क्षेत्रों में से एक जिसमें हम परमेश्वर की महिमा करते हैं और उसकी स्वरूप की झलक को प्रकट करते हैं, वह दूसरों के साथ हमारी बातचीत है। परमेश्वर का चरित्र और कार्य हमें उसके जैसा बनने के लिए विवश करते हैं (1 पतरस 1:16, मत्ती 5:48)। सब लोग परमेश्वर के स्वरूप में बने हैं, परन्तु जब हम परमेश्वर के जैसा व्यवहार करते हैं, तब हम उसके स्वभाव और चरित्र की झलक को प्रकट करते हैं।

जब कोई व्यक्ति जरूरतमंदों पर दया करता है, तब उसकी करुणा परमेश्वर की करुणा की नकल होती है, और उसका दयालु कार्य परमेश्वर के कार्य की नकल होती है। यह सच है, भले ही दया दिखाने वाला विश्वासी हो या अविश्वासी। हालाँकि, हम परमेश्वर का सबसे अच्छा अनुकरण तब करते हैं, जब हमारा उससे मेल हो जाता है और उसका आत्मा हमारे भीतर काम करने लगता है।

► एक छात्र को समूह के लिए 2 पतरस 1:2-11 पढ़ना चाहिए।।

यह परिच्छेद मसीह के प्रत्येक अनुयायी के लिए परमेश्वर की अद्भुत योजना के विषय में बताता है। इस परिच्छेद से हमें ये बातें सीखने को मिलती हैं:

1. यीशु ने हमें अपनी महिमा और भलाई से बुलाया है और हमें अद्भुत प्रतिज्ञाएँ दी हैं (आयतें 3-4)।
2. इन प्रतिज्ञाओं के द्वारा, हममें से जो लोग मसीह को जानते हैं, वे अपने भीतर परमेश्वर के भक्तिपूर्ण स्वभाव को पा सकते हैं (आयत 4)।
3. पिता परमेश्वर और यीशु के साथ सम्बन्ध के द्वारा, हमारे पास वह सब कुछ है, जो हमें जीवन और भक्ति के लिए चाहिए (आयत 3)।
4. इन बातों के कारण, हम वैसे जी सकते हैं, जैसे यीशु जिया और जैसे परमेश्वर ने हमें जीने के लिए बुलाया है (आयतें 5-8)।

► यह कैसे सम्भव है कि हम अपने सम्बन्धों में परमेश्वर के चरित्र और स्वभाव को प्रकट कर सकते हैं?

► एक छात्र को समूह के लिए 2 कुरिन्थियों 4:4 पढ़ना चाहिए।। परमेश्वर का आदर्श चित्र कौन है?

► एक छात्र को समूह के लिए 2 कुरिन्थियों 3:18 पढ़ना चाहिए।।

पवित्र आत्मा विश्वासियों को बदल देता है कि वे प्रभु की महिमा को अधिकाई से प्रकट करें। यीशु को देखकर, हम अपने दृष्टिकोण और व्यवहार में और अधिक उसके जैसे बनते चले जाते हैं। यही सुसमाचार की सुन्दरता है। पिता परमेश्वर, यीशु और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा, हम परमेश्वर के चरित्र को प्रकट कर सकते हैं था उसका अनुकरण कर सकते हैं।

परमेश्वर ने हमें दूसरों के साथ हमारे सम्बन्धों में उसका अनुकरण करने के लिए बुलाया है (इफिसियों 5:1)। जैसे एक बच्चा अपने माता-पिता या बड़े भाई-बहन को देखता है और उनकी नकल करता है, हमें यीशु के उदाहरण को देखना है और फिर दूसरों के साथ बातचीत करते समय उसके मनोभाव, दृष्टिकोण और कार्यों का अनुकरण करना है (फिलिप्पियों 2:5-7, इफिसियों 5:2)।

► छात्र समूह के लिए निम्नलिखित प्रत्येक परिच्छेद को पढ़ें। (1) परमेश्वर का चरित्र या कार्य और (2) हमारे लिए परमेश्वर की अपेक्षा पर नोट्स बनाएँ। (पहले दो परिच्छेदों के नोट्स उदाहरण के तौर पर पहले ही लिखे जा चुके हैं। इस पाठ के अन्त में, सत्र कार्य 2 इस अध्ययन को आगे बढ़ाता है।)

मानव सम्बन्ध परमेश्वर की महिमा को कैसे दर्शाते हैं		
पवित्रशास्त्र	**परमेश्वर क्या करता है/ मसीह ने क्या किया है**	**हमारा कार्य जो परमेश्वर को प्रकट करता है**
फिलिप्पियों 2:3-8	उसने अपना अधिकार छोड़ दिया। वह एक सेवक बन गया। पूरी तरह से दीन एवं आज्ञाकारी था।	हमें अपने अधिकार छोड़ने चाहिए। दूसरों के हितों का ध्यान रखना चाहिए। दीन बनना चाहिए।
यूहन्ना 13:3-5, 12-15	व्यावहारिक आवश्यकता को पूरा करते हुए अपने शिष्यों की सेवा की।	अन्य विश्वासियों की सेवा करें।
इफिसियों 4:32-5:2		

हममें से कोई भी स्वाभाविक रूप से परमेश्वर के प्रेम को प्रकट नहीं करता क्योंकि हम स्वार्थी स्वभाव के साथ जन्मे हैं। परमेश्वर हमें हमारे लिए उसके अभिप्राय में बहाल करने का अनुग्रह प्रदान करता है। समर्पण की एक विनम्र प्रार्थना से कोई भी व्यक्ति इस परिवर्तन से होकर गुजर सकता है।

उपसंहार

बाइबल बताती है कि परमेश्वर ने लोगों को प्रेम से सम्बन्धों के लिए बनाया है: कि हम उसके साथ सम्बन्ध और दूसरों के साथ सम्बन्ध रखें।

क्योंकि परमेश्वर लोगों का सृष्टिकर्ता और सम्बन्धों का रचयिता है, हमें यह अवश्य करना चाहिए:

1. हमारे मानवीय सम्बन्धों पर परमेश्वर का दृष्टिकोण प्राप्त करें।
2. सम्बन्धों में हमारे द्वारा किए गए चुनावों के लिए उसके प्रति अपनी जवाबदेही को महसूस करें।
3. हमारे सम्बन्धों के लिए उसकी योजना को स्वीकार करें और उसका अनुकरण करें।

अध्ययन का यह पाठ्यक्रम ये काम करने में आपकी सहायता करेगा और आपको दूसरों को मानवीय सम्बन्धों के लिए परमेश्वर की इच्छा के विषय में सिखाने के लिए तैयार करेगा।

सामूहिक चर्चा के लिए

► संस्कृति मानवीय सम्बन्धों के मार्गदर्शक के रूप में पर्याप्त क्यों नहीं है?

► इस पाठ में कौन सा विचार आपके लिए नया था? वह महत्वपूर्ण क्यों है? इसे समझने से आपको अपने सम्बन्धों में किस प्रकार सहायता मिलेगी? इसे समझने से आपकी सेवकाई पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

► आप इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करके कैसे बढ़ेंगे?

प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता,

तेरा धन्यवाद हो कि तूने मुझे अपने स्वरूप में बनाया और मेरे जीवन के लिए एक उद्देश्य रखा।

मुझे तेरे साथ सम्बन्ध रखने के लिए और मेरे पापों के लिए यीशु की मृत्यु के द्वारा यह सम्भव बनाने के लिए तेरा धन्यवाद हो।

तेरे वचन के धन के लिए तेरा धन्यवाद हो, जो मुझे सिखाता है कि तुझसे सम्बन्ध कैसे रखूँ और दूसरों के साथ अपने सम्बन्धों में तेरी महिमा कैसे करूँ।

अपने वचन और अपनी आत्मा के द्वारा, मुझे उस जीवन को अपनाना सिखा जिसकी तूने मेरे लिए योजना बनाई है।

मेरी सहायता कर कि मैं अपने आस-पास के सभी लोगों के सामने तेरे स्वरूप को सटीकता से प्रकट कर सकूँ, ताकि अन्य लोग तुझे जान सकें।

आमीन

.पाठ सम्बन्धी नियत कार्य

(1) समझाएँ कि कैसे परमेश्वर के स्वरूप में सृजे जाना प्रत्येक व्यक्ति को मूल्य प्रदान करता है और कैसे सृष्टि का इनकार करना मानवीय मूल्य को छीन लेता है।

(2) निम्नलिखित पवित्रशास्त्र के परिच्छेदों में से प्रत्येक को पढ़ें। (1) परमेश्वर का चरित्र या कार्य और (2) हमारे लिए परमेश्वर की अपेक्षा पर नोट्स बनाएँ।

मानव सम्बन्ध परमेश्वर की महिमा को कैसे दर्शाते हैं		
पवित्रशास्त्र	**परमेश्वर क्या करता है/ मसीह ने क्या किया है**	**हमारा कार्य जो परमेश्वर को प्रकट करता है**
भजन संहिता 68:5; याकूब 1:27		
2 पतरस 3:9; तीतुस 3:1-5		
मत्ती 5:43-48, 1 थिस्सलुनिकियों 5:14-15		
यूहन्ना 13:1, 34; 1 यूहन्ना 4:7-8, 11-12		

(3) सत्र कार्य 2 की तालिका और पाठ के अन्त में दी गई तालिका को देखते हुए, एक क्षण लेकर अपने जीवन की जाँच करें:

- क्या आप वर्तमान में परमेश्वर के स्वरूप को इस प्रकार कैसे प्रकट करते जिससे कि उसका आदर और महिमा होती है?
- क्या कोई अनाज्ञाकारिता है, जिसका अंगीकार किया जाना चाहिए ताकि आपका जीवन आपके लिए परमेश्वर उद्देश्य के साथ अधिक स्पष्ट और सामर्थी रूप से मेल खा सके?
- परमेश्वर चाहता है कि आप यीशु के जैसा बनने के लिए कौन सा कदम उठाएँ?

इस अध्ययन के उत्तर में एक प्रार्थना अनुच्छेद लिखें। (आपको इस लेख को अपने कक्षा के अगुवे के साथ साझा करने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु आप यह उसे सूचना दे सकते हैं कि आपने सत्र कार्य पूरा कर लिया है।)

पाठ 2

एक बाइबल आधारित परिवार

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में, छात्र यह करने लगेंगे:

(1) यह समझने लगेंगे कि एक विवाह को सम्बन्धों में त्रिएकत्व को कैसे प्रकट करना है।

(2) बच्चे पैदा करने के बारे में परमेश्वर के दृष्टिकोण को अपनाना।

(3) यह समझना कि पतन ने विवाह और पारिवारिक सम्बन्धों को कैसे प्रभावित किया।

(4) इस बात की सराहना करना कि मानवीय दोषों के बावजूद परमेश्वरके छुटकारा देने वाले उद्देश्य कैसे पूरे होते हैं।

(5) यह समझना कि परमेश्वर की योजना का पालन करने किसी भी परिवार की एक छुटकारा देने वाला परिवार बनने में सहायता कर सकता है।

पारिवारिक सम्बन्धों के प्रभाव

इस पाठ्यक्रम में हम अधिकतर उस परिवार के बारे में जानेंगे जो एक ही घर में एक साथ रहता है। लोगों के विभिन्न संयोजनों से ऐसे समूह बनते हैं, जो एक घर में साथ रहते हैं और परिवार कहलाते हैं। एक माता या पिता वाले परिवार, तलाक के कारण विभाजित परिवार, दूसरे विवाह के कारण बनने वाले संयुक्त परिवार, ऐसे परिवार जिन्होंने बच्चों को गोद लिया है, कई पीढ़ियों वाले परिवार, और ऐसे परिवार जो अस्थायी रूप से अतिरिक्त बच्चों या वयस्कों की मेजबानी कर रहे हैं।

हममें से प्रत्येक की इस विषय में अपनी-अपन मानसिक सोच कि *परिवार* का क्या अर्थ होता है। परिवार के बारे में चर्चाएँ हमारे व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर हमारे भीतर विभिन्न भावनाएँ उत्पन्न करती हैं।

बचपन हमें कैसे प्रभावित करता है

हो सकता है कि आपके पास अपने बचपन की अद्भुत यादें हों, या हो सकता है कि आप बचपन के अनुभवों के कारण क्रोध से जूझ रहे हों। हो सकता है कि आपके परिवार के सदस्य अक्सर एक-दूसरे की सहायता करते हों और उन्हें प्रोत्साहित करते हों, या हो सकता है कि वे एक-दूसरे को अनदेखा करते हो और जब वे साथ होते हैं, तो उनमें केवल लड़ाई ही होती है। आप महसूस कर सकते हैं कि आपका परिवार आपके जीवन के लिए एक बड़ा आधार और सहायक साधन रहा है, या हो सकता है कि आपका घर किसी कैद, पीड़ादायी माहौल जैसा महसूस होता हो, जिससे आप बचने की लालसा रखते थे। हो सकता है जब

आप ऐसे परिवारों को देखते हैं, जो आपसे बेहतर लगते हैं, तो आपको लगता है कि आपके परिवार आपकी आशाओं पर खरा नहीं उतरा।

हमारे परिवारों के बारे में हमारी समझ महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि यह जीवन के बारे में हमारी समझ और परमेश्वर कौन है की हमारी समझ को प्रभावित करती है। बाइबल परमेश्वर को अपने लोगों का पिता होने के बारे में बताती है। हमारे माता-पिता—विशेषकर हमारे पिता—के साथ हमारे सम्बन्ध हमारे स्वर्गीय पिता के बारे में हमारी सोच को आकार देते हैं। यदि हमारा मानव पिता अनुपस्थित, शोषण करने वाला, उपेक्षा करने वाला, माँग करने वाला, हेरफेर करने वाला, निष्क्रिय या किसी भी तरह से हानिकारक होता है, तो पिता के रूप में परमेश्वर की हमारी सोच को हानि होगा। जब तक हम परमेश्वर से उसके वचनों के द्वारा, यीशु के जीवन के द्वारा और उसके साथ अपनी व्यक्तिगत यात्रा के द्वारा परिचित नहीं हो जाते, तब तक हमारे लिए उसे एक **भले** पिता के रूप में देखना कठिन हो सकता है। वह वास्तव में एक भला पिता है, जो सक्रिय रूप से अपने बच्चों की रक्षा करता है और उनका पालन-पोषण करता है। वह अपने बच्चों को सुनता है और उनसे बात करता है, उनका मार्गदर्शन करता है और उनकी भलाई से प्रसन्न होता है। हम जैसे-जैसे परमेश्वर को जानेंगे वह हमें उसके विश्वास में हमारी समझ को फिर से अकार देने में हमारी सहायता कर सकता है।[3]

आत्मिक मतभेद हमें कैसे प्रभावित करते हैं

हममें से कुछ को हमारे परिवारों ने इसलिए त्याग दिया है, क्योंकि हम मसीह का अनुसरण करते हैं। यीशु ने कहा कि हमें उसके प्रति अपनी भक्ति के कारण अविश्वासी परिवार के सदस्यों के द्वारा सताए जाने की आशा रखनी चाहिए। कई स्थानों पर विश्वासियों को उनके अपने परिवार के सदस्यों द्वारा पकड़वा दिया जाता है, लज्जित किया जाता है, उनकी उपेक्षा की जाती है, उनसे दुर्व्यवहार किया जाता है, या उनके अपने ही परिवार के ऐसे सदस्यों को मार डाला जाता है, जिन्होंने मसीह को त्याग दिया है।

► एक छात्र को मत्ती 10:21-22, 28, 32-39 पढ़ना चाहिए।। इन आयतों को पढ़ने के बाद निम्नलिखित प्रश्नों पर चर्चा करें:

- इस परिच्छेद के अनुसार, विश्वासियों को क्या अपेक्षा करनी चाहिए?
- यहाँ कौन सी प्रतिज्ञाएँ दी गई हैं?
- विश्वासियों को सताव के बारे में कैसे सोचना चाहिए?

हममें से अन्य लोग शायद परिवार से सताव का अनुभव न करें परन्तु फिर भी अपने विश्वास के कारण अपने सम्बन्धों में परेशानियों का अनुभव कर सकते हैं। हो सकता है कि हमारे पारिवारिक सम्बन्ध तनावपूर्ण, दूर या सीमित हों क्योंकि

---

[3] यह जानने के लिए कि परमेश्वर कौन है, आप परमेश्वर के विषय में अपनी समझ को कैसे नया कर सकते हैं, Shepherds Global Classroom के पाठ 4 *आत्मिक निर्माण* पर गौर करें।

विश्वासियों के रूप में हमारा जीवन हमारे परिवार के सदस्यों के जीवन से बहुत अलग है। हमें गलत समझा जा सकता है या हमारा अनादर किया जा सकता है। रिश्तेदार हमारी सेवा में बाधा डालने का प्रयास कर सकते हैं। यहाँ तक कि यीशु ने भी इन परेशानियों का अनुभव किया था (मरकुस 3:21, यूहन्ना 7:3, 5), इसलिए यदि हम भी ऐसा करते हैं, तो हमें इससे आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

आप और आपका परिवार

कुछ ही मिनटों में, आप अपने सहपाठियों को अपना परिचय देंगे, परन्तु आप सिर्फ अपना नाम नहीं बताएँगे, बल्कि आप अपने परिवार के संदर्भ में आप कौन हैं, इसके बारे में भी बताएँगे।

सबसे पहले, उन सभी विभिन्न पदवियों के बारे में सोचें जो आपके परिवार में हैं, जैसे बेटा या बेटी, पति या पत्नी, पिता या माता, चाचा या चाची, दादा या दादी। क्या आप अतिरिक्त पदवियों के बारे में सोच सकते हैं? आपके पास सम्भवतः कई पदवियाँ हो सकती हैं।

आपके परिवार में आपकी अन्य भूमिकाएँ या स्थान क्या-क्या हैं? क्या आप सबसे बड़े हैं या सबसे छोटे? क्या आप धन प्रदान करने वाले हैं? या ऐसे व्यक्ति हैं, जो घर की देखभाल करता है? किसी वृद्ध या विकलांग व्यक्ति की देखभाल करने वाले? अपने परिवार में अपनी अन्य भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के बारे में सोचें।

► अपने परिवार में अपने कई पदों और भूमिकाओं को सूचीबद्ध करते हुए, अपने सहपाठियों को अपना परिचय दें।

► अब, इस बारे में सोचने के लिए एक क्षण रुकें कि आपके पद और भूमिकाएँ इन बातों को कैसे प्रभावित करती हैं (1) अपने बारे में आपका दृष्टिकोण और (2) आप अपने परिवार में दूसरों को कैसे देखते हैं।

भले ही आप अपने निकटतम या विस्तारित परिवार के सदस्यों के बारे में कैसा भी क्यों न महसूस करते हों, तथापि वे आपके हैं। शायद आपका परिवार टूट गया है, उस पर ठेस और पीड़ा के निशान हैं। या हो सकता है कि लोग आपके परिवार से ईर्ष्या करते हों, क्योंकि आप परिपूर्ण परिवार लगते हैं: आपके पास एक अच्छा विवाह, बुद्धिमान और स्वस्थ बच्चे हैं, और प्रेम, शांति, और हंसी से भरा-पूरा घर है।

चाहे आपका परिवार कमज़ोर प्रतीत होता हो या मज़बूत, परमेश्वर आपके परिवार में दिलचस्पी रखता है और उसमें शामिल है। उसके पास *आपके* परिवार के लिए एक योजना है।

► अपने परिवार के सदस्यों (परिवार के सदस्यों की कम से कम 3-4 पीढ़ियों) के नाम लिखें। उदाहरण के लिए, आपके दादा-दादी के नाम (पहली पीढ़ी), आपके माता-पिता के नाम (दूसरी पीढ़ी), आपका और आपके भाई-बहनों का नाम (तीसरी पीढ़ी), आपके बच्चों या भतीजियों और भतीजों के नाम (चौथी पीढ़ी)।

उन लोगों के नाम के आगे एक सितारा बनाएँ जिनके साथ आपके घनिष्ठ और अच्छे सम्बन्ध हैं। उन लोगों के नाम के पास

एक त्रिकोण बनाएँ जिनके साथ आपका सम्बन्ध सीमित है, और उन लोगों के नाम के चारों ओर एक वर्ग बनाएँ जिनसे आप किसी कारण से अलग हो गए हैं।

क्या ऐसे लोग हैं, जिन्हें आप अपने परिवार का हिस्सा मानते हैं, यद्यपि वास्तव में उनका आपसे कोई सम्बन्ध नहीं है: तथापि वे लोग जो सभी पारिवारिक सभाओं और समारोहों में ऐसे शामिल होते हैं, जैसे कि वे परिवार ही हों? उनके नाम लिखें और उन पर गोला लगाएँ।

पहला मानव परिवार

► अपनी बाइबल में उत्पत्ति पुस्तक को खोले रखें क्योंकि हम आदम और हव्वा, और अब्राहम और सारा के जीवन का अध्ययन करेंगे।

पहला विवाह

आदम और हव्वा पहला मानव परिवार थे: एक पति और एक पत्नी, एक पुरुष और एक स्त्री विवाह में जुड़ गए। पहले विवाह में, आदम ने कहा, "अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है; इसलिए इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है" (उत्पत्ति 2:23)।

अगली आयत विवाह की बाइबल आधारित परिभाषा बताती है: "इस कारण पुरुष अपने माता–पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे एक ही तन बने रहेंगे" (उत्पत्ति 2:24)। यही वाक्य नए नियम में मत्ती 19:5 और इफिसियों 5:31 में दोहराया गया है। **एक पुरुष और एक स्त्री का एक-तन का मिलन एक बिना शर्त वाली प्रतिबद्धता है, और परमेश्वर और मनुष्य के सामने किया गया एक वादा है, जो जीवन भर बना रहता है।**

> विवाह एक तिहरा आश्चर्यकर्म है। यह एक जीवविज्ञान सम्बन्धी आश्चर्यकर्म है, जिसके द्वारा दो लोग वास्तव में एक तन बन जाते हैं; यह एक सामाजिक आश्चर्यकर्म है, जिसके द्वारा दो परिवार एक साथ जुड़ जाते हैं; यह एक आत्मिक आश्चर्यकर्म है, जिसके द्वारा यह यीशु मसीह और उसकी दुल्हन, यानी कलीसिया के मिलन को चित्रित करता है।[4]

[4] *एक महिला की अध्ययन बाइबल (The Woman's Study Bible),* (Thomas Nelson, Inc., 1995), 9।

विवाह त्रिएकत्व के भीतर के सम्बन्ध को दर्शाता है

> "विवाह एक महान वाचा करने वाले और वाचा के रक्षक के रूप में··· परमेश्वर के चरित्र का प्रदर्शन है। एक वाचा में, सबसे महत्वपूर्ण तत्व सत्य के प्रति निष्ठा और खराई होते हैं, न कि भावना।"
> - रॉबर्ट मैक्विलकिन,
> *एन इंट्रोडक्शन टू बिब्लिकल एथिक्स*

विवाह परमेश्वर के चरित्र और उसके सम्बन्धों को प्रकट करने के लिए बनाया गया है। परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र, और परमेश्वर पवित्र आत्मा सदैव एक दूसरे के साथ सम्बन्ध में रहे हैं और रहेंगे। प्रत्येक जन अपनी भूमिका में निराला है, परन्तु त्रिएकत्व के सभी जन स्थायी रूप से एक हैं और एक ही सार वाले हैं। त्रिएकत्व के जनों के बीच के सम्बन्धों में, हम एकता, घनिष्ठता, विश्वासयोग्यता और दृढ़ प्रेम को देखते हैं। बाइबल आधारित विवाह इस अद्भुत सम्बन्ध के अनुरूप होता है। परमेश्वर की योजना है कि प्रत्येक पति-पत्नी अपने प्रेम में पवित्र रहें और जीवन भर एक-दूसरे के प्रति समर्पित रहें।

मानव विवाह को इन तरीक़ों से त्रिएकत्व के भीतर के सम्बन्धों को दर्शाना चाहिए:

1. विवाह एक दूसरे के प्रति बिना शर्त, विशेष प्रतिबद्धता होना चाहिए।
2. विवाह को एक स्वयं को देने वाले प्रेम का सम्बन्ध होना चाहिए।
3. विवाह को एक फलवन्त सम्बन्ध में होना चाहिए।

पहली आज्ञा

पहले विवाह के दौरान, जिसका विधि-संचालन स्वयं परमेश्वर ने किया था,

> परमेश्वर ने उन्हें आशीष दी। और परमेश्वर ने उनसे कहा, "फूलो–फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।" (उत्पत्ति 1:28)।

फूलो-फलो और बढ़ो बाइबल में परमेश्वर के द्वारा दी गई पहली आज्ञा है। **विवाह को स्वयं को देने वाले प्रेम का फलदाई सम्बन्ध होने के लिए बनाया गया है।** विवाह के भीतर प्रजनन से सृष्टिकर्ता की महिमा होती है, क्योंकि पति और पत्नी *साथ मिलकर* परमेश्वर के सृजनात्मक कार्य को आगे बढ़ाते हैं और पारिवारिक सम्बन्ध में और लोगों को लेकर आते हैं। यह कितना अद्भुत सौभाग्य और ज़िम्मेदारी है!

►एक छात्र को समूह के लिए भजन संहिता 127:3-5 पढ़ना चाहिए।। यह परिच्छेद बच्चों का वर्णन करने के लिए शब्द चित्रों का प्रयोग करता है। शब्द चित्र क्या होते है? इन शब्द चित्रों के आधार पर, हमें अपने बच्चों के विषय में क्या सोचना चाहिए?

बाइबल हमें दिखाती है कि बच्चे एक उपहार हैं, और अनमोल धन हैं। उन्हें केवल यौन सम्बन्धों का परिणाम नहीं समझा जाना चाहिए। चाहे बच्चे के गर्भाधारण के आसपास की परिस्थितियाँ चाहने योग्य या उचित हों या न हों, जीवन का दाता

प्रत्येक बच्चे के गर्भाधारण और जन्म के विषय में सोचता है, जिसमें आप और मैं भी शामिल हैं। परमेश्वर का प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक उद्देश्य है, चाहे किसी के जन्म की परिस्थितियाँ कैसी भी क्यों न हों।

हाँ बच्चे परमेश्वर की ओर से एक उपहार हैं, परन्तु वे माता-पिता का परमेश्वर को भी उपहार हैं।

> क्या उसने एक ही को नहीं बनाया जब कि और आत्माएँ उसके पास थीं? और एक ही को क्यों बनाया? इसलिए कि वह परमेश्‍वर के योग्य सन्तान चाहता है। इसलिए तुम अपनी आत्मा के विषय में चौकस रहो, और तुम में से कोई अपनी जवानी की स्त्री से विश्‍वासघात न करे (मलाकी 2:15)।

बच्चे पवित्र अमानत होते हैं। परमेश्‍वर माता-पिता से अपेक्षा करता है कि वे अपने बच्चों का पालन-पोषण करें उसके उद्देश्यों को पूरा करें। परमेश्वर अपने राज्य को आगे बढ़ाने के लिए हमारे बच्चों का इस्तेमाल करना चाहता है (उत्पत्ति 18:19)। परमेश्‍वर ने हम पर भरोसा किया है कि हम अपने बच्चों को उसकी सेवा के जीवन के लिए तैयार करेंगे (व्यवस्थाविवरण 6:2)। हम उन्हें अपनी सेवा या अपने सपनों को पूरा करने के लिए नहीं पाल रहे हैं। हमें उन्हें उन तीरों के रूप में देखना चाहिए, जिन्हें परमेश्वर ने अपने निर्धारित लक्ष्य को भेदने के लिए छोड़ा है।

पतन और मानव परिवार का टूटापन

उत्पत्ति 3 में, अस्तित्व में रहा एकमात्र सिद्ध परिवार टूटने की स्थिति में आ गया और उसे एक उद्धारकर्ता की अत्याधिक आवश्यकता थी। आदम और हव्वा ने पाप किया और मृत्यु का शाप पूरी मनुष्यजाति पर आ गया। आदम और हव्वा का एक-दूसरे के साथ सम्बन्ध स्थायी रूप से क्षतिग्रस्त हो गया, और वे परमेश्वर से अलग हो गए।

पुरुष और स्त्री दोनों को अतिरिक्त शाप सहने पड़े:

- प्रसव पीड़ादायक होगी।
- पति अधिकार का दुरुपयोग करेंगे।
- पत्नियाँ उद्दंडी और अपमान करने वाली होंगी।
- काम निराशाजनक और कठिन होगा।[5]

परिवार के लिए परमेश्वर की सिद्ध योजना बिगड़ गई क्योंकि लोगों ने शैतान के झूठ को मान लिया।

---

[5] यह बताना महत्वपूर्ण है कि **प्रसव** शाप का हिस्सा नहीं था। प्रसव में **पीड़ा** होना शाप का परिणाम है, परन्तु प्रसव हमेशा अगली पीढ़ी के निर्माण के लिए परमेश्वर की अद्भुत योजना रहा है। न ही **काम** कोई शाप था, बल्कि काम में **कठिनाई** होना ही शाप था। वास्तव में, परमेश्वर ने उत्पत्ति 1:28 में आदम और हव्वा को जो अन्य आज्ञाएँ दिन, वे संकेत करती हैं कि हम काम करने के लिए बने हैं! काम उन तरीकों में से एक है, जिनसे हम परमेश्वर के स्वरूप को प्रकट करते हैं।

उत्पत्ति 4 पतित मानव परिवार के टूटेपन को प्रकट करना जारी रखता है।

उत्पत्ति 4:1 पर ध्यान दें, पहली गर्भावस्था और जन्म। यह आयत नौ महीने के समय पर बात करती है—यानी एक बच्चे के गर्भधारण और उसके जन्म के बीच का समय। यह कल्पना करने के लिए रुकें कि गर्भावस्था के वे नौ महीने हव्वा के लिए कैसे रहे होंगे, जिनमें उसने आदम के साथ अपने डर और खुशियाँ साझा करने का प्रयास किया। उसे सलाह देने वाला कोई नहीं था, उसके प्रश्नों का उत्तर देने वाला कोई नहीं था। उसका बढ़ता हुआ पेट, उसके बच्चे की लातें, और उसके संकुचन और पीड़ा के साथ जन्म प्रक्रिया, ये सभी किसी भी मानव माँ के लिए पहली बार का अनुभव थे। कोई आश्चर्य नहीं कि हव्वा ने कैन के जन्म के बारे में यह कहा कि, "मैं ने यहोवा की सहायता से एक पुरुष पाया है।" (उत्पत्ति 4:1)।

समय बीतता गया, और अगली आयत में हमें दूसरी गर्भावस्था और जन्म के बारे में पता चलता है। अब आदम और हव्वा का के परिवार में चार लोग हैं। उसी आयत के दूसरे भाग में उनके पुत्रों के व्यवसायों का सारांश है। आयत 3 के अनुसार, लड़के वयस्क हो गए हैं, और बाद की आयतों में हम पहली हत्या की दुःखद कहानी को पढ़ते हैं। आदम और हव्वा के सबसे बड़े बेटे ने क्रोध और ईर्ष्या के कारण अपने भाई की हत्या कर दी। क्या आप सदमे, दुःख, प्रश्नों, चोट और पीड़ा की कल्पना कर सकते हैं?

उन प्रश्नों पर आपका उत्तर हो सकता है, "हाँ! मैं इसकी कल्पना कर सकता हूँ। वास्तव में, मैंने भी कुछ ऐसा ही अनुभव किया है!" मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहता हूँ कि: आप अकेले नहीं हैं। आपका परिवार छुटकारे के योग्य है! हर परिवार के लिए एक खुशख़बरी है।

गॉर्डन वेन्हम लिखते हैं,

> …उत्पत्ति का संदेश... मानवीय पाप के बावजूद अनुग्रह की विजय की कहानी है, यानी यह पाप से टूटे हुए परिवारों में भी अनुग्रह की विजय की कहानी है। यह पुस्तक संसार की सृष्टि के साथ उच्च स्तर पर शुरू होती है और परमेश्वर के स्वरूप में मनुष्य जाति की सृष्टि के साथ अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचती है और परमेश्वर ने घोषणा की कि उसने जो कुछ भी बनाया है, वह बहुत अच्छा है…। केवल अध्याय 3 के बाद ही चीज़ें गलत होने लगती हैं, अनाज्ञाक़ारीता, [झगड़े] और मृत्यु आज्ञाकारिता, सद्भाव और जीवन का स्थान ले लेती है। अध्याय 4 में परिस्थितियों और भी बुरी हो जाती हैं... और अध्याय 6 में अपने सबसे निचले पड़ाव तक पहुँच जाती हैं, जहाँ लिखा है कि पृथ्वी हिंसा से भरी गई है (उत्पत्ति 6:11, 13)।[6]

---

[6] *फैमिली इन द बाइबल* में गॉर्डन वेन्हम का लेख (Wenham writing in *Family in the Bible*), रिचर्ड एस. हेस और एम. डेनियल कैरोल आर. द्वारा संपादित (edited by Richard S. Hess and M. Daniel Carroll R.), Grand Rapids, MI: Baker Academic, 2003, 29

अब्राहम के परिवार में टूटापन

उत्पत्ति में आगे, हम इब्री जाति के पिता अब्राहम के बारे में पढ़ते हैं (उत्पत्ति 11:27-25:11)।[7] परमेश्वर अब्राहम के परिवार के द्वारा उद्धारकर्ता को मानव परिवार में लाने वाला था।

बाँझपन[8]

उत्पत्ति 11 में अब्राम की वंशावली की सूची दी गई है, जो नूह के पुत्र शेम का वंशज था। उत्पत्ति 11:30 हमें बताता है कि अब्राम की पत्नी सारै बच्चे पैदा करने में सक्षम नहीं थी। वह आयत उसे पढ़ने वाले बहुत से लोगों के लिए आँसू, कुंठा, हृदय की पीड़ा, निराशा, व्यर्थता, क्रोध और दुःख की आयत है। यदि आप इस आयत में सारै के स्थान पर अपना नाम रख सकते हैं, तो जान लें कि आप अकेले नहीं हैं।

जो लोग बच्चे पैदा करना चाहते हैं, परन्तु वे बाँझपन का अनुभव कर रहे हैं, उनके लिए उत्पत्ति 1:28 और भजन संहिता 127:3-5 जैसे परिच्छेदों को पढ़ना अत्याधिक पीड़ा और दुःख का कारण बनता है। यह महसूस होना स्वाभाविक है कि संतानहीन होना एक दण्ड या शाप है।

सच्चाई तो यह है कि, आप परमेश्वर के लिए इसलिए कम महत्वपूर्ण नहीं हैं, क्योंकि आपके पास बच्चे नहीं हैं। आपको भुलाया नहीं गया है। आपके बाँझपन का अर्थ यह नहीं है कि आपके परिवार में कोई दोष है। अन्य लोगों ने भी इसी गहरे दुःख का अनुभव किया है।

एक दम्पति एक साथ और व्यक्तिगत् रूप से, बाँझपन में कैसे काम करता है, यह अत्याधिक महत्वपूर्ण है। मूर्खता से भरे निर्णय आगे भी समस्याएँ उत्पन्न कर सकते हैं, जैसा कि हम अब्राम और सारै के जीवन में देखेंगे।

प्रतिज्ञा की बाट जोहना

अपने पिता की मृत्यु के बाद, अब्राम अपने परिवार का कुलपिता बन गया। परमेश्वर ने अब्राम से उसे एक बड़ी जाति बनाने की प्रतिज्ञा की (उत्पत्ति 12:2) और अब्राम के वंशजों को कनान देश देने की प्रतिज्ञा कि (उत्पत्ति 12:7)। अब्राम अब 75 वर्ष का था (उत्पत्ति 12:4) और सारै उससे दस वर्ष छोटी थी (उत्पत्ति 17:17)। सारै असामान्य रूप से सुन्दर 65 वर्षीय महिला थी (उत्पत्ति 12:11), वह अभी भी बाँझ थी, और पहले से ही बच्चे पैदा करने की सामान्य आयु को पार कर चुकी थी।

---

[7] उत्पत्ति 17:5, 15 में परमेश्वर ने अब्राम और सारै का नाम बदलकर अब्राहम और सारा कर दिया।

[8] इस विषय पर अधिक जानकारी के लिए पाठ 10 देखें।

वर्ष बीतते गए, पर उसे फिर भी कोई बच्चा नहीं हुआ, हालाँकि उत्पत्ति 13:14-17 में परमेश्वर की प्रतिज्ञा को फिर से नया किया गया था। ऐसा लगता है कि अब्राम ने अपने बच्चे का पिता बनने की सम्भावना छोड़ दी है, क्योंकि उत्पत्ति 15:2-3 में वह परमेश्वर से कहता है कि उसका सेवक उसका उत्तराधिकारी है। तब यहोवा का यह वचन उसके पास पहुँचा, "यह तेरा वारिस न होगा, तेरा जो निज पुत्र होगा, वही तेरा वारिस होगा" (उत्पत्ति 15:4)। तब, परमेश्वर ने अब्राम से अनगिनत वंशजों की प्रतिज्ञा करते हुए उसे दूसरा चित्र दिया, और अब्राम ने यहोवा पर विश्वास किया (उत्पत्ति 15:6)।

> परमेश्वर हमें यीशु के समान बनाने के लिए काम कर रहा है। कभी-कभी परमेश्वर हमसे इंतज़ार करवाता है, क्योंकि इंतजार के समय के द्वारा, वह हमारे मनों में वह कार्य कर सकता है, जो अन्यथा सम्भव नहीं है।

सोचिए कि सारै के लिए इन वर्षों का इंतज़ार कैसा रहा होगा:

> सारै के लिए दूसरों के ताने जितने पीड़ादायक रहे होंगे, उतना ही उसकी अपनी[तीखी] निराशा रही होगी जो सबसे अधिक पीड़ा देती है। वह शायद न केवल एक माँ होने की भरपूरी की चाह रखती थी, बल्कि वह उस समाज में माँ को मिलने वाले आदर और आदर की भी अभिलाषी करती थी, जहाँ वैसे भी महिलाओं का कोई विशेष महत्व नहीं था। हम जानते हैं कि पुरुष का बाँझपन भी गर्भधारण में विफलता का कारण हो सकता है, परन्तु सारै के संसार में ऐसा कोई जीवविज्ञान सम्बन्धी ज्ञान नहीं था। एक महिला के रूप में सारै की पहचान, यानी एक योग्य महिला के रूप में, उसके बच्चे पैदा करने और उन्हें दूध पिलाने पर निर्भर थी। उसे पुरुषों की दृष्टि में एक धर्मी और विश्वासयोग्य मनुष्य बनकर मूल्य प्राप्त नहीं हुआ पर, बल्कि उसे यह अपने पति के लिए पुरुष उत्तराधिकारी को जन्म देकर मिला। खाली गर्भ का अर्थ खाली जीवन होता है।[9]

[9] ***बाइबल में पाए जाने वाले दोषपूर्ण परिवार*** डेविड एण्ड डायना गार्लैंड (David and Diana Garland, *Flawed Families of the Bible*, Grand Rapids, MI: Brazos Press, 2007, 21-22)

मानवीय समाधान और उसके पीड़ादायक परिणाम

जब अब्राम 85 वर्ष का था, तब सारै के मन में एक विचार आया—यह इसका एक उपाय था कि अब्राम को बच्चा कैसे मिल सकता है। सारै की दासी उनके बच्चे की जन्मदात्री हो सकती है! (उत्पत्ति 16:1-4) अब्राम और सारै को इस बात से आशा थी कि यह एक सही समाधान होगा, परन्तु हाजिरा के गर्भवती होने पर उनके घर की शान्ति नष्ट हो गई। जो बात अत्याधिक सही लग रही थी वह अत्याधिक गलत हो चुकी थी। परमेश्वर की प्रतिज्ञा को पूरा करने में उसकी सहायता करने के उनके प्रयास से केवल विवाद और कलह उत्पन्न हुई। जब लोग परमेश्वर की योजना और समय पर भरोसा करने में विफल हो जाते हैं, तो टूटे हुए सम्बन्ध और आहत भावनाएँ उनका स्वाभाविक परिणाम होती हैं।

> "परमेश्वर के पास इस बात के पवित्र कारण हैं
> कि हम इंतज़ार करते हुए विनती करते रहें,
> जैसा उसने इलीशिबा के लिए किया था (लूका 1:7, 13),
> और हमारे तैयार होकर आगे बढ़ने से पहले, जैसा उसने
> मरियम के लिए किया था (लूका 1:34)।
> जैसे ही हम उसकी आज्ञा मानते हैं और उसकी आराधना
> करते हैं,
> वह मार्गदर्शन, शिक्षा और
> अपनी योजना प्रदान करता है
> जो कभी उन बातों से सीमित नहीं होती
> जिनकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते।"
> - शाउना लेटेलियर के

इसके बाद के वर्षों में, तनाव, ठेस, गलतफहमी, बातचीत की समस्याएँ, क्रोध, परित्याग और निराशा कई गुना बढ़ गई (उत्पत्ति 16-21), न केवल अब्राम और सारै के घराने में, बल्कि उनके भतीजे लूत के परिवार में भी।

दोषपूर्ण परिवार

अब्राम को परमेश्वर ने एक बड़ी जाति का पिता बनने के लिए चुना था, वह वंश जिसके द्वारा यीशु का जन्म होने वाला था! ऐसा लगता है जैसे अब्राम, उसके परिवार के अन्य सदस्यों की ही तरह, परमेश्वर की योजना को बर्बाद कर रहा था! उसका परिवार एक अत्याधिक दोषपूर्ण परिवार का उदाहरण था।

उत्पत्ति 49:33 के अनुसार, अब्राहम और सारा, इसहाक और रिबका, याकूब और उसकी पत्नियाँ सभी मर गए थे। याकूब के बच्चों को मिलाकर, वे विनाश से भरी हुई विफलताओं और दोषों से भरा हुआ एक परिवार था। लड़ाई, बहस, पक्षपात, छल, परित्याग, भाई-बहन की शत्रुता, बलात्कार और अनाचार ये सभी बातें उनके परिवार की कहानी का हिस्सा थीं। इनमें से कोई भी शब्द एक फलवन्त, शान्तिपूर्ण परिवार का वर्णन नहीं करता है!

दुःख की बात है कि यह कहानी सदियों से पूरी बाइबल और पूरे संसार में दोहराई जाती रही है। निःसंदेह, इन परिवारों में भी आनन्द के पल आए, सुन्दर प्रेम कहानियाँ घटीं, और यहाँ तक कि कुछ धर्मी लोग भी हुए।

इन सब बातों के द्वारा, परमेश्वर ने मनुष्यजाति को छुड़ाने की अपनी योजना को कभी नहीं छोड़ा। न ही उसने परिवार के लिए अपना उद्देश्य बदला। यदि आप पुराने नियम को पढ़ते रहेंगे, तो आपको इब्री परिवार की कहानी के द्वारा छुटकारे के एक सुन्दर विषय पता चलेगा। कई घटनाओं ने यीशु की ओर संकेत किया। अब्राहम का इसहाक को बलिदान चढ़ाना; फसह

और इस्राएलियों का मिस्र की दासता से छुटकारा; राहाब का दण्ड से छूटकर और उसका परमेश्वर के लोगों में शामिल किया जाना; और कई अन्य घटनाओं ने इस प्रतिज्ञा को सुन्दरता से दर्शाया कि एक उद्धारकर्ता आएगा और मनुष्यजाति को छुटकारा देगा।

परिवारों में परमेश्वर का छुटकारे से भरा कार्य

इफिसियों 5 हमें बताता है कि परमेश्वर ने विवाह को मसीह और उसकी दुल्हन, यानी कलीसिया के बीच के सम्बन्ध के एक चित्र के रूप में बनाया था। जैसे सिर रूपी मसीह कलीसिया के लिए स्वयं को देता है, वैसे ही प्रत्येक पति को, अपनी पत्नी के सिर के रूप में, उसके लिए स्वयं को देना चाहिए। इसी तरह, प्रत्येक पत्नी को कलीसिया के उदाहरण का अनुसरण करना है। जिस प्रकार कलीसिया मसीह के अधीन है, उसी प्रकार प्रत्येक पत्नी को भी अपने पति के अधीन रहना है।

मनुष्यजाति के पतन ने मानवीय परिवारों के लिए परमेश्वर की मूल योजना को नष्ट कर दिया और विवाह सम्बन्धों पर विनाशकारी परिणाम लाए। प्रत्येक परिवार को मनुष्यजाति के पाप में गिरने के परिणामों का सामना करना पड़ता है। हालाँकि,

> यीशु विवाह सहित सभी बातों के छुटकारे के लिए आया। वह उन सभी को छुड़ाने और बहाल करने के लिए आया था जिन्हें पाप ने हानि पहुँचाई थी और बिगाड़ दिया था। जहाँ हम विवाह के लिए परमेश्वर की योजना को पूरा नहीं कर सके, वहाँ पर यीशु ने परमेश्वर के मानकों को पूरी तरह से पूरा किया। यीशु ने कलीसिया से इतना प्रेम किया कि उसके लिए मर गया। वह पूरी तरह से पिता परमेश्वर की योजना के प्रति समर्पित हो गया। यीशु परमेश्वर की योजना और हमारे विवाह जो करने में विफल रहते हैं, वह उनकी पूर्ण और सिद्ध पूर्ति है अर्थ: प्रेम करना और अधीन रहना.[10]

► यीशु कैसे उस आचरण का उदाहरण है, जिसे एक विवाहित व्यक्ति में होना चाहिए?

यीशु न केवल अपने पूर्ण समर्पण और पूर्ण प्रेम में परमेश्वर की इच्छा को पूरा करता है, बल्कि वह पतियों और पत्नियों को उन हानि पहुँचाने वाली प्रवृत्तियों पर विजय पाने के योग्य बनाता है, जो पतित मनुष्यजाति के लिए स्वाभाविक हैं। उसके अनुग्रह से, जब पति और पत्नियाँ पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से जी रहे हों तब वे विवाह के लिए परमेश्वर की योजना को पूरा कर सकते हैं (इफिसियों 5:18)।

कोई भी परिवार सिद्ध नहीं है, परन्तु परमेश्वर प्रत्येक परिवार को छुड़ाना चाहता है। परमेश्वर का अनुग्रह परिवारों में काम करके व्यक्तियों को वह बनाने के लिए सशक्त कर सकता है, जो मूल रूप से उनके लिए परमेश्वर की इच्छा थी। जैसे-जैसे परिवारों में व्यक्ति परमेश्वर के निर्देशों का पालन करने का चुनाव करते, उनकी आज्ञाकारिता कुछ दोषों और कमियों को दूर करने में सहायता करती है, जो हर परिवार में स्वाभाविक रूप से होते हैं। जब हम परमेश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण करते

---

[10] क्रिस्टीना फॉक्स, “विवाह को बचाना।” (Christina Fox, “Redeeming Marriage.”) 29 नवम्बर, 2022 को https://cbmw.org/2013/08/29/redeeming-marriage/ से लिया गया।

हैं, तो मानवीय सम्बन्धों को प्रभावित करने वाले पतन के परिणाम घटते चले जाते हैं।

उदाहरण के लिए, जब एक धर्मी पति इफिसियों 5 में दिए गए परमेश्वर के निर्देशों का पालन करता है, तब वह अपनी पत्नी पर अपने अधिकार का स्वार्थ से दुरुपयोग करने की अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति पर विजय पाता है। परमेश्वर के प्रति उसकी आज्ञाकारिता छुटकारा दिलाती है क्योंकि यह पतन के हानि पहुँचाने वाले प्रभावों को कम करती है। यह आज्ञाकारिता सम्भवतः उसकी पत्नी को भी उसके प्रति समर्पित होने के लिए प्रेरित कर सकती है।

जब एक पत्नी परमेश्वर के निर्देशों का पालन करते हुए अपने पति के अधीन रहती है (इफिसियों 5:24), तब वह अपने पति के अधिकार का विरोध करने की अपनी स्वाभाविक पापी प्रवृत्ति पर विजय पा रही है। परमेश्वर के प्रति उसकी आज्ञाकारिता छुटकारा दिलाती है, जिससे उनके सम्बन्ध को परमेश्वर की इच्छा के अनुसार का विवाह बनने में सहायता मिलती है (1 कुरिन्थियों 11:3, 1 पतरस 3:1-7)।

परमेश्वर ने मसीही परिवारों को छुड़ाने वाले निर्देश दिए हैं, यह हमें दिखाता है कि परमेश्वर के लिए पारिवारिक सम्बन्ध अत्याधिक महत्वपूर्ण हैं।

परिवार की बाइबल आधारित जिम्मेदारी

माता-पिता और दादा-दादी की जिम्मेदारियाँ

पूरे पवित्रशास्त्र में ऐसे कई परिच्छेद मिलते हैं, जो माता-पिता और दादा-दादी को अपने बच्चों और पोते-पोतियों को परमेश्वर की विधियाँ सिखाने की आवश्यकता के बारे में बताते हैं। हम संक्षेप में तीन परिच्छेदों पर विचार करेंगे।

▶ एक छात्र को समूह इफिसियों 6:4 पढ़ना चाहिए।। इस आयत का क्या अर्थ है?

माता-पिता के लिए परमेश्वर की योजना यह है कि वे अपने बच्चों को परमेश्वर को जानना और उसकी आज्ञा का पालन करना सिखाएँ। माता-पिता जिस तरह से अपने बच्चों की अगुवाई करते हैं, उन्हें निर्देश देते हैं, उन्हें सुधरते हैं और प्रशिक्षित करते हैं, यह उसी तरह दिखाई देना चाहिए जैसे परमेश्वर अपनी सन्तानों के लिए इन कामों को करता है।

▶ एक छात्र को समूह के लिए भजन संहिता 78:1-8 पढ़ना चाहिए।। निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें:

- इस परिच्छेद में परिवार की कितनी पीढ़ियों का उल्लेख किया गया है?
- प्रत्येक पीढ़ी की जिम्मेदारी क्या है?
- बूढ़ी पीढ़ियों को जवान पीढ़ियों को क्या सिखाना चाहिए?

भजन संहिता 78 परमेश्वर के अतुलनीय अनुग्रह और दया से लबालब भरा हुआ अध्याय है। यह इस्राएल के परिवार के मिस्र को छोड़ने से लेकर राजा दाऊद के शासनकाल तक परमेश्वर के काम के बारे में बताता है। इस भजन से पाठकों को उनकी पारिवारिक परिस्थितियों के प्रति आशा मिलनी चाहिए।

▶ एक छात्र को समूह के लिए व्यवस्थाविवरण 6:1-9 पढ़ना चाहिए।। इस परिच्छेद को देखते हुए, परमेश्वर के लोगों के रूप में हमसे कौन सी बातें करने की अपेक्षा की गई है?

यह वचन इस्राएलियों को दिए गए मूसा के उस भाषण का भाग है, जो उसने उन्हें प्रतिज्ञा के उस देश में प्रवेश करने से पहले दिया था, जो परमेश्वर उन्हें दे रहा था। वे सीख रहे थे कि परमेश्वर की प्रजा कैसे बनें और परमेश्वर से सम्बन्ध रखने का क्या अर्थ है। इन आयतों में बताई गई सच्चाईयाँ आज भी परमेश्वर की प्रजा के रूप में जीने का आधार हैं।

परमेश्वर ने हमें आज्ञा दी है कि हम उसके वचन को आज्ञाकारी ढंग से सुनें—यानी वह हमसे जो चाहता है, हम वही करें! (आयत 3-4)।

हमें ये काम करने हैं:

1. अपने पूरे मन, प्राण और शक्ति से यहोवा से प्रेम करना (आयत 5)।
2. परमेश्वर के वचन को अपने मन में रखना (आयत 6)।
3. अपने बच्चों को लगन से सिखाना कि परमेश्वर के वचन का पालन कैसे करें (आयत 7)।
4. परमेश्वर के वचन को निरन्तर हमारे मन में और हमारे सामने रखना (आयत 8-9)।

ध्यान दें कि ये आज्ञाएँ हर पीढ़ी के लिए हैं (आयत 2)। परमेश्वर ने माता-पिता और दादा-दादी को जिम्मेदारी दी है कि वे अपने बच्चों और पोते-पोतियों को उसके लिए जीना सिखाएँ। कितनी देर के लिए? उनके जीवन के सब दिनों में (आयत 2)। परमेश्वर ने हमें बताया कि माता-पिता को अपने बच्चों को पूरे दिन, हर दिन, जहाँ भी वे जाते हैं और जो कुछ भी करते हैं, उनमें परमेश्वर की विधियाँ सिखानी चाहिए (आयत 7-9)।

> बच्चों की आत्मिक शिक्षा माता-पिता की जिम्मेदारी थी। यह शिक्षा माता-पिता के उदाहरण के साथ-साथ व्यवस्था के दोहराए जाने के द्वारा प्रतिदिन दी जाती थी। इस आज्ञा का महत्व इस बात से पता चलता है कि माता-पिता को अपने बच्चों को सिखाने के लिए किस हद तक जाना पड़ा। यह व्यवस्था की बातों को सिखाने से कहीं अधिक था; यह दैनिक जीवन के ताने-बाने में बुनी गई जीवनशैली का प्रदर्शन था। घर के सांसारिक कामों में शामिल रहते हुए परमेश्वर के उपदेशों को सिखाने के लिए रचनात्मकता की आवश्यकता पड़ती थी।[11]

[11] *एक महिला की अध्ययन बाइबल (The Woman's Study Bible),* Thomas Nelson, Inc., 1995, 292

माता-पिता को अपने बच्चों को न केवल उनकी बुद्धि, बल्कि उनके मनों में भी सिखाना चाहिए। उन्हें अपने बच्चों को न केवल परमेश्वर की बातें सिखानी हैं, बल्कि परमेश्वर के साथ सम्बन्ध और उसकी आज्ञाकारिता में कैसे रहना है, इसका व्यावहारिक अनुप्रयोग भी सिखाना है। माता-पिता अपने बच्चों को मौखिक निर्देश और जीवन के उदाहरणों से सिखाते हैं। दोनों ही आवश्यक हैं।

यह परिच्छेद साधारण प्रतीत हो सकता है, परन्तु यह अत्याधिक महत्वपूर्ण है। ये सच्चाईयाँ और आज्ञाएँ व्यक्तियों और परिवारों के लिए उद्देश्य और दिशा-निर्देश प्रदान करते हैं। जब माता-पिता निरन्तर परमेश्वर को बेहतर तरीके से जानने और सब बातों में पूरी तरह से उसकी आज्ञा मानने का प्रयास करते हैं, तब वे अपने बच्चों को भी ऐसा ही करना सिखाते हैं। माता-पिता को आजीवन सीखने और आज्ञा मानने का मनोभाव रखना चाहिए। यह उनके बच्चों के लिए एक उदाहरण है, और यह उनके बच्चों में परमेश्वर के प्रति भूख को उत्पन्न करता है।

► ऐसे कौन से व्यावहारिक तरीके हैं, जिनसे माता-पिता प्रतिदिन अपने बच्चों को चेला बनने की शिक्षा में आगे बढ़ा सकते हैं?

परिवार—दूसरों से प्रेम करने का प्रशिक्षण स्थल

▶ एक छात्र को समूह के लिए 1 यूहन्ना 4:7-13, 19 पढ़ना चाहिए।।

इस परिच्छेद का विषय प्रेम है। परमेश्वर को उसकी भरपूरी से जानने के लिए, हमें एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए। *एक-दूसरे* में हमारा परिवार भी शामिल है। परमेश्वर ने हमें परिवार इसलिए दिया है, ताकि हम दूसरों से प्रेम करना सीख सकें। जैसे-जैसे हम अपने परिवार के सदस्यों को प्रेम दिखाना सीखते हैं (भले ही यह कठिन हो), हम परमेश्वर के समान बनते चले जाते हैं—क्योंकि परमेश्वर प्रेम है! (आयत 8)।

जब परिवार के सदस्य—चाहे आत्मिक रीति से या शारीरिक रीति से—एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, तब वे साबित करते हैं कि वे परमेश्वर से जन्मे हैं (आयत 7)। जब वे एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, तब परमेश्वर का प्रेम उनमें सिद्ध हो जाता है (आयत 12)।

परमेश्‌वर केवल हमसे यह नहीं चाहता कि हम दूसरों से प्रेम करें, बल्कि उसने सबसे पहले हमसे प्रेम किया (आयतें 9-11, 19)। उसने यीशु को हमारे पापों की क्षतिपूर्ति के लिए भेजकर हमसे प्रेम किया (वचन 10)। हमारे प्रति परमेश्वर का प्रेम दूसरों के प्रति हमारे प्रेम की प्रेरणा है (आयत 11)।

अपने परिवार से प्रेम करना कुछ लोगों के लिए आसान हो सकता है और दूसरों के लिए अत्याधिक कठिन, परन्तु हम सभी के पास वह सब कुछ हो सकता है, जो हमें परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने के लिए चाहिए—क्योंकि परमेश्वर पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे भीतर बना रहता है (आयत 12-13)।

परमेश्वर ने हमसे अपने माता-पिता, जीवनसाथी और बच्चों सहित एक-दूसरे से प्रेम करने के लिए कहा है। अपने परिवार से प्रेम करने का अर्थ गलत कामों या बुराई को स्वीकृति देना नहीं है। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें जवाबदेही की आवश्यकता नहीं है। इसका अर्थ यह है कि हम अपने परिवार के सदस्यों के लिए सबसे अच्छी बात चाहते हैं और उनकी भलाई के लिए स्वयं को देने को तैयार हैं।

सामूहिक चर्चा के लिए

► अपने शब्दों में, ऐसे कुछ तरीकों की व्याख्या करें जिनसे विवाह त्रिएकत्व के सम्बन्धों को दर्शाता है।

► इस बारे में बताएँ कि परमेश्वर ने पाप से टूटे हुए विवाह को कैसे बचाया।

► समझाएँ कि विवाह में परमेश्वर के निर्देशों का पालन करना छुटकारा क्यों दिलाता है।

प्रार्थना

एक क्षण निकालकर प्रार्थना करें और अपने परिवार के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें। अपने परिवार के लिए प्रार्थना करें। दुःखों और असफलताओं, उत्सवों और खुशियों के विषय में प्रार्थना करें। व्यवस्थाविवरण 6:4-9 के शब्दों को निजी बनाएँ, उन्हें समर्पण और निवेदन की प्रार्थना बनाएँ।

पाठ सम्बन्धी नियत कार्य

(1) व्यवस्थाविवरण 6:4-9 को याद करें। अगली कक्षा की शुरुआत में, परिच्छेद को अपनी स्मृति से लिखें या दोहराएँ।

(2) व्यवस्थाविवरण 6:1-9 के अनुसार, परमेश्वर हमसे चार चीज़ें चाहता है। इन चार क्षेत्रों में से प्रत्येक में प्रार्थनापूर्वक और ईमानदारी से अपना मूल्यांकन करें।

हमें ये काम करने हैं:

- अपने पूरे मन, प्राण और शक्ति से यहोवा से प्रेम करना (आयत 5)।
- परमेश्वर के वचन को अपने मन में रखना (आयत 6)।
- अपने बच्चों को लगन से सिखाना कि परमेश्वर के वचन का पालन कैसे करें (आयत 7)।
- परमेश्वर के वचन को निरन्तर हमारे मन में और हमारे सामने रखना (आयत 8-9)।

प्रत्येक के बारे में एक व्यक्तिगत् प्रार्थना अनुच्छेद लिखें। (आपको इस लेख को अपने कक्षा के अगुवे के साथ साझा करने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु आपको यह सूचना देनी होगी कि आपने सत्र कार्य पूरा कर लिया है।)

(3) अब्राहम और सारा के जीवन से हम प्रतीक्षा के लम्बे समय के बारे में सीखते हैं। इन प्रश्नों के बारे में सोचें:

- आपको कब परमेश्वर के समय की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता पड़ी है? प्रतीक्षा के इस समय से आपने क्या सीखा?
- आप परमेश्वर के वचन की प्रतिज्ञाओं पर कितना भरोसा करते हैं? क्या आप अभी किसी प्रतिज्ञा से जूझ रहे हैं? क्या उस संघर्ष का असर आपके परिवार पर पड़ रहा है? कैसे?
- क्या आपने कभी परमेश्वर पर भरोसा किए बिना अपने लिए या अपने परिवार के लिए कुछ करने का प्रयास किया है? उसके क्या परिणाम हुए?
- अधीरता और विश्वास की कमी परिवारों पर नकारात्मक प्रभाव कैसे डालती है?

इस विषय के उत्तर में कुल तीन परिच्छेद लिखें। (आपको इस लेख को अपने कक्षा के अगुवे के साथ साझा करने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु आपको यह सूचना देनी होगी कि आपने सत्र कार्य पूरा कर लिया है।)

पाठ 3

विवाह सम्बन्धी बाइबल आधारित सिद्धान्त

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में, छात्र यह करने लगेंगे:

(1) विवाह के लिए परमेश्वर की योजना और उद्देश्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहना।

(2) मसीही विवाह के लिए परमेश्वर के सिद्धान्तों के प्रति व्यक्तिगत् आज्ञाकारिता के लिए प्रतिबद्ध होना।

(3) दूसरों को बाइबल आधारित विवाह के बारे में सिखाने के लिए तैयार हो जाना।

रॉबर्टसन मैकक्विलकिन, ए प्रॉमिस कीपर

डॉ. रॉबर्टसन मैकक्विल्किन ने 12 वर्षों तक जापान में एक मिशनरी के रूप में कार्य किया। बाद में वह कोलम्बिया इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के अध्यक्ष बने। वह एक लेखक, वक्ता और शिक्षक के रूप में प्रख्यात थे। उनकी पत्नी म्यूरियल एक ऐसे मस्तिष्क रोग से पीड़ित थीं, जो व्यक्ति की सोचने, याद रखने और संवाद करने की क्षमता को प्रभावित करता है। जब बीमारी इतनी बढ़ गई कि म्यूरियल की निरन्तर देखभाल की आवश्यकता पड़ने लगी, तब डॉ. मैकक्विलकिन ने अपनी पत्नी की देखभाल के लिए विश्वविद्यालय के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया। उन्होंने कहा कि वह उस प्रतिज्ञा को निभा रहे हैं, जो उन्होंने विवाह के समय उनसे की थी। उनका मानना था कि अपनी पत्नी की देखभाल करना विश्वविद्यालय के अध्यक्ष पद पर बने रहने से अधिक महत्वपूर्ण है।

परमेश्वर द्वारा विवाह की स्थापना

परमेश्वर ने विवाह की स्थापना उस पहले पुरुष और स्त्री के लिए की थी, जिन्हें उसने बनाया था। विवाह को परमेश्वर ने ठीक वैसा ही बनाया था, जिसकी लोगों को आवश्यकता थी। इसे ठीक मानव स्वभाव के लिए बनाया गया था। हर उस वस्तु में जिसे परमेश्वर ने रचा है और हर उस बात में जिसकी वह माँग करता है, वह सदा हमारे लिए सबसे उत्तम ही चाहता है (व्यवस्थाविवरण 6:24)। परमेश्वर की मंशा था कि विवाह के लिए उसकी योजना प्रत्येक पति-पत्नी को सर्वोत्तम भावनात्मक, सम्बन्धपरक और आत्मिक कल्याण प्रदान करे।

परमेश्वर ने कहा कि विवाह में एक पुरुष और स्त्री अपने माता-पिता को छोड़कर एक साथ मिले रहेंगे। विवाह दो लोगों को एक ऐसी मित्रता और साझेदारी में बाँधता है, जो किसी भी अन्य मानवीय सम्बन्ध से अधिक मजबूत और घनिष्ठ होती है। विवाह केवल दो लोगों का एक सीमित भागीदारी में एक साथ होना नहीं है। उनके जीवन को इस तरह मिला दिया गया है कि

एक रीति से वे एक ही व्यक्ति के समान बन गए हैं। यह उनके व्यक्तिगत् व्यक्तित्व का नष्ट होना नहीं, बल्कि एक विशेष एकता है।

बाइबल आधारित विवाह

बाइबल आधारित विवाह एक सुन्दर चीज है। परन्तु जो दम्पत्ति इसकी सुन्दरता का अनुभव करना चाहते हैं और इसकी भलाइयों का स्वाद लेना चाहते हैं, उन्हें इस बात की जाँच करनी चाहिए कि पवित्रशास्त्र इसके बारे में क्या सिखाता है, और फिर वे जो सीखते हैं, उन्हें उसका पालन करना चाहिए। एक संतोषजनक विवाह के लिए प्रयास और बलिदान की आवश्यकता पड़ती है।

बाइबल आधारित विवाह संगति के लिए है

उत्पत्ति परमेश्वर द्वारा विवाह की सृष्टि का वर्णन करती है। उस वृत्तान्त का प्रत्येक भाग विवाह को गरिमा प्रदान करता है।

> तब यहोवा परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊँगा जो उससे मेल खाए" (उत्पत्ति 2:18)।

जिस प्रकार परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा संगति में हैं, उसी प्रकार परमेश्वर ने हमें सामाजिक होने के लिए रचा है। हम बातचीत के लिए बने हैं। हम घनिष्ठता और संगति के लिए बनाए गए हैं। परमेश्वर ने कहा कि अकेले रहना अच्छा नहीं है!

परमेश्वर ने आदम की एक पसली ली और उसे लेकर एक सुन्दर स्त्री में बदल दिया, एक और व्यक्ति—जो परमेश्वर के स्वरूप में समान रूप से बनाया गया, मूल्य में समान, परन्तु रचना में भिन्न—जिसने आदम को पूरा किया। स्त्री को "सृष्टिकर्ता के अन्तिम और सबसे सिद्ध कार्य के रूप में मनुष्य के लिए विशेष सम्मान के साथ उसके पास लाया जाता है।"[12]

विवाह एक आनन्दमयी मिलन होना चाहिए।

जब आदम ने कहा, "अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी है" (उत्पत्ति 2:23) तो वह सम्मान और प्रसन्नता व्यक्त कर रहा था। आदम ने यह नहीं कहा, "आखिरकार, एक गुलाम! अब मेरे पास मेरे कपड़े धोने, मेरा खाना पकाने, मेरी पीठ की मालिश करने और मेरे काम करने के लिए कोई है!" नहीं, आदम ने कहा, "आखिरकार, एक ऐसा सहायक जो मुझे पूरा करता है!"

---

[12] चार्ल्स एलिकोट, एड., *अंग्रेज़ी पाठकों के लिए एलिकोट का टीका (*Charles Ellicot, ed., *Ellicot's Commentary for English Readers.)* (उत्पत्ति 2:22 पर टिप्पणियाँ)। 29 दिसम्बर 2020 को https://biblehub.com/genesis/2-22.htm#commentary से लिया गया।

.विवाह समान लोगों का मिलन होना चाहिए।

> … एक सहायक बनाऊँगा जो उससे मेल खाए (उत्पत्ति 2:18)।

परमेश्वर ने स्त्री को पुरुष से पूरी तरह मेल खाने और उसे पूरा करने के लिए बनाया है।

मैथ्यू हेनरी हमें याद दिलाते हैं, "स्त्री आदम की बगल की पसली से बनी थी; न तो उसके सिर से कि उस पर प्रभुता करे, और न उसके पैरों से कि उसे रौंदा जाये, परन्तु उसे उसकी पसली से इसलिये बनाया गया है कि वह उसके समान हो, कि उसकी बाँह के नीचे सुरक्षित रहे, और उसके हृदय कि उसकी प्रिय बन जाये।"[13] स्त्री न तो पुरुष से नीची थी और न ही श्रेष्ठ, बल्कि उसके तुलनीय थी।

.विवाह एक वाचा का मिलन होना चाहिए।

> इस कारण पुरुष अपने माता–पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे एक ही तन बने रहेंगे। (उत्पत्ति 2:24)

मजबूत विवाह निरन्तर प्रेमी भावनाओं (भावनाएँ स्थिर नहीं होती हैं), या खुशी, (हालाँकि स्वस्थ विवाह आनन्द लाते हैं), या व्यक्तिगत् सुख (हालाँकि मजबूत विवाह सुखद होते हैं) पर निर्भर नहीं होते हैं। विवाह के अद्भुत लाभ विवाह को मजबूत नहीं *बनाते;* वे एक मजबूत विवाह का *परिणाम* होते हैं। विवाह की वाचा अटल नींव पर स्थापित होती है—यानी एक पुरुष और एक महिला जो जीवन भर एक-दूसरे के लिए विशेष रूप से प्रतिबद्ध होते हैं।

विवाह एक पारदर्शी, भरोसेमंद, स्वीकार करने वाला सम्बन्ध है - "और आदम और उसकी पत्नी दोनों नंगे थे, पर लजाते न थे" (उत्पत्ति 2:25)। क्योंकि पाप ने अभी तक पहले जोड़े की निर्दोषता को भ्रष्ट नहीं किया था, उनका विवाह दोषरहित, लज्जारहित और भयरहित था। नया नियम हमें बताता है, "विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, और विवाह का बिछौना निष्कलंक रहे" (इब्रानियों 13:4)।

जहाँ असुरक्षा, अविश्वास, संदेह या भय हो, जहाँ पति-पत्नी विवाह के प्रति एक-दूसरे की प्रतिबद्धता के बारे में आश्वस्त न हों, वहाँ एक मजबूत विवाह का अस्तित्व नहीं होता है। मजबूत विवाहों के लिए एक प्रतिज्ञा की आवश्यकता होती है, जिसका अंत केवल तब होता है, जब एक पति या पत्नी की मृत्यु हो जाती है (रोमियों 7:1-2)।

परमेश्वर की मंशा यह है कि विवाह एक पुरुष और एक स्त्री के बीच आजीवन वाचा बने (मत्ती 19:3-6)। पौलुस ने कहा यदि

---

[13] मैथ्यू हेनरी, Matthew Henry, ***मैथ्यू का सम्पूर्ण बाइबल टीका*** *(Matthew Henry's Commentary on the Whole Bible)* (उत्पत्ति 2:21-25 पर टिप्पणियाँ)। 31 जुलाई, 2023 को https://studylight.org/commentaries/eng/mhm/genesis-2.html से लिया गया।

विश्वासियों के अविश्वासी जीवन साथी उनसे अलग हो जाएँ तो वे किसी बन्धन में नहीं हैं(1 कुरिन्थियों 7:15), परन्तु एक विश्वासी को अविश्वासी जीवनसाथी से अलग होने का प्रयास नहीं करना चाहिए (1 कुरिन्थियों 7:12-14, 16)। पौलुस ने पहले लिखा था कि प्रभु ने भी यही कहा था: विश्वासियों को अपने जीवनसाथी को छोड़ने/अलग होने का विकल्प नहीं चुनना चाहिए, परन्तु यदि वे ऐसा करते हैं, तो उन्हें किसी और से विवाह नहीं करनी चाहिए (1 कुरिन्थियों 7:10-11, मत्ती 5:31-32, मत्ती 19:9)।

सम्बन्ध कठिन होने पर भी वाचा का प्रेम स्वयं को देने वाला, सम्मानजनक और सुन्दर होता है (1 कुरिन्थियों 13)। कमजोर प्रतिबद्धता अस्थायी प्रयास, भावनात्मक अलगाव, मन का भटकाव और परीक्षा को लाती है।

एक पति तब वाचा के प्रेम को जीता जब वह अपनी दुल्हन को तब भी नहीं छोड़ता जब वह गैरज़िम्मेदार या अपमानजनक या बीमार होती है। एक पत्नी वाचा के प्रेम को तब जीती है, जब वह मसीह के लिए अपने पति का सम्मान करना और उसकी आज्ञा का पालन करने का चुनाव है, तब भी जब उसका पति उससे प्रेम न करता हो।

उसका प्रेम पत्नी के सम्मान को जीतता है, और उसका सम्मान पति के प्रेम को जीतता है। और वे निरन्तर बढ़ते रहते हैं!

► यदि लोग यह सोचकर विवाह करते हैं कि यदि वे विवाह से अप्रसन्न हैं, तो बाद में वे अपना निर्णय बदल सकते हैं, तो इसके परिणामस्वरूप कौन सी समस्याएँ उत्पन्न होंगी? जब कोई व्यक्ति यह मानता है कि उसका विवाह स्थायी है, तो पूर्ण प्रतिबद्धता से क्या फर्क पड़ता है?

बाइबल आधारित विवाह यौन संतुष्टि और प्रजनन का स्थान है

> परमेश्वर ने यौन सम्बन्धों को पूरी तरह से आनन्ददायक और अनोखे रूप से शक्तिशाली बनाया है। ये शारीरिक, भावनात्मक और आत्मिक रूप से एकता लाने का एक कार्य होते हैं। एक स्वस्थ यौन जीवन न केवल आनन्ददायक होता है और एकता लाता है, बल्कि यह विवाह सम्बन्ध को सुखद भी बनाता है। जो लोग बाइबल की यौन नैतिकता का पालन करना चाहते हैं, उनके लिए यौन सम्बन्ध परमेश्वर का दिया हुआ एक उपहार है, जिसका विवाह के दौरान पूरी तरह से आनन्द लिया जा सकता है।[14]

► छात्रों को समूह के लिए 1 कुरिन्थियों 7:1-5 और इब्रानियों 13:4 पढ़ना चाहिए।

1 कुरिन्थियों की आयतें हमें बताती हैं कि विवाह का एक उद्देश्य यौन इच्छाओं को तृप्त करना है। पति-पत्नी ने स्वयं को एक-दूसरे को सौंप दिया है और अपने शरीर पर स्वामित्व का दावा छोड़ दिया है। इसका अर्थ यह है कि एक विवाहित व्यक्ति

---

[14] Spiritual Health and Porn Addiction “आत्मिक स्वास्थ्य और अश्लील सामग्री की लत,” नामक लेख से https://thefreedomfight.org/health/porn-addiction-and-spiritual-health/ 31 जुलाई 2023 को लिया गया।

को केवल अपनी इच्छानुसार यौन सम्बन्ध बनाने की इच्छा नहीं रखनी चाहिए, बल्कि उसे अपने जीवनसाथी की इच्छाओं के प्रति भी संवेदनशील होना चाहिए। ये आयतें हमें यह नहीं बतातीं कि कोई व्यक्ति जीवनसाथी की इच्छा के विरुद्ध संतुष्टि की मांग कर सकता है कि नहीं। इसके बजाय, ये आयतें प्रत्येक व्यक्ति को दूसरे की आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायी होने के लिए कहती हैं।

यह परिच्छेद हमें बताता है कि विवाहित लोगों को एक-दूसरे को इस सौभाग्य से वंचित नहीं करना चाहिए। उपवास के साथ-साथ थोड़े समय के लिए यौन संयम उचित है, परन्तु लम्बे समय तक अलगाव अतृप्त इच्छाओं के कारण परीक्षा का कारण बनेगा। कभी-कभी दंपत्ति कई महीनों या उससे अधिक समय तक अलग रहने का चुनाव करते, क्योंकि उनमें से कोई किस दूर के स्थान पर काम करने या अध्ययन करने चला जाता है। ऐसा निर्णय लेने से पहले, उन्हें विचार करना चाहिए कि ऐसी योजना परमेश्वर की योजना से मेल खाती है या नहीं। लम्बे समय तक अलगाव के कारण उन्हें परेशानी हो सकती है।

कुछ लोगों को ऐसी जीवनशैली जीना अच्छा लगता है, जिसमें बच्चे शामिल नहीं हैं, परन्तु बाइबल सिखाती है कि जब माता-पिता के बच्चे भी भक्ति करने वाले होते हैं, तो परमेश्वर इससे प्रसन्न होता (मलाकी 2:15)। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर केवल प्रजनन नहीं चाहता, बल्कि *भक्ति करने वाली सन्तान* चाहता है। परमेश्वर ने माता-पिता को अपने बच्चों को मसीह का अनुसरण करना सिखाने के लिए बुलाया है।

बाइबल आधारित विवाह यीशु मसीह के लिए है

► छात्रों को समूह के लिए 1 पतरस 3:1-7 और इफिसियों 5:22-33 पढ़ना चाहिए। समूह को इस चर्चा के दौरान इन परिच्छेदों को जाँच के लिए खुला रखना चाहिए।

इफिसियों 5:30-32 में, पवित्र आत्मा विवाह के गहरे अर्थ को प्रकट करता है, जो यीशु के आने तक छिपा हुआ था। विवाह एक सांसारिक चित्र है—यानी यीशु मसीह और उसकी कलीसिया के बीच के सम्बन्ध का—एक प्रतिबिम्ब है।

इस खण्ड की शुरुआत पौलुस ने विश्वासियों को आत्मा से परिपूर्ण होने के लिए प्रोत्साहित करते हुए की थी (इफिसियों 5:18)। इसी सन्दर्भ में उसने विवाह पर निम्नलिखित निर्देश दिए हैं।

आत्मा से भरी दुल्हन प्रभु में अपने दूल्हे (उसका "सिर") के वैसे ही *अधीन* रहेगी, जैसे विश्वासी यीशु के अधीन रहते हैं (इफिसियों 5:24, 32; 1 पतरस 3:1 को भी देखें)। इस तरह वह यीशु और अपने पति के प्रति सम्मान दिखाती है। पत्नी से अपेक्षा की जाती है कि वह अपने पति की अगुवाई को स्वीकार करे भले ही पति विश्वासी न हो। यदि वह ऐसा करती है, तो उसके उद्धार न पाए हुए पति के विश्वासी बनने की अधिक सम्भावना होती है।

प्रत्येक पत्नी के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह अपनी अधीनता में प्रभु पर ध्यान रखे। वह केवल परमेश्वर के लिए ही अधीन रहती है, न कि केवल अपने पति के लिए। उसकी दृष्टि यीशु पर है, केवल वही निष्कलंक है। एक पत्नी का अपने पति के प्रति स्वेच्छा से समर्पण करना यीशु की आराधना का एक कार्य है।

प्रेम के समान, बाइबल आधारित समर्पण को ज़बरदस्ती नहीं थोपा जा सकता। बाइबल आधारित समर्पण एक उपहार है जिसे पत्नियाँ अपने पतियों को मसीह के प्रति भक्तिभाव के कारण देती हैं (इफिसियों 5:33)। हर बात में समर्पण यीशु की आराधना का एक कार्य है।[15]

आत्मा से भरे जीवन के एक भाग के रूप में (इफिसियों 5:18-21), एक पत्नी का अपने पति के अधीन रहना उसके लिए आदर से भरा कार्य है (इफिसियों 5:33)। नम्र और शान्त मन मिलने वाला यह आदर परमेश्वर की दृष्टि में अत्याधिक अनमोल है (1 पतरस 3:4)।

आत्मा से भरा हुआ दूल्हा अपनी दुल्हन से वैसे ही *प्रेम* करेगा जैसे यीशु अपने कलीसिया से प्रेम करता है (इफिसियों 5:25)। दूल्हे को उससे वैसे ही प्रेम करना चाहिए जैसे वह अपने शरीर से करता है (इफिसियों 5:28-29)। उसे उसी आत्मा से भरे आत्म-बलिदान को प्रकट करना चाहिए जैसा कि यीशु ने अपनी कलीसिया के प्रति तब प्रकट किया था, जब उसने उसके लिए स्वयं को दे दिया। यह उसका परमेश्वर के अधीन रहने का कार्य है (इफिसियों 5:21)। एक टीकाकार ने इसे इस प्रकार कहा है:

> जैसे उसने (यीशु ने) कलीसिया को बचाने के लिए स्वयं को क्रूस पर दुःख भोगने के लिए दे दिया, वैसे ही हमें स्वयं का इनकार और[कड़ा परिश्रम और कठिनाइयों] को सहन करने के लिए तैयार रहना चाहिए, ताकि हम अपनी पत्नी की खुशी को बढ़ावा दे सकें। पति का कर्तव्य है कि वह उसके भरण-पोषण के लिए पूरी लगन से काम करे; यानी उसकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए; बीमारी में उसकी देखभाल करने के लिए, यदि आवश्यक हो, तो स्वयं को आराम और सहजता से वंचित करे; खतरे में उसकी रक्षा करे; यदि वह[खतरनाक स्थिति] में है, तो उसका बचाव करे; जब वह चिड़चिड़ी हो तो उसकी सह ले; जब वह उसे दूर कर रही हो तो उससे चिपक जाए; जब वह आत्मिक संकट में हो तो उसके साथ प्रार्थना करे; और उसे बचाने के लिए मरने के लिए तैयार रहे। ऐसा क्यों नहीं होना चाहिए? यदि उनका जहाज़ टूट गया है, और एक ही तख्ता है, जिस पर सुरक्षित रहा जा सकता है, तो क्या उसे अपनी पत्नी को उस पर बिठाने के लिए तैयार नहीं होना चाहिए, कि वह उसे सभी खतरों से सुरक्षित देख सके? परन्तु और भी बहुत कुछ है··· एक पति को यह एहसास होना चाहिए कि उसकी पत्नी के उद्धार की खोज करना उसके जीवन का एक बड़ा उद्देश्य होना चाहिए। उसे अपनी पत्नी को वह सब प्रदान करना चाहिए जिसकी उसे अपनी आत्मा के लिए आवश्यकता हो सकती है... और उसे उदाहरण स्थापित करना है; यदि उसे सम्मति की आवश्यकता हो तो वह उसे सम्मति दे; और वह उसके लिए उद्धार के मार्ग को यथासम्भव आसान बनाए। यदि किसी पति में उद्धारकर्ता की

---

[15] बाइबल आधारित अधीनता के विषय की अधिक जानकारी के लिए, Shepherds Global Classroom पर उपलब्ध पाठ 10 *आत्मिक रचना* देखें।

> आत्मा और आत्म-त्याग है, तो वह अपने परिवार के उद्धार को बढ़ावा देने के लिए किसी भी बलिदान को बड़ा नहीं समझेगा।[16]

दूल्हे को वैसे ही अपनी दुल्हन की पवित्रता की खोज करनी है, जैसे मसीह ने अपनी दुल्हन, कलीसिया को पवित्र किया था (इफिसियों 5:26-27)।

1 पतरस 3:7 में लिखा है कि एक पति को अपनी पत्नी के साथ समझदारी से रहना चाहिए, यानी उसे समझने का पूरा प्रयास करना चाहिए। उसकी आवश्यकताओं को समझने के लिए उसे उसका अध्ययन करना चाहिए। इस आयत में स्त्री को “निर्बल पात्र” कहा गया है। एक पत्नी को अपने पति के ध्यान की आवश्यकता होती है। उसे न केवल शारीरिक हानि से बल्कि चिन्ता और भावनात्मक तनाव से भी उसकी रक्षा करनी चाहिए।

पति को अपनी पत्नी की उन्नति के लिए जो भी साधन आवश्यक हो वह उपलब्ध करवाना चाहिए जैसे कि: विश्वासयोग्यता, बिना शर्त का प्रेम, समझ, प्रार्थना, सम्मति, शिक्षा और दया।

जब पति अपनी पत्नी के साथ इतना प्रेम से व्यवहार करेगा तो उसे इसका बदला खुशी से मिलेगा। पौलुस ने कहा है कि, “जो अपनी पत्नी से प्रेम करता है वह अपने आप से से प्रेम करता है” (इफिसियों 5:28)। जो पति अपनी पत्नियों से इस स्व-बलिदानी तरीके से प्रेम करते हैं, उन्हें परमेश्वर से कहीं अधिक प्रतिफल मिलता है, और इस बात की सबसे अधिक सम्भावना होती की अपनी पत्नी के सम्मान, स्नेह और विश्वासयोग्यता मिलेगी।

► एक पति को अपनी पत्नी को आत्मिक सहायता प्रदान करने के लिए कौन से विशिष्ट काम करने चाहिए?

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि इन आयतों में आज्ञाएँ कैसे दी गई हैं। पति को अपनी पत्नी पर अधिकार जमाने के लिए नहीं कहा गया है। पत्नी को अपने पति की आज्ञा मानने के लिए कहा गया है, परन्तु पति को यह नहीं कहा गया कि वह अपनी आज्ञा मनवाए। उसे अपनी पत्नी से प्रेम करने और उसकी देखभाल के लिए आवश्यक त्याग करने के लिए कहा गया है। इसी तरह, पत्नी को अपने पति से देखभाल की माँग करने के लिए नहीं कहा गया है; उसे उसका सम्मान करने के लिए कहा गया है।

पति की प्राथमिकता अपना दबदबा बनाए रखना नहीं, बल्कि प्रेम से अपनी पत्नी की देखभाल करना होना चाहिए। पत्नी की प्राथमिकता अपने लिए देखभाल की माँग करना नहीं बल्कि अपने पति का सम्मान करना होना चाहिए।

प्रेरित पतरस ने पति को चेतावनी दी है कि यदि वह अपनी पत्नी की ठीक से देखभाल नहीं करेगा तो उसकी प्रार्थनाएँ रुक

---

[16] Albert Barnes अल्बर्ट बार्न्स, *सम्पूर्ण बाइबल पर बार्न्स की टिप्पणियाँ (Barnes' ' Notes on the Whole Bible.)* (इफिसियों 5:25 पर टिप्पणियाँ)। 31 जुलाई, 2023 को https://studylight.org/commentaries/eng/bnb/ephesians-5.html से लिया गया।

जाएँगी। पौलुस और पतरस के वचनों से हम देख सकते हैं कि जो व्यक्ति अपनी पत्नी की उतनी परवाह नहीं करता, जितनी उसे करनी चाहिए, वह परमेश्वर से उतना प्रेम नहीं करता जितना उसे करना चाहिए। जो स्त्री अपने पति का आदर नहीं करती, वह परमेश्वर का वैसे आदर नहीं करती, जैसे उसे करना चाहिए। **विवाह में हमारा व्यवहार परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध को प्रभावित करता है।**

विवाह का स्थायित्व

परमेश्वर ने विवाह को स्थायी होने के लिए बनाया है। विवाह में, एक पुरुष और स्त्री जीवन भर एक-दूसरे के प्रति विश्वासयोग्य रहने की प्रतिज्ञा करते हैं।

बाइबल में फरीसियों से हुई एक बातचीत के दौरान कहे गए, यीशु के वचन दर्ज किए गए हैं।

► एक छात्र को समूह के लिए मत्ती 19:3-8 पढ़ना चाहिए।

यीशु ने कहा कि विवाह के लिए परमेश्वर की मंशा है कि वह स्थायी हो। उसने कहा कि तलाक की व्यवस्था उन लोगों के लिए बनाई गई है, जो परमेश्वर के पीछे नहीं चलते।

ऐसे बहुत से कारण है, जिनसे परमेश्वर ने विवाह को स्थायी होने के लिए बनाया है, उनमें से कुछ के विषय में हमने पिछले सत्र में बात की थी। विवाह के स्थायी होने का एक अन्य कारण बच्चों की खातिर है। विवाह के लिए परमेश्वर की योजना का अनुसरण करने से बच्चों के पालन-पोषण के लिए सर्वोत्तम वातावरण का निर्माण होता है। जब माता-पिता अपने विवाह और परिवार में परमेश्वर के सिद्धान्तों का पालन करके उसका आदर करते हैं, तब वे धर्मी बच्चों का पालन-पोषण करने में सक्षम हो जाते हैं (मलाकी 2:15)।

परमेश्वर ने मनुष्य जीवन को इस रीति से बनाया है कि बच्चों को वयस्क होने में कई वर्ष लगते हैं। इस समय के दौरान, बच्चे सुरक्षा, देखभाल, और प्रशिक्षण के लिए माता-पिता पर निर्भर रहते हैं। यह पशुओं से भिन्न है, जो एक या दो वर्ष में ही परिपक्व हो जाते हैं। लोगों को परिपक्व चरित्र विकसित करने के लिए अधिक समय की आवश्यकता पड़ती है। परमेश्वर ने परिवार को बच्चों पालन-पोषण करने के साधन के रूप में बनाया है। समाज की बहुत सी समस्या विश्वासयोग्य माता-पिताओं की कमियों वाले परिवारों से आती हैं।

विवाह में लोगों को एक दूसरे के लिए अपने जीवन को समर्पित करने की प्रतिज्ञा करने की आवश्यकता पड़ती है। हर संस्कृति में ऐसे तरीके और रस्में होती हैं, जो दिखाती हैं कि विवाह एक गम्भीर प्रतिबद्धता है। वह रस्म हमेशा एक पुरुष और स्त्री के सार्वजनिक रूप से यह कहने का तरीका होती हैं कि वे इस अजीवन वादे को कर रहे हैं।

अधिकतर सरकारें विवाहों के ब्यौरे रखती हैं। विवाह के कानून सम्पत्ति के स्वामित्व, बच्चों की अभिरक्षा, और विरासत पर प्रभाव डालते हैं।

यहाँ विवाह की ऐसी शपथों का एक उदाहरण दिया गया है, जिन्हें विवाहों में इस्तेमाल किया जाता है:

> मैं तुम्हें अपने विवाहित [पति/पत्नी] के रूप में स्वीकार करता हूँ, मैं आज से लेकर उस दिन तक जब तक कि परमेश्वर के पवित्र विधान के अनुसार मृत्यु हमें अलग न करे भले और बुरे समय में, अमीरी और गरीबी में, बीमारी में और स्वास्थ्य में, तुमसे प्रेम करूँगा और तुम्हें सम्भाले रखूँगा; और इसके लिए मैं अपने आप को तुम्हें सौंपने का वचन देता हूँ।

प्रेम भरी भावनाएँ हमेशा बनी नहीं रहेंगी। एक विवाह ऐसी निजी भावनाओं पर आधारित नहीं हो सकता जो बदल सकती हैं। विवाह की शपथों का अर्थ है कि एक पुरुष और एक स्त्री जब तक जीवन हैं, तब तक वे एक-दूसरे के प्रति विश्वासयोग्य होने की प्रतिज्ञा करते हैं, और यह प्रतिज्ञा की परिस्थिति पर आधारित नहीं है।

विवाह के स्थायित्व के कारण मसीहियों को कभी भी ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिए, जिससे यह लगे कि वे सम्बन्ध की समस्याओं के कारण अपने विवाह को समाप्त करने के लिए तैयार हैं। एक व्यक्ति को यह नहीं कहना चाहिए कि, “काश मैंने तुमसे विवाह ही न किया होता,” या “शायद हमें तलाक ले लेना चाहिए।” कई बार ऐसी बातें दूसरे व्यक्ति को मजबूर करके यह दिखाने का प्रयास होता है कि वह वैवाहिक जीवन के विषय को लेकर गम्भीर है। एक व्यक्ति सोचता है कि किसी कठोर बात के कारण दूसरे को अपने साथी को खुश करने लिए अधिक प्रयास करना होगा, परन्तु ऐसा बहुत कम होता है। इसके बजाय, अगला व्यक्ति यह कहने के द्वारा अपना बचाव करता है, “ठीक है, यदि तुम चाहो तो हम तलाक ले सकते हैं।” फिर दोनों यह संकेत करते हैं के वे अपनी निजी इच्छाओं के कारण अपने विवाह को समाप्त करने के लिए तैयार हैं, और सम्बन्ध और भी बिगड़ जाता है।

► एक विवाह की शुरुआत शपथ से क्यों होती है, न कि सिर्फ प्रेम के कथन से?

► क्या एक व्यक्ति यह बताना चाहेगा कि कैसे उसने लाभों की आशा में विवाह किया था, पर उसे एहसास नहीं था कि प्रतिबद्धता आवश्यक है?

विवाह मसीही भागीदारी है

►एक छात्र को समूह के लिए 2 कुरिन्थियों 6:14-18 पढ़ना चाहिए।

ये आयतें बताती हैं कि यदि एक विश्वासी का अविश्वासियों से अधिक निकट सम्बन्ध होता है, तो उसकी प्रतिबद्धता में बाधा आती है। जिस तरह एक विश्वासी शैतान की पूजा करने वाले व्यक्ति के साथ मिलकर पूजा नहीं कर सकता, ठीक उसी तरह वह अविश्वासियों की जीवनशैली और प्राथमिकताओं का अनुसरण नहीं कर सकता। यह चेतावनी व्यावसायिक भागीदारी सहित विभिन्न प्रकार के सम्बन्धों पर भी लागू हो सकती है।

विवाह सबसे निकटतम मानवीय भागीदारी है। एक विश्वासी को किसी ऐसे व्यक्ति से विवाह करने के बारे में भी नहीं सोचना

चाहिए, जो समर्पित विश्वासी नहीं है (1 कुरिन्थियों 7:39)। एक अविश्वासी से विवाह करने वाले विश्वासी को बच्चों के पालन-पोषण और जीवनशैली सम्बन्धी निर्णय लेने में अत्याधिक दुःख और बहुत सी बाधाओं का अनुभव होगा।

यदि पति और पत्नी दोनों ही विश्वासी हैं, पर वे अलग-अलग कलीसियाओं से आते हैं, उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनमें महत्वपूर्ण आत्मिक विषयों पर सहमति हो। उन्हें योजना बनानी चाहिए कि वे अपने विवाह के बाद एक ही कलीसिया का हिस्सा होंगे।

ऐसे तरीके जिनसे दम्पत्तियाँ अपने विवाह को मजबूत बना सकते हैं।

(1) **उन्हें परमेश्वर की मूल योजना का आनन्द मनाना चाहिए और विवाह के भीतर उनकी अनोखी भूमिकाओं की सराहना करनी चाहिए।**

एक पति को याद रखना चाहिए कि उसकी पत्नी परमेश्वर का एक उपहार है, यानी एक सहायक जो उसे पूरा करती है। उसे उसकी सुरक्षा और उसके आत्मिक, भावनात्मक और शारीरिक कल्याण के लिए अपना जीवन देना होगा। उसे उसके प्रति कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए और तब भी उससे प्रेम करना चाहिए जब वह सबसे कम योग्य हो, उसे यह एहसास होना चाहिए केवल परमेश्वर ही उसमें उस बदलाव ला सकता है, जिनकी आवश्यकता है। परमेश्वर उसके पति की आज्ञाकारिता और विश्वास का आदर करेगा।

एक पत्नी को परमेश्वर के निर्णय का सम्मान करना चाहिए कि परमेश्वर ने उसके पति को उसका सिर बनाया है, उसे अपने पति का हर सम्भव तरीके से आदर करना चाहिए और उसकी अगुवाई का आदर करना चाहिए। उसे तब भी समर्पण और आदर करने का चुनाव करना चाहिए, जब वह गलतियाँ करता है और आदर के सबसे कम योग्य है, उसे प्रार्थना करनी चाहिए कि परमेश्वर उसमें वे बदलाव करेगा जिनकी उसे आवश्यकता है। परमेश्वर एक पत्नी की आज्ञाकारिता और विश्वास का आदर करेगा।

(2) **विवाहित दम्पत्तियों को सच्ची आत्मिक और शारीरिक घनिष्ठता विकसित करनी चाहिए।**

उन्हें बिना किसी भय, आलोचना, दूसरे से तुलना, शोषण, स्वार्थी लालसा, या अनादर के एक दूसरे को *जानने* का प्रयास करना चाहिए। उन्हें परमेश्वर और एक-दूसरे के सामने पारदर्शिता और खराई से जीना चाहिए।

(3) **विवाहित दम्पत्तियों को उस समय परमेश्वर के अनुग्रह के उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए, जब वे पैमाने पर खरे न उतरते हों।**

जब आदम और हव्वा पाप में गिर गए और उन्हें लज्जा और पछतावा महसूस हुआ, तब परमेश्वर ने उनकी असफलताओं को दूर करने के लिए अपनी सामर्थ्य प्रकट की। परमेश्वर ने आदम और हव्वा की नग्नता को ढकने हेतु एक वस्त्र बनाने के लिए एक पशु की बलि दी (उत्पत्ति 3:21)। परमेश्वर का यह प्रेमपूर्ण कार्य अनुग्रह और मसीह के द्वारा छुटकारे की परमेश्वर की

प्रतिज्ञा की एक तस्वीर था। मसीह हमें क्षमा पाने और बहाल होने में सक्षम बनाता है। मसीह के के द्वारा, विवाहित दम्पत्तियाँ असफल होने के बाद भी बिना किसी लज्जा के घनिष्ठता में लौट सकते हैं।

उपसंहार

विवाह परमेश्वर की सृष्टि है, न कि मनुष्य की। इसलिए हमें निर्देशों के लिए परमेश्वर के पास जाना चाहिए न कि संसार या संस्कृति के पास। केवल वही जानता है कि हमारे विवाहों को मजबूत, स्थायी, और प्रतिफल पाने वाले कैसे बनाना हैं। परन्तु हम पवित्र आत्मा के बिना वह जीवनसाथी कभी नहीं बनेंगे जो कि हमें होना चाहिए।

सामूहिक चर्चा के लिए

► विवाह के बारे में ऐसा कौन सा सच है, जिसे अधिकतर लोग भूल जाते हैं?

► उन सिद्धान्तों की व्याख्या करें जिन्हें कलीसियाओं को विवाहों को मजबूत करने के लिए सिखाना चाहिए। आपके परिवेश में विशेष रूप से किस समझ की कमी है?

प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता,

हमें विवाह का अद्भुत उपहार देने के लिए धन्यवाद। तूने इसे जिस सुन्दर तरीके से बनाया है, उसके लिए धन्यवाद। हमारी सहायता कर कि हम तेरी योजना के अनुसार विवाह का अनुभव करने के लिए आवश्यक वचनबद्धता कर सकें।

उस प्रेम को प्रदर्शित करने में हमारी सहायता कर जो मसीह और कलीसियाओं के बीच के प्रेम के समान है।

हमारी सहायता कर कि हम एक दूसरे के प्रति सम्मान में हमारी संस्कृति की धारणाओं से परे चले जाएँ।

पवित्र आत्मा के उस कार्य के लिए तेरा धन्यवाद जो आनन्दमय, मजबूत सम्बन्धों को सम्भव बनाता है।

आमीन

पाठ सम्बन्धी नियत कार्य

(1) इस पाठ से ऐसे दो सिद्धान्त चुनें जो आपके लिए नए थे। उनमें से प्रत्येक को अपने शब्दों में समझाते हुए एक अनुच्छेद लिखें।

(2) नीचे सूचीबद्ध विषयों में से किसी एक पर एक संक्षिप्त प्रस्तुति तैयार करें। (कक्षा का अगुवा प्रत्येक छात्र को एक विषय सौंपे।) अगली कक्षा की शुरुआत में उस प्रस्तुति को साझा करें।

- विवाह में मिलन की परमेश्वर की योजना
- विवाह के लिए बाइबल के उद्देश्य
- विवाह-में-परमेश्वर प्रदत्त भूमिकाएँ और उन भूमिकाओं को पूरा करने के लिए आत्मा से भरे होने का महत्व
- विवाह का स्थायित्व

(3) यदि आप अविवाहित हैं, परन्तु भविष्य में विवाह करने की योजना बना रहे हैं, तो अपने भावी विवाह के लिए परमेश्वर के सिद्धान्तों का पालन करने की प्रतिबद्धता पर दो अनुच्छेद लिखें। यदि आप विवाहित हैं, तो अपने विवाह के लिए परमेश्वर के सिद्धान्तों का पालन करने की प्रतिबद्धता पर दो अनुच्छेद लिखें।

स्त्रियों का सम्मान करना

पाठ 4 को जारी रखने से पहले, **कक्षा को परिशिष्ट क का अध्ययन करके उस पर चर्चा करनी चाहिए।** यह स्त्रियों के सम्मान की एक संक्षिप्त चर्चा है, जो विवाह और परिवार से सम्बन्धित एक महत्वपूर्ण विषय है।

पाठ 4

लैंगिकता के विषय

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में, छात्र यह करने लगेंगे:

(1) वर्णन करना कि पतन ने मानव स्वभाव और यौन इच्छाओं को कैसे प्रभावित किया।

(2) व्यक्तिगत पहचान की व्याख्या करना और बताना कि यह व्यक्तिगत् नैतिकता से कैसे सम्बन्धित है।

(3) मानवीय लैंगिकता और यौन अनैतिकता के प्रति बाइबल के दृष्टिकोण को अपनाना।

(4) पाप से छूटकर अनैतिकता की परीक्षा के दौरान विजय का अनुभव करना।

(5) उन लोगों की सेवा करने के लिए तैयार हो जाएँगे जिन्हें सहायता और विजय की आवश्यकता है।

क्रिस्टोफर युआन

क्रिस्टोफर का पालन-पोषण संयुक्त राज्य अमेरिका में एक एशियाई-अमेरिकी परिवार में हुआ था। किशोरावस्था से ही वह स्त्रियों के बजाय पुरुषों के प्रति आकर्षण महसूस करने लगा। उसके माता-पिता अपने बेटे की रुचि से हैरान और लज्जित थे। एक जवान वयस्क के रूप में उसने अनगिनत पुरुषों के साथ सम्बन्ध बनाए। उसे सच्चा प्रेम और समर्पण मिलने की आशा थी, परन्तु हर सम्बन्ध अन्त में असफल रहा। वह लापरवाही से कई पुरुषों के साथ अनैतिक सम्बन्ध रखने लगा। क्रिस्टोफर के लिए सब कुछ तब बदलना शुरू हुआ जब उसकी माँ विश्वासी बन गई और उसने उसे वह प्रेम और अपनापन दिखाया, जिसे उसने पहले कभी अनुभव नहीं किया था। उसे यह एहसास होने लगा कि उसकी प्राथमिक पहचान परमेश्वर के स्वरूप में बना एक व्यक्ति है। उसने पश्चाताप किया और अपने जीवन के सभी पहलुओं को परमेश्वर को सौंप दिया। उसने परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध में पूर्णता और उद्देश्य पाया।

पतित मानवीय स्वभाव और पापी इच्छाएँ

जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा को बनाया, तो उसने उन्हें बिना किसी दोष या कमी के, हर तरह से परिपूर्ण बनाया (उत्पत्ति 1:31)। उनके स्वभाव में केवल वही इच्छाएँ थीं, जो उचित और भली थीं। उनके मन और शरीर भली-भाँति काम करते थे। फिर आदम ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने का चुनाव किया। जब उसने ऐसा किया, तो मानवीय स्वभाव बिगड़ गया (रोमियों 8:20-23)। मानव शरीर और मन प्रभावित हुए। यहाँ तक कि सबसे स्वस्थ, सबसे बुद्धिमान व्यक्ति भी पाप के परिणामों से प्रभावित होता है। पाप ने, जो कुछ उत्तम था, उसे स्थायी रूप से नुकसान पहुँचाया। मसीह के वापस आने तक

सृष्टि की कोई भी वस्तु पूरी तरह से ठीक नहीं होगी (1 कुरिन्थियों 15)।

हमारे मानवीय स्वभाव और भौतिक शरीर को जो नुकसान पहुँचा है, उसे देखते हुए हमें यह आशा नहीं करनी चाहिए कि हमारे शरीर की स्वाभाविक इच्छाएँ हमेशा सही और संतुलित रहेंगी। सच तो यह है कि हमारी बहुत सी इच्छाएँ असंतुलित होती हैं। लोग स्वाभाविक रूप से वही चाहते हैं, जो गलत है। जब यीशु ने मनुष्यजाति के स्वाभाविक पाप को देखा तो उसने मन से निकलने वाले सभी प्रकार के पापों की सूची प्रदान की (मरकुस 7:21-22)।

इस पाठ में हम लैंगिकता के विषयों के बारे में बात कर रहे हैं। सभी मानवीय इच्छाओं में, यौन इच्छाएँ सबसे शक्तिशाली हो सकती हैं।

गलत यौन इच्छाएँ, उन्हें महसूस करने वाले व्यक्ति को स्वाभाविक लगती हैं। वह सोच सकता है कि अपनी इच्छाओं को पूरा करने कारण उसे दोष नहीं दिया जाना चाहिए। हालाँकि, प्रत्येक व्यक्ति को सही कार्य करने के लिए अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति का विरोध करना पड़ता है। किसी व्यक्ति में झूठ बोलने या चोरी करने या हिंसक, आलसी या अधीर होने की स्वाभाविक प्रवृत्ति हो सकती है। खराब स्थिति में जन्म लेने के लिए लोग जिम्मेदार नहीं हैं, परन्तु जब लोग स्वाभाविक इच्छाओं का अनुसरण करते हैं और पाप करते हैं, तो वे दोषी ठहरते हैं।

कई बार बचपन के शोषण या अन्य माहौल सम्बन्धी स्थितियाँ किसी व्यक्ति के समलैंगिक लालसाओं या अन्य गलत यौन इच्छाओं से जूझने का कारण बनती हैं। हालाँकि, गलत यौन इच्छाओं को अन्य पापी इच्छाओं से अलग नहीं समझा जाना चाहिए। चाहे जो भी कारण रहे हों, एक व्यक्ति को परमेश्वर से छुटकारा पाने और पवित्र होने के लिए उसी अनुग्रह की आवश्यकता होती है।

यह सच्चाई कि कुछ लोगों को गलत इच्छाएँ सामान्य लगती हैं, हैरानी की बात नहीं होनी चाहिए। सामान्य तौर पर पाप करने की इच्छा का अनुभव करने वाले व्यक्ति को पाप सामान्य और स्वाभाविक लगता है।

हम स्वभाव से ही क्रोध की सन्तान हैं (इफिसियों 2:3)। इसका मतलब यह है कि हमारा झुकाव स्वाभाविक रूप से पाप की ओर होता है, और जो पाप हमारे लिए स्वाभाविक है उसे करके हम स्वयं पर दण्ड की आज्ञा लाते हैं। सच तो यह है कि एक व्यक्ति किसी न किसी विशेष पापी प्रवृत्ति के साथ जन्मा है, इसका मतलब यह नहीं है कि उस प्रवृत्ति का अनुसरण किया जाना चाहिए, भले ही यह उसे सामान्य ही क्यों न लगती हो।

► हमें अपनी सभी स्वाभाविक इच्छाओं का अनुसरण क्यों नहीं करना चाहिए?

बाइबल हमें बताती है कि हमें मसीह के सदृश्य बनने के लिए बुलाया गया है (रोमियों 8:29)। हमें प्रभु यीशु मसीह को पहन लेना है। हमारी शारीरिक इच्छाओं जीवन का आधार नहीं बनना चाहिए। इसके बजाय, हमें गलत लालसाओं को परमेश्वर के अधिकार के अधीन करना चाहिए (रोमियों 13:14)।

► अपनी गलत लालसाओं को परमेश्वर के अधिकार के अधीन करना कैसा होता है?

आपकी यौन इच्छाएँ आपके सर्वोच्च उद्देश्य, यानी परमेश्वर के स्वरूप को दर्शाते हुए उसकी महिमा करने के उद्देश्य के प्रति समर्पित होनी चाहिए। मसीह का अनुसरण करने वाला जीवन वह जीवन होता है, जो आपमें मौजूद परमेश्वर के स्वरूप के अनुरूप होता है।

मनुष्य की पहचान

मानवीय पहचान की सही समझ

बहुत से लोगों को यह गलतफहमी होती है कि उनके मानवीय स्वभाव को लेकर यह भरोसा किया जा सकता है कि वह उन्हें सही मार्ग पर ले जाएगा। उन्हें यह उचित लगता है कि जो इच्छाएँ उनके अपने स्वभाव से आती हैं, वे उन्हें संतुष्टि की ओर ले जाएँगी। उन्हें इस बात का एहसास नहीं है कि उनके स्वभाव पर भरोसा नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह पाप से बिगड़ गया है। एक व्यक्ति की स्वाभाविक इच्छाएँ उसे संतुष्टि की ओर नहीं ले जाएँगी, क्योंकि उसकी इच्छाएँ विकृत हैं। परमेश्वर के अलावा किसी व्यक्ति की स्वाभाविक इच्छाएँ, कभी भी उसे वह करने के लिए प्रेरित नहीं करेंगी जो नैतिक रूप से सही है।

लोग मानते हैं कि जीवन का अपना उद्देश्य बनाने के लिए उन्हें अपनी इच्छाओं और भावनाओं का अनुसरण करना चाहिए। वे मानते हैं कि एक व्यक्तिगत् पहचान का होना महत्वपूर्ण है, जो किसी अधिकार या नैतिक आवश्यकताओं द्वारा परिभाषित या सीमित हो। वे मानते हैं कि व्यक्तियों को यह निर्णय लेना चाहिए कि उनके लिए क्या सही और मूल्यवान है। वे उन्हें सही दिशा में निर्देशित करने के लिए अपने स्वभाव पर भरोसा करते हैं। उन्हें ऐसी व्यवस्थाएँ या नियम अच्छे नहीं लगते हैं, जो उनके व्यवहार को सीमित करते हों। परमेश्वर के वचन के स्थान पर बिगड़ा हुआ मानव स्वभाव नैतिकता का पैमाना बन जाता है।

क्योंकि लैंगिकता मानवीय स्वभाव का एक शक्तिशाली हिस्सा है, इसलिए बहुत से लोग यौन इच्छाओं को अपनी पहचान का केंद्र मानते हैं। उन्हें लगता है कि उन्हें अपना सच्चा स्वरूप बनने के लिए अपनी यौन इच्छाओं का अनुसरण करना चाहिए। लोग सोचते हैं कि लैंगिकता सिर्फ वह नहीं है, जिसे वे **चाहते हैं** या **करते हैं**, बल्कि यह वह है, जो **वे** हैं। वे इसे अपनी पहचान बना लेते हैं।

संसार की सोच के विपरीत, **बाइबल हमें बताती है कि हम परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए हैं, यानी हमें परमेश्वर के साथ सम्बन्ध रखने के उद्देश्य से बनाया गया। मनुष्य के रूप में यही हमारी सच्ची पहचान है।**

हमारे सांसारिक अस्तित्व में कुछ भी हमें हमारी सर्वोच्च, सच्ची पहचान नहीं दे सकता। हमारे सांसारिक अस्तित्व की विशेषताएँ बस वे परिस्थितियाँ हैं, जिनमें हम अभी हैं। वे हमें वह नहीं बनातीं जो हम हैं। हमारी जातीयता, सामाजिक स्थिति या आर्थिक स्थिति हमारी **पहचान** नहीं हैं, ये हमारी **दशा** हैं। एक व्यक्ति एक डॉक्टर, एक प्रसिद्ध व्यक्ति, या एक राष्ट्रीय नेता हो सकता है, परन्तु वह व्यक्ति परमेश्वर के स्वरूप में बने परमेश्वर के प्राणी के रूप में परमेश्वर के सामने खड़ा होता

है, और यही पहचान सबसे महत्वपूर्ण है।

हमारी लैंगिकता हमारी दशा का एक शक्तिशाली हिस्सा है। हमारे भीतर लैंगिक झुकाव, इच्छाएँ और कुंठाएँ होती हैं। परन्तु ये बातें हमारी पहचान नहीं हैं; ये हमारी दशा का हिस्सा हैं।

हम पापी स्वभाव के साथ जन्मे हैं, क्योंकि आदम के पाप ने मानवता को परमेश्वर से अलग कर दिया (रोमियों 5:18)। परन्तु हमारा पापी स्वभाव भी हमारी पहचान नहीं है; यह हमारी दशा है, और इसे परमेश्वर के अनुग्रह और सामर्थ्य से बदला जा सकता है (रोमियों 5:19)।

► एक व्यक्ति की *पहचान* और व्यक्ति की *दशा* में क्या अन्तर होता है?

मानवीय पहचान और व्यक्तिगत् नैतिकता

पहचान महत्वपूर्ण है, क्योंकि एक व्यक्ति अपनी पहचान को अपनी नैतिकता का आधार बनाता है। नैतिकता वे सिद्धान्त होते हैं, जो किसी व्यवहार की पहचान सही या गलत के रूप में करते हैं। यदि एक व्यक्ति सोचता है कि उसकी लैंगिकता उसकी पहचान है, तो वह अपने लैंगिक झुकावों का अनुसरण करने को *सही* मानेगा।

कई बार एक व्यक्ति कहता है कि, "मैं ऐसे ही जन्मा था; ऐसा करना मेरे लिये स्वाभाविक है; इसलिए, यह मेरे लिए गलत नहीं है।" परन्तु बाइबल सिखाती है कि हम सभी पापी स्वभाव के साथ जन्मे थे (रोमियों 5:12, इफिसियों 2:3)। हमारे लिए अपने पापी स्वभाव का अनुसरण करना सिर्फ इसलिए सही नहीं है, क्योंकि यह हमें स्वाभाविक लगता है।

हमारा पापी स्वभाव हम नहीं हैं। हमारा पापी स्वभाव ही हमारी स्थिति है। हमारी लैंगिकता हमारी पहचान नहीं है। इसके बजाय, हमारी पहचान परमेश्वर के स्वरूप में बने प्राणी होना है। यदि हम इस वास्तविकता को स्वीकार करते हैं, तो हमें एहसास होता है कि परमेश्वर ही यह तय करता है कि क्या सही है और क्या गलत है, और हम उसके प्रति जवाबदेह हैं। हमारी पहचान पवित्र व्यवहार के सही पैमाने को समझने में हमारी सहायता करती है।

► एक व्यक्ति की अपनी पहचान के बारे में समझ उसकी नैतिकता को कैसे प्रभावित करती है?

लिंग की सही समझ

हम इस सच्चाई से परिचित हैं कि मनुष्य और कई पशु नर और मादा में विभाजित हैं। हम यह मान सकते हैं कि परमेश्वर भी पुरुष या स्त्री है, परन्तु यह गलत होगा। परमेश्वर एक ऐसा जन है, जिसका स्वभाव लिंग से भी बड़ा है, जो लिंग के अस्तित्व से भी पहले अस्तित्व में था। दोनों मानवीय लिंग परमेश्वर के स्वरूप से आए हैं (उत्पत्ति 1:27)। दोनों मानवीय लिंग परमेश्वर के स्वरूप की अभिव्यक्ति हैं।

परमेश्वर का स्वरूप कोई ऐसी बात नहीं है, जो मानवीय स्वभाव के एक भाग के रूप में शामिल है। परमेश्वर का स्वरूप केवल हमें दी गई कुछ विशेषताएँ नहीं हैं, जैसे प्रेम करने की क्षमता, सुन्दरता की सराहना करना और सही और गलत की समझ।

सम्पूर्ण मानव स्वभाव परमेश्वर के स्वरूप का प्रतिबिम्ब है। परमेश्वर के स्वरूप के अलावा किस भी और बात को हमारे अस्तित्व का सार नहीं माना जा सकता है। हम मुख्य रूप से परमेश्वर के स्वरूप में बने प्राणी हैं। हमारी मानवीय स्थिति की किसी भी बात को हमारी प्राथमिक पहचान या हमारी नैतिकता का आधार नहीं बनने दिया जाना चाहिए।

प्रत्येक व्यक्ति के लिए लिंग का चुनाव परमेश्वर की योजना का भाग है कि वह व्यक्ति परमेश्वर के स्वरूप कैसे दिखाएगा। कुछ लोग परमेश्वर द्वारा दिए गए लिंग को स्वीकार करने से इनकार करते हैं। वे विपरीत लिंग वाले व्यक्ति के रूप में रहने का प्रयास कर सकते हैं। कुछ लोग सर्जरी से अपने भौतिक शरीर को बदलने का प्रयास भी करते हैं। यह परमेश्वर की रचना को दुःखद रूप से नुकसान पहुँचाना है, क्योंकि एक व्यक्ति के भौतिक शरीर को बदलकर वास्तव में लिंग को नहीं बदल सकता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने सम्पूर्ण स्वभाव में पुरुष या स्त्री होता है — केवल शारीरिक रूप से नहीं। परमेश्वर चाहता है कि हम उसकी महिमा करें और उसके स्वरूप को उस लिंग में दर्शाएँ, जो उसने हममें से प्रत्येक को दिया है।

परमेश्वर का नैतिक पैमाना

► एक छात्र को समूह के लिए इब्रानियों 13:4 पढ़ना चाहिए।

यह आयत हमें बताती है कि विवाह को अत्याधिक आदर की बात समझा जाए। यौन पाप विवाह का अनादर है। परमेश्वर यौन अनैतिकता का न्याय करेगा।

► एक छात्र को समूह के लिए 1 कुरिन्थियों 6:18 पढ़ना चाहिए।

यौन पापों में वासनापूर्ण कल्पनाएँ, व्यभिचार, परस्त्रीगमन, अनाचार, बलात्कार, बाल शोषण, समलैंगिक क्रिया और अश्लील सामग्री का इस्तेमाल शामिल हैं।

- **वासनापूर्ण कल्पनाएँ**: स्वेच्छा से किसी ऐसे व्यक्ति के साथ यौन क्रिया की कल्पना करना जो आपका जीवनसाथी नहीं है।
- **व्यभिचार**: उन लोगों के बीच यौन क्रिया है, जो विवाहित नहीं हैं।
- **परस्त्रीगमन**: ऐसी यौन क्रिया जिसमें वह व्यक्ति शामिल है, जिसका विवाह किसी और से हुआ है।
- **अनाचार**: किसी ऐसे करीबी रिश्तेदार के साथ यौन क्रिया करना जो आपका जीवनसाथी नहीं है।
- **बलात्कार**: यौन शोषण, किसी को उसकी इच्छा के विरुद्ध यौन क्रिया के लिए विवश करना।
- **बाल शोषण**: ऐसे व्यक्ति के साथ यौन क्रिया करना जिसमें ऐसा निर्णय लेने या यौन इच्छाओं को समझने की परिपक्वता नहीं है।
- **समलैंगिक क्रिया**: एक ही लिंग के लोगों के बीच यौन क्रिया।

- **अश्लील सामग्री**: नग्नता या यौन क्रिया दिखाकर यौन प्रतिक्रिया उत्पन्न करने के लिए बनाए गए लेख, चित्र और वीडियो।

ये सब बातें विवाह सम्बन्ध का उल्लंघन है।

> याद रखें—प्रत्येक ऐसी भूख जो हमें शारीरिक रूप से लुभाती है, वह उस आवश्यकता का शोषण है, जिसे परमेश्वर बेहतर ढंग से पूरा कर सकता है। परमेश्वर आधारित यौन सम्बन्धों का एकमात्र संदर्भ वैवाहिक यौन सम्बन्ध है। अवैध यौन सम्बन्ध... तत्काल मीठा लगता है, परन्तु यह ऐसी वस्तु है जो हमारी आत्मिक भूख में तब तक ज़हर घोलेगा जब तक कि हम उस वस्तु की लालसा न करने लगें जो अन्त में हमें नष्ट कर डालेगी। अवैध यौन सम्बन्ध पवित्रता, धार्मिकता और हमारे जीवन में परमेश्वर की उपस्थिति के प्रति हमारी संवेदनशीलता को कम करने के अलावा कुछ नहीं करेगा।[17]

नीतिवचन की पुस्तक के कई परिच्छेदों मे चेतावनी दी गई है कि यौन अनैतिकता एक व्यक्ति के जीवन को नष्ट कर देती है और मृत्यु की ओर ले जाती है (उदाहरण के लिए नीतिवचन 2:16-19 और नीतिवचन 6:24-29, 32-33)।

रॉबर्टसन मैकक्विल्किन ने यह लिखा है कि

> [मानव लैंगिकता के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों] का मानसिक रूप से लगभग उतना ही गम्भीर उल्लंघन किया जाता है जितना कि उस कार्य को करने से होता। उसने केवल नर और मादा की सृष्टि नहीं की; बल्कि उसने उन्हें अपने निज स्वभाव के अनुरूप एक-दूसरे के लिए विवाह के घनिष्ठ, स्थायी बन्धन में बन्धने के लिए बनाया है। इस उच्च उद्देश्य को पूरा करने के लिए, घनिष्ठता अनन्य और प्रतिबद्धता स्थायी होनी चाहिए अन्यथा यह एकता नहीं रहेगी। मन की विश्वासयोग्यता सबसे महत्वपूर्ण है। अनन्य घनिष्ठता, स्थायी प्रतिबद्धता और आपसी विश्वास का उल्लंघन सबसे पहले मन में होता है।[18]

► छात्रों को समूह के लिए 1 कुरिन्थियों 6:9-11, 15-20 और मत्ती 5:27-30 पढ़ना चाहिए।

प्रत्येक समाज में पुरुषों और स्त्रियों के बीच के सम्बन्धों के बारे में अपने-अपने सांस्कृतिक दृष्टिकोण होते हैं। ये सांस्कृतिक दृष्टिकोण बाइबल की नैतिकता के पैमाने की तुलना में निम्न पैमाने के होते हैं। कई संस्कृतियों में केवल व्यवस्थित समाज बनाए रखने के लिए आवश्यक नियम होते हैं। यदि इसमें बुरे परिणामों या घोटाले से बचने के लिए पर्याप्त सावधानी बरती जाती है, तो वे यौन पाप को सहन कर लेते हैं। बाइबल का नैतिकता का पैमाना अलग है।

---

[17] गैरी थॉमस, Gary Thomas, *पवित्र विवाह* (*Sacred Marriage*) (Grand Rapids, MI: Zondervan, 2000), 210।

[18] Robertson McQuilkin, रॉबर्टसन मैकक्विल्किन, *बाइबल आधारित नैतिकता का परिचय,* दूसरा संस्करण। (*An Introduction to Biblical Ethics, 2nd ed*)। (Wheaton, IL: Tyndale House Publishers, Inc., 1995), 216।

दुःख की बात है कि कुछ कलीसियाएँ बाइबल की नैतिकता के बजाय अपनी संस्कृति की नैतिकता का अनुसरण करती हैं। वे उन लोगों को दण्डित करती हैं, जिनके पाप स्पष्ट और सीमा से परे चले गए हैं, परन्तु वे ऐसे लोगों के उन्हीं पापों को सहन करती हैं, जो अपने पाप या उसके परिणामों को छिपाने में अधिक सावधानी बरतते हैं।

ये आयतें हमें बताती हैं कि जो लोग ये पाप कर रहे हैं वे विश्वासी नहीं हैं और स्वर्ग में नहीं जाएँगे। कुरिन्थुस के कुछ विश्वासियों ने अतीत में ये पाप किए थे, परन्तु उनका उन पापों से उद्धार हो गया था।

ऐसी कोई भी शिक्षा जो विश्वासी होने का दावा करने वाले व्यक्ति के ऐसी किसी भी पाप का क्षमा करती है, वह एक झूठा शिक्षा है। यदि कोई व्यक्ति मसीह का अनुयायी होने का दावा करता है, पर फिर भी यौन पाप करता है, तो कलीसिया को पवित्रशास्त्र के अनुसार उसे कलीसिया से निकाल देना चाहिए और उसे विश्वासी नहीं मानना चाहिए (1 कुरिन्थियों 5:11-13)।

कलीसिया के अगुवों को आचरण का एक अच्छा नमूना स्थापित करना चाहिए। जब कोई कलीसिया आराधना के अगुवों को अभद्र वस्त्र पहनने की अनुमति देती है या कलीसिया में कामुक नृत्य की अनुमति देती है, तो वे दर्शाते हैं कि कलीसिया में गलत यौन इच्छाएँ सामान्य हैं। उनका दर्शाते है कि यौन पाप गम्भीर नहीं है।

एक समाज की पोशाक शैलियाँ यह संकेत कर सकती हैं कि यदि एक व्यक्ति जब तक सही वस्त्र नहीं पहना है, जब तक उसका शरीर दिखाई न दे, जिससे लैंगिक आकर्षण होता है। कलीसियाए के सदस्य कई बार इस गड़बड़ी में पड़ जाते हैं, खासकर विशेष अवसरों पर। उन्हें लगता है कि जब तक वे अपने समाज के फैशन का अनुसरण न करें, तब तक उन्होंने अच्छे वस्त्र नहीं पहने हैं। कलीसिया को उन्हें यह सिखाना होगा कि यह गलत है। एक विश्वासी को दूसरों के मन में गलत इच्छाएँ नहीं उत्पन्न करनी चाहिए। 1 तीमुथियुस 2:9-10 हमें बताता है कि विश्वासियों को इस तरह के वस्त्र पहनना और व्यवहार करना चाहिए कि जो कोई भी उन्हें देखे वह जान जाए कि वे सावधानी से भरा, पवित्र जीवन जी रहे हैं और पाप करने या दूसरों को पाप करने के लिए उकसाने के लिए तैयार नहीं हैं।

अश्लील सामग्री

अश्लील सामग्री नग्नता या यौन क्रिया दिखाकर यौन प्रतिक्रिया उत्पन्न करने के लिए बनाए गए लेख, चित्र या वीडियो होते हैं।

इंटरनेट संसार भर में अश्लील सामग्री को आसानी से उपलब्ध करा रहा है। कई वृद्ध पास्टरों और अगुवों को ऐसी परीक्षाओं का सामना नहीं करना पड़ा, क्योंकि जब वे छोटे थे तब इंटरनेट उपलब्ध नहीं था। इसलिए वे शायद ही समझ पाए कि जवान पीढ़ी किस चीज़ का सामना कर रही है। परन्तु लोगों को मनोरंजन के विकल्पों में बाइबल के सिद्धान्तों को लागू करना सिखाया जाना चाहिए।

अश्लील सामग्री गलत है, क्योंकि इसे किसी व्यक्ति को परस्त्रीगमन, व्यभिचार और कई प्रकार की यौन विकृति की कल्पना

के लिए प्रेरित करने के लिए बनाया गया है। यह उस व्यक्ति के लिए आकर्षक होती है, जिसमें पापपूर्ण इच्छाएँ हैं। अश्लील सामग्री एक व्यक्ति को उन अनैतिक कार्यों में भाग लेने के लिए आमंत्रित करती है और सक्षम बनाती है जिनके लिए परमेश्वर दण्ड देता है। यीशु ने कहा कि इन बातों की कल्पना करना भी पाप है (मत्ती 5:28)।

अश्लील सामग्री इसलिए भी ग़लत है, क्योंकि यह लोगों और सम्बन्धों का अवमूल्यन करती है। यह यौन सम्बन्ध को एक स्वार्थी क्रिया बना देती है। इसमें लोगों को जिन्हें स्वस्थ सम्बन्धों के लिए बनाए गया है, परमेश्वर के स्वरूप में बने लोगों के रूप में महत्व देने के बजाय उनसे व्यक्तिगत आनन्द के लिए इस्तेमाल की जाने वाली वस्तुओं की तरह व्यवहार किया जाता है।

अश्लील सामग्री लत लगाने वाली होती है। अश्लील सामग्री, सामान्य रूप से पाप की तरह, गुलाम बनाने वाली होती है (यूहन्ना 8:24, 2 पतरस 2:19)। जो व्यक्ति अश्लील सामग्री का प्रयोग करता है, उसे इसकी अत्याधिक आवश्यकता महसूस होती है। वह इसके बिना जीने की कल्पना भी नहीं कर सकता। उसे ऐसा लगता है कि अश्लील सामग्री से प्राप्त कल्पनाओं के बिना जीवन सूना और नीरस होगा। हर अन्य लत की तरह, उसकी काम इच्छा उसे खाने लगती हैं, और उपयोगकर्ता अपने जीवन में अच्छी बातों का त्याग करना शुरू कर देता है।

अश्लील सामग्री प्रगतिशील होती है। उपयोगकर्ता को ऐसी सामग्री की आवश्यकता पड़ती है, जो अत्याधिक अश्लील और विकृत हो। वह उन कल्पनाओं में आनन्द लेना शुरू कर देगा, जो उसे पहले घृणित लगती थीं और डराती रही होंगी।

अश्लील सामग्री हानिकारक होती है। उपयोगकर्ता सामान्य सम्बन्ध का आनन्द लेने में कम सक्षम होता चला जाता है। उसकी इच्छाएँ इतनी अस्वाभाविक हो जाती हैं कि वे कभी संतुष्ट नहीं हो पातीं। वह दूसरों के साथ होने वाले शोषण के प्रति असंवेदनशील हो जाता है और अपनी खुशी के लिए दूसरों को कष्ट देने के लिए तैयार रहता है।

> शैतान आपकी यौन संतुष्टि को 'चुराना, घात करना और नष्ट करना' चाहता है (यूहन्ना 10:10), और अश्लील सामग्री उसकी पसंद का साधन है। अश्लील सामग्री यौन संतुष्टि का वादा करती है, परन्तु वास्तव में वास्तविक यौन सम्बन्धों का आनन्द लेने की हमारी क्षमता छीन लेती है।

अश्लील सामग्री के कुछ प्रभाव

अश्लील सामग्री में दर्शाए गए कार्यों की कल्पना करने से दर्शकों के मन और शरीर पर ऐसा प्रभाव पड़ता है कि मानो वे शारीरिक रूप से स्वयं वे कार्य कर रहे हों।

अश्लील सामग्री अवास्तविक स्थितियाँ प्रस्तुत करती है, जिसके कारण मस्तिष्क में किसी भी स्वाभाविक यौन सम्बन्ध की तुलना में अधिक तीव्र आनन्द से भरी प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न होती हैं।[19] मस्तिष्क इस अस्वाभाविक रूप से उच्च स्तर के

[19] इस अनुच्छेद और अगले चार अनुच्छेदों की सारी जानकारी https://thefreedomfight.org, एक अनुशंसित बाइबल-आधारित संसाधन से ली गई है और उन लोगों के लिए है, जो अश्लील सामग्री के इस्तेमाल के बन्धन से स्वतंत्र होना चाहते हैं।

आनन्द रसायनों के अनुकूल बनने लगता है। इस कारण, मस्तिष्क निरन्तर बढ़ती मात्रा में अश्लील सामग्री और अत्याधिक विकृत अश्लील सामग्री की माँग करने लगता है, ताकि दर्शकों को आनन्द का अनुभव होता रहे। मस्तिष्क में होने वाले रासायनिक परिवर्तनों के कारण अन्त में कोई व्यक्ति स्वाभाविक, यानी वास्तविक जीवन के यौन अनुभव को प्राप्त करने या उसका आनन्द लेने में शारीरिक रूप से अक्षम हो सकता है। मस्तिष्क का वह हिस्सा जो हमें निर्णय लेने में सक्षम बनाता है, आनन्दमयी रसायन की बहुत अधिक उपस्थिति के कारण क्षतिग्रस्त भी हो जाता है।

परमेश्वर ने यौन अनुभवों को सम्बन्धों को जोड़ने के लिए बनाया है। यौन अनुभव के दौरान मस्तिष्क से निकलने वाला एक हार्मोन यौन प्रतिभागियों को भावनात्मक रूप से एक-दूसरे से जोड़ता है, जिससे उनका सम्बन्ध मजबूत होता है। विवाह के भीतर यह एक अद्भुत उपहार है। हालाँकि, अश्लील सामग्री देखने से दर्शक भावनात्मक रूप से अश्लील सामग्री से जुड़ जाता है।

अश्लील सामग्री के इस्तेमाल का अपराधबोध और लज्जा लोगों को अलग-थलग कर देती है, जिससे वे अन्य लोगों के साथ स्वस्थ सम्बन्धों में जुड़ने में सक्षम नहीं हो पाते हैं। यह वैवाहिक सम्बन्ध के भीतर विश्वास को भी नष्ट कर देता है।

क्योंकि यह मस्तिष्क में रासायनिक असंतुलन का कारण बनता है, अश्लील सामग्री का इस्तेमाल देखने वाले के लिए मानसिक अवसाद का कारण बन सकता है।

अश्लील सामग्री में दर्शाए गए दृश्य कई बार वास्तविक जीवन के यौन सम्बन्धों में हिंसा और शोषण का कारण बन सकते हैं।

पास्टर और माता-पिता को जवानों को अश्लील सामग्री के खतरों के विषय में चिताना चाहिए। माता-पिता को अपने बच्चों को तब तक इंटरनेट तक असीमिति पहुँच नहीं देनी चाहिए, जब तक कि उनमें परीक्षा का विरोध करने की परिपक्वता न हो। जो कोई अश्लील सामग्री का इस्तेमाल करने की परीक्षा से जूझता है, उसे नियमित रूप से किसी विश्वसनीय, धर्मी व्यक्ति को उसकी विजयों या असफलताओं की सूचना देनी चाहिए। एक परिपक्व विश्वासी के साथ नियमित जाँच करने से संघर्ष करने वाले व्यक्ति को पवित्रता के प्रति प्रतिबद्धता बनाए रखने और निरन्तर विजय हासिल करने में सहायता मिल सकती है।

► लोगों को अश्लील सामग्री की लत से बचाने के लिए आप उन्हें कौन से आचरणों का सुझाव देंगे? कलीसिया इसमें कैसे सहायता कर सकती है?

बाल शोषण/बलात्कार

बाल शोषण का मतलब किसी बच्चे के साथ यौन क्रिया करना है। यह यौन सम्बन्ध का बिगड़ा हुआ रूप हैं। यह कई कारणों से बुरा है, जिनमें शामिल हैं:

- यह वाचा के विवाह के भीतर यौन सम्बन्धों के लिए परमेश्वर के भले अभिप्राय का उल्लंघन करता है (इब्रानियों 13:4)।
- यह बच्चे की मासूमियत को चुरा लेता है - बच्चे के पास अब उन चीजों का अनुभव है, जो उन्हें अभी नहीं पता होना चाहिए।
- यह बच्चे का कौमार्य छीन लेता है (1 थिस्सलुनीकियों 4:3-7)।
- यह बच्चे को अपराधबोध की झूठी भावना देता है; बच्चा गलत गतिविधि में है, परन्तु वह वास्तविक चुनाव करने में सक्षम नहीं है या उसे ऐसा करने की अनुमति नहीं है।
- यह बच्चे को यौन सम्बन्धों के बारे में ऐसे निर्णय लेने के लिए प्रेरित करता है, जिसे लेने के लिए उसमें अभी तक परिपक्वता नहीं है।
- इससे भविष्य में बच्चों द्वारा अनैतिक व्यवहार को चुनने की सम्भावना अधिक हो जाती है, क्योंकि वे स्वयं को गंदा या बेकार महसूस करते हैं (मत्ती 18:6)।
- इससे बच्चे में भविष्य में विकृत या शोषण सम्बन्धी गतिविधि में शामिल होने का परीक्षा बढ़ जाता है।
- इसमें उन लोगों के साथ शोषण होता है, जो असुरक्षित हैं और अपनी रक्षा नहीं कर सकते।
- यह परमेश्वर के स्वरूप में बने ऐसे व्यक्ति को चोट पहुँचाता है, जिसका मूल्य असीम है (उत्पत्ति 1:27)।

बाल शोषण कई बार परिवारों और मित्रों के बीच होता है। इस पर संदेह नहीं किया जा सकता क्योंकि परिवार के सदस्यों और मित्रों पर भरोसा किया जाता है, और बच्चा जो कुछ हुआ उसके बारे में किसी को बताने से डरता है।

बलात्कार किसी व्यक्ति (चाहे बच्चा हो या वयस्क) को उसकी सहमति के बिना यौन गतिविधि करने के लिए शारीरिक रूप से मजबूर करना है। बलात्कार उन्हीं कारणों से बुरा है, जिनसे बच्चों का शोषण करना बुरा है (व्यवस्थाविवरण 22:25-27)।

यौन शोषण का दूसरा रूप यौन तस्करी है। पूरे संसार में, बच्चों और जवानों का अजनबियों द्वारा अपहरण कर लिया जाता है या उन्हें उनके परिवार के सदस्यों द्वारा बेच दिया जाता है और वेश्यावृत्ति या अश्लील सामग्री बनाने के लिए उनका इस्तेमाल किया जाता है। निर्धनता में रहने वाले परिवार कई बार अपने बच्चों को इस बुरे व्यवसाय से बचाने में असफल हो जाते हैं, क्योंकि वे पैसे के आगे मजबूर होते हैं। कोई लाभ कमाता है, परन्तु बच्चों को न केवल शारीरिक बल्कि मानसिक और भावनात्मक रूप से भी अत्याधिक नुकसान होता है। यह कंगालों और निर्बलों पर किया जाना वाला पाप से भरा अत्याचार है, जिसका परमेश्वर न्याय करेगा (नीतिवचन 14:31)।

बच्चों के विरुद्ध ये पाप परमेश्वर के मन को तोड़ते हैं (मत्ती 18:10-14, भजन संहिता 146:7-9)। जो लोग ये पाप करते हैं,

उन्हें निश्चय दण्ड मिलेगा (1 थिस्सलुनीकियों 4:6, यहेजकेल 7:8-9)। विश्वासियों को परमेश्वर के हृदय के प्रेम और करुणा को साझा करना चाहिए और गुलाम बनाए गए लोगों की रक्षा, बचाव और चंगाई के लिए काम करना चाहिए (नीतिवचन 24:11-12, अय्यूब 29:12-16, भजन संहिता 72:12-14)।

स्व-यौन सम्बन्ध

यौन सुख के लिए या यौन तनाव को दूर करने के लिए अपने स्वयं के जननांगों को उत्तेजित करना हस्तमैथुन कहलाता है।

बाइबल विशेष रूप से हस्तमैथुन को अनैतिक कहकर इसकी निन्दा नहीं करती है। हालाँकि, स्व-यौन सम्बन्ध से कामुक सोच, अश्लील सामग्री का इस्तेमाल और व्यभिचार हो सकता है, ये सब बातें पाप हैं (मत्ती 5:27-28, मत्ती 15:19-20)।

हस्तमैथुन इसलिए भी बुद्धिमानी नहीं है, क्योंकि यह लत लगाने वाला होता है: आप इसे जितना अधिक करते हैं, उतना अधिक आपको लगने लगता है कि आपको यह करना ही है।

विवश करने वाला हस्तमैथुन कई बार एक गम्भीर समस्या की ओर संकेत करता है, जैसे भावनात्मक या सम्बन्धपरक समस्याएँ, या पिछले यौन शोषण।

► छात्रों को समूह के लिए 1 कुरिन्थियों 6:12-13, 18-20 और 1 थिस्सलुनीकियों 4:1-8 पढ़ना चाहिए।

परमेश्वर ने विवाह में शारीरिक एकता को पति और पत्नी को भावनात्मक और आत्मिक रूप से एकजुट करने में सहायता करने के लिए बनाया है (1 कुरिन्थियों 6:16-20, मलाकी 2:15)।

> बहुत से लोग...मानते हैं कि हस्तमैथुन उन्हें विवाह होने तक अकेले रहने से निपटने में सहायता कर सकता है। हालाँकि, वे यह समझने में असफल रहते हैं कि जब यह आचरण आदत बन जाता है, तो यह भविष्य में वैवाहिक यौन सम्बन्ध की सुन्दरता और घनिष्ठता को खतरे में डाल सकता है।
>
> स्व-यौन सम्बन्ध एक ऐसा यौन अनुभव प्रदान करता है, जो यौन सम्बन्ध के महत्वपूर्ण उद्देश्य से चूक जाता है: शारीरिक और भावनात्मक रूप से दो लोगों का एक तन बन जाना...। विवाह में स्वस्थ, सामान्य यौन गतिविधि के विकल्प के रूप में हस्तमैथुन का इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए।[20]

यदि किसी अविवाहित व्यक्ति के जीवन में हस्तमैथुन एक समस्या है, तो उसे क्या करना चाहिए? भले ही कोई केवल यौन तनाव से राहत पाने के उद्देश्य से हस्तमैथुन कर रहा हो, फिर भी मौजूद परीक्षाओं के कारण इससे परहेज़ करना सबसे अच्छा

---

[20] डॉ. टिम क्लिंटन और डॉ. डायने लैंगबर्ग, Dr. Tim Clinton and Dr. Diane Langberg, *स्त्रियों को परामर्श देने के लिए त्वरित-संदर्भ मार्गदर्शिका*, (*The Quick-Reference Guide to Counseling Women)* (Grand Rapids, MI: Baker Books, 2011), 185।

है, और इसलिए भी क्योंकि स्व-यौन सम्बन्ध यौन सम्बन्धों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा नहीं करता है।

यदि उनके जीवन में किसी भी प्रकार की अनैतिकता है, तो उन्हें उस पाप का अंगीकार करना चाहिए और उसे त्याग देना चाहिए। उन्हें नियमित रूप से और बार-बार अपनी विजयों और असफलताओं का लेखा-जोखा एक धर्मी वृद्ध सलाहकार को देना चाहिए जो उनके लिए प्रार्थना करेगा और उन्हें सलाह देगा।

यदि हस्तमैथुन भावनात्मक या सम्बन्धपरक समस्याओं या पिछले यौन शोषण का परिणाम है, तो पेशेवर मसीही परामर्शदाता से परामर्श लेना उचित होता है।

समलैंगिक क्रिया के बारे में बाइबल क्या कहती है

परमेश्वर ने विवाह को एक पुरुष और एक स्त्री के बीच आजीवन, प्रतिबद्ध सम्बन्ध के रूप में बनाया है। परमेश्वर ने देखा कि आदम को एक सहायक की आवश्यकता है (उत्पत्ति 2:18)। सहायक शब्द का अर्थ है कि कोई ऐसा व्यक्ति जो दूसरे से मेल खाता हो, यानी एक ऐसा व्यक्ति जो सहायक तरीकों से भिन्न होकर सहायक हो। परमेश्वर ने आदम का सहायक बनने के लिए किसी अन्य पुरुष को नहीं, बल्कि एक स्त्री को बनाया (उत्पत्ति 2:22)। सृष्टि की कहानी का उपसंहार सम्पूर्ण मनुष्यजाति के लिए विवाह का प्रमुख सिद्धान्त प्रदान करता है - विवाह में, एक पुरुष और स्त्री एक अनोखे तरीके से एक हो जाते हैं (उत्पत्ति 2:24)।

यीशु ने विवाह के बारे में परमेश्वर की योजना के विषय में बात की (मत्ती 19:4-6)। उसने उत्पत्ति के एक परिच्छेद का उल्लेख किया और कहा कि एक पुरुष और स्त्री एक अनोखे, स्थायी सम्बन्ध में एक होने के लिए एक साथ आते हैं।

प्रेरित पौलुस ने विवाह के बारे में कई वक्तव्य दिए। उसने कहा कि विवाह एक ऐसा नमूना है, जो हमें मसीह और कलीसियाएँ के बीच सम्बन्ध के बारे में सिखाता है (इफिसियों 5:22-33)। इफिसियों के पूरे परिच्छेद में, उसने पुरुषों और उनकी पत्नियों के बीच सम्बन्धों के बारे में वक्तव्य दिए। उसने एक पुरुष और उसकी पत्नी के बीच विशेष सम्बन्ध के बारे में उत्पत्ति और मत्ती के कथन का उद्धरण दिया (इफिसियों 5:31)। इस परिच्छेद से यह स्पष्ट है कि विवाह एक पुरुष और एक स्त्री के बीच का सम्बन्ध है।

लैव्यव्यवस्था की पुस्तक इस्राएल के लिए परमेश्वर की व्यवस्था का विस्तृत अनुप्रयोग प्रदान करती है। यह बताती है कि एक पुरुष का एक स्त्री के समान दूसरे पुरुष के साथ यौन सम्बन्ध रखना घृणित है (लैव्यव्यवस्था 18:22)। समलैंगिक क्रिया के लिए प्रतिभागियों को मृत्युदण्ड दिया जाता था, क्योंकि दोनों ने घृणित कार्य किया था (लैव्यव्यवस्था 20:13)।

कई बार लोग कहते हैं कि लैव्यव्यवस्था आधुनिक लोगों पर लागू नहीं होती। यह सच है कि लैव्यव्यवस्था की कुछ आज्ञाओं का महत्व औपचारिक था। हालाँकि, लैव्यव्यवस्था 18-20 में दी गई आज्ञाएँ अन्य यौन अपराधों जैसे करीबी रिश्तेदारों के साथ यौन सम्बन्ध, जानवरों के साथ यौन सम्बन्ध और बेटी की वेश्यावृत्ति पर रोक लगाते हैं। इन अध्यायों में अन्य आज्ञाएँ बच्चों की बलि, चोरी, मूर्तिपूजा, बहरे या अंधे लोगों का शोषण, कंगालों पर अत्याचार, परदेशियों का शोषण और झूठे तराजू

रखने पर प्रतिबन्ध लगाती हैं। यह स्पष्ट है कि ये आज्ञाएँ परमेश्वर की नैतिकता और न्याय के पैमानों के अनुप्रयोग हैं, जो सभी स्थानों पर सभी लोगों पर सभी समयों में लागू होते हैं।

► एक छात्र को समूह के लिए रोमियों 1:18-32 पढ़ना चाहिए।

यह परिच्छेद इस कथन से शुरू होता है कि परमेश्वर दण्ड उन सभी लोगों पर आएगा जो जानबूझकर परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करते हैं। यह परिच्छेद बताता है कि जब लोगों ने एक सच्चे परमेश्वर, सृष्टिकर्ता के ज्ञान को त्याग दिया, तो वे मूर्तिपूजक बन गए, सृजित वस्तुओं की पूजा करने लगे। उनका सत्य को त्यागना उन्हें यौन पाप की ओर ले गया, यहाँ तक कि समलैंगिक क्रिया की सीमा तक भी। इस परिच्छेद में बताया गया है कि एक ही लिंग के लोगों के बीच यौन सम्बन्ध स्वाभाव के विरुद्ध है। कुछ लोग कहते हैं कि यह परिच्छेद समलैंगिक बलात्कार का वर्णन करता है, परन्तु यह परिच्छेद बताता है कि लोगों ने *मिलकर* गलत काम किया और इसके लिए उन्हें दण्ड मिला, इसलिए यह साथ में की जाने स्वैच्छिक गतिविधि का संदर्भ है। यह परिच्छेद कई प्रकार के पापों को सूचीबद्ध करता है और परमेश्वर के प्रति विद्रोह के दृष्टिकोण का वर्णन करता है।

प्रेरित पौलुस ने समलैंगिक गतिविधियों को ऐसे अन्य पापों के साथ सूचीबद्ध किया जिनके लिए परमेश्वर दण्ड देता है (1 कुरिन्थियों 6:9-10, 1 तीमुथियुस 1:9-10)।

कलीसिया की जिम्मेदारियाँ

कुछ कलीसियाएँ यौन पाप में फंसे लोगों के प्रति प्रेम दिखाने का तरीका खोजने के लिए संघर्ष करती आई हैं। कुछ कलीसियाएँ यौन पाप के विभिन्न रूपों को सामान्य, स्वाभाविक और अपरिहार्य मानकर क्षमा कर देती हैं।

► यौन नैतिकता के विषयों के सम्बन्ध में कलीसिया की कुछ जिम्मेदारियाँ क्या हैं?

धार्मिकता सिखाना और प्रेम करना

कई बार कलीसिया यौन अनैतिकता के उन रूपों के प्रति उदासीन दिखती है, जिनके विषय में उन्हें लगता है कि वे कम हानिकारक और कम विकृत हैं। उदाहरण के लिए, वे जवान, अविवाहित लोगों को परीक्षा पर विजय पाना सिखाने के बजाय वे यह मान सकती हैं कि वे निश्चय ही यौन गतिविधियाँ करेंगे। विश्वासियों को परमेश्वर के पवित्र जीवन स्तर को बनाए रखना चाहिए और यौन क्रियाओं को विवाह के लिए आरक्षित रखना चाहिए।

कलीसिया का संदेश बाइबल के कथनों जितना ही स्पष्ट होना चाहिए। परमेश्‌वर विवाह के बाहर यौन क्रिया करने वाले लोगों को दण्ड देगा (इब्रानियों 13:4)। विश्वासियों को अनैतिक यौन गतिविधियों के लिए किसी व्यक्ति की प्रशंसा नहीं करनी चाहिए। मसीह के अनुयायियों को यौन अनैतिकता का मजाक नहीं बनाना चाहिए। संसार सिखाता है कि गर्भावस्था और बीमारी से बचने के लिए यौन पाप करते समय सावधानी बरतनी चाहिए, परन्तु कलीसिया का संदेश अधिक महत्वपूर्ण है।

कलीसिया को यह सिखाना चाहिए कि यौन पाप से दुःख होता है, परिवार टूटते होते हैं, परीक्षा और असंतोष बढ़ता है और अपराधबोध होता है।

सुसमाचार साझा करना

कलीसिया को सभी पापियों से प्रेम करना चाहिए और मसीह का अनुग्रह और क्षमा प्रदान करनी चाहिए।

परीक्षा का अनुभव करना पाप नहीं है; यहाँ तक कि मसीह की भी परीक्षा हुई, फिर भी वह निष्पाप निकला (इब्रानियों 4:15)। कलीसिया को एक व्यक्ति को उसकी परीक्षाओं, यहाँ तक कि विकृत यौन क्रियाओं की परीक्षाओं के कारण भी निंदा और निराशा का अनुभव नहीं कराना चाहिए। गलत इच्छाएँ हर किसी के लिए समान नहीं होती हैं, परन्तु हर कोई पापी स्वभाव और आत्मिक दोषों के साथ जन्म लेता है, जो गलत इच्छाओं का कारण बनते हैं।

एक पास्टर को लग सकता है कि उसे गलत इच्छाओं वाले व्यक्ति की सहायता करने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित नहीं किया गया है, परन्तु वह इस समस्या वाले व्यक्ति को किसी अन्य पापी व्यक्ति की तरह ही सलाह दे सकता है और उसकी सहायता कर सकता है। (इस पाठ के दो अन्तिम खण्ड विश्वासियों को यौन अनैतिकता की परीक्षा पर विजय पाने में सहायता करने के लिए अतिरिक्त विशिष्ट सलाह प्रदान करते हैं।)

► जब कलीसिया के किसी सदस्य ने यौन अनैतिकता की हो तो कलीसियाएँ को कैसे प्रतिक्रिया करनी चाहिए?

पापी को बहाल करना

गलातियों 6:1 में लिखा है कि कलीसिया को उस सदस्य को बहाल करने का प्रयास करना चाहिए, जिसने पाप किया है। इसका मतलब यह नहीं है कि किसी व्यक्ति को पाप करने के बाद सेवक के पद पर बने रहना चाहिए या तुरन्त सेवकाई का पद लौटा देना जाना चाहिए। बहाली का अर्थ है, उसे कलीसिया की संगति और देखभाल में फिर से अपनाना। यदि सदस्य वास्तव में पश्चाताप करता है, तो उसे परमेश्वर और कलीसिया द्वारा क्षमा कर दिया जाता। कलीसिया को उसे विजय को बनाए रखने और आत्मिक रूप से मजबूत बनने में सहायता करने के लिए आत्मिक जवाबदेही प्रदान करनी चाहिए। जब एक बहाल विश्वासी जवाबदेही में रहता है, तब वह धीरे-धीरे अपने विश्वास के परिवार भरोसे को फिर से अर्जित कर सकता है।

यदि कोई अविवाहित लड़की गर्भवती हो जाती है, तो कलीसिया को आत्मिक बहाली का प्रयास किए बिना कलीसिया की संगति और देखभाल से उसका बहिष्कार नहीं करना चाहिए। यदि वह पश्चाताप करती है और आत्मिक जवाबदेही के प्रति समर्पण करती है, तो उसे क्षमा कर दिया जाता है। उसका पाप उस पुरुष के पाप से बुरा नहीं है, जो इसमें शामिल था। कई बार लड़की के साथ केवल इसलिए दण्डात्मक व्यवहार किया जाता है, क्योंकि उसके पाप के परिणाम स्पष्ट दिखाई देते हैं।

कुछ स्थानों पर, कलीसिया एक बच्चे के साथ इसलिए अलग व्यवहार करती है, क्योंकि वह विवाह के बाहर जन्मा है, परन्तु यह गलत है, क्योंकि यह बच्चे की गलती नहीं है। कलीसिया के लिए बच्चे को प्रेम करना और स्वीकार करना इसका मतलब

यह नहीं है कि वे पाप को क्षमा कर देते हैं।

निर्बलों की रक्षा करना

कुछ समाजों में, जो माता-पिता अपनी अविवाहित बेटी की गर्भावस्था के कारण लज्जा महसूस करते हैं, वे अपने परिवार की प्रतिष्ठा बचाने के लिए अजन्मे बच्चे को मारने की परीक्षा का सामना करते हैं। परन्तु हत्या का कोई भी कारण कभी भला नहीं होता (निर्गमन 20:13)। प्रत्येक अजन्मा बच्चा परमेश्वर के स्वरूप में बना है (उत्पत्ति 9:6, भजन 139:13-14)। लड़की के बच्चे की सुरक्षा की जानी चाहिए, उससे प्रेम तथा उसका पालन-पोषण किया जाना चाहिए।

निर्धनता के विकल्प प्रदान करना

कलीसिया एक विश्वास का परिवार है। कलीसिया के लिए पापों दण्ड देना पर्याप्त नहीं है। कलीसिया को अपने सदस्यों की देखभाल करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, पापी गतिविधि द्वारा धन कमाने वाले को वैकल्पिक आर्थिक सहायता विकसित करने के लिए सहायता की आवश्यकता पड़ सकती है।

उदाहरण के लिए, कई लड़कियाँ एक बड़ी कलीसिया में जाती थीं और भजन मण्डली भी में गाती थीं। उनके परिवार निर्धन थे। इसलिए लड़कियाँ अपने परिवार की सहायता के लिए पैसे कमाने के लिए पुरुषों के साथ अनैतिक सम्बन्धों में लिप्त थीं। उस स्थिति में कलीसिया को क्या करना चाहिए?

► लोगों की पापी जीवनशैली छोड़ने में सहायता करने के लिए आपकी कलीसिया को क्या करना चाहिए?

परीक्षा का सामना करने वालों के लिए सहायता

इस पाठ में हमने कई कठिन विषयों पर चर्चा की। यह सम्भव है कि पाठ पढ़ने वालों में से कई लोगों ने इनमें से कुछ समस्याओं से संघर्ष किया हो। कुछ पाठक कलीसिया के अगुवे हैं, जिन्हें यह जानने की आवश्यकता है कि परीक्षाओं का सामना करने वाले अन्य विश्वासियों को कैसे सलाह दी जाए।

चाहे किसी भी प्रकार की परीक्षा हो, कुछ ऐसे व्यवहार और विचार शैलियाँ होती हैं, जो एक विश्वासी की विजयी होने में सहायता कर सकते हैं।

मसीह के अनुयायी को इन बातों से सहायता मिलेगी:

1. **मसीह के साथ अपने सम्बन्ध के प्रति पूरी तरह से प्रतिबद्ध होना** (मत्ती 16:24-27)। यौन अनैतिकता की परीक्षा, सभी परीक्षाओं की तरह, आपकी आत्मा पर शैतान का हमला है (1 पतरस 2:11)। वह केवल चोरी करना, घात करना और नष्ट करना चाहता है (यूहन्ना 10:10)। आपको अपने प्राण बचाकर भागना होगा (2 तीमुथियुस 2:22)।

2. **दृढ़ विश्वास रखना कि यीशु को आपका ध्यान है (भजन संहिता 139:1-3, 1 पतरस 5:6-10)**। वह आपके विश्वास,

आपकी शारीरिक आवश्यकताओं और आपकी पवित्रता की परवाह करता है। अपनी मानवता में, उसने हमारे सामने आने वाली शारीरिक और मानसिक परीक्षाओं का विजयी रूप से सामना किया, और उसके पास वह अनुग्रह है, जो हमें विजयी होने के लिए चाहिए (इब्रानियों 4:14-16)।

3. **शैतान के झूठ पर विश्वास न करना (यूहन्ना 8:44)**। शायद शैतान आपसे कहेगा कि "यीशु को तुम्हारी परवाह नहीं है, नहीं तो वह तुम्हारी इस यौन इच्छा को दूर कर देता जो तुम्हें अत्याधिक परेशान करती है।" 1 पतरस 5:7-8 हमें बताता है कि यीशु को हमारा ध्यान है, और शैतान वह जन है, जो हमें नष्ट करना चाहता है। यौन इच्छाएँ होने के कारण शैतान आप पर पापी होने का झूठा आरोप लगा सकता है (प्रकाशितवाक्य 12:10)।
4. **स्वयं यीशु पर ध्यान केंद्रित करना और जो वह है, उसके लिए उसकी प्रशंसा करना (भजन 105:3-4)**। शैतान को इस परीक्षा के के द्वारा आपके विश्वास और परमेश्वर के साथ आपके सम्बन्ध को नष्ट करना अच्छा लगेगा (यूहन्ना 10:10)। परन्तु इस परीक्षा के लिए यीशु का उद्देश्य यह है कि आपका विश्वास मजबूत हो, और आप बेहतर ढंग से उसकी महिमा कर सकें (1 पतरस 1:5-9)। जब आप यीशु की आराधना करने पर ध्यान केंद्रित करेंगे, तो वह आपकी सहायता के लिए उपस्थित रहेगा (भजन 46:1)।
5. **परमेश्वर के वचन पर मनन करना (भजन संहिता 119:9)**। परमेश्वर के वचन को पढ़ने, सुनने और उस पर मनन करने से आपको परीक्षा के समय विजयी होने में सहायता मिलेगी। जब यीशु की परीक्षा हुई, तो उसने उस पर विजय पाने के लिए पवित्रशास्त्र का प्रयोग किया (मत्ती 4)। हमें भी ऐसा ही करना चाहिए।
6. **अपनी यौन इच्छाओं के लिए यीशु को धन्यवाद देना, और परीक्षा पर विजय पाने की सामर्थ्य के लिए प्रार्थना भी करना (2 कुरिन्थियों 12:7-9)**। आप अपनी स्वाभाविक इच्छाओं के लिए धन्यवादी हो सकते हैं, क्योंकि वे आपकी मानवता से सम्बन्धित परमेश्वर की योजना का हिस्सा हैं और वे आपको यीशु पर निर्भर रहने और उसकी सामर्थ्य को खोजने के लिए विवश करती हैं। आपकी निर्बलता उसके साथ चलने में परिपक्व होने का अवसर देती है।
7. **कम से कम एक परिपक्व और धर्मी व्यक्ति के प्रति जवाबदेह बने रहना (गलातियों 6:2)**। किसी ऐसे व्यक्ति (आपका समान लिंग) के साथ खुला और ईमानदार रहना जो विश्वास की यात्रा में आपसे बहुत आगे है, ऐसा करना अत्याधिक सहायक सिद्ध होगा। वे आपके लिए प्रार्थना कर सकेंगे और आपको सलाह दे सकेंगे। अपने संघर्षों के बारे में उनसे बात करने से आपको पवित्रता बनाए रखने और अपने विश्वास में प्रोत्साहित रहने में सहायता मिलेगी।
8. **दूसरों की सेवा करना और उनकी आवश्यकताओं पर ध्यान देना (फिलिप्पियों 2:3-5)**। अन्य लोगों की सेवा करके अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओं की अत्याधिक चिन्ता करने से लड़ें।
9. **परमेश्वर के समय में सही व्यक्ति से विवाह करना (नीतिवचन 5:15, 18-19)**। (आगामी पाठों में चर्चा की जाएगी कि विवाह के लिए बुद्धिमानी भरा चुनाव कैसे करें।)

► इनमें से कौन सा विचार आपके लिए नया है? आपने अपने जीवन में किसे सहायक पाया है?

► अन्य कौन से व्यवहार या विचार शैलियाँ आपके लिए सहायक रही हैं?

विवाह से पहले नैतिक पवित्रता

जवान लोगों को विवाह से पहले मज़बूत परीक्षाओं का सामना करना पड़ता है। उनके लिए यह याद रखना आवश्यक है कि उन्हें एक ऐसे जीवनसाथी की आवश्यकता है, जो विश्वासयोग्य हो।[21] उन्हें ऐसे व्यक्ति के साथ सम्बन्ध पर विचार नहीं करना चाहिए जो बिना विवाह के अल्पकालिक सुख चाहता है। उन्हें ऐसे व्यक्ति के साथ सम्बन्ध रखने पर विचार नहीं करना चाहिए, जो प्रतिबद्ध विश्वासी नहीं है (1 कुरिन्थियों 7:39)। उन्हें केवल ऐसे व्यक्ति पर विचार करना चाहिए जो एक विश्वासयोग्य वैवाहिक साथी और एक अच्छा माता-पिता होगा।

एक जवान व्यक्ति जो अच्छा विवाह करना चाहता है, उसे मसीह का विश्वासयोग्य, प्रतिबद्ध अनुयायी होना चाहिए, ताकि सही प्रकार के प्रति व्यक्ति आकर्षित हो सके (नीतिवचन 3:4-8)। एक व्यक्ति उचित व्यवहार और शालीनता भरे वास्तों से अच्छे चरित्र का प्रदर्शन करता है (1 तीमुथियुस 2:9-10)। जो लोग विपरीत लिंग के लोगों के साथ लापरवाही से व्यवहार करते हैं, इसका अर्थ यह है कि वे गलत इच्छाओं के आधार पर सम्बन्ध बनाने के इच्छुक हैं (1 थिस्सलुनीकियों 4:1-7)। एक ऐसा व्यक्ति जो ऐसे वस्त्र पहनता है, जिनसे गलत इच्छाएँ उत्पन्न होती हैं, वह ऐसे व्यक्ति को आकर्षित करता है, जो प्रतिबद्धता के बिना आनन्द लेना चाहता है (नीतिवचन 7)।

परमेश्वर ने व्यवहार, वस्त्र और सम्बन्ध के चुनावों में मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए माता-पिता, पास्टरों और अन्य मसीही अगुवों को दिया है। जब जवान लोग परमेश्वर की आज्ञाकारिता में इन अगुवों के अधीन होंगे, तो उन्हें परमेश्वर का सबसे बड़ी आशीषें मिलेंगी और वे बहुत सी हानियों और परीक्षा से सुरक्षित रहेंगे।

► छात्रों को समूह के लिए 1 पतरस 5:5 और इब्रानियों 13:17 पढ़ना चाहिए।

यह बच्चों और जवानों की जिम्मेदारी है कि वे अपने माता-पिता और आत्मिक अधिकारियों के ज्ञान और अगुवाई के प्रति समर्पण करें। जवानों की परीक्षा पर विजय पाने में सहायता करना इन अगुवों की जिम्मेदारी है।

► छात्रों को समूह के लिए रोमियों 13:14 और 1 कुरिन्थियों 10:13 पढ़ना चाहिए।

परमेश्वर विश्वासियों को उस सीमा से अधिक परीक्षा की स्थिति में नहीं रहने देता, जिसका वे विरोध करने में वे सक्षम हैं और यदि वे चाहें तो उससे बच सकते हैं। जवान लोग परीक्षा से भागने के लिए जिम्मेदार हैं (2 तीमुथियुस 2:22)। हालाँकि, माता-पिता को यथासम्भव अपने जवानों को अनावश्यक परीक्षा का अनुभव करने से रोकना चाहिए। माता-पिता ऐसा करने

---

[21] देखें नीतिवचन 31:11-12, 1 तीमुथियुस 3:11-12, मलाकी 2:14-16, और नीतिवचन 2:16-17।

के लिए कम से कम तीन तरीके अपना सकते हैं:

1. बच्चों को क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, उन्हें किसके साथ रहना चाहिए और कहाँ जाना चाहिए, **इसके बारे में विशिष्ट निर्देश देकर** (इफिसियों 6:1-4)। माता-पिता को अपने बच्चों को ऐसी परिस्थितियों में नहीं रहने देना चाहिए जहाँ उनकी परिपक्वता उन्हें परीक्षा से बचाने के लिए पर्याप्त नहीं होगी। उदाहरण के लिए, यदि एक युवक और युवती किसी निजी स्थान पर अकेले हैं, तो सम्भवतः वे गलत व्यवहार के लिए प्रलोभित होंगे।

2. **अपने जवानों को परीक्षा के क्षेत्रों में जवाबदेह रखकर।** माता-पिता को जवानों के साथ प्रार्थना करनी चाहिए और उनके जीवन के बारे में प्रश्न पूछना चाहिए। जवाबदेही की प्रभावशीलता माता-पिता और बच्चे के बीच सम्बन्धों की मजबूती पर निर्भर करेगी। यदि बच्चा अपने माता-पिता पर प्रेम, अपनेपन और सहयोग को लेकर भरोसा नहीं करता है, तो बच्चा किसी भी असफलता को स्वीकार नहीं करना चाहेगा।

3. **जवानों को बाइबल सम्बन्धी सलाह देकर।** माता-पिता को अपने जवानों की बाइबल के सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए स्थितियों पर विचार करना सीखने में सहायता करनी चाहिए (नीतिवचन 4:1-9, नीतिवचन 7:1, 4-5)। उन्हें अपने जवानों से उन खतरों के बारे में बात करनी चाहिए जिन्हें वे देखते हैं। उन्हें अपने जवानों की उन विभिन्न विकल्पों पर विचार करने में सहायता करनी चाहिए, जिन्हें उन्हें चुनने की आवश्यकता पड़ेगी। वे अपने जवानों की समय से पहले यह सोचने में सहायता कर सकते हैं, ताकि परीक्षा से कैसे बचा जाए और जब उनकी परीक्षा हो तो क्या कर सकते हैं।

जब कलीसिया बाइबल की नैतिकता का पक्ष लेती तो उसे अपनी संस्कृति से अलग होना चाहिए। कई संस्कृतियाँ यौन पाप को गम्भीर नहीं मानती हैं। वे जवान अविवाहित लोगों से विवाह से पहले यौन सम्बन्ध बनाने की अपेक्षा करते हैं। कलीसिया को पाप से समझौता नहीं करना चाहिए। कलीसिया को यह नहीं मानना चाहिए कि जवान लोगों के बीच यौन पाप सामान्य है। परमेश्वर कहता है कि जो लोग अनैतिक हैं, उन्हें मसीह के राज्य में कोई मीरास नहीं मिलेगी (इफिसियों 5:5)।

► कलीसिया उन जवानों की कैसे सहायता कर सकती है, जो संसार की परीक्षाओं से संघर्ष कर रहे हैं?

► छात्रों को समूह के लिए इफिसियों 5:3-7 और इब्रानियों 13:4 पढ़ना चाहिए।

वह समयावधि जब कोई सम्बन्ध विवाह से पहले मौजूद होता है, वह यौन सम्बन्ध शुरू करने का समय नहीं होता है। इसके बजाय यह वह समय होता है, जब एक पुरुष और स्त्री यह सुनिश्चित करते हैं कि वे समान आत्मिक और बाइबल प्राथमिकताओं को साझा करते हैं। यह एक ऐसा समय होता है, जब उनमें एक-दूसरे के प्रति समझ विकसित होती है, जो उन्हें एक-दूसरे पर इतना भरोसा करने में सक्षम बनाती है कि वे एक-दूसरे के प्रति स्थायी प्रतिबद्धता कर सकें। यदि वे एक-दूसरे के चरित्र के इस भरोसे पर खरा नहीं उतर पाते हैं, तो उन्हें उस सम्बन्ध समाप्त कर देना चाहिए और विवाह नहीं करना चाहिए।

कुछ समाजों में लोग विवाह में देरी करते हैं, क्योंकि उनकी संस्कृति में विवाह को एक भव्य, महँगा समारोह माना जाता है। कई बार जोड़े सालों तक साथ रहते हैं और विवाह में देरी करते हुए बच्चे भी पैदा कर लेते हैं। कुछ जोड़ों के लिए, उनके विवाह का खर्च उन्हें बाद में लम्बे समय तक आर्थिक रूप से नुकसान पहुँचाता है, क्योंकि वे विवाह के आयोजन में अपना सब कुछ खर्च कर देते हैं और पैसे उधार भी ले सकते हैं। कलीसिया को विश्वास का एक समुदाय होना चाहिए जो विवाह का एक अलग नमूना प्रदान करती है। मसीही विवाह ऐसे पुरुष और स्त्री के लिए है, जो एक-दूसरे और परमेश्वर के प्रति प्रतिबद्ध हैं और उन्हें ऐसे बड़े खर्च की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए, जिससे विवाह में देरी हो या जोड़े के भविष्य को नुकसान पहुँचे।

► ऐसे कौन से तरीके हैं, जिनसे मसीही विवाह समाज के विवाह रीति-रिवाजों से भिन्न होना चाहिए?

बच्चों को यौन सम्बन्धों के लिए परमेश्वर का उद्देश्य और नियम सिखाना

बच्चे यौन सम्बन्धों के उल्लेख को देखते और सुनते हैं। वे इस विषय में लोगों की राय सुनते हैं कि क्या सही है और क्या गलत। बच्चों के मन में अन्त में यौन भावनाएँ, इच्छाएँ और परीक्षा आएँगी, इसलिए मसीही माता-पिता के लिए यह समझाना बहुत महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर यौन सम्बन्धों के बारे में क्या कहता है। बच्चों को यौन गतिविधियों के विवरण के बारे में नहीं जानना चाहिए, क्योंकि वे विवाह करने के लिए पर्याप्त आयु के नहीं हैं, और इस ज्ञान से उनकी अनावश्यक परीक्षा होगी।

बच्चों को परमेश्वर की योजना और उसका आज्ञा पालन करने की अपनी ज़िम्मेदारी जानने की आवश्यकता है। उन्हें यह जानने की आवश्यकता है कि उन्हें परीक्षा का सामना करना पड़ेगा। उन्हें विवाह होने तक परमेश्वर की आज्ञा मानने और अपनी यौन इच्छाओं पर नियंत्रण रखने के लिए तैयार रहने की आवश्यकता है।

यौन गतिविधियों के विवरण के बारे में बात किए बिना बच्चों को लैंगिकता के बारे में मसीही दृष्टिकोण सिखाने के लिए निम्नलिखित सामग्री उपयोगी है। यह सरल तरीके से लिखी गई है, उसी तरह जिस तरह तरह आप बच्चों से बात करते हैं।

एक बच्चे से बात करना

► बच्चे के साथ उत्पत्ति 2:7, 18-24 को पढ़ें।

यह अनुच्छेद हमें बताता है कि कैसे परमेश्वर ने पहले पुरुष और पहली स्त्री को बनाया और उन्हें एक विशेष सम्बन्ध में रखा।

परमेश्वर ने विवाह को एक पुरुष और एक स्त्री के बीच एक विशेष सम्बन्ध के रूप में बनाया है। एक विवाहित दम्पत्ति में एक-दूसरे के प्रति विशेष प्रेम होता है। उनके सम्बन्ध का एक हिस्सा एक विशेष सुख होता है, जो उन्हें तब मिलता है, जब वे अपने शरीर को *यौन सम्बन्ध* नामक क्रिया में निजी तौर पर एक साथ आते हैं। परमेश्वर ने पति-पत्नी को आनन्द देने और कई बार पत्नी को बच्चे जन्म देने के लिए यौन सम्बन्धों की सृष्टि की।

क्योंकि यौन सम्बन्धो एक विशेष सुख प्रदान करता है, इसलिए एक पुरुष और एक स्त्री के मन में एक-दूसरे के शरीर को

देखने और छूने और एक-दूसरे के ध्यान का आनन्द लेने की स्वाभाविक इच्छा होती है।

बाइबल में, परमेश्वर हमें बताता है कि पति और पत्नी के लिए यौन सम्बन्ध अच्छे और सही हैं। परन्तु परमेश्वर हमें यह भी बताता है कि जिन लोगों का एक-दूसरे से विवाह नहीं हुआ है, उनके लिए यौन सम्बन्ध बनाना बहुत गलत है। परमेश्वर ने हमें कम से कम चार कारणों से यौन गतिविधियों के बारे में नियम दिए हैं:

(1) यौन सुख विवाह के लिए बनाया गया है।

परमेश्वर ने यौन सम्बन्धों को विवाह सम्बन्ध का एक विशेष हिस्सा बनाने के लिए बनाया है। हालाँकि किसी भी पुरुष और किसी भी स्त्री के लिए इस तरह से एक साथ आनन्द लेना सम्भव है, परन्तु विवाह में यह आनन्द सबसे विशेष होता है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति पूरी तरह से अकेले दूसरे व्यक्ति के प्रति सर्मपित हो जाता है। जो लोग विवाहित नहीं हैं, उनके लिए यौन सम्बन्धों का अर्थ वह नहीं होता है, और वे परमेश्वर के अभिप्राय के अनुसार पूर्ण सम्बन्ध नहीं बना सकते हैं। इसलिए जो व्यक्ति विवाह के लिए अभी पूरी आयु तक नहीं पहुँचा है, उसे यौन सम्बन्धों नहीं बनाने चाहिए। लोगों को तब तक यौन सम्बन्ध नहीं बनाने चाहिए जब तक कि वे विवाह की प्रतिबद्धता न कर लें और सार्वजनिक विवाह समारोह न कर लें। व्यक्ति को केवल अपने जीवनसाथी के साथ ही यौन सम्बन्ध बनाने चाहिए।

(2) यौन इच्छाएँ अत्याधिक प्रबल होती हैं।

यौन इच्छाएँ रखना गलत नहीं है, क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें बनाया है। परन्तु जानबूझकर कुछ ऐसा करने की इच्छा बढ़ाना गलत है, जो परमेश्वर नहीं चाहता। इसके कारण इस प्रकार हैं:

- विवाह को छोड़कर, एक व्यक्ति को ऐसे काम नहीं करने चाहिए, जिससे यौन इच्छाएँ प्रबल हो जाएँ, जैसे जानबूझकर किसी और के शरीर को देखना या उसके बारे में सोचना।
- विवाह को छोड़कर, एक व्यक्ति को किसी अन्य व्यक्ति को इस तरह से नहीं छूना चाहिए जिससे किसी एक व्यक्ति की यौन सम्बन्धों की इच्छाएँ ~~बढ़ जाएँ।~~
- व्यक्ति को गलत कार्य करने की कल्पना भी नहीं करनी चाहिए।
- एक व्यक्ति को गलत काम करते हुए देखने का आनन्द लेने के लिए तस्वीरें या वीडियो नहीं देखना चाहिए।
- एक व्यक्ति को ऐसे वस्त्र नहीं पहनने चाहिए जिससे दूसरों के मन में गलत काम करने की इच्छा हो या गलत काम करने की कल्पना आए।
- व्यक्ति को ऐसा व्यवहार या बातचीत नहीं करनी चाहिए जिससे लगे कि वह गलत काम करना चाहता है।

(3) हमारी इच्छाएँ हमारा मार्गदर्शन नहीं कर सकतीं।

पशु अपनी भावनाओं और इच्छाओं के वश में होते हैं। हम पशु नहीं हैं; हम परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए लोग हैं। इस वजह से, हमें सोचना चाहिए कि हमें क्या करना *चाहिए* और फिर सही चुनाव करना चाहिए। हमें अपनी भावनाओं और इच्छाओं के वश में नहीं आना चाहिए। कई बार हम जो चाहते हैं, वह करना सही होता है; कई बार ऐसा नहीं होता। हमारी इच्छाएँ हमें यह नहीं बता सकतीं कि यौन सम्बन्ध बनाना कब सही है। अपनी भावनाओं का पालन करने के बजाय, हमें परमेश्वर के आत्मा की सहायता से बाइबल में दिए गए परमेश्वर के निर्देशों का पालन करना चाहिए।

(4) यौन सम्बन्धों से कई बार बच्चे पैदा हो जाते हैं।

परमेश्वर ने इसे ऐसे बनाया है कि बच्चे प्रेम के सम्बन्ध से आते हैं। उसने इसे ऐसे बनाया है कि बच्चों को ऐसे परिवार में बड़े होने में कई वर्ष लग जाते हैं, जो उन्हें प्रेम करता हो और उनकी देखभाल करता है। एक ऐसा बच्चा जिसके माता और पिता का एक-दूसरे से विवाह नहीं हुआ है, आमतौर पर उसके वयस्क होने तक उसकी देखभाल के लिए माता और पिता दोनों साथ नहीं होते हैं।

ऊपर सूचीबद्ध चार बातों को समझते हुए, जो लोग परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं और सर्वोत्तम जीवन चाहते हैं, वे परमेश्वर के निर्देशों का पालन करेंगे। वे परमेश्वर की अनाज्ञकारिता करने की परीक्षा का विरोध करने में सहायता करने के लिए सावधानी से भरी आदतें बनाएँगे।

एक बच्चे की प्रार्थना

प्रिय परमेश्वर,

मुझे (लड़का या लड़की) बनाने के लिए तेरा धन्यवाद हो। विवाह के लिए तेरी विशेष, अच्छी योजना के लिए धन्यवाद। जीवन भर तुझसे प्रेम करने और तेरी आज्ञा मानने में सहायता कृप्या मेरी सहायता कर। मैं जो कुछ भी करता हूँ, तू उसे देखता है और मैं जो कुछ सोचता हूँ, वह सब तू जानता है। कृप्या जीवन भर तेरे निर्देशों का सदैव पालन करने में मेरी सहायता कर। मैं चाहता हूँ कि मेरे विचार और कार्य तुझे प्रसन्न करने वाले हों। मेरे मित्रों के सामने एक अच्छा उदाहरण बनकर तेरी आज्ञा मानने में मेरी सहायता कर। सही समय पर, जब मैं बड़ा हो जाऊँ, तो मुझे वैसा (पति या पत्नी) बनने में सहायता करें जैसा तू चाहता है। हे परमेश्वर, मैं तुझसे प्रेम करता हूँ!

आमीन

प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता,

हमें अपने स्वरूप में बनाने, हमारे जीवन को उद्देश्य और अर्थ देने के लिए तेरा धन्यवाद हो। तेरे स्वरूप को दर्शाने में हमारी सहायता करने के लिए लिंग को बनाने के लिए तेरा धन्यवाद हो।

विवाह में मानवीय लैंगिकता के लिए तेरी भली संरचना और उद्देश्यों के लिए तेरा धन्यवाद हो।

हम उन कामों के लिए पश्चाताप करते हैं, जिनसे हमने तेरे वचन की अनाज्ञाकारिता की है। कृप्या हमें यीशु के नाम से धो, क्षमा कर और पवित्र कर (1 कुरिन्थियों 6:11)। हमें पाप की दासता से स्वतंत्र कर (रोमियों 6:6-7)। अब हम अपने शरीर तुझे सौंपते हैं, और जो तेरी दृष्टि में ठीक है, वही करने का वचन देते हैं (रोमियों 6:13-14)।

हमें धार्मिकता से भरी सोच और व्यवहार की आदतें सीखने में सक्षम कर (1 तीमुथियुस 4:7, भजन संहिता 23:3)। हमारे विचार और कार्य सदैव तेरी दृष्टि में सुखदायक रहें (भजन संहिता 19:14)। हमें परीक्षा के हर समय में विजय प्रदान करने की प्रतिज्ञा करने के लिए धन्यवाद (1 कुरिन्थियों 10:13)।

आमीन

पाठ सम्बन्धी नियत कार्य

(1) इस पाठ में चर्चा किए गए विषयों पर विचार करते हुए गलातियों 5:16-6:9 को पढ़ें। निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखित रूप में दें:

- शरीर की इच्छाओं (5:16) और शरीर के कामों (5:19) के बीच क्या अन्तर है?
- जो लोग शरीर के काम करते हैं, उनसे कौन सी दो बातों की प्रतिज्ञा की गई है (5:19-21, 6:7-8)?
- एक विश्वासी के पास शरीर की इच्छाओं का अनुसरण न करने की सामर्थ्य कैसे हो सकती है (5:16, 22-23, 25)?
- वे कौन सी सच्चाईयाँ हैं, जो विश्वासियों को परीक्षा के समय याद रखनी चाहिए जो विजयी होने में उनकी सहायता करेंगी? (इस परिच्छेद से कम से कम चार के नाम बताइए।)
- इस परिच्छेद में विश्वासियों को क्या करने का निर्देश दिया गया है? (इस परिच्छेद से कम से कम चार के नाम बताइए।)
- विश्वासियों की एक दूसरे के प्रति क्या जिम्मेदारियाँ हैं (6:1-2, 6)?

(2) रोमियों 6:1-23 को पढ़ें। निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें:

- यह परिच्छेद प्रत्येक विश्वासी के बारे में कौन सी बातें कहता है, जो सच हैं? (6-8 बातों की सूची बनाएँ।)
- विश्वासियों बारे में जो सत्य है उसके आधार पर उन्हें क्या चुनाव करना चाहिए? (6-8 बातों की सूची बनाएँ।)
- एक विश्वासी पाप की परीक्षा के समय विजयी होने की आशा क्यों रख सकता है? (एक अनुच्छेद लिखें।)

(3) रोमियों 8:1-14 को पढ़ें। इस परिच्छेद में दी गई सच्चाईयों के आधार पर एक प्रार्थना लिखें।

(4) रोमियों 6:11-14 और कुलुस्सियों 3:5-7 को याद करें। अगली कक्षा की शुरुआत में, अपनी स्मृति से परिच्छेद लिखें या सुनाएँ।

पाठ 5

अविवाहित रहना

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में, छात्र यह करने लगेंगे:

(1) बाइबल के दृष्टिकोण से अविवाहित होने की दशा न को समझना।

(2) विवाह और अविवाहित होने की दशा के सम्बन्ध में चुनावों के लिए बाइबल की प्राथमिकताओं की पहचान करना।

(3) जीवन की इस अवधि में नैतिक पवित्रता, धार्मिकता से भरे चरित्र और फलवन्त सेवा के लिए प्रतिबद्ध रहना।

(4) यीशु को प्रभु मानकर उसके प्रति समर्पण कर करना और उसमें पूर्ण होना।

यीशु की आराधना करना, भले ही अविवाहित हों या विवाहित

स्टीफन और सारा यह समझने का प्रयास कर रहे थे कि क्या विवाह उनके लिए परमेश्वर की इच्छा थी। सारा को पता था कि यदि उसने स्टीफन से विवाह किया - जो एक मिशनरी था - तो उसका जीवन कई मायनों में बदल जाएगा। वह एक नए देश में जाएगी, एक नई भाषा सीखेगी और एक नई संस्कृति में ढल जाएगी। वह जानती थी कि वह उन सब बातों को छोड़ देगी जो परिचित और आरामदायक हैं। निराशाएँ और बलिदान होंगे। विवाह न केवल अपने पति के प्रति प्रेम की प्रतिबद्धता होगी, बल्कि यीशु के प्रति विश्वास और प्रेम का कार्य भी होगा।

समय के साथ, स्टीफन और सारा को एहसास हुआ कि वे एक-दूसरे के अनुकूल नहीं हैं और उन्हें विवाह नहीं करना चाहिए। सारा को निराशा हुई। उसने अपनी निराशा के बारे में प्रार्थना की। उसने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसके जीवन की इस अवधि के दौरान उसे फलवन्त बनने में उसकी सहायता करे। जब उसने प्रार्थना की, तो उसे एहसास हुआ कि परमेश्वर की इच्छा के प्रति यह समर्पण उतना ही विश्वास और यीशु के प्रति प्रेम का कार्य था, जितना कि विवाह होता।

अविवाहित रहना

इस पाठ्यक्रम में हम विवाह के लिए परमेश्वर की योजना की खोज कर रहे हैं। पवित्रशास्त्र से हम विवाह के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों के बारे में जानते हैं। हम विवाह के लिए परमेश्वर के निर्देशों और हमारे विवाह को मजबूत करने के व्यावहारिक तरीकों पर चर्चा करते हैं। हम विवाह के लिए परमेश्वर की योजना की भलाई देखते हैं।

अधिकतर लोगों के लिए विवाह परमेश्वर की इच्छा है। परन्तु कई लोग विवाह से पहले कई वर्षों तक अविवाहित वयस्क के रूप में जीते हैं। कई बार अविवाहित होने की दशा का यह समय लम्बा होता है। कुछ लोग अपने जीवनसाथी की मृत्यु के बाद

या तलाक के बाद अविवाहित होने की एक और अवधि का अनुभव करते हैं। कुछ लोग कभी विवाह नहीं करते।

कोई व्यक्ति इनमें से एक या अधिक कारणों से अविवाहित हो सकता है:

- वे विवाहित होने के बजाय अविवाहित रहने के लाभों को प्राथमिकता देते हैं।
- वे विवाह को लेकर चिंतित रहते हैं, क्योंकि उन्होंने अच्छे वैवाहिक सम्बन्ध नहीं देखे हैं।
- वे फिलहाल शिक्षा या पेशे जैसे लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।
- उन्हें विवाह की कोई भावनात्मक या शारीरिक आवश्यकता महसूस नहीं होती।
- उन्हें अच्छे विवाह का अवसर नहीं मिला है।

चूँकि एक अकेले व्यक्ति का चुनाव परमेश्वर और दूसरों के साथ सम्बन्धों को अत्याधिक प्रभावित करती है, इसलिए यह पाठ एक अविवाहित विश्वासी के जीवन पर केंद्रित है।

यीशु और पौलुस ने अविवाहित होने की दशा बारे में क्या कहा

फरीसियों ने यीशु से तलाक के बारे में एक प्रश्न पूछा। यीशु का उत्तर सुनने के बाद, उसके शिष्यों ने निष्कर्ष निकाला कि विवाह न करना ही बेहतर है (मत्ती 19:10)। यीशु, जो पृथ्वी पर अपने पूरे जीवन भर अविवाहित और कुँवारा रहा, उसने उत्तर दिया कि अधिकतर लोगों को विवाह करने की आवश्यकता है और केवल कुछ ही लोगों में दीर्घकालिक अविवाहित दशा को स्वीकार करने की क्षमता होती है (मत्ती 19:11-12)।

प्रेरित पौलुस- जिसने या तो कभी विवाह नहीं किया, या वह विधुर था-उसने भी कुरिन्थुस में रहने वाले अविवाहित विश्वासियों को ऐसी ही सलाह दी थी। यौन अनैतिकता की परीक्षा के कारण, अधिकतर लोगों को विवाह कर लेना चाहिए (1 कुरिन्थियों 7:2, 8-9)। पौलुस जानता था कि परमेश्वर ने विवाह में यौन घनिष्ठता को एक अच्छे उपहार के रूप में बनाया है (1 कुरिन्थियों 7:7, 1 तीमुथियुस 4:1-5, इब्रानियों 13:4)। उसने कहा कि यौन क्रिया विवाह के बाहर नहीं होनी चाहिए (1 थिस्सलुनीकियों 4:3-4)।

पौलुस ने अविवाहित जीवन को एक लाभ बताया। अविवाहित विश्वासी अपना समय, ऊर्जा और प्रयास प्रभु को प्रसन्न करने और सेवकाई में सेवा करने पर केंद्रित कर सकते हैं (1 कुरिन्थियों 7:32-35)।

पौलुस अविवाहित रहा (1 कुरिन्थियों 9:5)। उसने अविवाहित रहना चुना ताकि वह उस मिशनरी कार्य पर ध्यान केंद्रित कर सकें जो परमेश्वर ने उसे दिया था। फायदा अविवाहित होने की दशा को एक उपहार माना (1 कुरिन्थियों 7:7-8)। अपनी सेवकाई में बहुत कष्ट सहे (2 कुरिन्थियों 11:23-28)। इस कष्ट का सामना करना इसलिए आसान था, क्योंकि उस पर पत्नी या बच्चों की जिम्मेदारी नहीं थी (1 तीमुथियुस 5:8)।

हालाँकि पौलुस ने पाया कि अविवाहित दशा उसकी सेवकाई के लिए एक लाभ था, पर ऐसे भी तरीके भी हैं, जो दर्शाते हैं कि विवाह सेवकाई के लिए एक लाभ है।

► आप अविवाहित होने की दशा को सेवकाई के लिए एक लाभ के रूप में कैसे देखते हैं? आप विवाह को सेवकाई के लिए एक लाभ के रूप में कैसे देखते हैं?

पौलुस ने कहा कि लोगों को विवाह करने या न करने का निर्णय लेते समय कई बातें ध्यान में रखनी चाहिए:

- कुँवारे रहने की उनकी व्यक्तिगत् क्षमता या असमर्थता (1 कुरिन्थियों 7:9, 36-37)
- वर्तमान की कठिन परिस्थितियाँ, जैसे सताव (1 कुरिन्थियों 7:26)
- विवाह की जिम्मेदारियाँ (1 कुरिन्थियों 7:27-28, 32-35)

सही प्राथमिकताएँ

न तो अविवाहित होने की दशा और न ही विवाह दूसरे से बेहतर या अधिक आत्मिक है। **प्रत्येक के साथ अनोखी परीक्षाएँ, कठिनाइयाँ, आशीष और अवसर आते हैं।** प्रत्येक अलग-अलग समय पर और अलग-अलग लोगों के लिए उपयुक्त होते हैं।

अन्त में, व्यक्तिगत् संतुष्टि और पूर्णता एक व्यक्ति के परमेश्वर के साथ सम्बन्ध से आनी चाहिए, चाहे एक व्यक्ति विवाहित हो या नहीं (भजन संहिता 73:25, भजन संहिता 107:8-9)। इसके अलावा, सभी विश्वासियों - विवाहित और अविवाहित - को अपना ध्यान अनन्तकाल पर रखना चाहिए, क्योंकि जीवन छोटा है, और अनन्तकाल निश्चित है (1 कुरिन्थियों 7:31)।

► एक छात्र को समूह के लिए मत्ती 6:26-33 पढ़ना चाहिए।

इस परिच्छेद में, यीशु ने समझाया है कि संसार के मूल्य और प्राथमिकताएँ विश्वासियों से बहुत अलग हैं। विश्वासी का सर्वोच्च लक्ष्य परमेश्वर के राज्य में भाग लेना है। विश्वासी की पहली प्राथमिकता परमेश्वर के अनुग्रह से धार्मिकता का जीवन जीना है। परमेश्वर ने अपनी सन्तानों से तब उनकी शारीरिक और भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने की प्रतिज्ञा की है जब वे मत्ती 6:33 में दिए गए यीशु के वचनों का पालन करते हैं।

एक मसीही पुरुष को कब विवाह करना चाहिए? जब विवाह से उसे परमेश्वर के राज्य की बेहतर सेवा करने में सहायता मिलेगी। जब विवाह उसे धार्मिकता का अधिक फलवन्त, विजयी जीवन जीने में सहायता करेगा।

एक अविवाहित मसीही पुरुष को कब अविवाहित रहना चाहिए? जब विवाह या विवाह की खोज ही उसे परमेश्वर के राज्य में उसकी भूमिका से भटका रही हो। तब वह एक अविवाहित व्यक्ति के रूप में आत्मिक रूप से अधिक फलवन्त हो सकता है। तब वह आत्मिक रूप से विजयी हो सकता है और विवाह में प्रदान की गई यौन घनिष्ठता के बिना नैतिक पवित्रता बनाए रख सकता है।

► यदि आप अकेले हैं, तो ईमानदारी से व्यक्तिगत् चिंतन करने के लिए एक क्षण के लिए रुकें।

- क्या आप परमेश्वर के वचन का पालन करते हुए जी रहे हैं?
- इस समय परमेश्वर ने आपको अपने राज्य में क्या कार्य करने को दिया है?
- आपको क्या लगता है कि परमेश्वर ने आपको दीर्घावधि में अपने जीवन में क्या करने के लिए बुलाया है?
- क्या आपको लगता है कि विवाह आपको परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध और संसार में परमेश्वर के लिए आपके कार्य को बेहतर या बदतर बनाएगा?

परमेश्वर की प्राथमिकताओं को स्वीकार करने से अविवाहित विश्वासियों को यह निर्णय लेने में सहायता मिलती है कि उन्हें विवाह करना चाहिए या नहीं। यह हमारी इस बात की समझ को भी आकार देता है कि हमें सम्भावित जीवनसाथी में क्या देखना चाहिए। प्रत्येक विश्वासी जो विवाह करना चाहता है, उसे किसी ऐसे व्यक्ति की खोज करनी चाहिए जो परमेश्वर को पहले स्थान पर रखता हो, परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञाकारी रहता हो, और परमेश्वर के राज्य का विस्तार करना चाहता हो।

► छात्रों को समूह के लिए इफिसियों 4:17-24 और 1 यूहन्ना 2:15-17 पढ़ना चाहिए।

संसार के लोग अपने लिए जीते हैं। वे वही करने का चुनाव करते हैं जो उनके शरीर और मन चाहते हैं (इफिसियों 2:3), और वे परमेश्वर के वचन की अनाज्ञाकारिता करने को तैयार रहते हैं। पापी लोग अक्सर वही करते हैं, जो उन्हें अच्छा लगता है, और सबसे सुविधाजनक होता है, या जिससे दूसरे लोग उनकी ओर ध्यान दें। उनकी प्राथमिकता स्वयं को प्रसन्न करना है। वे किसी के साथ प्रेम सम्बन्ध शायद सिर्फ इसलिए बनाते हैं, क्योंकि वे उस व्यक्ति के प्रति शारीरिक रूप से आकर्षित हैं। वे एक व्यक्ति के साथ सम्बन्ध में सिर्फ इसलिए हो सकते हैं, क्योंकि जब वे उस व्यक्ति के साथ होते हैं, तब उनके मन में उत्साहित भावनाएँ होती हैं।

स्वार्थी व्यक्ति विवाह के स्वयं का समर्पण करने वाले सम्बन्ध के प्रति प्रतिबद्ध नहीं होना चाहेंगे। वे विवाह के बिना यौन सम्बन्ध बनाने के इच्छुक हो सकते हैं, भले ही परमेश्वर कहता है कि ऐसे सम्बन्ध गलत हैं (1 कुरिन्थियों 6:9-11)।

ऐसे स्वार्थी लोग जो विवाह करते हैं, जब विवाह कठिन हो जाता है, तब वे अपने जीवनसाथी को छोड़ सकते हैं। वे अपने जीवनसाथी को तलाक दे सकते हैं और किसी और के साथ नए सम्बन्ध की ओर बढ़ सकते हैं। परमेश्वर के पास उसके वचन के निर्देशों का पालन करने वाले लोगों के लिए कुछ उत्तम है (भजन संहिता 19:8, 11, व्यवस्थाविवरण 6:24)।

यीशु ने कहा है कि हम हर बात में परमेश्वर को प्रसन्न करें (मत्ती 16:24, 2 कुरिन्थियों 5:9, कुलुस्सियों 1:10)। चूँकि हम मसीह के अनुयायी हैं, इसलिए हमारे व्यक्तिगत् जीवन की प्राथमिकता परमेश्वर का राज्य और धार्मिकता होनी चाहिए। इसके अलावा, विवाह की हमारी खोज में प्राथमिकता परमेश्वर का राज्य और धार्मिकता होनी चाहिए। हमें विवाह के अपने कारणों और विवाह की खोज करने के तरीके में परमेश्वर का आदर करना चाहिए। हमें यीशु के मूल्यों पर ध्यान देना चाहिए

और उसने जिन बातों को सही और भला कहा है, हमें उनका पालन करना चाहिए। फिर हमें पति और पत्नी के रूप में हमसे उसकी अपेक्षाओं का पालन करके परमेश्वर का आदर करना चाहिए।

हर बात का एक समय होता है

प्रारम्भिक वयस्कता अधिकतर लोगों के लिए विवाह के लिए सबसे अच्छा समय है (नीतिवचन 5:18, मलाकी 2:15, तीतुस 2:4)। एक जवान वयस्क के रूप में, व्यक्ति को जीवन के लिए पहले से ही प्रशिक्षित और तैयार होना चाहिए। एक पुरुष या स्त्री को परिपक्व होना चाहिए, जिम्मेदारी लेने और बुद्धिमानी से निर्णय लेने में सक्षम होना चाहिए (1 तीमुथियुस 4:12)। आदर्श रूप से, जवान वयस्क विवाह और बच्चे के पालन-पोषण की ज़िम्मेदारियों के लिए तैयार होते हैं। उनका शरीर भी बच्चे पैदा करने के लिए तैयार होता है, और अधिकतर मामलों में, उनमें तीव्र यौन इच्छाएँ और वैवाहिक घनिष्ठता की आवश्यकता होती है।

आज कई संस्कृतियों में, जवान वयस्कों के लिए उच्च शिक्षा पूरी करने या अपने पेशे में सफलता पाने तक विवाह में देरी करना सामान्य बात हो गई है। अन्य जवान वयस्कों को विवाह में दिलचस्पी नहीं है, क्योंकि वे जिम्मेदारी के बिना जीना चाहते हैं।

बहुत से जवान वयस्क अपने विवाह से पहले यौन रूप से अनैतिक जीवन जीते हैं। उनमें तीव्र यौन इच्छाएँ होती हैं। भावनात्मक रूप से, वे घनिष्ठ सहयोग चाहते हैं। फिर भी, वे या तो अपने जीवन लक्ष्यों या जिम्मेदारी लेने की अनिच्छा के कारण विवाह और परिवार बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध नहीं होना चाहते हैं।

ऐसे मसीही जवान वयस्क जो विवाह में देरी कर रहे हैं, उन्हें अपनी प्राथमिकताओं पर सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए। उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे भक्तिपूर्ण और पवित्रता का जीवन जी रहे हैं और परमेश्वर की इच्छा का पालन कर रहे हैं। कुछ लोगों को इस बात पर विचार करने की आवश्यकता है कि परमेश्वर विवाह और धर्मी बच्चों के पालन-पोषण को कितना महत्व देता है।

ऐसे जोड़े जो अविवाहित होते हुए भी साथ रहते हैं

कई बार, एक पुरुष और स्त्री घनिष्ठता के सम्बन्ध में एक साथ जीते हैं, परन्तु विवाह में देरी करते हैं। वे एक-दूसरे के प्रति प्रतिबद्ध हो सकते हैं, परन्तु उन्होंने विवाह की वाचा नहीं की है। लोगों के पास इसके अलग-अलग कारण होते हैं:

1. कई बार भव्य और महँगे विवाहों की सांस्कृतिक अपेक्षाएँ निर्धन जोड़ों को स्वीकार्य विवाह करने से रोकती हैं।
2. कई बार एक जोड़ा इस डर से विवाह नहीं करता कि उनका विवाह असफल हो जाएगा। शायद वे सोचते हैं कि यदि उनकी विवाह नहीं हुआ तो अलगाव कम विनाशकारी होगा। शायद उन्हें यह आशा होती है कि साथ रहने के दौरान उनका सम्बन्ध और मजबूत हो जाएगा।

परमेश्वर ने यौन घनिष्ठता को विवाह के लिए सुरक्षित रखा है (इब्रानियों 13:4)। जो जोड़ा एक साथ रह रहा है, परन्तु विवाह नहीं किया है, वह परमेश्वर के वचन का उल्लंघन करने का दोषी है। एक-दूसरे के प्रति स्थायी रूप से पूर्ण प्रतिबद्धता की कमी और आपसी विश्वास की कमी के कारण उनकी घनिष्ठता कभी भी वह नहीं हो सकती है, जो होनी चाहिए।

विश्वासियों को अविश्वासियों के उदाहरण का अनुसरण नहीं करना चाहिए बल्कि इसके बजाय परमेश्वर के वचन का पालन करना चाहिए। कलीसिया को नैतिकता के लिए परमेश्वर की अपेक्षाओं को थामे रखना चाहिए और जोड़ों को विवाह के लिए पवित्रशास्त्र की योजना का पालन करने में सहायता करने के लिए व्यावहारिक सहयोग प्रदान करना चाहिए। उदाहरण के लिए, जब एक जोड़ा महँगा विवाह करने में सक्षम न हो, तो कलीसियाई परिवार को साधारण विवाह करने में उनका सहयोग करना चाहिए। इससे जोड़ों को विवाहित होकर नैतिकता के लिए परमेश्वर के पैमाने का अनुसरण करने में सहायता मिलेगी। इससे जोड़े को आर्थिक कर्ज से मुक्त होकर अपने विवाह का आरम्भ करने में भी सहायता मिलेगी। मसीहियों को याद रखना चाहिए कि विवाह स्वयं विवाह समारोह से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है, फिर भी एक निश्चित विवाह प्रतिबद्धता अवश्य की जानी चाहिए।

► छात्रों को समूह के लिए रोमियों 12:2 और फिलिप्पियों 2:15-16 पढ़ना चाहिए। चर्चा करें कि नैतिकता के प्रति विश्वासियों की प्रतिबद्धता उनके आसपास की संस्कृति को कैसे बदल सकती है।

स्वस्थ रूप से अविवाहित रहना

आत्म-समर्पण का विषय

> "संतोष वह संतुष्टि है, जो यह जानने से आती है कि परमेश्वर मेरी परिस्थितियों पर परमप्रधान है और मुझे वह दे रहा है, जो मेरे लिए सबसे उत्तम है।"

परमेश्वर के की प्रत्येक सन्तान को अपनी इच्छाओं को यीशु को समर्पित करना चाहिए। यीशु प्रभु है। जीवन भर, प्रत्येक विश्वासी की अपने प्रभु के रूप में यीशु के प्रति उनकी भक्ति को परखा जाएगा। कुछ कठिन परिस्थितियाँ आएँगी... या कोई अच्छी बात जिसे हम चाहते हैं वह *नहीं* होगी... और यीशु हमसे, यानी अपने अनुयायियों से पूछेगा, "क्या मैं तुम्हारा प्रभु हूँ? क्या तुम मेरी भलाई पर भरोसा करोगे? क्या तुम विश्वास करोगे कि मेरे पास एक सिद्ध योजना है? क्या तुम मेरी आज्ञा मानोगे? क्या तुम मेरे सामने समर्पण करोगे? क्या मैं जो कर रहा हूँ, तुम उसके प्रति समर्पण करोगे? क्या तुम इसमें मेरी महिमा करोगे?"

कुछ अविवाहित लोग अविवाहित रहकर ही खुश रहते हैं। परन्तु जो लोग विवाह करने की इच्छा रखते हैं और उन्हें विवाह करने का कोई अच्छा अवसर नहीं मिला है, उन्हें विवाह के लिए रुकने में परमेश्वर के चुनाव को नम्रता से स्वीकार करना चाहिए।

> मसीही पुरुष और स्त्रियाँ... यह जान लें कि यदि परमेश्वर चाहता है कि उनका विवाह हो, तो वह इसे अपने सही समय और तरीके से स्पष्ट करेगा। परन्तु उसे हमेशा पहले आना चाहिए, और उस पर हमेशा पूरा भरोसा किया जाना चाहिए।[22]

परमेश्वर विश्वासयोग्य और भला है। एक ऐसा कार्य है, जिसे वह अविवाहित विश्वासी के मन और जीवन में करना चाहता है। परमेश्वर हमेशा उस बात की अनुमति देगा जो अन्त में उसकी सन्तानों के लिए सर्वोत्तम होगा, और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि उससे यीशु की सबसे अधिक महिमा होगी। सभी बातों में, परमेश्वर हमें हमारे चरित्र में यीशु के समान बनाने के लिए काम कर रहा है (रोमियों 8:28-29), और हमें अनन्तकाल तक यीशु की आराधना करने में सक्षम बनाने के लिए काम कर रहा है (1 पतरस 1:6-7)।

परमेश्वर अपनी सन्तानों में से एक के लिए एक धर्मी जीवनसाथी प्रदान करने में पूरी तरह सक्षम है। वह एक मसीही पुरुष की एक धर्मी पत्नी की खोज करने में सहायता कर सकता है, क्योंकि पुरुष एक ऐसी गुणी स्त्री की खोज में रहता है, जो अपने जीवन से परमेश्वर का आदर करती हो (नीतिवचन 18:22, नीतिवचन 19:14, नीतिवचन 31:10)।

ऐसी अविवाहित स्त्री जो मसीह के लिए जीती है, वह परमेश्वर पर भरोसा कर सकती है कि वह उसकी आवश्यकताओं का सबसे अच्छे तरीके से ध्यान रखेगा, चाहे परमेश्वर एक पुरुष को उससे विवाह करने के लिए प्रेरित करे या नहीं। वह परमेश्वर के प्रावधान और विश्वासयोग्यता के कारण पूर्ण और आत्मिक रूप से फलवन्त जीवन जी सकती है।

यदि अविवाहित दशा उसके लिए परमेश्वर का चुनाव है, तो वह परमेश्वर को एक सिद्ध प्रेमी, आवश्यकताओं को पूरा करने वाले, रक्षक और अगुवे के रूप में पाएगी। यीशु उसके मन का पति हो सकता है (यशायाह 54:5), और वह एक सांसारिक पति के बजाय उससे प्रेम कर सकती है, उसका आदर कर सकती है, उसके प्रति समर्पित हो सकती है और उसकी आज्ञा मान सकती है।

यदि विवाह उसके लिए परमेश्वर का चुनाव बन जाता है, तो उसकी अविवाहित दशा के समय ने उसे परमेश्वर (जो *एकलौता* सिद्ध प्रेमी, आवश्यकता पूरी करने वाला, रक्षक और अगुवा है) पर भरोसा करना सिखाया होगा, यहाँ तक कि वह एक अधूरे व्यक्ति, यानी मानव पति से प्रेम करना, उसका आदर करना और उसके अधीन होना भी सीखती है।

मसीह में पूर्णता

सब विश्वासियों को अपनी सर्वोच्च संतुष्टि मसीह में खोजनी चाहिए, न कि किसी मानव साथी में। यहाँ तक कि यदि कोई विवाह करना चाहता है, तो लम्बे समय तक अविवाहित रहा यह सुनिश्चित करने का अवसर देता है कि वह वास्तव में यीशु

---

[22] लेस्ली लुडी Leslie Ludy, *पवित्रताई से भरी अविवाहित दशा* (*Sacred Singleness*) (Eugene, OR: Harvest House Publishers, 2009), 24 से अनुकूलित।

में पूर्ण है। अविवाहित होना यह साबित करने का अवसर देता है कि यीशु पर्याप्त है (फिलिप्पियों 4:11-13)।

> सच्चाई तो यह है कि परमेश्वर ने विवाह की सृष्टि की, और हमें इसे एक पवित्र व्यवस्था के रूप में आदर देना चाहिए, यह पूरे पवित्रशास्त्र में स्पष्ट है... आदम के लिए अकेला रहना अच्छा नहीं था, परन्तु क्या ऐसा इसलिए था, क्योंकि परमेश्वर स्वयं आदम की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं था? कदापि नहीं! जैसा कि बाइबल बताती है, परमेश्वर ने हव्वा को इसलिए बनाया क्योंकि आदम को पृथ्वी पर वह काम करने के लिए एक *सहायक,* एक साथी की आवश्यकता थी, जिसे करने के लिए परमेश्वर ने उसे बुलाया था। हाँ, एक-दूसरे के साथ रहने के कारण आदम और हव्वा दोनों को कई आशीष और लाभ मिले, परन्तु उनका विवाह कभी भी परमेश्वर का स्थान नहीं ले सका। अब भी परमेश्वर ओको उनके प्रेम और आराधना का पहला और प्रमुख लक्ष्य परमेश्वर को ही होना था।[23]

एक प्रार्थना

"हे प्रभु, मैं तेरा हूँ।
यही मेरी पहचान,
मेरी बुलाहट,
मेरी सुरक्षा,
मेरा आराम,
मेरा उद्देश्य,
मेरा आनन्द, और
मेरा प्रतिफल है।
मुझे तेरी आवश्यकता है।
तू पर्याप्त है।
तू मुझे भर दे।
तू मेरा स्रोत है।

एक व्यक्ति तब परमेश्वर के प्रेम को और अधिक अनुभव करना सीख सकता है, जब उसके पास शारीरिक और भावनात्मक स्नेह प्रदान करने के लिए एक जीवनसाथी या परिवार नहीं होता है। भजन संहिता 73:25-26 जैसे पवित्रशास्त्र भावनात्मक परीक्षा और शारीरिक परीक्षा के समय में प्रोत्साहन देते हैं:

> स्वर्ग में मेरा और कौन है? तेरे संग रहते हुए मैं पृथ्वी पर और कुछ नहीं चाहता। मेरे हृदय और मन दोनों तो हार गए हैं, परन्तु परमेश्वर सर्वदा के लिये मेरा भाग और मेरे हृदय की चट्टान बना है।

जैसा कि लेस्ली लुडी लिखते हैं,

> भजनकार दाऊद को अपने जीवन में स्त्रियों का भरपूर साथ मिला। परन्तु यह *परमेश्वर* के साथ दाऊद का घनिष्ठ सम्बन्ध है जो उसे इन आयतों में दर्शायी गई पूर्ण संतुष्टि प्रदान करता है।[24]

अविवाहित विश्वासी जान लेंगे कि यीशु ही पर्याप्त है; परमेश्वर के साथ एक सम्बन्ध का होना संतुष्टि देता है।

---

[23] लेस्ली लुडी Leslie Ludy, *पवित्रताई से भरी अविवाहित दशा* (*Sacred Singleness*) (Eugene, OR: Harvest House Publishers, 2009), 66-67।

[24] लेस्ली लुडी Leslie Ludy, *पवित्रताई से भरी अविवाहित दशा* (*Sacred Singleness*) (Eugene, OR: Harvest House Publishers, 2009), 67। लेस्ली लुडी भजन संहिता 16:11, भजन संहिता 73:25, और भजन संहिता 107:9 का उल्लेख कर रहे थे।

सेवा के अवसर

> “यदि आप अविवाहित है, तो याद रखें कि आपको अपने समय और स्वतंत्रता को स्व-केंद्रित लक्ष्यों पर नष्ट करने के लिए नहीं, बल्कि कलीसिया और संसार की सेवा करने के लिए बुलाया गया है।”
> -पॉल लेमिसेला के लेख से अनुकूलित

जब अविहवाहित विश्वासी मसीह में अपनी संतुष्टि को पाते हैं, तो वे उनकी अविवाहित दशा को दूसरों की सेवा करने का अवसर बना देते हैं। अपनी निजी आवश्यकताओं पर ध्यान लगाने और असंतुष्ट महसूस करने के बजाय, वे दूसरों की आवश्यकताओं पर ध्यान देना और उन्हें पूरा करना सीख सकते हैं। दूसरों की सहायता करना एक फलवन्त और भरपूरी का जीवन जीने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक है। जीवन के इस काल में विकसित हुआ चरित्र जीवन भर अच्छा फल लाते रहने में उनकी सहायता करेगा।

► छात्र समूह के लिए फिलिप्पियों 2:3-4 और तीतुस 3:8, 14 पढ़ें।

जैसा कि पहले बताया गया है, विभिन्न जीवन परिस्थितियाँ अनोखे अवसर प्रदान करती हैं। जीवन के प्रत्येक चरण में, कुछ ऐसी बातें होती हैं, जिन्हें एक व्यक्ति कर सकता है, पर दूसरी बातें भी हैं, जिन्हें वह नहीं कर सकता। एक अविवाहित युवती ने उन बातों की सूची बनाई है, जिन्हें करने में वह सक्षम है, विशेषकर इसलिए *क्योंकि* वह अविवाहित है। अन्य अविवाहित पुरुष और स्त्रियों के पास अपनी सूची में रखने के लिए विभिन्न बातें होंगी।

क्योंकि मैं एक अविवाहित युवती हूँ, इसलिए मेरे लिए ये काम करना अधिक आसान है:

- वृद्ध लोगों से मिलना और उनके साथ समय बिताना।
- बेघरों के लिए भोजन पकाना और उन्हें खिलाना।
- बाइबल का गहराई से अध्ययन करना और बच्चों के लिए बाइबल पाठ तैयार करना।
- अपने घर में महिलाओं और लड़कियों की सेवा करना।
- मध्यस्थता की प्रार्थना में बिना किसी रुकावट समय व्यतीत करना।
- कोई नई कला सीखना।
- प्रोत्साहन के पत्र और कार्ड लिखना।
- दूसरे लोगों की परियोजनाओं में स्वेच्छा से सहायता करना।
- अचानक किसी विशेष आवश्यकता या कार्यक्रम के आने पर शीघ्रता से अपनी समय-सारणी को व्यवस्थित करना।

प्रत्येक व्यक्ति के पास उसकी जीवन स्थिति के कारण विशिष्ट अवसर या जिम्मेदारियाँ होती हैं। छोटे बच्चों की माँ जिन बातों की सूची बनाएगी उसमें उन बातों के उदाहरण शामिल हो सकते हैं, जिन्हें वह अपने बच्चों को सिखा रही है या वे तरीके जिनसे वह उन्हें प्रशिक्षित कर रही है। चूँकि वह उनकी माँ है, परमेश्वर ने उसे इन तरीकों से सेवा करने का अवसर और जिम्मेदारी प्रदान की है। (इस पाठ के अन्त में आप अपनी व्यक्तिगत सूची बनाएंगे।)

भाईचारा

जिन लोगों का विवाह नहीं हुआ है, उनके लिए दूसरों के साथ स्वस्थ सम्बन्ध रखना अत्याधिक महत्वपूर्ण है। जैसा कि पिछले पाठों में चर्चा की गई थी, परमेश्वर ने लोगों को उसके साथ और अन्य लोगों के साथ सम्बन्धों के लिए बनाया है।

- अविवाहित लोगों को ऐसे लोगों के साथ सम्बन्ध रखने चाहिए जिनकी वे सेवा कर सकें—शायद बच्चे या जवान या वृद्ध लोग।
- अविवाहित लोगों को सम्मति और जवाबदेही के लिए आयु में बड़े, परिपक्व सलाहकारों की आवश्यकता होती है।
- अविवाहित लोगों को ऐसे मित्रों की आवश्यकता होती है, जो जीवन में समान स्थान पर हों, ताकि वे प्रभु में एक-दूसरे को प्रोत्साहित कर सकें और साथ मिलकर संगति कर सकें।
- अविवाहित लोगों को विवाहित दम्पत्तियों और परिवारों के साथ मित्रता रखनी चाहिए। ऐसी मित्रता से बहुत सी पारस्परिक आशीषें मिलती हैं।

दूसरों के साथ विविध प्रकार के सम्बन्ध रखने से एक व्यक्ति को सेवा करने के कई अवसर मिलते हैं। मित्रता ऐसी भावनात्मक और आत्मिक सहायता प्रदान करती है जिसकी अविवाहित व्यक्ति को आवश्यकता होती है। मित्रता उनके परिवार की आवश्यकता को पूरा करने में सहायता करती है, विशेषकर तब जब वे अपने परिवार के पास न रहते हों।

इसमें दो अतिरिक्त सावधानियाँ बरती जानी चाहिए:

1. जिस व्यक्ति का विवाह नहीं हुआ है, उसे भावनात्मक और शारीरिक आवश्यकताओं के कारण मूर्खतापूर्ण या अनैतिक सम्बन्ध रखने से बचने के विषय में सावधान रहना चाहिए।
2. एक अविवाहित व्यक्ति को किसी भी मानवीय सम्बन्ध से बढ़कर परमेश्वर के साथ सम्बन्ध को प्राथमिकता देनी चाहिए।

वैचारिक जीवन

सभी विश्वासियों को परमेश्वर के सशक्त करने वाले अनुग्रह के द्वारा अपने वैचारिक जीवनों को पवित्र रखना चाहिए (नीतिवचन 4:23)। भजन संहिता 19:14 एक प्रार्थना है, जिसमें परमेश्वर से विनती की गई है कि परमेश्वर हमारी सहायता करे कि हम उसके लिए अपने शब्दों और विचारों में सावधानी से जी सकें। यह प्रार्थना हमें स्मरण दिलाती है कि हम अपने सोचे-समझे विचारों और वक्तव्यों के लिए परमेश्वर के प्रति जवाबदेह हैं।

हम अपने मनों में क्या भरते हैं, इसके विषय में हमारे पास चुनाव होते हैं (फिलिप्पियों 4:8): यानी हम क्या देखते हैं, क्या सुनते हैं, या पढ़ते हैं। यदि हम परमेश्वर का आदर करना चाहते हैं, तो हमें ऐसा मानसिक भोजन चुनना चाहिए जो पवित्र है

और जो हमें परमेश्वर के निकट लाएगा और उसकी आज्ञा मानने में हमारी सहायता करेगा (रोमियों 12:2, रोमियों 13:14)।

मसीह के अनुयायियों को दूसरों के पापों से अपना मनोरंजन नहीं करना चाहिए (भजन संहिता 101:3, 1 कुरिन्थियों 15:33)। अनैतिक व्यवहार को देखकर आनन्द लेने का मतलब किसी और के पाप में भागीदारी करना है (रोमियों 1:32)। ऐसी चीज़ों को देखना और सुनना एक विश्वासी को पाप के प्रति असंवेदनशील बना देगा और प्रभु को प्रसन्न करने से उसके ध्यान के भटकने का कारण बनेगा (नीतिवचन 13:20)। परमेश्वर का वचन हर समय परमेश्वर का आदर करने (नीतिवचन 23:17) और बुराई से वैसे घृणा करने की हमारी आवश्यकता पर बल देता है, जैसा कि वह करता है (नीतिवचन 8:13)। जब हम प्रभु का भय मानते और बुराई से फिर जाते हैं, तो हमें आशीष मिलती है (भजन संहिता 111:10)।

जब हम अपने मन में क्या रखना है और किन बातों ध्यान देना है, जैसी बातों को बारे में परमेश्वर के निर्देशों का उल्लंघन कर देते हैं, तो हमें अपने पापों को मान लेना चाहिए और उन चीजों को करना बंद कर देना चाहिए। यहाँ तक कि ऐसे विषयों में भी जब हमने गलती से कुछ बुरा सुन लिया हो या देख लिया हो, हमें जानबूझकर उन चीजों से सम्बन्धित विचारों को अच्छे और धर्मी विचारों से बदल देना चाहिए।

► छात्र समूह के लिए भजन संहिता 19:14, भजन संहिता 1:1-2, फिलिप्पियों 4:6-8, और इफिसियों 5:25-27 पढ़ें।

फिलिप्पियों की आयतें हमें बताती कि परमेश्वर हमारे हृदय और मन की रक्षा करना चाहता है, परन्तु हमें जानबूझकर सही चीजों पर ध्यान देकर उसका सहयोग करना चाहिए। स्वस्थ और पवित्र विचार वाले जीवन के लिए पवित्रशास्त्र पर मनन करना अत्याधिक महत्वपूर्ण है। इफिसियों की पुस्तक हमें बताती है कि परमेश्वर का वचन हमें धोकर शुद्ध करता है। इसमें निश्चित रूप से हमारे मन और विचार शामिल हैं।

► कौन सी गतिविधियाँ आपको परमेश्वर का आदर करने वाला वैचारिक जीवन जीने में सहायता करती हैं? किन अन्य आयतों ने आपके वैचारिक जीवन में आपकी सहायता की है?

अविवाहित दशा और लैंगिकता

यदि आप इस पाठ को पूरे पाठ्यक्रम से अलग से पढ़ रहे हैं, तो कृपया पाठ 4 का भी अध्ययन करें जहाँ यौन पवित्रता और नैतिक विषयों पर चर्चा की गई है।

उपसंहार

अविवाहित दशा विश्वासियों की मसीह के साथ उनके सम्बन्ध विकसित करने और दूसरों की सेवा करना सीखने के अद्वितीय अवसर प्रदान करती है। अविवाहित लोगों को अन्य लोगों के साथ स्वस्थ सम्बन्धों का निर्माण करते हुए मसीह में अपनी पूर्णता की खोज करनी चाहिए। उन्हें अपने अविवाहित दशा के अवसरों का इस्तेमाल परमेश्वर की महिमा और उसके राज्य की भलाई के लिए करना चाहिए। परमेश्वर की प्राथमिकताएँ विश्वासियों को विवाह की सम्भावना के सम्बन्ध में अच्छे निर्णय लेने में सहायता करती हैं।

सामूहिक चर्चा के लिए

► ऐसी कई प्राथमिकताओं का नाम बताएँ और उन पर चर्चा करें, जो जीवन के अविवाहित दशा के वर्षों, विवाह करने का चुनाव, और विवाह की खोज करने के निर्णयों में मार्गदर्शन करेंगी।

► आपकी कलीसिया अविवाहित सदस्यों की अधिक प्रभावी ढंग से सेवा कैसे कर सकती है?

► आपका परिवार एक अविवाहित व्यक्ति से कैसे मित्रता कर सकता है?

► यदि आप अविवाहित हैं, तो आप अपने कलीसियाई परिवार में कैसे योगदान दे सकते हैं? आप विभिन्न आयु समूह और जीवन काल के लोगों के लिए एक आशीष कैसे बन सकते हैं?

► इस पाठ में कौन से विचार आपके लिए नए थे?

► आपके अनुसार इस पाठ में और किन बातों की चर्चा की जा सकती थी?

► चर्चा करें कि इस पाठ के सिद्धान्त जीवन के अन्य समयों पर कैसे लागू होते हैं।

प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता,

हमारे जीवन के हर काल में हरे प्रति विश्वासयोग्य रहने के लिए तेरा धन्यवाद हो। उन लोगों के उदाहरणों के लिए धन्यवाद, जो अपनी अविवाहित दशा के वर्षों में तेरी उपस्थिति में और तेरी महिमा के लिए जिए हैं।

हमारी सहायता कर कि हम जीवन भर पूरी तरह से तुझे समर्पित रहें। हमारी सहायता कर कि हम तेरे साथ सम्बन्ध में संतुष्टि को खोजें और पाएँ। हमारी सहायता कर कि हम उन अवसरों का इस्तेमाल करें जो तूने हमें हमारे जीवन के वर्तमान समय में दिए हैं।

हमें सशक्त कर कि हम अपने चुनावों, विचारों, और दूसरों के साथ हमारे सम्बन्धों में सदा तेरा आदर कर सकें। हमें अपनी महिमा के लिए फलवन्त बना।

आमीन

पाठ सम्बन्धी नियत कार्य

(1) उस स्थिति के बारे में सोचें जिसमें यीशु ने आपसे उसकी योजना के प्रति समर्पण करने के लिए कहा था। कम से कम दो अनुच्छेदों में उस परिस्थिति और उसके प्रति अपने प्रत्युत्तर का वर्णन करें। (यह कोई वर्तमान स्थिति या आपके अतीत की कोई बात हो सकती है।) आपके विश्वास को कैसे परखा गया? प्रभु ने आपकी अगुवाई कैसे की? क्या आपने उसकी योजना के प्रति आत्मसमर्पण कर दिया था? आपने उससे क्या कहा? उस स्थिति में आपको आज्ञाकारिता कैसी प्रतीत हुई?

(2) आपकी वैवाहिक स्थिति, लिंग या जीवन स्थिति **के कारण** आपके पास कौन से अवसर हैं? फिलहाल, यह न सोचें कि आप क्या नहीं **कर सकते।** इसके बजाय, एक क्षण निकालकर उन बातों की सूची बनाएँ जिन्हें आप केवल इसलिए करने में सक्षम हैं, क्योंकि परमेश्वर ने आपको इस समय वहाँ रखा है। लिखें, "चूँकि मैं ________ हूँ, इसलिए मेरे पास...का अवसर है।"

(3) नीचे दिए गए प्रत्येक वचन को पढ़ें और उस पर मनन करें, जिनका सन्दर्भ पाठ के अन्तिम भाग में दिया गया था। परमेश्वर से वह सब बातें दिखाने के लिए कहें, जिन्हें बदलने की आपको आवश्यकता है, ताकि आपका वैचारिक जीवन पवित्र और उसे प्रसन्न करने वाला हो। अंगीकार और आज्ञाकारिता करने की प्रतिबद्धता की एक प्रार्थना लिखें।

- भजन संहिता 1:1-2
- भजन संहिता 19:14
- भजन संहिता 101:3
- भजन संहिता 111:10
- नीतिवचन 4:23
- नीतिवचन 8:13
- नीतिवचन 13:20
- नीतिवचन 23:17
- रोमियों 1:32
- रोमियों 12:2
- रोमियों 13:14
- 1 कुरिन्थियों 15:33
- फिलिप्पियों 4:6-8

(4) सत्र कार्य 3 से याद करने के लिए तीन आयतें चुनें। अगली कक्षा की शुरुआत में, अपनी स्मृति से उन आयतों को लिखें या सुनाएँ।

पाठ 6

विवाह की तैयारी

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में, छात्र यह करने लगेंगे:

(1) जीवनसाथी को बुद्धिमानी से चुनने के महत्व को समझना।

(2) बाइबल की प्राथमिकताओं और सिद्धान्तों के आधार पर वर्णन करना कि किस प्रकार का व्यक्ति एक विश्वासी का जीवनसाथी बनने के योग्य है।

(3) विवाह से पहले सम्बन्धों में माता-पिता की भागीदारी के लिए बाइबल के सिद्धान्तों को लागू करना।

(4) विवाह से पहले की मित्रता में बुद्धिमानी से निर्णय लेना।

रुत और सैमुएल

रुत भारत में एक मसीही परिवार में पली-बढ़ी थी। एक दिन उसके परिवार ने उसे एक जवान प्रचारक सैमुएल के बारे में बताया जिसे एक पत्नी की आवश्यकता थी। उन्होंने सैमुएल से भी उसके बारे में बात की। रुत बोली कि उसकी दिलचस्पी सैमुएल से मिलने में नहीं है। एक शाम वह अपने घर आई और उसे पता चला कि सैमुएल वहाँ कई घंटों से उससे मिलने की प्रतीक्षा कर रहा था। उसे सैमुएल को देखकर ख़ुशी नहीं हुई, पर वह बैठ गई कि सैमुएल उससे बात कर सके। उसने उससे कहा, “मैं एक बाइबल संस्थान शिक्षक हूँ। मुझे अधिक वेतन नहीं मिलता। मैं सुसमाचार प्रचार करने लिए कठिनाई भरे क्षेत्रों में भी जाता हूँ, और कई बार मैं बाहर भूमि पर ही सोता। क्या तुम मेरे साथ दुःख सहने के लिए तैयार हो?” रुत रोने लगी क्योंकि जब वह बोल रहा था, तो उसे महसूस हुआ कि परमेश्वर उससे कह रहा था कि वह वही पुरुष है, जिससे उसे विवाह करना चाहिए। उस बातचीत के बाद, वे विवाह तक एक दूसरे से बहुत कम मिले, पर कभी अकेले नहीं। अब उन्हें साथ में सेवा करते हुए कई वर्ष हो चुके हैं।

एक जीवनसाथी का चुनाव

सावधानी से चुनाव करें!

यीशु ने कहा कि विवाह परमेश्वर की सृष्टि के अनुसार एक आजीवन प्रतिबद्धता है (मत्ती 19:6-8)। आप एक व्यक्ति से केवल इस समय के लिए विवाह नहीं करते हैं। आप एक व्यक्ति को तब तक अपना जीवनसाथी बनाने के लिए विवाह करते हैं, जब तक कि आपमें से कोई एक मर न जाए (रोमियों 7:2)। बुद्धिमानी से निर्णय लें!

आप केवल जीवन के अच्छे समय और खुशियाँ ही साझा नहीं करेंगे। आप जीवन की कठिनाइयों, दुःखों, संकटों और दुःखद घटनाओं को भी साझा करेंगे। आप नहीं जानते कि आपको किस तरह के दुःखों का सामना करना पड़ेगा। कठिन समय में एक भले और धर्मी जीवनसाथी से विवाह करने से बहुत सारी आशीषें मिलती हैं। परन्तु जब आपका जीवनसाथी प्रभु में मजबूत न हो तो कठिन समय तब और भी अधिक बुरा हो सकता है। आप एक व्यक्ति से अपने जीवन भर के लिए विवाह कर रहे हैं—यानी सारी परिस्थितियों के लिए। इसलिए जीवनसाथी को सावधानी से चुनें!

> "आपने अपने परिवार में जन्म लेने का चुनाव नहीं किया; परन्तु आपको यह चुनने का अवसर अवश्य *मिलता* है कि आप अपना अगला परिवार बनाने के लिए किससे विवाह करेंगे।"
> - गैरी थॉमस,
> पवित्र खोज (*The Sacred Search*)

आप किसी ऐसे व्यक्ति से विवाह कर रहे हैं, जिसके साथ आपको अपने परिवार का पालन-पोषण करना है। आप अपने बच्चों के माता या पिता और अपने वंशजों के दादा या दादी को चुन रहे हैं। आप एक ऐसे व्यक्ति को चुन रहे हैं, जिसका आत्मिक जीवन आपके बच्चों के आत्मिक जीवन को अत्याधिक प्रभावित करेग। आप एक ऐसे व्यक्ति को चुन रहे हैं जिसके चरित्र, आदतों और व्यवहार का अनुकरण आपके बच्चे करेंगे (इफिसियों 5:1)। आप उसे चुन रहे हैं, जो आदर्श और बोली के द्वारा आपके बच्चों को आकार देगा और उन्हें प्रशिक्षित करेगा (नीतिवचन 23:26)। एक ऐसे व्यक्ति को चुनें जो आपके बच्चों का पालन-पोषण और देखभाल करेगा, एक ऐसा व्यक्ति जो सावधानी, परिश्रम और प्रेम के साथ उनकी अगुवाई करेगा और उन्हें अनुशासित करेगा। आप एक ऐसे व्यक्ति को चुन रहे हैं जो —या तो भलाई के लिए या हानि के लिए — आगामी पीढ़ियों को प्रभावित करेगा। बुद्धिमानी से चुनाव करें!

► छात्रों को समूह के लिए नीतिवचन 14:1, नीतिवचन 24:3-4, और नीतिवचन 31:10-12, 30 पढ़ना चाहिए।

आपके द्वारा किया गया वैवाहिक साथी का चुनाव आपके जीवन का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण निर्णय है; पहला चुनाव यीशु को अपने निज प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करना होता है। आपका चुनाव आपके जीवन की दिशा को बदल देगा, परन्तु इसका प्रभाव कई अन्य लोगों पर भी पड़ेगा। एक बुद्धिमानी से भरा चुनाव से आपको और बहुत से अन्य लोगों को भी आशीष मिलेगी। एक मूर्खतापूर्ण चुनाव आपको और बहुत से अन्य लोगों को भी नुकसान पहुँचाएगा। प्रार्थनापूर्वक चुनाव करें!

संसार में कोई भी सिद्ध नहीं हैं। आपकी अपनी समस्याएँ, निर्बलताएँ और असफलताएँ हैं। आपका जीवनसाथी भी सिद्ध नहीं होगा और जीवन भर असिद्ध ही रहेगा। इसलिए एक *सिद्ध* जीवनसाथी की खोज न करें। इसके बजाय, ऐसे जीवनसाथी की खोज करें जो बिना किसी संकोच के परमेश्वर से प्रेम करता हो। किसी ऐसे व्यक्ति की खोज करें जो गलतियों और असफलताओं को मानने और सुधारने के लिए पर्याप्त विनम्र हो। ऐसा जीवनसाथी आपके लिए आशीष साबित होगा और आप निर्बलता के क्षेत्रों में एक-दूसरे का सहयोग और सहायता कर सकते हैं।

► छात्रों को समूह के लिए नीतिवचन 11:14, नीतिवचन 12:15, नीतिवचन 13:18, और नीतिवचन 23:22 पढ़ना चाहिए।

बुद्धिमानी से चुनाव करें। जीवन भर के लिए चुनाव करें। धर्मी लोगों और अपने माता-पिता से सलाह लें। उनकी चेतावनियों

पर ध्यान दें। केवल अपनी भावनाओं की न मानें। यह चुनाव अत्याधिक महत्वपूर्ण है, इसलिए लापरवाह न हों।

एक अविश्वासी से विवाह न करें

एक बात जो परमेश्वर के लिए अत्याधिक महत्वपूर्ण है, वह यह है कि उसके लोग केवल संगी विश्वासियों से ही विवाह करें। यह इसलिए है, क्योंकि एक व्यक्ति के साथ परमेश्वर का सम्बन्ध सम्पूर्ण जीवन और अनन्तकाल में सबसे महत्वपूर्ण बात है। विवाह—सभी मानवीय सम्बन्धों में सबसे निकटतम—यानी एक व्यक्ति के परमेश्वर के साथ सम्बन्ध को प्रभावित करता है। एक अविश्वासी जीवनसाथी के रहते हुए एक विश्वासी के लिए परमेश्वर के साथ घनिष्ठता और सावधानी से चलना अधिक कठिन होता है।

इसके अलावा, माता-पिता का अविश्वास बच्चों को मसीह के विरुद्ध चलने के लिए अत्याधिक प्रभावित करता है। जिन परिवारों में माता या पिता अविश्वासी होते हैं, वहाँ सभी बच्चों के लिए परमेश्वर की सेवा कर पाना अत्याधिक दुर्लभ होता है। परमेश्वर चाहता है कि हम उसकी सेवा करें, और परमेश्वर हमसे कहता है कि हम अपने बच्चों का पालन-पोषण उसकी सेवा करने के लिए करें (उत्पत्ति 18:19; व्यवस्थाविवरण 6:2, 7; मलाकी 2:15)।

पुराने नियम में, इस्राएलियों को विश्वासी परिवार से बाहर किसी से भी विवाह करने की अनुमति नहीं थी।[25] परमेश्वर जानता था कि अविश्वासियों से विवाह करने से लोग अन्य देवताओं की पूजा करने लगेंगे, जिससे सच्चे परमेश्वर के साथ उनका सम्बन्ध बिगड़ जाएगा! पुराना नियम हमें दिखाता है कि इस्राएल में ठीक यही हुआ था।[26]

आज भी, विश्वासियों को केवल विश्वासियों से ही विवाह करना चाहिए। इस पर कोई समझौता न करें। एक अविश्वासी के साथ प्रेम सम्बन्ध होने का बहाना न बनाएँ।

► छात्रों को समूह के लिए 2 कुरिन्थियों 6:14-18 और 1 कुरिन्थियों 7:39 को पढ़ना चाहिए।

जब आपका जीवनसाथी विश्वासी न हो

परमेश्वर नहीं चाहता कि एक अविवाहित विश्वासी किसी अविश्वासी से विवाह करे। यह निश्चित है। परन्तु जब अविश्वासी परिवार से सम्बन्ध रखने वाला कोई पति या पत्नी उद्धार पाने के लिए मसीह के पास आता है, तो उसे अपने न उद्धार न पाए हुए पति या पत्नी से विवाह में तब तक बना रहना चाहिए, जब तक कि वह पति या पत्नी उसके साथ रहने से इनकार न करे (1 कुरिन्थियों 7:12-16)। कुछ विषयों में, अविश्वासी पतियों को उनके मसीही पति या पत्नी के विश्वास के कारण उद्धार मिला है (1 कुरिन्थियों 7:14, 16; 1 पतरस 3:1-2)। परन्तु मसीही अविवाहित लोगों को कभी भी किसी ऐसे व्यक्ति

---

[25] निर्गमन 34:11-16, व्यवस्थाविवरण 7:1-6, यहोशू 23:11-13, एज्रा 9-10

[26] न्यायियों 3:5-7, 1 राजाओं 11:1-6, एज्रा 9:10-15

से विवाह के बारे में नहीं सोचना चाहिए जो विश्वासी नहीं है।

सम्भावित जीवनसाथी में विचार करने योग्य चारित्रिक गुण

विवाह की तैयारी करते हुए, व्यक्तियों को ऐसे चारित्रिक गुण विकसित करने चाहिए, जो उनकी अच्छा जीवनसाथी बनने में सहायता करेंगे। जब वे विवाह के लिए किसी की खोज करते हैं, उन्हें किसी ऐसे व्यक्ति की खोज करनी चाहिए, जो इन्हीं गुणों में बढ़ रहा हो।

> एक पुरुष और स्त्री को तब तक एक-दूसरे से विवाह करने के लिए प्रतिबद्ध नहीं होना चाहिए, जब तक कि वे ईमानदारी से यह न कहें कि, मैं अविवाहित रहने की तुलना में, तुमसे विवाह करके प्रभु की सेवा करने में अच्छी तरह से सक्षम हो ...

1. **ऐसे व्यक्ति से विवाह करें, जिसका मसीह के साथ सम्बन्ध आपको मसीह के साथ अपने सम्बन्ध में प्रोत्साहित करेगा और आपको आत्मिक रूप से बढ़ने के लिए प्रेरित करेगा** (2 पतरस 1:5-9, 2 पतरस 3:18)।

2. **एक ऐसे व्यक्ति से विवाह करें जिसका चरित्र अच्छा हो।** इफिसियों 5:33 पत्नियों को उनके चरित्र की परवाह किए बिना अपने पतियों का आदर करने की आज्ञा देता है, परन्तु ऐसा करना तब अत्याधिक आसान होता है, जब उनका विवाह ऐसे पुरुषों से हुआ हो जो आदर के योग्य हैं। अच्छे चरित्र में क्षमा करने का अभ्यास करना, स्वयं पर नियंत्रण रखना, नम्र होना, परिश्रमी और जिम्मेदार होना और सिखाने की भावना रखना जैसे व्यवहार शामिल हैं। जिस व्यक्ति से आप विवाह करेंगे वह सिद्ध नहीं होगा, परन्तु उसे व्यवहार के गुणों में बढ़ने वाला होना चाहिए।

   कलीसिया के अगुवों और उनकी पत्नियों के लिए परमेश्वर के पैमाने अधिक ऊँचे हैं (1 तीमुथियुस 3:2-4, 8-9, 11-12; तीतुस 1:6-8)। यदि किसी कलीसिया के अगुवे का विवाह एक बुरे चरित्र वाले पति या पत्नी से हो जाता है, तो सेवकाई में बड़ी बाधा आती है।

3. **किसी ऐसे व्यक्ति से विवाह करें, जो पवित्रता और अच्छे व्यवहार में प्रतिष्ठा का निर्माण कर रहा हो** (1 तीमुथियुस 2:9-10, 1 तीमुथियुस 3:7, 2 तीमुथियुस 2:19, तीतुस 1:15, तीतुस 2:4-5)।

4. **किसी ऐसे व्यक्ति से विवाह करें, जो बाइबल के अनुसार सोचना सीख रहा हो** (भजन संहिता 119:66)। जब उनका सामना परीक्षा, भय, गलत दृष्टिकोण या गलत प्रेरणा से होता है, तो वे परमेश्वर के वचन को याद रखना, विश्वास करना और उसका पालन करना सीखते हैं (नीतिवचन 4:4-6, यहोशू 1:7-8)। आवश्यकता, खतरे, कष्ट, या किसी भी प्रकार की परेशानी का सामना करते समय, वे परमेश्वर पर ध्यान केंद्रित करना सीखते हैं और उसके वचन में उन्हें आवश्यक सहायता प्राप्त करना सीखते हैं (भजन संहिता 119:50, 92, 114)।

5. **किसी ऐसे व्यक्ति से विवाह करें, जो आपके बच्चों के लिए एक अच्छा पिता या माता बने**: एक ऐसा व्यक्ति जो उन्हें परमेश्वर की विधियाँ सिखाए और उनके सामने निरन्तर मसीही जीवन जिए (नीतिवचन 6:20-23, इफिसियों 6:4, 2 तीमुथियुस 1:5, 2 तीमुथियुस 3:14-15)।

6. **किसी ऐसे व्यक्ति से विवाह करें जिसने धर्मी मित्रों और सलाहकारों से प्रभावित होने का चुनाव किया है** (भजन संहिता 119:63, 2 तीमुथियुस 2:22)।

7. **किसी ऐसे व्यक्ति से विवाह करें जो अधिकार के अधीन रहता हो।** एक पुरुष के लिए यह बुद्धिमानी है कि वह अपनी पत्नी के रूप में एक आज्ञाकारी स्त्री की खोज करे (इफिसियों 5:22)। इसी प्रकार एक स्त्री को ऐसे व्यक्ति से विवाह करना चाहिए जो परमेश्वर और उन लोगों के अधीन रहता हो जिन्हें परमेश्वर ने कलीसिया में, उसकी नौकरी में, सरकार में उस पर अधिकार दिया है (रोमियों 13:1, इफिसियों 6:5-8, इब्रानियों 13:17, 1 पतरस 5:5)। जैसे ही उसका पति परमेश्वर के प्रति समर्पण करेगा, उसे सुरक्षा और आशीष मिलेगा।

► ऊपर सूचीबद्ध गुणों में से कौन से गुण आपको सबसे महत्वपूर्ण लगते हैं? आपने ऐसे कौन से उदाहरण देखे हैं, जो इन गुणों का महत्व दर्शाते हैं?

माता-पिता द्वारा तय किए गए विवाह

कई संस्कृतियों में माता-पिता के लिए अपने बच्चों का विवाह तय करना सामान्य बात होती है। उदाहरण के लिए, एक बड़े देश में माता-पिता अपने बच्चे के लिए सम्भावित जीवनसाथी को ढूँढ़ते हैं और दूसरे माता-पिता से बात करते हैं। सामान्य रूप से, फिर वे अपने पुत्र और पुत्री के एक-दूसरे से मिलने का प्रबन्ध करते हैं। विवाह करने का निर्णय लेने से पहले जवान लोग एक-दूसरे से एक बार, या शायद दो या तीन बार मिल सकते हैं। बच्चों को यह चुनने की अनुमति दी जा सकती है कि उन्हें माता-पिता द्वारा चुने गए व्यक्ति को स्वीकार करना है या नहीं, परन्तु उन्हें एक-दूसरे को अच्छी तरह से जानने का समय नहीं मिलता है।

उन संस्कृतियों में मसीही माता-पिता को बाइबल के मूल्यों का अनुसरण करना चाहिए, क्योंकि वे अपने बच्चों के लिए भावी जीवनसाथी की खोज करते हैं। उन्हें अपने बच्चों के लिए धर्मी, बुद्धिमान और परिपक्व जीवनसाथी की खोज करनी चाहिए। उन्हें ऐसे व्यक्तियों की खोज करनी चाहिए, जो अपने जीवन में परमेश्वर को प्रथम स्थान देते हों। माता-पिता के चुनाव पर इन बातों का किसी व्यक्ति की शिक्षा, पेशे, सामाजिक स्थिति या आर्थिक स्तर से अधिक प्रभाव पड़ना चाहिए।

अपने आप तय किए गए विवाह

ऐसे वयस्क बच्चों के माता-पिता के लिए बुद्धि जो जीवनसाथी चुनने वाले हैं

यूरोप और उत्तरी अमेरिका सहित कुछ समाजों और संस्कृतियों में, जवान वयस्कों के लिए माता-पिता के निर्देश के बिना

अपना जीवनसाथी चुनना सामान्य बात है।

इन संस्कृतियों में मसीही माता-पिता को लगता है कि उनके बड़े हो चुके बच्चे के विवाह सम्बन्धी निर्णय पर उनका बहुत कम प्रभाव है। माता-पिता को यह लग सकता है कि यदि उनका बच्चा जिस व्यक्ति से विवाह करने की सोच रहा है, उन्हें वह स्वीकार नहीं है, तो भी उन्हें आपत्ति नहीं करनी चाहिए। शायद वे डरते हैं कि आलोचना करने से भविष्य में उनके बच्चे और दामाद या बहु के साथ उनके सम्बन्धों में समस्याएँ उत्पन्न होंगी।

यहाँ तक कि जब मसीही माता-पिता अपने बच्चों के लिए विवाह तय न करें, तब भी उन्हें अपने बच्चों के जीवनसाथी की चुनाव को प्रभावित करना चाहिए। माता-पिता को अपने बच्चों से इन बातों के बारे में उसी समय बात करनी चाहिए जब वे छोटे हों। माता-पिता को अपने बच्चों की सोच और मूल्यों को सोच-समझकर आकार देना चाहिए (व्यवस्थाविवरण 6:5-9)। एक माता या पिता के रूप में आप ऐसा कैसे कर सकते हैं?

1. **स्वयं एक धर्मी जीवनसाथी और माता-पिता होने का अच्छा नमूना बनें।** जब तक आप अपने जीवन में परमेश्वर के सिद्धान्तों का पालन न करें, तब आपके बच्चों के लिए आपके मौखिक निर्देश का कोई महत्व नहीं होगा। यदि आपका नमूना आपकी बात से मेल नहीं खाता है, तो आपके बच्चे आपके शब्दों के बजाय आपके नमूने का अनुसरण करेंगे।

2. **जीवन के उद्देश्य, विवाह के उद्देश्य और अर्थ और जीवनसाथी में क्या देखना है, इसके लिए परमेश्वर के पैमानों पर बल दें (भजन संहिता 34:11-12)।** जब हम संसार के पैमानों को देखते, सुनते, या पढ़ते हैं, तब हम अपने बच्चों को सिखाते हैं कि परमेश्वर का वचन हमारी शैली नहीं है, बल्कि संसार हमारी शैली है। ऐसा करने के बजाय, हमें उन उनका ध्यान लोगों ऐसे लोगों पर लगाने के द्वारा अपने बच्चों में भली इच्छाएँ उत्पन्न करनी चाहिए, जो परमेश्वर की भली योजनाओं का अनुसरण करते हैं। हमें उन्हें उन अच्छे परिणामों के बारे में बताना चाहिए, जिनका ये लोग परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता के कारण आनन्द लेते हैं।

3. **अपने बच्चों को सिखाएँ कि जीवनसाथी चुनते समय चरित्र किसी भी अन्य बात से अधिक महत्व रखता है।** जब वे छोटे बच्चे हों, तभी से उन्हें अपने बच्चों को आकर्षक शरीर या व्यक्तित्व से अधिक दूसरों के अच्छे चरित्र पर ध्यान देना और उसे महत्व देना सिखाएँ। उन्हें यह देखना सिखाएँ कि उनके साथी जिम्मेदार हैं या आलसी, आज्ञाकारी हैं या विद्रोही, ईमानदार हैं या धोखेबाज। उन्हें उनके रूप-रंग से अधिक उनके चरित्र की परवाह करना सिखाएँ।

यदि माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे जवान वयस्क के रूप में अपना जीवन साथी चुनते समय उनकी पसंद को भी महत्व दें, तो उन्हें अपने छोटे बच्चों को यह सिखाना चाहिए कि पिता और माँ की बात सुनना बुद्धिमानी है! (नीतिवचन 1:8।) किशोरावस्था या वयस्कता में ये बातें सिखाने के लिए बहुत देर हो जाती है; माता-पिता को यह तभी सिखाना चाहिए, जब उनके बच्चे छोटे हों (नीतिवचन 4:3-9)। धर्मी माता-पिता की बात सुनना बच्चों के लिए सुरक्षा और आशीष पाने का परमेश्वर

का तरीका है।

जैसा कि पाठ 4 में चर्चा की गई है, माता-पिता नैतिक पवित्रता वाले सम्बन्धों का निर्माण करने में अपने बच्चों की सहायता करने के लिए परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी हैं। ऐसा करने के लिए, आपका अपने बच्चे के साथ पहले से एक अच्छा, खुला सम्बन्ध होना चाहिए, जिसमें वे स्वेच्छा से आपके प्रति जवाबदेह हों और आपकी सलाह को स्वीकार करें। इस तरह का सम्बन्ध बचपन के शुरुआती वर्षों में बनता है, क्योंकि आप हर दिन अपने छोटे बच्चों को लगन से सिखाते हैं, प्रशिक्षित करते हैं, उनकी अगुवाई करते हैं और अनुशासित करते हैं।

.जीवनसाथी चुनने वाले जवान व्यक्ति के लिए बुद्धि।

परमेश्वर के पास ऐसे जवान विश्वासियों के लिए बुद्धि है, जिन्हें विवाह के बारे में अपना निर्णय स्वयं लेना होगा। अच्छे निर्णय लेने के लिए यहाँ कुछ बुद्धिमानी भरी सलाह दी गई:

(1) **बाइबल से बाहर के विकल्पों को अस्वीकार करें।**

उदाहरण के लिए, हम जानते हैं कि विश्वासियों के लिए अविश्वासियों से विवाह करना परमेश्वर की इच्छा नहीं है, इसलिए हमें एक अविश्वासी के साथ प्रेम सम्बन्ध रखने के बारे में सोचना भी नहीं चाहिए।

(2) **बुद्धि के लिए प्रार्थना करें** (नीतिवचन 2; याकूब 3:13, 17)।

जब हम पूरे मन से परमेश्वर की समझ की खोज करते हैं, तो वह हमें बुद्धि देकर प्रसन्न होता है। बुद्धि परमेश्वर के वचन का सावधानी से अध्ययन करने और उसका पालन करने में पाई जाती है। परमेश्वर हमें धर्मी लोगों की सलाह के द्वारा भी बुद्धि देता है। परमेश्वर की बुद्धि को अपनाने से हम पाप और हानि से सुरक्षित रहते हैं। उसकी बुद्धि हमें आशीष प्रदान करती है और हमें अपने जीवन के लिए परमेश्वर की सर्वोत्तम योजना का अनुभव करने का अवसर देती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जब हम बुद्धिमानी से भरे निर्णय लेते हैं, तब हम अपने स्वर्गीय पिता की महिमा करते हैं।

(3) **पवित्र आत्मा की अगुवाई में चलें** (भजन संहिता 119:133, नीतिवचन 3:5-7, यिर्मयाह 10:23)।

पवित्र आत्मा हमें कभी भी परमेश्वर के वचन के उल्लंघन करने के लिए प्रेरित नहीं करेगा। इसके बजाय, वह विश्वासयोग्यता से हमें वचन स्मरण दिलाता है (यूहन्ना 14:26, यूहन्ना 16:13-14)। वह परमेश्वर की आज्ञाकारी सन्तानों की पाप से रक्षा करता और उन्हें जीवन और शान्ति का प्रतिफल देता है (रोमियों 8:5-6, 13-14; गलातियों 5:16, 22-25)। हो सकता है कि आप हमेशा हर स्थिति में परमेश्वर की इच्छा की बारीकियाँ न जानते हों, परन्तु आप जिन बातों को जानते हैं, उनका आपको निश्चित रूप से पालन करना चाहिए। आप जानते हैं कि परमेश्वर चाहता है कि आप आत्मिक और नैतिक रूप से विश्वासयोग्य रहें। आप जानते हैं कि वह चाहता है कि आप कुछ बातों से बचें और कुछ बातों का पालन करें। परमेश्वर के निर्देश के लिए प्रार्थना करते समय वही करें जिसके विषय में आप जानते हैं कि सही है।

(4) **धर्मी लोगों की सलाह पर सावधानी से ध्यान दें।**

जिन जवानों के माता-पिता धर्मी हैं, उन्हें उनकी बुद्धि की खोज करनी चाहिए। उन्हें अपने विवाह सम्बन्धी विचारों के बारे में अपने माता-पिता के साथ खुला और ईमानदार होना चाहिए। उन्हें अपने माता-पिता की किसी भी चिन्ता पर पूरा ध्यान देना चाहिए। परमेश्वर ने उन्हें हानि से बचाने और उन्हें भली वस्तुएँ प्रदान करने के लिए उनके माता-पिता दिए हैं। जवानों को इन तरीकों से आशीष पाने का अवसर गँवाना नहीं चाहिए।

बहुत से मसीही जवानों के पास परिवार के किसी धर्मी वृद्ध सदस्य का सम्मति नहीं होती है। उन्हें निश्चित रूप से ऐसे धर्मी चरित्र वाले लोगों से सलाह लेनी चाहिए, जिन्होंने अच्छे परिणामों वाले बुद्धिमानी से भरे निर्णय लेने की क्षमता का प्रदर्शन किया है।

हालाँकि, जवानों को अपने माता-पिता के सम्मति को अनदेखा नहीं करना चाहिए, भले ही उनके माता-पिता परमेश्वर की सेवा न भी करते हों। ऐसे कुछ अवसर आ सकते हैं, जिनमें एक जवान व्यक्ति को परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए अपने उद्धार न पाए हुए माता-पिता की इच्छाओं के विरुद्ध जाना पड़ सकता है, परन्तु ऐसा कभी भी विद्रोह (1 शमूएल 15:23) या अनादर (निर्गमन 20:12) से नहीं किया जाना चाहिए। परमेश्वर के प्रति माता-पिता की प्रतिबद्धता की परवाह किए बिना, परमेश्वर उनके मनों को कोमल बना सकता है, ताकि वे अपने पुत्र या पुत्री की विवाह को अपनी आशीर्वाद दे सकें। प्रार्थना करना और अपने माता-पिता केमन को बदलने के लिए परमेश्वर की प्रतीक्षा करना उस पुत्र या पुत्री के विश्वास को परखेगा और मजबूत बनाएगा।

►विवाह सम्बन्धी निर्णय में माता-पिता की भागीदारी के सम्बन्ध में पवित्रशास्त्र के सिद्धान्तों या उदाहरणों पर चर्चा करें। जीवनसाथी की चयन प्रक्रिया को प्रभावित करने के लिए माता-पिता को क्या करना चाहिए? विवाह के निर्णय में एक मसीही वयस्क का अपने माता-पिता के प्रति क्या मनोभाव होना चाहिए?

विवाह से पहले एक जोड़े की मित्रता

यदि प्रेमलाप की अवधि सम्भव है, तो एक पुरुष और स्त्री के लिए विभिन्न परिदृश्यों में एक-दूसरे के साथ समय बिताना अच्छा रहता है। इससे उन्हें यह सीखने की क्षमता मिलती है कि दूसरा व्यक्ति कैसे व्यवहार करता है, वह दूसरों के साथ कैसे बातचीत करता, अनेपक्षित परिस्थितियों में कैसी प्रतिक्रिया करता और विभिन्न स्थितियों को कैसे सम्भालता है। इस समय को साथ में बिताने से उन्हें यह समझने में सहायता मिल सकती है कि क्या वे विवाह योग्य साथी बनेंगे या नहीं।

पवित्रता के प्रति प्रतिबद्धता

► छात्रों को समूह के लिए 1 थिस्सलुनीकियों 4:1-8 और 2 तीमुथियुस 2:19-22 पढ़ना चाहिए।

परमेश्वर ने पुरुषों और स्त्रियों को प्रेम से शारीरिक और भावनात्मक घनिष्ठता की इच्छाओं और क्षमताओं के साथ बनाया

है। इन इच्छाओं के कारण, जो मित्र भावी विवाह की सम्भावना की खोज में हैं, उन्हें एक-दूसरे के साथ अपने सम्बन्ध में सावधानी बरतने का लक्ष्य रखना चाहिए। परमेश्वर की मंशा है कि ये इच्छाएँ विवाह की एक विशिष्ट, आजीवन वाचा के भीतर पूरी की जाएँ।

यदि एक पुरुष और स्त्री सोच-समझकर स्वयं को सावधानी और पवित्रता के लिए प्रतिबद्ध नहीं करते हैं, तो यह सम्भावना है कि वे परीक्षा के समय अपनी लालसाओं का अनुसरण करके परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करेंगे। परमेश्वर की नैतिक पवित्रता की आवश्यकताओं का उल्लंघन कई मायनों में हानिकारक है और केवल एक पुरुष और स्त्री को ही नहीं, बल्कि कई लोगों को प्रभावित करती है। अनाज्ञाकरिता के परिणामस्वरूप पछतावा, बन्धन, अपराधबोध, लज्जा, भय, अविश्वास और टूटे हुए सम्बन्ध होते हैं।

जो परमेश्वर की पवित्रता की योजना का अनुसरण करते हैं, उन लोगों के लिए बहुत सी आशीषें हैं। जो लोग आज्ञाकारिता के के द्वारा परमेश्वर का आदर करते हैं, वे उस प्रत्येक भली वस्तु का अनुभव कर सकते हैं, जिसकी योजना परमेश्वर ने उनके लिए बनाई है। उन्हें अनाज्ञाकारिता के परिणामों के बजाय, आनन्द और शान्ति मिलेगी। वे एक दूसरे पर भरोसा कर सकेंगे। वे प्रभु के साथ और एक-दूसरे के साथ एक समृद्ध सम्बन्ध बनाने में सक्षम हो जाएँगे।

> परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने का अर्थ यह विश्वास करना है कि वह जानता है कि आपके लिए सबसे अच्छा क्या है और आपके लिए वही चाहता है। (नीतिवचन 3 देखें)

ये आशीषें परमेश्वर की पवित्रता की योजना का अनुसरण करने के लिए एक मजबूत प्रेरणा हैं। हालाँकि, इस क्षेत्र में सावधानी बरतने के लिए विश्वासियों की सबसे बड़ी प्रेरणा जीवन के हर हिस्से में प्रभु यीशु को आदर देने की उनकी इच्छा होनी चाहिए। एक मिलने वाले जोड़े को पूछना चाहिए, "हम अपने सम्बन्ध में **सबसे अच्छी तरह से** परमेश्वर का आदर कैसे कर सकते हैं? हम यीशु को **सबसे अधिक** महिमा कैसे दे सकते हैं?"

अपवित्र कामों से बचने के लिए, एक मिलने वाले जोड़े को शारीरिक संपर्क में आने की हर इच्छा के प्रति सतर्क रहना चाहिए। उन्हें ऐसी जगहों पर लम्बे समय अकेले होने से बचना चाहिए, जहाँ पर उन्हें लगता है कि वे क्या कर रहे हैं, इसके बारे में किसी और को पता नहीं चलेगा। जोड़े तब परीक्षा से संघर्ष करने लगते हैं, जब उनके सम्बन्ध में बातचीत की तुलना में शारीरिक संपर्क अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। वे आत्मिक और सम्बन्धपरक विषयों का अच्छी रीति से सामना करने असमर्थ हो सकते हैं, क्योंकि उनके मन और हृदय पर शारीरिक इच्छा हावी हो जाती है। सम्बन्ध की शुरुआत में, साथ में निर्णय लें कि आप विवाह से पहले अपने सम्बन्ध में कौन से विशिष्ट काम करेंगे (और नहीं करेंगे)। आपकी योजना आपमें से प्रत्येक को पाप से बचाने वाली होनी चाहिए, आपके लिए अपने भावी जीवनसाथी से प्रेम करने में सहायक होनी चाहिए, और आपको परमेश्वर का आदर करने में सक्षम बनाने वाली होनी चाहिए।

> आपका आज संयम रखना आपके भावी जीवनसाथी के लिए एक उपहार है। परमेश्वर की आज्ञा मानने के आपके निर्णय के कारण आपका जीवनसाथी सुरक्षित और सम्मानित महसूस करेगा। आपका जीवनसाथी अत्याधिक प्रिय महसूस

अपनी योजना के प्रति प्रतिबद्ध रहें। धर्मी सलाहकारों के प्रति जवाबदेह बनें और उनकी सलाह और चेतावनियों को सुनें। धर्मी मित्रों और परिवार के सदस्यों के साथ मिलकर समय बिताएँ।

बढ़ोतरी को बढ़ावा देने वाली गतिविधियाँ

प्रेमालाप परिचित होने का समय है, परन्तु यह बढ़ोतरी का भी समय होना चाहिए। यहाँ ऐसी गतिविधियों के बारे में कुछ विचार दिए गए हैं, जिन्हें एक मिलने वाला जोड़ा साथ में कर सकता है:

- कार्य परियोजनाएँ करें।
- ऐसी कला सीखें, जो आप दोनों के लिए नई हो।
- अच्छी पुस्तकें पढ़ें और उन पर चर्चा करें।
- एक जैसे पवित्रशास्त्र के परिच्छेदों का अध्ययन करें या याद करें, फिर उन पर चर्चा करें।
- मिलकर सेवकाई की गतिविधियों की योजना बनाएँ और उनका संचालन करें।
- बच्चों की एक साथ देखभाल करें।
- एक दूसरे के परिवार के साथ समय बिताएँ।

ये गतिविधियाँ:

- एक पुरुष और स्त्री की एक-दूसरे को जानने में सहायता करेंगी।
- उनकी यह जानने में सहायता करेंगी कि क्या वे एक-दूसरे के लिए उपयुक्त साथी हैं।
- एक दूसरे के साथ अच्छे से संवाद करने की उनकी क्षमता बढ़ाएँगी।
- उनकी बढ़ने में सहायता करेंगी।

► इनमें से कौन से प्रेमालाप के सिद्धान्त और विचार आपके लिए नए हैं? आपके संदर्भ में विश्वासियों को विवाह से पहले सम्बन्धों में पवित्रता और परमेश्वर का आदर करने के लिए बाइबल के सिद्धान्तों को कैसे लागू करना चाहिए ?

विवाह से पहले चर्चा करने योग्य विषय

ऐसी संस्कृतियों में जहाँ एक जोड़ा निर्णय लेने की प्रक्रिया के हिस्से के रूप में एक-दूसरे को जानता है, वहाँ कुछ ऐसे महत्वपूर्ण विषय होते हैं, जिन पर विवाह से पहले चर्चा की जानी चाहिए।

कुछ संस्कृतियों में, विवाह व्यवस्थाएँ विवाह से पहले इतनी गम्भीर बातचीत की अनुमति नहीं देती हैं। आदर्श रूप से माता-पिता यह सुनिश्चित करने के लिए जानकारी साझा करते हैं कि जवान जोड़ा के लिए अच्छा जोड़ीदार है कि नहीं।

ऐसे विषयों में जहाँ विवाह करने वाले लोग एक-दूसरे के बारे में बहुत कम जानते हैं, वे विवाह के बाद इन विषयों पर काम करते हैं, परन्तु ये विषय उनके चुनाव को प्रभावित नहीं कर सकते, क्योंकि वे पहले ही एक-दूसरे और परमेश्वर के प्रति

प्रतिबद्धता कर चुके होते हैं।

एक पुरुष और एक स्त्री की मान्यताएँ, पृष्ठभूमि, संस्कृति, जीवन लक्ष्य और मूल्य जितने अधिक समान होंगे, वे विवाह में उतने ही अधिक अनुकूल हो सकते हैं। यदि सम्भव हो तो, विवाह पर विचार कर रहे जोड़े को निम्नलिखित बातों पर चर्चा करने में समय व्यतीत करना चाहिए:

- उनके जीवन लक्ष्य
- वे मूल्य जो उनमें से प्रत्येक के लिए महत्वपूर्ण हैं
- उनका अपना बचपन और जिस तरह से उनका पालन-पोषण हुआ
- उनके माता-पिता और अन्य रिश्तेदारों के साथ उनके सम्बन्ध
- उनकी निजी शिक्षा सम्बन्धी मान्यताएँ और विश्वास सम्बन्धी आचरण, जैसे व्यक्तिगत आत्मिक अनुशासन, कलीसिया में उपस्थिति, और सेवा और सेवकाई के कार्य
- बच्चों के पालन-पोषण की बारीकियों के बारे में उनकी समझ और विश्वास, जिसमें शिक्षण, प्रशिक्षण, बच्चों को अनुशासित करना और उन्हें मसीह को जानना और उसकी आज्ञा का पालन करना सिखाना शामिल है
- खर्च, बचत और कठिन समय में जीवनयापन सहित आर्थिक विषयों के बारे में उनके विचार
- उनकी कोई शारीरिक या मानसिक स्वास्थ्य समस्या या विकलांगता, और स्वास्थ्य समस्याएँ, जो उनके परिवारों में सामान्य हैं

सम्बन्ध के इस हिस्से के दौरान आपको जीवन के कठिन और जटिल विषयों पर बात करनी चाहिए। जब आप परमेश्वर और एक-दूसरे को वचन दे चुके होते हैं, तो आपका विवाह अच्छी या बुरी स्थितियों के लिए हो जाता है। विवाह में, एक पति और पत्नी एक-दूसरे के साथ अपना सब कुछ साझा करते हैं, इसलिए विवाह तक पहुँचने के लिए ईमानदारी से बातचीत करना अत्याधिक महत्वपूर्ण है। चर्चाएँ अधिकाधिक खुली और गम्भीर होनी चाहिए। आप जिससे विवाह करना चाहते हैं, यदि वह इन महत्वपूर्ण विषयों पर बात करने को तैयार नहीं है, तो यह एक गम्भीर खतरे का संकेत है।

अपने विवाह से ठीक पहले, एक जोड़े को विवाह के भीतर यौन सम्बन्धों के बारे में अपनी मान्यताओं, अपेक्षाओं और इच्छाओं पर चर्चा करनी चाहिए। सम्बन्ध में बहुत जल्दी यौन सम्बन्धों पर चर्चा करना अनावश्यक परीक्षा उत्पन्न कर सकता है, परन्तु विवाह से पहले इस बारे में बात करना महत्वपूर्ण है।

यह एक दूसरे से विवाह करने वाले पुरुष और स्त्री के लिए सहायक है:

- बौद्धिक रूप से समान होना।
- वैवाहिक जीवन से भी ऐसी ही आशा रखना।
- समान शिक्षा सम्बन्धी विश्वास और आत्मिक आचरण रखना।
- धन और समय दोनों के इस्तेमाल के लिए समान मूल्य और आचरण रखना।
- जीवन की बारीकियों और बच्चों के पालन-पोषण की साझा समझ होना।

प्रेमालाप में खतरे के संकेत

जॉन ड्रेशर ने आठ ऐसी समस्याओं की सूची प्रदान की है, जिनके कारण एक पुरुष या स्त्री को प्रेमालाप के सम्बन्ध को समाप्त करने पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए:[27]

1. **आप और आपका मित्र अक्सर एक-दूसरे के साथ बहस करते हैं।**

2. **आप संवेदनशील विषयों पर चर्चा करने से इसलिए बचते हैं**, क्योंकि आप अपने मित्र को भावनात्मक रूप से ठेस पहुँचाने से डरते हैं। यदि आप अपने आप से कहते हैं कि, "अच्छा होगा कि मैं इस बारे में बात न करूँ" — यह एक खतरे का संकेत है। विवाह का अर्थ है कि आपको आत्मविश्वास और प्रेम के साथ कई बातों पर चर्चा करने की आवश्यकता पड़ेगी।

3. **आपका सम्बन्ध तेजी से शारीरिक होता चला जा रहा है।** एक अविवाहित जोड़े के रूप में आप जितना अधिक शारीरिक रूप से रुचि लेंगे, आप उतना ही कम शब्दों, आवाज के लहजे, चेहरे के भाव और शारीरिक भाषा के साथ बात करना सीख पाएँगे। अधिक छूना और कम बात करना वास्तव में खतरे का संकेत हो सकता है।

4. **आपको लगता है कि आप किसी प्रकार के भय के कारण सम्बन्ध में बने हुए हैं।** उदाहरण के लिए, "मैं सम्बन्ध समाप्त तो करना चाहता हूँ," पर मैं किसी को निराश नहीं करना चाहता।

5. **आपका मित्र रचनात्मक आलोचना स्वीकार करने में सक्षम नहीं है।** जब आपका मित्र गलत होता है, तो क्या वह क्षमा माँगने से इनकार करता है? यह अभी हानिकारक है, और यदि आपने एक-दूसरे से विवाह किया तो बाद में और भी अधिक हानिकारक हो जाएगा।

6. **माता-पिता या महत्वपूर्ण मित्रों को आपके सम्बन्ध और आपके सम्भावित विवाह पर आपत्ति है।** यह निश्चित रूप

---

[27] जॉन ड्रेशर John Drescher, *अच्छी या बुरी स्थितियों के लिए: एक विवाह-पूर्व सूची* For Better, For Worse: A Premarital Checklist, (Morgantown, PA: Masthof Press, 1999), 30-31।

से खतरे का संकेत हो सकता है और आपको वह सम्बन्ध समाप्त करने पर विचार करना चाहिए। यह सच है कि आप केवल एक व्यक्ति से विवाह नहीं करते हैं, बल्कि एक ऐसे परिवार में विवाह करते हैं, जिसका आपके विवाह की सुरक्षा और सफलता पर अत्याधिक प्रभाव पड़ेगा।

7. **आपका मित्र अत्याधिक ईर्ष्यालु या संदेह करने वाला है।** उदाहरण के लिए, यदि आपका मित्र आपकी बात पर प्रश्न उठता है, या अन्य तरीकों से आप पर भरोसा नहीं करता है, तो यह एक खतरे का संकेत है। अविश्वास किसी भी वैवाहिक सम्बन्ध को समाप्त कर देगा। इसलिए, यदि आपका मित्र अत्याधिक ईर्ष्यालु या अविश्वासी है, तो जब तक संभव हो सम्बन्ध को समाप्त कर दें।

8. **आपके मन में उस सम्बन्ध को लेकर एक असहज भावना है;** विशेषकर तब जब आप अपने मित्र के साथ अकेले होते हैं। आपके मन में यह विचार या सोच है, कि "कुछ गड़बड़ है।" आन्तरिक शान्ति की कमी पर ध्यान दें!

उपसंहार

नीतिवचन 24:3-4, "घर बुद्धि से बनता है, और समझ के द्वारा स्थिर होता है। ज्ञान के द्वारा कोठरियाँ सब प्रकार की बहुमूल्य और मनोहर वस्तुओं से भर जाती हैं।"

जीवनसाथी का चुनाव किसी के लिए भी सबसे महत्वपूर्ण चुनावों में से एक होता है। परमेश्वर अपनी सन्तानों को उनके सम्भावित जीवनसाथी के बारे में विचार करने और उनसे परिचित होने में बुद्धिमानी से चुनाव करने में सहायता करके प्रसन्न होता है।

सामूहिक चर्चा के लिए

► इस पाठ में कौन सा सिद्धान्त आपके लिए नया था? वह महत्वपूर्ण क्यों है? उसे समझने से आपको अपने सम्बन्धों में किस प्रकार सहायता मिलेगी? उसे समझने से आपकी सेवकाई का दूसरों पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता,

हमारा अगुवाई करने और हमारी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए धन्यवाद। तूने अपने वचन में हमें जो सिद्धान्त दिए हैं, उनके लिए तेरा धन्यवाद जिनसे हमें जीवन में महत्वपूर्ण निर्णयों के बारे में बुद्धिमानी से चुनाव करने में सहायता मिलती है।

कृप्या जीवनसाथी चुनते समय अपनी प्राथमिकताएँ तय करने में हमारी सहायता कर। हमारी वह पुरुष और स्त्री बनने में सहायता कर जो तू हमें बनाना चाहता है। नम्र बनने और धर्मी लोगों की सलाह पर ध्यान लगाने में हमारी सहायता कर।

हम ऐसा पवित्र, फलवन्त जीवन जीना चाहते हैं, जिससे तेरा आदर होता हो।

आमीन

पाठ सम्बन्धी नियत कार्य

(1) अपनी सेवकाई के संदर्भ में सिखाने के लिए इस पाठ के एक भाग को चुनें। आप किसी व्यक्ति या जवानों के समूह को सिखा सकते हैं। अपनी कक्षा के अगुवे को बताएँ कि आपने कक्षा से बाहर कब-कब सिखाया है।

(2) लिखित रूप में, अपनी संस्कृति में एक ऐसे धर्मी पुरुष और स्त्री के सम्बन्धों के गुणों का वर्णन करें जो विवाह पर विचार कर रहे हैं या विवाह करने की योजना बना रहे हैं।

(3) चाहे आप विवाहित हों या नहीं, सम्भावित जीवनसाथी में देखने योग्य विशेषताओं की सूची की समीक्षा करें। दिए गए प्रत्येक पवित्रशास्त्र का संदर्भ पढ़ें। परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको दिखाए कि आपको कैसे बढ़ने की आवश्यकता है।

(4) यदि आप अविवाहित हैं और भविष्य में विवाह करने की योजना बना रहे हैं, तो एक सूची बनाएँ जिसमें यह बताया गया हो कि आप जीवनसाथी में किन बातों को ढूँढ़ रहे हैं। आपको इसे अपने कक्षा के अगुवे के साथ साझा करने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु उसे बताएँ कि आपने पाठ सम्बन्धी नियत कार्य पूरा कर लिया है।

पाठ 7

एक मजबूत विवाह का निर्माण करना

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में, छात्र यह करने लगेंगे:

(1) पुरुषों और स्त्रियों की आवश्यकताओं के बारे में परमेश्वर की योजना और विवाह में सम्बन्धों के लिए परमेश्वर के निर्देशों के बीच सम्बन्ध को समझना।

(2) उन तरीकों का प्रदर्शन करना जिनसे पति और पत्नियाँ पवित्रशास्त्र के सिद्धान्तों का पालन करके एक-दूसरे की आवश्यकताएँ पूरी करते हैं।

व्यक्तिगत भिन्नताओं को स्वीकार करना

यह कोई रहस्य नहीं है कि पुरुष और स्त्रियाँ कई मायनों में भिन्न होते हैं! कई पुरुष अपनी भावनाओं को व्यक्त करते समय संघर्ष करते हैं, जबकि कई स्त्रियाँ भावनाओं की अभिव्यक्ति को वास्तविक बातचीत का हिस्सा मानती हैं। पुरुष अधिक जोखिम लेते हैं, जबकि स्त्रियाँ आमतौर पर सुरक्षा को लेकर चिन्तित रहती हैं। पुरुष स्वाभाविक रूप से शारीरिक सुन्दरता के प्रति अधिक आकर्षित होते हैं, जबकि अधिकतर स्त्रियाँ स्वाभाविक रूप से भावनात्मक घनिष्ठता के प्रति अधिक आकर्षित होती हैं। और भी बहुत सी भिन्नताएँ सूचीबद्ध की जा सकती हैं।

लिंग के बीच सामान्य भिन्नताओं के अलावा, पति और पत्नी के व्यक्तित्व में भी भिन्नताएँ होती हैं। हो सकता है कि किसी एक को लोगों के साथ रहना अच्छा लगता हो, परन्तु दूसरे को अकेलापन अच्छा लगता हो। छोटी-छोटी पसन्द होती हैं, जैसे घर में कितनी रोशनी होनी चाहिए या कमरे में कितना तापमान होना चाहिए। कई विवाहों में इस बात को लेकर असहमति से परेशानियाँ आती हैं कि पैसा कैसे खर्च किया जाना चाहिए। ये भिन्नताएँ आवश्यक रूप से चारित्रिक भिन्नताएँ नहीं हैं; वे केवल व्यक्तित्व और राय का भिन्नता हो सकते हैं।

क्योंकि विवाह एक पुरुष और स्त्री को जोड़ता है, कई बार लोग सोचते हैं कि भिन्नताएँ समाप्त हो जानी चाहिए। एक व्यक्ति को शायद यह लग सकता है कि उसके जीवनसाथी की भिन्नताएँ ऐसे दोष हैं, जिन्हें सुधारा जाना चाहिए। प्रत्येक जीवनसाथी निरन्तर दूसरे जीवनसाथी की राय, आदतों और पसन्द को बदलने का प्रयास कर सकते हैं।

यह सच है कि प्रत्येक व्यक्ति को एक सम्बन्ध के कारण विकसित होना और बेहतर बनाना चाहिए। हालाँकि, कभी-कभी एक व्यक्ति को बदलने का हमारा प्रयास उस व्यक्ति के व्यक्तित्व पर हमला होता है। स्वस्थ विवाह में, प्रत्येक पति-पत्नी एक-दूसरे से प्रेम करने, आदर करने, सराहना करने और सेवा करने की आदत बनाते हैं।

► पुरुषों और स्त्रियों के बीच के कौन सी अन्य भिन्नताएँ होती हैं? उनके व्यक्तित्व में ऐसे कौन सी अन्य भिन्नताएँ हैं, जिन्हें लोगों को स्वीकार करना चाहिए?

सेवा करने का चुनाव करना

गैरी थॉमस अपनी पुस्तक, *पवित्र विवाह* (*Sacred Marriage)* में कहते हैं,

> *एक अच्छा विवाह वह चीज़ नहीं है, जो आपको मिलती है, यह वह चीज़ है, जिसके लिए आप काम करते हैं।* इसमें संघर्ष करना पड़ता है। आपको अपने स्वार्थ को क्रूस पर चढ़ाना चाहिए। आपको समय-समय विरोध करना चाहिए, और कभी-कभी अपराध को मानना चाहिए। क्षमा का अभ्यास करना आवश्यक है। यह निस्संदेह कठिन काम है, परन्तु अन्त में इसका फल मिलता है। अन्त में, यह सुंदरता, विश्वास और आपसी सहयोग के सम्बन्ध का निर्माण करता है।[28]

थॉमस ने ओटो पाइपर को उद्धृत किया:

> यदि विवाह… कई लोगों के लिए एक निराशाजनक अनुभव है, तो इसका कारण उनके विश्वास में पाई जाने वाली[उदासीनता] है। लोगों को यह सच्चाई अच्छी नहीं गलती कि परमेश्वर की आशीष केवल तभी मिल सकती और उसका आनन्द केवल तब लिया जा सकता है, जब इन बातों को निरन्तर खोजा जाता है (मत्ती 7:7; लूका 11:9)। इसलिए, विवाह एक उपहार होने साथ एक ऐसा कार्य भी है, जिसे पूरा किया जाना चाहिए।[29]

विवाह अक्सर केवल इसलिए सफल नहीं हो पातीं क्योंकि पति और पत्नियाँ एक-दूसरे की आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करने के बजाय अपनी-अपनी आवश्यकताओं के बारे में सोचते हैं।

हम एक-दूसरे की **अत्यावश्यक** आवश्यकताओं को पूरा **नहीं कर सकते।** हमारा स्वर्गीय पिता ही हमारी लालसाओं और इच्छाओं को पूरी तरह से संतुष्ट कर सकता है, और यीशु इसलिए ही आया था। उसका उद्देश्य हमारा उद्धार करना, हमें अपने आत्मा – अर्थात् पवित्र आत्मा - से भरना है और हमें एक गहरे और संतोषजनक सम्बन्ध में लाना है, ताकि हम परमेश्वर को "हे अब्बा, हे पिता" कह सकें (रोमियों 8:14-15; गलातियों 4:6)।

हालाँकि, विवाह के लिए परमेश्वर का एक उद्देश्य यह है कि यह सेवकपन के लिए एक प्रशिक्षण भूमि हो; उस प्रकार का सेवकपन जिसे हम यीशु में देखते हैं (यूहन्ना 13:14)। परमेश्वर प्रत्येक पति या पत्नी में एक सेवक का ऐसा विनम्र मन विकसित करना चाहता है, जिसे दूसरे की चिन्ता है (फिलिप्पियों 2:3-8)।

---

[28] गैरी थॉमस Gary Thomas, *पवित्र विवाह* (*Sacred Marriage*) (Grand Rapids: Zondervan, 2000), 133।

[29] उपरोक्त।

कुछ सबसे सुन्दर, खुशहाल विवाहों का अस्तित्व इसलिए हैं, क्योंकि एक पति या पत्नी ने स्वयं को भूलकर बीमारी, असफलता, दुःखद घटना या दुःख की असामान्य रूप से कठिन परिस्थिति में दूसरे की सेवा करने का चुनाव किया। कुछ पति गवाही देते हैं कि उन यदि उनकी पत्नियों ने उनके लिए प्रार्थना नहीं की होती, उन्हें क्षमा नहीं किया होता, उन्हें जवाबदेह नहीं ठहराया होता, और जब वे सबसे अप्रिय थे, तब उनसे बिना शर्त प्रेम नहीं किया होता तो उनका जीवन निराशाजनक रूप से नष्ट हो गया होता। कुछ पत्नियाँ गवाही देती हैं कि यह उनके पति का धीरज और समझ थी, जिसने उन्हें शोषण करने वाले पिता या अन्य आघात से हुई भावनात्मक क्षति से उबरने में सक्षम बनाया। क्योंकि हम एक पतित, पापी संसार में रहते हैं, जिसमें सारी सृष्टि कराहती है (रोमियों 8:22), हर विवाहित व्यक्ति घाव और जख्मों के निशान लेकर चलता है। परन्तु परमेश्वर का अनुग्रह हमें एक-दूसरे की देखभाल करने और एक-दूसरे के घावों पर पट्टी बान्धने में सक्षम बना सकता है!

हममें से प्रत्येक जन्म से ही स्वार्थी था। हम स्वाभाविक रूप से दूसरों की आवश्यकताओं की तुलना में अपनी आवश्यकताओं के बारे में अधिक चिंतित रहते हैं। परमेश्वर का बचाने वाला और पवित्र करने वाला अनुग्रह हममें वास करने वावे पवित्र आत्मा के द्वारा उस हद तक बदल सकता है, जब तक हम ऐसे लोग न बन जाएँ, जो दूसरों की आवश्यकताओं को अपनी आवश्यकताओं से पहले रखते हैं। विवाह तब फलते-फूलते हैं, जब प्रत्येक पति-पत्नी एक-दूसरे की आवश्यकताओं और इच्छाओं का ध्यान रखते हैं।

► सेवा करने का चुनाव करने का क्या अर्थ होता है?

पतियों और पत्नियों की मुख्य आवश्यकताएँ

परमेश्वर ने पुरुषों और स्त्रियों को अलग-अलग आवश्यकताओं और इच्छाओं के लिए बनाया किया है। इसका अर्थ है कि एक पुरुष को यह नहीं मानना चाहिए कि उसकी पत्नी उन्हीं बातों से खुश होगी, जो उसे खुशी देती हैं। एक पत्नी को यह नहीं मानना चाहिए कि उसका पति भी वैसा ही व्यवहार चाहता है, जैसा व्यवहार वह चाहती है। निःसन्देह, दयालुता और शिष्टाचार के कुछ तरीके दोनों के लिए एक जैसे ही होने चाहिए, फिर भी पुरुषों और स्त्रियों में से प्रत्येक की कुछ अनोखी आवश्यकताएँ होती हैं।

यदि हम पुरुषों और स्त्रियों की विशेष आवश्यकताओं को समझ पाएँ, तो हम समझ सकते हैं कि जीवनसाथी की आवश्यकताओं को कैसे पूरा किया जा सकता है। यह दुःखद है कि पति-पत्नी के बीच कई विवाद और चर्चाओं से समस्याओं का समाधान इसलिए नहीं हो पाता, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति दूसरे की आवश्यकताओं को समझने में असफल रहता है। प्रत्येक व्यक्ति इसलिए क्रोधित और नाराज हो सकता है, क्योंकि दूसरा उसी बात को नहीं समझता है।

सभी लोगों को प्रेम और आदर की आवश्यकता होती है, परन्तु पुरुषों और स्त्रियों के बीच भिन्नता होता है। स्त्री की मुख्य

आवश्यकता प्रेम है, और पुरुष की मुख्य आवश्यकता आदर है।[30]

► आपने पुरुषों और स्त्रियों की आवश्यकताओं के बीच यह भिन्नता कैसे देखी है?

एक पति अपनी पत्नी को प्रेम कैसे दिखाता है

इफ़िसियों 5:25, 28 में लिखा है, "हे पतियों, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिये दे दिया, इसी प्रकार उचित है कि पति अपनी अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखे…"

एक पति को अपनी पत्नी को अक्सर बताना चाहिए कि वह उससे प्रेम करता है और यह नहीं मान लेना चाहिए कि उसे यह पता है। उसे अपने प्रेम को शब्दों से बढ़कर दिखाना चाहिए। उसे उन तरीकों से प्रेम दिखाना चाहिए, जो उसकी पत्नी के लिए महत्वपूर्ण हों। पति को यह नहीं सोचना चाहिए कि उसकी पत्नी को इसलिए प्रेम महसूस करना चाहिए, क्योंकि वह उन तरीकों से प्रेम दिखाता है, जो उसके स्वयं के लिए महत्वपूर्ण हैं। उसकी आवश्यकताएँ उससे अलग होती हैं।

(1) **एक पति अपनी पत्नी को सुरक्षा प्रदान करके प्रेम करता है।**[31]

एक पत्नी जानना चाहती है कि पति उसकी शारीरिक और भावनात्मक रूप से रक्षा करता है। पति को पड़ोसियों के साथ किसी भी झगड़े से निपटना चाहिए। पति को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि घर एक सुरक्षित स्थान हो। जब दूसरे लोग, यहाँ तक कि रिश्तेदार भी उसकी आलोचना करते हैं, तो उसे उसके बचाव में बोलना चाहिए। उसे अपनी पत्नी से अपनी बात मनवाने के लिए उस पर हमला नहीं करना चाहिए या उसे किसी भी तरह से शारीरिक चोट नहीं पहुँचानी चाहिए। उसे अपने परिवार की भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने का पूरा प्रयास करना चाहिए। यदि एक पति पैसों के विषय में लापरवाह है, तो उसकी पत्नी को लगता है कि उसे अपने परिवार की आवश्यकताओं की परवाह नहीं है।

पतियों के लिए आर्थिक बातें

पैसों की समस्या विवाह में झगड़े का सबसे बड़ा कारण होती है। पतियों,

- लाभ के लिए कोई बेईमानी या अनैतिक काम करने से इनकार करें; याद रखें आप परमेश्वर के अधिकार के अधीन हैं।

---

[30] डॉ. इमर्सन एगेरिच (Dr. Emerson Eggerich) की पुस्तक *प्रेम और आदर* (*Love and Respect)* इस खण्ड में अत्याधिक सहायक रही है।

[31] इस सत्य से सम्बन्धित कई वचन हैं, जिनमें इफिसियों 5:28-31, कुलुस्सियों 3:19 (भावनात्मक सुरक्षा), 1 तीमुथियुस 5:8 (भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति), नहेम्याह 4:13-14 (शारीरिक सुरक्षा) और 1 तीमुथियुस 2:14 (आत्मिक सुरक्षा) शामिल हैं।

- अपना दशमांश कलीसिया को दें, क्योंकि आप परमेश्वर पर भरोसा करते कि वह आपको आवश्यकताओं को पूरा करेगा।
- रोज़गार के सर्वोत्तम विकल्प की खोज करें, परन्तु अभी के लिए अप्रिय काम करने के लिए तैयार रहें।
- चाहे आप नौकरीपेशा हों या नहीं, अपनी और दूसरों की सहायता करने के लिए हर दिन करने के लिए काम की खोज करें।
- आज पैसे उधार लेकर कल का पैसा न व्यर्थ न गवाएँ।
- जब आप मौज-मस्ती के लिए पैसा खर्च करते हैं, तो उसमें अपनी पत्नी और बच्चों को भी शामिल करें।
- अपने घर के किराये जैसे नियमित खर्चों के लिए नियमित रूप से बचत करें।
- आराम के लिए पैसा खर्च करने के बजाय अपनी स्थिति को अच्छा बनाने के लिए पैसा निवेश करें।

(2) **एक पति अपनी पत्नी के लिए स्वयं को आरक्षित रखकर उससे प्रेम करता है।**

एक पति को स्वयं को नैतिक रूप से पवित्र रखना चाहिए और अपनी पत्नी से प्रसन्न रहना चाहिए, "प्रिय हरिणी या सुन्दर सांभरनी के समान उसके स्तन सर्वदा तुझे सन्तुष्ट रखें, और उसी का प्रेम नित्य तुझे आकर्षित करता रहे (नीतिवचन 5:19)।" यदि कोई पति अन्य स्त्रियों के साथ अनुचित या अनैतिक सम्बन्ध रखता है या अपवित्र मनोरंजन की वस्तुओं का प्रयोग करता है, तो उसकी पत्नी स्वयं अप्रिय महसूस करती है।

(3) **एक पति अपनी पत्नी को समझने का प्रयास करके उससे प्रेम करता है।**

एक पति अपनी पत्नी को समझने में हमेशा सफल नहीं होगा, परन्तु उसे उसकी बात सुनने और उसे जानने के लिए समय निकालना चाहिए। पवित्रशास्त्र पतियों से कहता है, "वैसे ही हे पतियो, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो, और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं…" (1 पतरस 3:7)। यदि कोई पति अपनी पत्नी की भावनाओं और विचारों का उपहास करता है, तो उसकी पत्नी को प्रेम महसूस नहीं होता है। वह चाहती है कि वह उसकी चिन्ता को समझने का प्रयास करे, भले ही उसकी बातें उसे तर्कसंगत न लगें।

क्योंकि परमेश्वर ने पति को घर का मुखिया बनाया है (इफिसियों 5:23), इसलिए पति पर घर का अगुवाई करने की जिम्मेदारी है (1 तीमुथियुस 3:4-5)। हालाँकि, पति-पत्नी को समय निकालकर तब तक चर्चा करनी चाहिए, जब तक वे अधिकतर निर्णयों पर सहमत न हो जाएँ। पति को अपनी पत्नी की भावनाओं और विचारों पर विचार किए बिना कोई भी निर्णय लेने में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। यदि वे किसी विषय पर सहमत नहीं हो सकते हैं, तो पति को निर्णय लेने की आवश्यकता पड़ सकती है, परन्तु उसे इस बात का दुःख होना चाहिए कि वे सहमत होने में असफल रहे। आमतौर पर एकता की कमी पति के

लिए एक चेतावनी होती है। स्त्रियों के पास अक्सर वह बुद्धि और विवेक होता है, जिसकी पुरुषों को अच्छे निर्णय लेने के लिए आवश्यकता होती है।

► एक छात्र को समूह के लिए इफिसियों 4:2-3, 15-16 पढ़ना चाहिए। ये आयतें पति-पत्नी के सम्बन्ध पर कैसे लागू होती हैं?

(4) एक पति अपनी पत्नी की सराहना करके उससे प्रेम करता है।[32]

कई पत्नियों को लगता है कि उनके पति उनके काम की सराहना नहीं करते। पति को अपनी पत्नी के प्रति आभार प्रकट करना चाहिए। उन्हें उस प्रयास को पहचानना चाहिए जो वह अपने परिवार के लिए करती है। उसे कभी भी अन्य लोगों की उपस्थिति में उसकी आलोचना नहीं करनी चाहिए।[33] उसे उसके चरित्र, सुन्दरता और क्षमताओं की प्रशंसा करनी चाहिए। जहाँ तक सम्भव हो उसे उसके लिए अच्छे वस्त्र पहनने की व्यवस्था करनी चाहिए। एक पत्नी को तब प्रेम महसूस नहीं होता जब उसे लगता है कि उसके पति को उसके रूप-रंग की परवाह नहीं है।

जब एक पति अपनी पत्नी की आलोचना करता है, तो वह उसे यह सोचने पर मजबूर कर सकता है कि वह एक व्यक्ति के रूप में अधूरी है और यह बात उसे हतोत्साहित कर सकती है। पौलुस विश्वासियों से कहता है, "किसी को बदनाम न करें, झगड़ालू न हों; पर कोमल स्वभाव के हों, और सब मनुष्यों के साथ बड़ी नम्रता के साथ रहें" (तीतुस 3:2)। यदि आलोचना आवश्यक है, तो एक पति को यह स्वीकार करने मेंअत्याधिक सावधानी बरतनी चाहिए कि उसके मन में उसकी पत्नी की सराहना उसकी आलोचना से अधिक है। उन्हें उन स्त्रियों के उदाहरण देने से बचना चाहिए, जो विभिन्न गुणों में उसकी पत्नी से अच्छी हैं।

(5) एक पति सम्बन्ध के लिए समय निकालकर अपनी पत्नी से प्रेम करता है।

जीवन को एक साथ साझा करने के लिए बातचीत के समय की आवश्यकता होती है। सम्बन्ध शब्दों के द्वारा गहरे होते हैं (नीतिवचन 16:24, नीतिवचन 20:5)। जीवनसाथियों को उन बातों के बारे में बात करनी चाहिए, जो उनके दिनों में होती हैं। उन्हें अपनी मित्रता, अपनी भावनाओं, अपनी इच्छाओं और अपनी चिन्ताओं के बारे में बात करनी चाहिए। एक पत्नी को प्रेम तब महसूस होता है, जब उसका पति बात करने और सुनने के लिए समय निकालता है। जब वह काम से थका हुआ घर आता है, तो हो सकता है कि उसका मन घर की समस्याओं के बारे में बात करने या सुनने का न हो, परन्तु उसे इस आवश्यकता की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। यदि एक पति शारीरिक घनिष्ठता चाहता है, परन्तु भावनात्मक घनिष्ठता के लिए उपलब्ध नहीं

---

[32] नीतिवचन 31:28-31

[33] विवाह के संदर्भ में, यह इफिसियों 4:29-32 में; 5:25-29 और मत्ती 7:12 हमारे लिए दिए गए परमेश्वर के निर्देश का एक अनुप्रयोग है।

है, तो पत्नी को लगता है कि उसका इस्तेमाल हो रहा है और उससे प्रेम नहीं किया जा रहा है।

(6) पति अपनी पत्नी की निर्ब लताओं में धीरज रखकर उससे प्रेम करता है।

1 पतरस 3:7 सिखाता है, “वैसे ही हे पतियो, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो, और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो…” अधिकतर स्त्रियाँ अधिकतर पुरुषों की तरह शारीरिक रूप से उतनी मजबूत नहीं होती हैं। इसके अलावा, अधिकतर स्त्रियाँ अधिकतर पुरुषों की तुलना में भावनात्मक पीड़ा और संकट के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं। एक पुरुष को अपनी पत्नी को दिलासा देना चाहिए और प्रोत्साहित करना चाहिए। उसे सीखना चाहिए कि उसका तनाव कैसे दूर किया जाए। जब वह थकी हुई, तनावग्रस्त या चिंतित हो तो उसे उससे कोई माँग करने से बचना चाहिए।

(7) एक पति अपनी पत्नी की व्यावहारिक आवश्यकताओं को पूरा करके उससे प्रेम करता है।

जिस तरह एक पुरुष अपने काम के लिए सर्वोत्तम औज़ार और अपना काम करने के लिए एक अच्छी जगह चाहता है, उसी तरह उसे अपनी पत्नी को भी एक अच्छा वातावरण प्रदान करना चाहिए। उसे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि घर की मरम्मत की जाए और उसमें वे साजों-सामान हों जिनकी उसकी पत्नी को आवश्यकता है।

जब पति अपनी पत्नियों से प्रेम करते हैं, तो उसके परिणाम

अधिकतर पतियों को पता चलता है कि जब वे अपनी पत्नियों से प्रेम दिखाते हैं, तो उनकी पत्नियाँ खुशी और सहयोग के साथ प्रत्युत्तर देती हैं। स्त्रियों को तब खुशी महसूस होती है, जब उनके पति उनके प्रति समर्पित होते हैं और ऊपर सूचीबद्ध तरीकों से उनके प्रति प्रेम दिखाते हैं। पुरुषों को अपने विवाह से सबसे अधिक लाभ तब मिलता है जब वे अपनी पत्नियों को प्रेम दिखाते हैं (इफिसियों 5:28)। हालाँकि, पुरुषों को परिणाम की गारंटी नहीं होती है। कुछ अपवाद भी हैं। मनुष्य को जो चाहिए, केवल उसे पाने के लिए प्रेम का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए। उसे अपनी आवश्यकताओं के बारे में चिन्ता करने के बजाय परमेश्वर को प्रसन्न करने और अपनी पत्नी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रेम दिखाना चाहिए।

कुछ पत्नियाँ पिछले अनुभवों से भावनात्मक रूप से आहत हो जाती हैं, और हो सकता है कि वे अपने पतियों के प्रेम का प्रत्युत्तर तुरन्त न दें। प्रेम जताने की ये विधियाँ प्रयोग के तौर पर कुछ दिनों तक आजमाने की तकनीक नहीं है। एक पति को इन तरीकों से निरन्तर प्रेम दिखाते रहना चाहिए, क्योंकि उसके मन में परमेश्वर और अपनी पत्नी के लिए प्रेम है। मसीह भी इसी विश्वासयोग्यता और स्व-बलिदान की प्रतिबद्धता के साथ कलीसिया से प्रेम करता है।

एक पत्नी अपने पति के प्रति कैसे आदर दिखाती है

इफिसियों 5:33 आज्ञा देता है, “पर तुम में से हर एक अपनी पत्नी से अपने समान **प्रेम** रखे, और पत्नी भी अपने पति का **भय** माने।”

मनुष्य को आदर की आवश्यकता होती है। अधिकतर पुरुष अन्य लोगों द्वारा पसंद किए जाने के बजाय उनका आदर किए

जाने का चुनाव करेंगे। परमेश्वर ने पुरुषों को अपने परिवारों की रक्षा, सहयोग और अगुवाई करने के लिए बनाया है। एक पिता और पति की पदवी आदर पाने के लिए कुछ भी करने से पहले ही आदर का पात्र है। एक पत्नी को अपने पति के प्रति आदरपूर्वक व्यवहार करना चाहिए भले ही उसके कार्य गलत हों। उसे उसके साथ परमेश्वर के स्वरूप में बने एक व्यक्ति के रूप में व्यवहार करना चाहिए, जो तब भी महत्वपूर्ण है जब वह अपने अधिकार का पूरी तरह से प्रयोग नहीं करता है (इफिसियों 5:23)। इसका अर्थ यह नहीं है कि वह उसे नहीं बता सकती कि वह उसके कार्यों या निर्णयों से असहमत है, परन्तु उसे उसके साथ अनादर का व्यवहार नहीं करना चाहिए।

जब एक पत्नी अपने पति के अधिकार के प्रति स्वतंत्र रूप से समर्पित होकर उसका आदर करती है, तो वह यीशु के प्रति अपने प्रेम को प्रदर्शित करती है (इफिसियों 5:22, 31-33)।

कुछ पत्नियाँ सोचती हैं कि वे अपने पतियों से तब भी प्रेम करती हैं जब वे उनके साथ अनादरपूर्वक व्यवहार करती हैं—अपने मित्रों के सामने उनकी आलोचना करती हैं, गुप्त व्यवहार करती हैं और आहत करने वाले शब्दों का इस्तेमाल करती हैं। उन्हें समझना चाहिए कि कोई भी स्नेह अनादर की भरपाई नहीं कर सकता।

अधिकतर स्त्रियों में छोटे बच्चे की माँ बनने की तीव्र इच्छा होती है। उनमें बच्चे की आवश्यकताओं का ध्यान रखने की स्वाभाविक क्षमता और स्वाभाविक इच्छा होती है। कल्पना कीजिए कि एक स्त्री को तब कैसा महसूस होगा यदि कोई उससे कहे कि, "तुम एक बच्चे की देखभाल करने में सक्षम नहीं हो।" इसी तरह, पुरुषों में रक्षा करने, आवश्यकताएँ पूरी करने और अगुवाई करने के प्रति प्रबल झुकाव होता है। जब एक पुरुष की पत्नी उससे कहती है कि वह उन बातों को करने में असमर्थ है, तो उसे लगता है कि एक पुरुष के रूप में वह असफल है।

एक पत्नी को यह समझना चाहिए कि ऐसे अन्य पुरुष भी होंगे, जिनका व्यक्तित्व उसके पति अधिक मजबूत होगा, वे अधिक पैसा कमाएँगे, या उसके पति से ऊँचे पद पर आसीन होंगे। उसे दूसरों से तुलना करके अपने पति को असफल होने का एहसास नहीं कराना चाहिए। जैसा कि हम इफिसियों 5:21-33 से जानते हैं, एक पत्नी अपने पति के साथ एक तन बन जाती। जब कोई पत्नी उसकी आलोचना करती है या दूसरों से उसकी तुलना करती है, तो वह उन *दोनों* और उनके सम्बन्ध को नुकसान पहुँचाती है।

► एक छात्र को समूह के लिए नीतिवचन 31:11-12, 26 पढ़ना चाहिए। ये आयतें हमें इस विषय में क्या सिखाती हैं कि एक धर्मी पत्नी अपने व्यवहार और शब्दों में अपने पति के साथ कैसा व्यवहार करती है?

(1) एक पत्नी पुष्टि भरे शब्दों से अपने पति का आदर करती है।

एक पत्नी को अपने पति की क्षमता का समर्थन करना चाहिए। एक पत्नी अपने पति से जो सकारात्मक शब्द कहेगी, उनमें आदर स्पष्ट होगा। अधिकतर पुरुषों पर शब्दों का गहरा प्रभाव पड़ता है। वे या तो बनाएँगे या ढा देंगे (नीतिवचन 14:1)। वे या तो प्रोत्साहित करेंगे या निर्बल करेंगे। वे या तो उसके आत्मविश्वास को मजबूत करेंगे या उसकी आत्मा को ही तोड़ देंगे

(नीतिवचन 18:21)। एक पुरुष हर उद्यम में सफल नहीं हो सकता है या कुछ पदों पर रहने में सक्षम नहीं हो सकता है, परन्तु उसकी पत्नी को उसके परिवार के लिए घर और सुरक्षा प्रदान करने के उसके प्रयासों का समर्थन करना चाहिए। उसे विचार रखने और नई चुनौतियों का प्रयास करने के विषय हतोत्साहित करने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

► छात्रों को समूह के लिए नीतिवचन 15:4 और नीतिवचन 16:24 पढ़ना चाहिए।

(2) एक पत्नी समर्पण के के द्वारा अपने पति का आदर करती है (1 पतरस 3:5)।

एक पत्नी की अधीनता का अर्थ यह नहीं है कि वह अपने पति से तुच्छ है। इसके बजाय इसका अर्थ यह है कि उनकी भूमिकाएँ अलग-अलग हैं। त्रिएकत्व में भी हम देखते हैं कि पुत्र पिता के प्रति समर्पण करता है, हालाँकि पुत्र स्वभाव या सामर्थ्य या किसी गुण में पिता से छोटा नहीं है।

यह सिद्धान्त कुछ पत्नियों के लिए आसान नहीं होता है, विशेषकर यदि उनका पति परमेश्वर के वचन के अनुसार नहीं चलता है, या यदि वह उनके प्रति दयालु नहीं है। कुछ पत्नियों को लगता है कि वे अपने लिए या अपने परिवार के लिए अपने पति से अच्छा निर्णय ले सकती हैं। कभी-कभी पत्नी सही होती है और पति गलत। हालाँकि, यदि कोई पत्नी अपने पति के प्रति तभी समर्पण करती है, जब वह उससे सहमत होती है, तो वह अधिकार को ले रही है और वास्तव में अधीनता में नहीं है। अधीन रहने का अर्थ दूसरे को निर्णय लेने की अनुमति देना होता है।

पतरस ने पत्नियों से कहा है,

> हे पत्नियो, तुम भी अपने पति के अधीन रहो, इसलिये कि यदि इन में से कोई ऐसे हों जो वचन को न मानते हों तुम्हारा श्रृंगार दिखावटी न हो, अर्थात् बाल गूँथना, और सोने के गहने, या भाँति भाँति के कपड़े पहिनना, वरन् तुम्हारा छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है। (1 पतरस 3:1, 3-4)।

बहुत सी कठिन परिस्थितियाँ आती हैं। कई पत्नियाँ प्रश्न पूछती हैं। “यदि वह मुझसे ________ करने के लिए कहेगा तो क्या मुझे यह करना होगा?” यह पाठ विभिन्न प्रकार की स्थितियों के बारे में नहीं बता सकता है। हालाँकि, अधीनता की समस्या अक्सर इसलिए नहीं होती, क्योंकि एक पति ऐसे काम करवाना चाहता है, जिन्हें एक पत्नी को नहीं करनी चाहिए। एक पत्नी शायद इसलिए अधीन नहीं रहना चाहती, क्योंकि उसे यह है कि यदि उसने ऐसा किया तो उसका पति बुद्धि से काम नहीं करेगा। हो सकता है कि पति प्रेम करने वाला और दयालु न हो। हो सकता है कि एक पत्नी निर्णय लेने की स्वतंत्रता को छोड़ना न चाहती हो। पत्नी का व्यवहार अनाज्ञाकारिता से भरा हो सकता है। पत्नी अपने पति के दया रहित कामों या गलतियों के उदाहरणों का इस्तेमाल सामान्य रूप से उसके अधिकार को अस्वीकार करने के बहाने के रूप में करती है। यह परमेश्वर के वचन की आज्ञाओं का उल्लंघन है।

बाइबल हमें बताती है कि एक धर्मी, आज्ञाकारी पत्नी अपने पति को प्रभु के लिए जीत सकती है। हमें इस बात की गारंटी नहीं

दी गई है कि एक पति एक अच्छी पत्नी के कारण विश्वासी बन ही जाएगा, परन्तु यदि उसकी मसीही पत्नी उद्दंड है, तो उसके विश्वासी बनने की सम्भावना बहुत कम हो जाती है। एक पत्नी आदरपूर्ण व्यवहार करके अपने पति से अत्याधिक कृपा प्राप्त कर सकती ह, परन्तु उसके ऐसा करने का मुख्य कारण नहीं होना चाहिए। उसे अपने पति का आदर करना चाहिए, क्योंकि वह उसके आदर के योग्य और क्योंकि वह परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहती है।

नीतिवचन 12:4 कहता है, "भली स्त्री अपने पति का मुकुट है, परन्तु जो लज्जा के काम करती वह मानो उसकी हड्डियों के सड़ने का कारण होती है।" यदि कोई पत्नी अपने मित्रों के सामने अपने पति के साथ अनादर भरा व्यवहार करती है, तो यह उसके पति के आदर को उससे छीन लेगा, जिसे वह कभी भी बहाल नहीं कर पाएगी। पुरुष उन अन्य पुरुषों की प्रशंसा करते हैं, जिनकी पत्नियाँ समर्पित होती हैं। पुरुष उन अन्य पुरुषों पर तरस खाते हैं, जिनकी पत्नियाँ अनादर करने वाली होती हैं।

(3) **पत्नी अपने पति की आवश्यकताओं पर ध्यान देकर उसका आदर करती है** (नीतिवचन 31:15, 21, 25, 27)।

जब एक पत्नी अपने पति को खुश करने के लिए भोजन तैयार करने और घर की देखभाल करने की विशेष बातें सीखती है, तो वह सम्मानित महसूस करता है। यदि वह उसके लिए अपनी आदतें बदलने से इनकार करती है, तो उसे लगता है कि उसकी पत्नी के लिए उसका कोई महत्व नहीं है।

यदि कोई पत्नी काम या मित्रों या कलीसिया या मनोरंजन में व्यस्त है और अपने पति की बातें सुनने या उसकी आवश्यकताओं पर ध्यान देने के लिए समय नहीं निकालती है, तो उसे लगता है कि उसकी पत्नी के लिए उसका कोई महत्व नहीं है।

उत्पत्ति 2:18 सिखाता है, फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊँगा जो उससे मेल खाए।"

(4) **पत्नी शारीरिक स्नेह देकर अपने पति का आदर करती है।**

अधिकतर पुरुषों को यौन संतुष्टि कुछ स्त्रियों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण प्रतीत होती है। एक स्त्री तब तक यौन गतिविधियों में रुचि नहीं ले सकती, जब तक कि उसकी भावनाएँ और मनोदशा इसके प्रति इच्छुक न हो, जो कि एक पुरुष की इच्छा से अक्सर कम ही होता है। इसका अर्थ यह है कि एक पति अक्सर असंतुष्ट हो सकता है, जबकि उसकी पत्नी को उसकी आवश्यकता की समझ नहीं है। वह अपने द्वारा अनुभव किए गए या देखे गए पिछले शोषण के कारण पुरुष की यौन इच्छा से भी घृणा कर सकती है। एक पति को अपनी पत्नी के प्रति धीरजवन्त और समझदार बनने का प्रयास करना चाहिए। परन्तु एक पत्नी को यह एहसास होना चाहिए कि अपने पति की यौन आवश्यकताओं को पूरा करना उसके लिए तब भी अच्छा होता है, जब उसे स्वयं इसकी आवश्यकता महसूस न हो रही हो। यदि एक पुरुष अपनी पत्नी के प्रति विश्वासयोग्य और समर्पित है, और अन्य स्त्रियों के साथ गलत सम्बन्ध नहीं रखता है, तो जब उसकी पत्नी उसकी आवश्यकताओं की परवाह नहीं करती है, तो उसे नाराजगी महसूस हो सकती है। एक पति की अपनी वैवाहिक प्रतिबद्धता के प्रति विश्वासयोग्यता कभी भी उसकी शारीरिक संतुष्टि पर निर्भर नहीं होनी चाहिए, परन्तु उसकी पत्नी का उसकी यौन आवश्यकताओं पर ध्यान

देना परीक्षा से उसके संघर्ष को कम कर सकता है।

श्रेष्ठगीत बताता है है, "मेरा प्रेमी मेरा है और मैं उसकी हूँ, **हे मेरे प्रेमी, आ,** हम खेतों में निकल जाएँ…वहाँ **मैं तुझ को अपना प्रेम दिखाऊँगी।** (श्रेष्ठगीत 2:16; श्रेष्ठगीत 7:11-12, जोर दिया गया है; 1 कुरिन्थियों 7:3-5 भी देखें)।

परमेश्वर के निर्देशों के उल्लंघन के परिणाम

इन अनुच्छेदों में दी गई बातें विवाह में होने वाले हर संघर्ष पर लागू नहीं होती हैं, परन्तु वे सामान्य हैं। ये बातें स्वाभाविक व्यवहारिक कारण-और-प्रभाव के चक्रों को दर्शाती हैं, जो तब घटित होते हैं, जब पति-पत्नी इसके बजाय कि (1) यह पहचाननें कि वे क्या महसूस कर रहे हैं, और (2) परमेश्वर की सच्चाई और यह याद रखें कि वह उनके लिए क्या चाहता है, और (3) बाइबल के तरीकों से प्रत्युत्तर देने में उनकी सहायता करने के लिए आत्मा पर निर्भर रहें , वे अपनी भावनाओं पर गैर- आत्मिक रूप से प्रतिक्रिया करते हैं।

यदि कोई पत्नी आत्मा के अनुसार नहीं चल रही है और परमेश्वर के प्रेम को अपने भीतर कार्य नहीं करने दे रही है, तो वह स्वाभाविक तरीके से प्रतिक्रिया कर सकती है जो कि उसके विवाह को हानि पहुँच सकती है। यदि पत्नी को प्रेम महसूस नहीं होता, तो वह सुरक्षित महसूस नहीं करती। वह जिद्दी बनने लगती है और अपने पति के अधिकार का विरोध करना शुरू कर देती है, क्योंकि उसे इस बात का भरोसा नहीं होता कि वह उसका ध्यान रखेगा। जब वह ऐसा करती है, तो उसके पति को अपमानित महसूस होता है। यदि वह अधिकार जताने और आदर की माँग करने का प्रयास करता है, तो उसकी पत्नी और भी अधिक यह महसूस होता है कि वह उससे प्रेम नहीं करता है।

यदि कोई पति आत्मा के अनुसार नहीं चल रहा है और परमेश्वर के प्रेम को अपने भीतर कार्य नहीं करने दे रहा है, तो वह उस मनोभाव को अपनाने में असफल हो सकता है, जिससे उसके विवाह को मजबूत बन सकता है। जब पति अपमानित महसूस करता है, तो उसे दुःख होता है और क्रोध आता है। वह अपनी पत्नी को ठेस पहुँचाने वाली बातें कह सकता है। यदि वह अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने का प्रयास कर रहा है, तो वह चुप हो सकता है। वह अपनी पत्नी के निकट नहीं रहना चाहता या उसके सामने अपना खुलकर अपने मन की बातें नहीं बताना चाहता, क्योंकि उसे लगता है कि वह उसकी साथी नहीं है। जब वह ऐसा करता है, तो उसकी पत्नी को समझ नहीं आता कि ऐसा क्यों हो रहा है। शायद उसने उसके साथ अपमानजनक व्यवहार इसलिए किया था, क्योंकि वह उसे यह एहसास दिलाने का प्रयास कर रही थी कि वह खुश नहीं है और उसे बदल जाना चाहिए। जब वह क्रोधित हो जाता है या उस पर ध्यान नहीं देता है, तो वह सोचती है कि वह इस बात को स्वीकार कर रहा है कि उसे उसकी भावनाओं की परवाह नहीं है। वह और भी अधिक अनादर करने वाली बन सकती है।

वैवाहिक सम्बन्ध बिगड़ जाने पर व्यक्ति परीक्षा के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाता है। पत्नी को अपने पति की अगुवाई के प्रति अधिक प्रतिरोधी होने की परीक्षा का सामना करना पड़ता है। वह दूसरों से उसके बारे में अपमानजनक बात करने के लिए लुभाती है। वह किसी ऐसे अन्य पुरुष का ध्यान का आनन्द लेने के लुभा सकती जो उसकी सराहना करता हुआ प्रतीत

होता है। पति को अपनी पत्नी से दूर रहने के लिए लुभाता है, क्योंकि उसका व्यवहार उसे ठेस पहुँचाता है। उसका अपनी पत्नी के प्रति प्रेमपूर्ण कार्य करने का मन नहीं होता। वह किसी ऐसी अन्य स्त्री का ध्यान आकर्षित करने के लिए प्रलोभित हो सकता है, जो उसकी प्रशंसा करती है।

प्रत्येक व्यक्ति अपने चुनावों के लिए परमेश्वर के प्रति जवाबदेह है। जीवनसाथी के किसी काम के कारण परमेश्वर एक व्यक्ति के पाप को क्षमा नहीं करेगा। परमेश्वर ने हमसे वह जीवन जीने की सामर्थ्य देनी प्रतिज्ञा की है, जिसे हमें जीना चाहिए। इस जानकारी का उद्देश्य एक व्यक्ति को अपने जीवनसाथी से आवश्यक चीज़ों की माँग करने के लिए प्रेरित करना या अपने पाप के लिए अपने जीवनसाथी को दोषी ठहराने के लिए प्रेरित करना नहीं है। इसका उद्देश्य यह है कि एक व्यक्ति परमेश्वर को प्रसन्न करे और उसके जीवनसाथी को जो चाहिए उसे देने की जिम्मेदारी का एहसास कर सके।

गलत लक्ष्य

कई बार व्यक्ति अपने जीवन को आसान बनाने का उपाय ढूँढ़ता है। एक पति अपनी पत्नी को बदल कर अपना जीवन आसान बनाना चाहता है। इसी तरह, एक पत्नी सोच सकती है कि यदि उसका पति बदल जाएगा, तो उसका जीवन अच्छा हो जाएगा। एक व्यक्ति परामर्शदाता या पास्टर या मित्रों से पूछता है कि दूसरे व्यक्ति को कैसे बदला जाए। जीवनसाथी बदलना सही लक्ष्य नहीं है। एक ऐसा व्यक्ति जो सम्बन्ध की तकनीकों का इस्तेमाल करके अपने जीवन को आसान बनाने का प्रयास करता है, वह परमेश्वर या दूसरे व्यक्ति के प्रति प्रेम से प्रेरित नहीं होता है।

कई बार एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के दोषों को सुधारने के लिए वर्षों तक प्रयास करता रहता है। पर वह उन्हीं गलतियों की आलोचना करना कभी बन्द नहीं करते। भले ही प्रत्येक व्यक्ति में वास्तविक दोष क्यों न हों, प्रत्येक पति या पत्नी को अन्त में दोषों वाले जीवनसाथी को स्वीकार करना ही होगा। दोष शायद व्यक्तित्व के दोष, चारित्रिक दोष, या आत्मिक दोष (यहाँ तक कि पाप) भी हो सकते हैं। सम्बन्ध को दूसरे व्यक्ति के बदलने की इच्छा पर निर्भर नहीं होना चाहिए। वह बदलने में असमर्थ महसूस कर सकता है। उसके न बदलने का कारण चाहे जो भी, प्रत्येक जीवनसाथी को प्रेम और आदर दिखाना चाहिए, व्यक्ति को उसके दोषों के बावजूद भी महत्व देना चाहिए।

उपसंहार

परमेश्वर ने पुरुषों और स्त्रियों के स्वभाव को बनाया, और उसने मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विवाह को बनाया। हालाँकि, हम एक ऐसे संसार में रहते हैं, जहाँ विवाह और परिवार को पाप से अत्यधिक नुकसान होता है। हममें से प्रत्येक व्यक्ति को उसके अपने स्वयं के पापों और दूसरों के ऐसे पापों से, जिन्होंने हमें प्रभावित किया है, व्यक्तिगत् रूप से क्षतिग्रस्त है। हम परमेश्वर के अभिप्राय के अनुसार के विवाह का अनुभव उस अनुग्रह के बिना नहीं कर सकते हैं, जो हमें बदलता है और दूसरों पर अनुग्रह करने में हमारी सहायता करता है। हमें परमेश्वर के आत्मा की पवित्रता की आवश्यकता है, ताकि हमारे उद्देश्य पवित्र हों, प्रेम दृढ़ हो और हममें सेवा करने वाली नम्रता हो।

सामूहिक चर्चा के लिए

► इस पाठ में ऐसी कौन से सिद्धान्त ऐसे हैं, जो आपके लिए नए हैं? आप अपने दृष्टिकोण और व्यवहार को बदलने की योजना कैसे बनाएँगे?

► विवाहों को मजबूत करने के लिए कलीसिया क्या कर सकती है?

प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता,

इतनी सारी विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विवाह सम्बन्ध को बनाने के लिए धन्यवाद। हमें विवाह के लिए निर्देश देने के लिए धन्यवाद।

हमारी सहायता कर कि हम उस तरह प्रेम कर सकें और हमें उस देखभाल के लिए समझ प्रदान कर जैसी हमें करनी चाहिए। ऐसे परिवार बनाने में हमारी सहायता करे जो संसार में तेरे प्रेम का प्रदर्शन करते हैं।

तेरे अनुग्रह के लिए धन्यवाद जो वैसे प्रेम करने में हमारी सहायता करता है जैसा तू करता है।

आमीन

पाठ सम्बन्धी नियत कार्य

(1) 1 कुरिन्थियों 13:4-8 को याद करें। अगली कक्षा की शुरुआत में, अपनी स्मृति से उस परिच्छेद को लिखें या सुनाएँ।

(2) पति या पत्नी की आवश्यकताओं का वर्णन करते हुए दो पृष्ठ का एक लेख लिखें। जीवनसाथी के ऐसे व्यवहार के उदाहरण दें, जो उन आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता करते हैं। आप जिन आवश्यकताओं पर चर्चा करते हैं, उनमें से प्रत्येक का सहयोग करने के लिए पवित्रशास्त्र के का इस्तेमाल करें।

पाठ 8
प्रेम की पाँच भाषाएँ - भाग 1

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में, छात्र यह करने लगेंगे:

(1) वास्तविक प्रेम के गुणों एवं व्यवहार का वर्णन करना।

(2) समझाना कि किसी से बिना शर्त प्रेम करने का क्या अर्थ होता है।

(3) किसी की मुख्य प्रेम भाषा में प्रेम व्यक्त करने के महत्व पर चर्चा करना।

(4) परिवार के किसी सदस्य के व्यक्तिगत गुणों, चारित्रिक गुणों और व्यक्तित्व गुणों के प्रति प्रेम और प्रशंसा व्यक्त करने के लिए समर्थन के शब्दों का इस्तेमाल करना।

जोसेफ और हन्ना - एक विकासशील विवाह

जोसेफ इस बात को लेकर निराश था क्योंकि उसकी पत्नी दुःखी थी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह उससे क्या चाहती है। जोसेफ कड़ा परिश्रम करता था और उसने अपनी पत्नी और बच्चों को घर, भोजन और जीवन की सभी आवश्यक वस्तुएँ प्रदान की थीं। उसने अपनी पत्नी को उसकी इच्छानुसार कुछ भी खरीदने की अनुमति दी थी। उसकी पत्नी को किसी बात की चिन्ता नहीं थी। एक पत्नी को इससे अधिक और क्या चाहिए? जोसेफ को लगता था कि उसकी पत्नी उसके काम की सराहना नहीं करती।

हन्ना इसलिए दुःखी थी क्योंकि वह चाहती थी कि जोसेफ उसके लिए विशेष बातों के बारे में सोचकर अपना प्रेम दिखाए। जोसेफ की ओर से मिला उसका पसंदीदा उपहार उसके नाम की एक छोटी लकड़ी की पट्टिका थी, जिसे जोसेफ ने अपनी दुकान में उसके लिए बनाया था। जोसेफ के यह के कहने के बजाय कि वह जो कुछ चाहे ख़रीद सकती हैं, हन्ना चाहती थी कि वह कभी-कभी उसके लिए फूल ख़रीद दे।

जोसेफ और हन्ना ने अपनी भावनाओं के बारे में बात की और एक-दूसरे की आवश्यकताओं को समझना शुरू कर दिया।

सच्चा प्रेम क्या है?

► किसी से सच्चा प्रेम करने का क्या अर्थ है?

► एक छात्र को समूह के लिए 1 कुरिन्थियों 13:4-8 पढ़ना चाहिए। इस परिच्छेद से प्रेम के गुणों और कार्यों की सूची बनाएँ।

उन बातों की सूची बनाएँ जो प्रेम नहीं है और वे बातें जिन्हें प्रेम नहीं करता है।

1 कुरिन्थियों 13 प्रेम	
प्रेम कैसा होता है	**प्रेम क्या करता है**
प्रेम कैसा नहीं होता	**प्रेम क्या नहीं करता**

इस परिच्छेद से ऐसा प्रतीत हो सकता है कि प्रेम जो **नहीं है,** उसे उसके लिए अधिक जाना जाता है, न कि इसलिए कि वह क्या **है।** परन्तु प्रेम **कैसा नहीं होता है** इसका वर्णन हमें सिखाता है कि प्रेम **कैसा होता है।** प्रेम अभिमानी नहीं है, तो क्या है? यह इसके विपरीत है। यह नम्र है।

► जैसा कि 1 कुरिन्थियों 13:4-8 में वर्णित है और उपरोक्त तालिका में लिखा गया है, उसके अनुसार अब हर उस बात के विपरीतों की सूची बनाएँ, जो प्रेम के सम्बन्ध में सच नहीं है।

प्रेम कैसा होता है	प्रेम क्या करता है

सच्चा प्रेम:

- केवल एक भावना नहीं है (हालाँकि भावनाएँ अक्सर प्रेम के साथ चलती हैं)।
- स्वेच्छा से दिया जाता है, न कि आवश्यकता।
- एक प्रतिबद्धता है।
- बलिदानी होता है।
- बिना शर्त का होता है; यह दूसरे व्यक्ति के कार्यों पर निर्भर नहीं होता है।
- सोच-समझकर किए जाने वाला होता है, न कि संयोग से होने वाला।
- इसमें मूल्य चुकाना पड़ता है।
- वह चाहता है, जो दूसरे व्यक्ति के लिए सबसे अच्छा है।
- देने के द्वारा स्वयं को प्रकट करता है।

आप प्रेम किये बिना भी दे सकते हैं, परन्तु बिना दिए प्रेम कर पाना असम्भव है। प्रेम में आपको कुछ कीमत तो चुकानी पड़ेगी।

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा, कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिय…" (यूहन्ना 3:16)। सच्चा प्रेम देने से ही व्यक्त होता है। यह हमेशा एक ठोस, भौतिक उपहार देना नहीं होता है। कई बार प्रेम भरे शब्द भी उपहार होते हैं। कई बार समय भी उपहार होता है: यानी किसी के साथ रहना और उनके लिए उपलब्ध रहना। कभी-कभी प्रेम सेवा के कार्यों या प्रेमपूर्ण स्पर्श के द्वारा दिया जाता है। पिता परमेश्वर ने हमसे इतना प्रेम किया कि उसने हमें अपना सर्वश्रेष्ठ उपहार, यानी अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि हम भी उसकी सन्तान बन सकें। जब हम दूसरों से सच्चा प्रेम करेंगे, तो हम देंगे भी।

सच्चा प्रेम बिना शर्त का होता है। यह जिससे प्रेम किया जा रहा है, उसके व्यवहार या योग्यता पर निर्भर नहीं होता है। यह

नहीं कहता, "यदि तुम ऐसा करो और मुझे इस प्रकार प्रसन्न करो, तो मैं तुमसे प्रेम करूँगा; परन्तु यदि तुम वह करोगे जो मुझे अच्छा नहीं लगता, तो मैं तुमसे प्रेम नहीं करूँगा।"

शर्त वाला प्रेम कहता है, "यदि मुझे तुम्हारा व्यवहार पसन्द है, तो मैं तुम्हें ऐसी प्रेम की अभिव्यक्ति से पुरस्कृत करूँगा जो तुम्हारे लिए सार्थक हो। परन्तु यदि तुम वह नहीं करोगे जो मैं चाहता हूँ, तो मैं प्रेम की सार्थक अभिव्यक्ति को रोक दूँगा।"

सच्चा प्रेम बिना शर्त का होता है। यह स्वयं को अवश्य प्रकट करेगा चाहे इसका पाने वाला कुछ करे या न करे। यह स्वयं को तब भी प्रकट करेगा जब इसका पाने वाला प्रेम से भरा प्रत्युत्तर देने में असमर्थ हो; जब उसके पास बदले में देने के लिए कुछ न हो।

यह समझना महत्वपूर्ण है कि किसी से बिना शर्त प्रेम करने का अर्थ यह नहीं है कि हम उन्हें वह दे दें, जो वे चाहते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम उनके गलत व्यवहार के परिणामों को हटा दें। इसका अर्थ यह है कि हम हमेशा वही करने का प्रयास करते हैं, जो उनके लिए सबसे अच्छा है। किसी प्रियजन को पीड़ित देखना कठिन है, परन्तु यदि वे गलत कर रहे हैं, तो पीड़ा का अनुभव ही अक्सर एकमात्र ऐसी चीज है, जो उन्हें उनके विनाशकारी व्यवहार से दूर कर सकती है। कभी-कभी हमारे प्रियजन के लिए सबसे अच्छा यही होता है कि उन्हें संघर्ष करने दिया जाए। अन्य समयों में, हमारे लिए यह सबसे अच्छा होता है कि हम उनके संघर्ष से बाहर निकालने में उनकी सहायता करें। इन परिस्थितियों में हमें क्या करना चाहिए, यह जानने के लिए हमें अक्सर धर्मी लोगों की सम्मति और पवित्र आत्मा की सहायता की आवश्यकता होती है।

► हमें दूसरों से बिना शर्त प्रेम करने के लिए क्या प्रेरित करेगा?

► एक छात्र को समूह के लिए रोमियों 5:8 पढ़ना चाहिए।

कई लोगों को लगता है कि परमेश्वर का प्रेम उनके प्रदर्शन पर आधारित है। इस कारण, उन्हें समझ नहीं आता कि उन्हें दूसरे लोगों से बिना शर्त प्रेम क्यों करना चाहिए। परन्तु रोमियों 5:8 हमें बताता है कि परमेश्वर ने हमसे तभी प्रेम किया, जब हम उसके शत्रु ही थे। जब हम पापी ही थे, तभी उसने हमें उद्धारकर्ता दिया। सभी लोगों के प्रति उसका प्रेम बिना शर्त का प्रेम है। उसका प्रेम आपके व्यवहार या सिद्धता पर आधारित नहीं है। परमेश्वर आपसे प्रेम करता है, क्योंकि आप एक व्यक्ति के रूप में, उसके स्वरूप में बने हैं।

वह चाहता है कि हम दूसरों से वैसे ही प्रेम करें जैसा वह हमसे प्रेम करता है (यूहन्ना 15:12, इफिसियों 5:2, 1 यूहन्ना 4:11)। हमें दूसरों से बिना शर्त प्रेम करना चाहिए इसका मुख्य कारण यह है कि परमेश्वर हमें ऐसा करने लिए बुलाया है (मत्ती 5:43-48, 1 पतरस 4:8)।

लोग अलग-अलग तरीकों से प्रेम महसूस करते हैं

परमेश्वर को विविधता अच्छी लगती है। वह लोगों को अनोखे व्यक्तित्व प्रदान करता है। किन्हीं दो व्यक्तियों के सोचने और

अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का तरीका बिल्कुल एक जैसा नहीं होता। व्यक्तित्व में भिन्नता के कारण हमारे परिवार के सदस्यों की आवश्यकताएँ हमसे कुछ अलग होती हैं। हमारी भिन्नताएँ प्रतिदिन पारिवारिक सम्बन्धों को प्रभावित करते हैं।

व्यक्तियों में भिन्नता का एक तरीका यह है कि वे प्रेम को व्यक्त कैसे करते हैं और किस तरह से वे दूसरों के साथ अपने सम्बन्धों में प्रेम, सराहना और सुरक्षित महसूस करते हैं।

प्रेम व्यक्त करने के कई तरीके हैं, और लोगों को प्रेम का एहसास कराने के भी कई तरीके हैं। गैरी चैपमैन ने प्रेम की अभिव्यक्ति की पाँच सामान्य श्रेणियों की सूची दी है [34] वह उन्हें प्रेम की पाँच भाषाएँ कहते हैं। प्रेम प्रदर्शित करने के इन तरीकों में से प्रत्येक व्यवहार की एक पूरी प्रणाली है, न कि केवल एक व्यक्तिगत क्रिया।

हालाँकि हर किसी को सभी पाँच तरीकों से प्रेम करने की आवश्यकता है, परन्तु ऐसा लगता है कि अधिकतर व्यक्ति अन्य प्रकार की अभिव्यक्तियों की तुलना में एक प्रकार की अभिव्यक्ति के साथ अधिक प्रेम महसूस करते हैं। प्रेम की अन्य अभिव्यक्तियाँ उनके लिए उतना महत्व नहीं रखतीं।

प्रेम की पाँच भाषाएँ

लोग इन बातों के द्वारा प्रेम व्यक्त करते हैं:

1. पुष्टि के शब्द
2. गुणवत्ता से भरा समय
3. उपहार
4. सेवा के कार्य
5. शारीरिक स्पर्श

इसी तरह, लोग उन पाँच तरीकों से प्रेम को पहचानते हैं और प्राप्त करते हैं।

प्रेम की मुख्य भाषा

अधिकतर लोग स्वाभाविक रूप से उन पाँच तरीकों में से एक या दो तरीकों से प्रेम को पहचानते हैं और व्यक्त करते हैं। यदि परिवार के सदस्य अपने जीवनसाथी या बच्चे के प्रति उस व्यक्ति की मुख्य प्रेम भाषा में अपना प्रेम व्यक्त नहीं कर रहे हैं,

---

[34] इस खण्ड में कई विचार Gary Chapman (गैरी चैपमैन) के *प्रेम की पाँच भाषाएँ: अपने साथी को अपनी प्रतिबद्धता के विषय में कैसे बताएँ* (*The Five Love Languages: How to Express Heartfelt Commitment to Your Mate)* नामक लेख पर आधारित हैं, (Northfield Publishing, Chicago, 1995)

तो वह जीवनसाथी या बच्चा प्रेम को महसूस नहीं कर सकता है, यद्यपि उन्हें अन्य तरीकों से प्रेम दिखाया जा रहा है।

एक विशेष स्त्री मुख्य रूप से उन लोगों को अपना समय देकर प्रेम को व्यक्त कर सकती है, जिनसे वह प्रेम करती है। वह जिन लोगों से प्रेम करती है, उनसे बात करने और बातचीत करने के लिए उपलब्ध रहने का प्रयास करती है। वह एक साथ कुछ गतिविधियाँ करने के लिए समय निकालती है। इसी तरह, क्योंकि यह प्रेम दिखाने का मुख्य तरीका है, यह वह तरीका है, जिससे वह अपने प्रति दूसरों के प्रेम को आसानी से पहचान लेती है। जब कोई उसे अपना समय देता है, तो उसे सबसे अधिक प्रेम महसूस होता है। यदि उसका पति उसके लिए उपहार खरीदता है या उसके लिए कुछ करता है, तो यह उसके लिए उतना महत्व नहीं रखता जितना कि जब वह उसके साथ ध्यान से समय बिताता है।

एक विशेष व्यक्ति मुख्य रूप से शारीरिक स्पर्श के के द्वारा प्रेम दिखा सकता है। वह अपनी पत्नी और बच्चों को गले लगाता है और जब वे उसे गले लगाते हैं और उसके निकट आना चाहते हैं, तो वह खुश होता है। वह अपने मित्रों को गले लगा सकता है या कम से कम उनके कंधों को थपथपा सकता है या उनके साथ प्रेम से धक्का-मुक्की या हाथापाई कर सकता है। वह अपने परिवार के लिए अपनी पत्नी के कड़े परिश्रम की सराहना कर सकता है, परन्तु काम वह बात नहीं है, जिससे उसे लगता है कि वह उससे प्रेम करती है। जब वह उसके पास बैठती है और उसे अपनी बांहें उसके चारों ओर रखने देती है, या जब वह उसे विभिन्न स्नेहपूर्ण तरीकों से छूती है, तो उसे प्रेम महसूस होता है।

एक वाहन में ईंधन की टंकी होती है। टंकी खाली होने पर वाहन नहीं चलता। जब किसी व्यक्ति को उस तरह से प्रेम मिलता है, जैसे वह प्रेम को पहचानता है और जिस प्रेम की उसे आवश्यकता है, तो यह बात भावनात्मक ईंधन प्रदान करता है। जब किसी व्यक्ति की भावनात्मक टंकी भारी होती है, तो उसके पास चुनौतियों के लिए आत्मविश्वास और ऊर्जा होती है। वह दूसरों के साथ सहयोग करने में अधिक सक्षम होता है। वह विवादों को सुलझाने में अधिक सक्षम होता है। वह सुधार करने और उपलब्धि हासिल करने के लिए प्रेरित महसूस करता है।

जब एक व्यक्ति को उस तरह का प्रेम नहीं मिलता जिसकी उसे आवश्यकता है, तो उसके पास भावनात्मक ईंधन की कमी होती है। यदि कोई व्यक्ति प्रेम महसूस नहीं करता है, तो वह शायद ही कभी उपलब्धि या सुधार के लिए बड़े प्रयास करता है।

यदि हम अपने परिवार के सदस्यों को उनकी मुख्य प्रेम भाषा में बार-बार प्रेम नहीं दिखाते हैं, तो उन्हें एहसास नहीं होगा कि हम उनसे कितना प्रेम करते हैं। यह सच है, भले ही हमें कितना भी लगे कि हम उनसे प्रेम करते हैं। हमें अपने प्रेम को इस तरह से व्यक्त करना चाहिए कि उन्हें समझ आए।

यदि हम किसी को उसकी मुख्य प्रेम भाषा में ठेस पहुँचाते हैं, तो यह और भी बुरा होता है। उदाहरण के लिए, यदि पुष्टि के शब्द हमारे बच्चे के प्रति प्रेम दिखाने का सबसे महत्वपूर्ण तरीका है, तो हमारे आलोचनात्मक शब्द बच्चे को तब भी उससे अधिक ठेस पहुँचाते हैं, जब उसके पास एक अलग मुख्य प्रेम की भाषा होती है।

एक दूसरे के प्रति अपने प्रेम के द्वारा बढ़ना

पाठ 1 में, हमने सिखा है कि कैसे परमेश्वर ने अपने साथ और दूसरों के साथ संबंध बनाने के लिये सब लोगों को बनाया है। हर एक संबंध मे प्रेम का इज़हार करना एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। यह हमारे लिए समझना महत्वपूर्ण है कि किस तरह से हमारा जीवन साथी,हमारे बच्चे और परिवार के अन्य सदस्य सबसे अधिक प्रेम महसुस करते है। यह ज्ञान हमें उनके प्रति अपने प्रेम को उन तरीकों से व्यक्त करने में सक्षम बनाता है, जो व्यक्तिगत् रूप से उनके लिए सबसे अधिक सार्थक है।

विवाह शायद ही वैसा हो जैसी कि लोग उससे अपेक्षा करते हैं। अक्सर लोग खुद के और अपने जीवन साथी के बीच मतभेद की वजह से निराश हो जाते है। जब बात प्रेम के इज़हार की आती है, तो ऐसा हो सकता है कि सबसे अच्छी स्थिति यह है की दोनों के पास प्रेम की थमिक भाषा एक जैसी ही हो। यदि वह इस रीति से एक जैसी हो तो बहुत सारी गलतफहमी और निराशा को दूर किया जा सकता है। हालाँकि, इस तरह के मतभेद विवाह को मजबूत कर सकते हैं, यदि पति-पत्नि अपने विवाह के और एक-दूसरे के प्रति अपने प्रेम को बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हों।

एक दूसरे को समझने के लिए, एक दूसरे के अनुकूल होने के लिए और सार्थक तरीकों से देखभाल करने की कोशिश की प्रक्रिया हर एक व्यक्ति को विकसित करती है और वास्तविक प्रेम का एक अद्भुत प्रदर्शन बन जाती है। जब हम अपने परिवार के सदस्यों के प्रति प्रेम प्रदर्शित करके उनकी सेवा करते हैं, जिससे उन्हें प्रेम का एहसास होता है, तो इस से हमारी समझ और चरित्र में विकास होता है।

> "और प्रभु ऐसा करे की जैसा हम तुम से प्यार रखते हैं, वैसा ही तुम्हारा प्यार भी आपस में और सब मनुष्यों के साथ बढ़े, और उन्नति करता जाए।"
> - 1 थिस्सलुनीकियों 3:12

जब हम हमारे जीवन साथी और परिवार के अन्य सदस्यों पर प्रेम प्रगट करते है, तो हमें यह समझने की जरूरत है कि हम खुद के तरीकों से प्रेम प्रगट नहीं कर सकते, या जब हमें महसुस होता है, तब ही हमें प्रेम प्रगट करना हैं। प्रेम एक चुनाव और एक प्रतिबद्धता होती है, जो रिश्तों की कीमत द्वारा प्रेरित की जाती है। कई बार, हमें प्रेम प्रगट करने के नये तरीके सीखने पड़ सकते हैं। हो सकता है कि हम ऐसे परिवार मे पले बढ़े नही हैं, जहाँ पर एक विशेष तरीके से प्रेम प्रगट किया जाता हो, लेकिन आज परिवार के किसी सदस्य को उसी तरह से प्रेम करने की ज़रूरत है। ऐसी स्थितियों में, अपरिचित तरीके से प्रेम प्रगट करना शुरू करने में हमें अजीब या असहज सा लग सकता है, लेकिन हम इसे सीख सकते हैं! यह महत्वपूर्ण है कि हम कभी भी ऐसा व्यवहार न करें जिसमें अपने प्रेम को प्रदर्शित करना एक अप्रिय कर्तव्य या असुविधा है। यदि ऐसा लगता हो कि हम कर्तव्य कि वजह से ऐसा कर रहें हैं, तो हमारे प्रेम के इज़हार में सच्चाई नहीं होगी।

► छात्रों को समूह के लिए रोमियों 12:9-10, 16 और 1 पतरस 3:7-8 पढ़ना चाहिए। इन आयतों में से, ऐसे कई कारण बताएँ जिन पर हमें ध्यान देना चाहिए कि किस तरह से हमारे परिवार के सदस्य सबसे अधिक प्रेम को महसूस करते हैं।

यह याद रखना जरूरी है कि प्रेम एक आत्म-बलिदान करने वाली प्रतिबद्धता है, जो दूसरे व्यक्ति कि सबसे उत्तम भलाई चाहता है।

हम आत्म-केन्द्रित स्वभाव के साथ पैदा हुए हैं। दूसरों के प्रति सच्चा प्रेम स्वाभाविक तौर पर हम में से किसी के पास नहीं आता। सच्चा प्रेम हमारे दिलों मे पवित्र आत्मा के कार्यो द्वारा ही संभव है (रोमियों 5:5)। एक विश्वासी होने के नाते, हमें मसीह के सोचने का तरीका सीखना चाहिए, जैसा पौलुस फिलिप्पियों 2 में दिखाता है। जब हम ऐसा करेंगे, तो हम:

- स्वार्थ की अभिलाषा से प्रेरित न होंगे (आयत 3)
- खुद के महत्व के बारे में बढ़ा-चढ़ा कर विचार न रखेंगे (आयत 3)
- दूसरों को खुद से ज्यादा महत्वपूर्ण समझेंगें (आयत 3)
- दूसरों की रूचियाँ पर ध्यान देंगे (आयत 4)

हमें अपने परिवार के सदस्यों के प्रति प्रेम में बढ़ने के लिए एक वायदा करना है। हमें उनकी जरूरतों को जानना सीखना चाहिए और उन तरीकों पर ध्यान देना चाहिए जिनसे उन्हें पूरा किया जा सके। हमारा लक्ष्य उन तरीकों से उनके प्रति अपना प्रेम दिखाना होना चाहिए जिनसे वे सबसे अधिक प्रेम महसूस करते हैं।

माता-पिता होने के नाते हमें भी अपने बच्चों को इन तरीकों के द्वारा अपने भाई-बहनों, माता-पिता और दादा-दादी का ख्याल रखना सीखाना चाहिए। हमारे बच्चों को प्रेम करना और परिवार की सेवा करना सीखना जरूरी है। वे सार्थक तरीके से अपने परिवार के लिये प्रेम का इज़हार कैसे करना है, को सीख सकते हैं। हमें नमूना दिखा कर सीखाना चाहिए। हमें उन्हें इन अवधारणाओं को समझाने और उनके रिश्तों में उन्हें लागू करने में उनका मार्गदर्शन करने के लिए भी समय देना चाहिए।

► ऐसे कौन से तरीके हैं, जिनसे माता-पिता अपने बच्चों को अपने परिवार से शुरू करके दूसरों के लिए इस तरह के आत्म-समर्पण वाले प्रेम को सीखने में मदद कर सकते हैं?

प्रेम की भाषा 1: पुष्टि के शब्द

जिन लोगों की प्रेम की प्राथमिक भाषा पुष्टि के शब्द होते हैं, उन्हें तब सबसे अधिक प्रेम महसूस होता है, जब दूसरे लोग उनके लिए ईमानदारी से प्रशंसा व्यक्त करने के लिए शब्दों का उपयोग करते हैं। यदि एक औरत की प्रेम की प्राथमिक भाषा पुष्टि के शब्द है, तो जब उसका पति अपना प्रेम प्रगट करता है तो उस समय वह उससे या उसके बारे में बात कर रहा होता है। वह उसे एक नोट लिख सकता है और उसे कुछ विशेष कारण बता सकता है कि वह उसकी सराहना करता है। वह किसी ओर से अपनी पत्नि के अच्छे चरित्र और अच्छे कार्य के बारे बात कर सकता है। जब उसकी पत्नि उसके शब्द सुनती है, तो वह प्रेम और स्वयं को महत्वपूर्ण महसूस करती है।

हम अपने मित्रों से इस प्रकार सलाह ले सकते हैं, जिससे उनके महत्व की पुष्टि हो सके। उदाहरण के लिए:

- "आप हमेशा एक उपयोगी दृष्टिकोण जोड़ते हैं, इसलिए मैं इस पर आपके विचार जानना चाहता हूँ…"
- “आप इस मामले में बहुत ज्यादा अनुभवी हैं, और मुझे आपकी सलाह पसंद आएगी।”
- "आप ____ के बारे में मुझसे कहीं अधिक जानते हैं, इसलिए यदि आपके पास मेरे लिए कोई सुझाव या सिफारिशें हैं,

तो मुझे उन्हें सुनकर खुशी होगी।"

पुष्टि के सभी शब्द निष्कपट के साथ बोले जाने चाहिए। नहीं तो यह बेकार हैं या हानिकारक भी हैं। पुष्टि के जो शब्द निष्कपट से नहीं होते वह रिश्तों को कमज़ोर कर देते हैं। उनका आधार सत्य पर आधारित नहीं होता, इसलिए सुनने वाला बोलने वाले की प्रेरणा पर विश्वास नहीं कर सकता।

पुष्टि के निष्कपट शब्द वास्तिवकता के प्रति सत्य होते है। वह नकली या बढ़ा-चढ़ाकर नही कहे जाते हैं। पुष्टि के निष्कपट शब्द दिल से बोले जाते है। बोलने वाला जो सच में महसूस करता है या विश्वास करता है, वह उसे ही बोलता है।

पुष्टि के शब्द सुनने वालों को बढ़ोतरी और भविष्य की सफलता के लिए प्रेरित करते है, लेकिन चालाकी से भरे नहीं होने चाहिए। पुष्टि के शब्दों द्वारा हमें कभी भी दूसरों को अपने निंयत्रण में लेने की कोशिश नही करनी चाहिए।

► छात्र को एक समूह के लिए इफ़िसीयों 4:29 पढ़ना चाहिए। जो बातें नहीं कही जानी चाहिए उनका यहाँ क्या वर्णन दिया गया है? हमारे शब्दों को क्या पूरा करना चाहिए? क्या कुछ शब्द एक स्थिति में उपयुक्त होते हैं और दूसरी स्थिति में नहीं?

हम जो भी दूसरों को कहते है, वह उपयुक्त और कृपा से भरा हुआ होना चाहिए। जो बातें हम कहते है, उन बातों से सुनने वालों के दिलों में परमेश्वर को कार्य करने का मौका मिलना चाहिए। हम जो कहते है, वह बनाने वाला होना चाहिए ना कि विनाश करने वाला।

पुष्टि के विषय

पुष्टि के शब्द अलग- अलग प्रकार के होते हैं। पुष्टि के सभी शब्द का मूल्य एक समान या महत्वपूर्ण नहीं होती। पुष्टि के उच्च गुणवत्ता से भरे शब्दों को देने वाले व्यक्ति से अधिक विचार और प्रयास की आवश्यकता होती है; कभी-कभी उन्हें कहना अजीब लग सकता है; लेकिन ये शब्द सबसे अधिक मजबूत, सबसे सार्थक तरीकों से प्रेम का संचार करते हैं।

प्रशंसा से भरी उपस्थिति

किसी की उपस्थिति की प्रशंसा करना पुष्टि के शब्द देने का एक तरीका हो सकता है, विशेष तौर पर यदि यह उनके प्रयास या उनके व्यक्तित्व को व्यक्त करने के तरीके की सराहना को दिखाता है। हालाँकि, किसी की उपस्थिति की तारीफ करना खोखली पुष्टि होती है, खासकर तब जब इसका उस व्यक्ति के जीवन से कोई लेना-देना नहीं होता है।

असाधारण रूप से आकर्षक लोग जिनकी अक्सर प्रशंसा की जाती है, वे अपनी उपस्थिति को लेकर असुरक्षित हो जाते हैं, क्योंकि उन्हें लगने लगता है कि उनका महत्व इस पर निर्भर करता है, और उन्हें लगता है कि यह उत्तम होना चाहिए।

व्यक्तिगत् महत्व आकर्षण से निर्धारित नहीं होता। इसके अलावा, लोग अपने शारीरिक आकर्षण को बेहतर बनाने के लिए क्या कर सकते हैं, इसकी भी सीमाएँ होती हैं। इन चीजों की वजह से, पुष्टि के इस तरह के शब्दों का अधिक प्रयोग नहीं किया

जाना चाहिए।

.उपलब्धियों और सेवा की सराहना करना

शब्दों से किसी की पुष्टि करने का दूसरा तरीका उसकी उपलब्धियों और प्रदर्शन के लिए उसकी सराहना करना है। जो व्यक्ति बोल रहा है, उसे दूसरे व्यक्ति द्वारा किए गए कार्यों की सराहना करने में समय लगता है, न कि उनके कार्यों को हल्के में लेने की।

उदाहरण:

- एक पत्नि अपने पति के उस मुश्किल कार्य को पूरा करने की सराहना करती है, जिसके लिये वो कार्य कर रहा है।
- एक पति अपनी पत्नी को उस परियोजना में मदद करने के लिए ध्यान देता है और उस विषय के लिए धन्यवाद देता है, जिस पर वह काम कर रहा था।
- परिवार के सदस्य रसोइये द्वारा बनाये गये स्वादिष्ट खाने की प्रशंसा करते हैं।

जब प्रदर्शन या उपलब्धि की प्रशंसा की जाती है, तो व्यक्ति यह न सोचे कि आपका प्रेम उस व्यक्ति के प्रदर्शन पर अधारित है। उदहारण के लिये, अपने बेटे को यह बताने से कि आपको उस पर इसलिए गर्व है, क्योंकि उसने परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त किए हैं, इससे उसे यह महसूस हो सकता है कि यदि वह कम अंक प्राप्त करेगा तो आप उससे कम प्रेम करेंगे। व्यक्ति के महत्व की पुष्टि करने का एक तरीका यह है कि उससे कहें "मुझे खुशी है कि आपने उस परीक्षा को अच्छे से पास किया। अध्ययन करने और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की जिम्मेदारी लेने के लिए मुझे तुम पर गर्व है।" लेकिन आप इसे कैसे भी करें, उन उपलब्धियों की सराहना करने से न चूकें जो उनके लिए महत्वपूर्ण होती हैं।

.चरित्र और प्रयास को पहचानना

किसी व्यक्ति के अच्छे प्रदर्शन की पुष्टि करने के बजाय उसके चरित्र और उस प्रयास की पुष्टि करना सबसे अच्छा है, जिसने उसे सफल बनाया। उदाहरण के लिए, एक बाल खिलाड़ी की खेल जीतने की तुलना में उसका परिश्रम से भरे हुए प्रयास और अच्छे रवैये के लिए अधिक सराहना की जानी चाहिए। कुछ लोग हमेशा प्रदर्शन में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन एक व्यक्ति अच्छा चरित्र दिखाना चुन सकता है, और चरित्र सबसे महत्वपूर्ण होता है।

.किसी को उसके लिए मनाना कि वह कौन है

सर्वोत्तम पुष्टि किसी की विशेषताओं की पहचान करता है: जैसे व्यक्तिगत् गुण, चरित्र सम्बन्धी खूबियाँ, और व्यक्तित्व सम्बन्धी खूबियाँ। इस प्रकार की पुष्टि उपलब्धियों की पुष्टि से अधिक ठोस होती है, क्योंकि यह एक व्यक्ति के महत्व पर आधारित है, न कि परिवर्तनशील परिस्थितियों पर।

उदाहरण:

- “बच्चे आपकी ओर आकर्षित होते हैं! आप उन्हें बातों को समझाने में बहुत अच्छे हैं, और आप उनके प्रश्नों के प्रति बहुत धैर्यवान हैं।”
- “मुझे तुम पर भरोसा है, क्योंकि मैंने पाया है कि तुम भरोसेमंद हो।”

इस प्रकार की पुष्टि के बारे में निकटता से सम्बन्धित यह मान्यता है कि परमेश्वर एक व्यक्ति के जीवन में कैसे काम कर रहे हैं, उन्हें एक निश्चित तरीके से या एक निश्चित कार्य करने में सक्षम बना रहा है।

उदाहरण:

- “मुझे यह देखना अच्छा लगता है कि जिन युवाओं को आप मार्गदर्शन दे रहे हैं, उनके जीवन में परमेश्वर आपको किस प्रकार उपयोग कर रहा है। उनमें से एक ने मुझसे कहा कि वह आपके जीवन को देखकर यीशु के लिए जीना चाहती है!”
- “मेरा मानना है कि परमेश्वर आपको सौंपे गए इस चुनौतीपूर्ण कार्य में आपकी मदद करेगा। मैं आप के लिए प्रार्थना करूँगा।”

एक व्यक्ति की उपस्थिति और रिश्ते के लिए खुशी और कृतज्ञता की अभिव्यक्ति पुष्टि के लिए सबसे मजबूत शब्दों में से कुछ हैं। वे व्यक्ति के महत्व को व्यक्त करते हैं।

उदाहरण:

- “पारिवारिक समारोह हमेशा अधिक विशेष होते हैं, जब आप उसमें मौजुद होते हैं।”
- “आपके साथ रहना मुझे अच्छा लगता है।”
- “आप मेरे लिए अनमोल हो, और मैं आप से प्रेम करता हूँ!”

शब्द और पुष्टि से सम्बन्धित महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ

1. कभी भी किसी व्यक्ति की शारीरिक विशेषताओं की आलोचना या उपहास न करें। लोग जीवन भर शारीरिक विशेषताएँ अपने साथ रखते हैं। कभी भी किसी को उसकी शारीरिक विशेषता, विशेषकर किसी दोष के आधार पर उपनाम न दें।
2. खूबियों, गुणों और अच्छे व्यवहार की पुष्टि सुनने वालों को उन्हें बनाए रखने और बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। खामियाँ बताने से शायद ही कभी सहायता होती हो।

3. सलाह का अभिप्राय यह बताना हो सकता है कि गलती सुनने वाले की है। पुष्टि किसी व्यक्ति को सलाह प्राप्त करते समय सुरक्षित महसूस करने में मदद कर सकती है। यदि आपको किसी को सलाह देने की आवश्यकता है, तो सलाह के साथ-साथ उसकी मजबूती के साथ पुष्टि भी करें।

4. सुझाव शिकायतों के रूप में कभी प्रेरणा नहीं देते। उदाहरण के लिए, यह कहना कि कोई कार्य पहले ही हो जाना चाहिए था, या किसी के ऐसा न करने पर शर्मिंदगी व्यक्त करना, सहायक नहीं है। ये कथन व्यक्ति को ऐसा महसूस कराते हैं, जैसे कि वह पहले ही असफल हो चुका है; यदि वह कार्य देर से करता है, तब भी उसे लगेगा कि वह असफल है।

ठेस पहुँचाने वाले शब्द

जिस व्यक्ति को पुष्टि के शब्दों की सबसे अधिक आवश्यकता होती है, वह विपरीत प्रकार के शब्दों से सबसे अधिक आहत होता है। आलोचना विशेष रूप से पीड़ादायी होती है और एक व्यक्ति के रूप में उसे अपने स्वयं के मूल्यवान होने पर संदेह करने पर मजबूर कर देती है। जल्दबाज़ी, गुस्से वाले शब्द भावनात्मक ठेस पहुँचाते हैं, जिससे एक व्यक्ति कभी भी पूरी तरह चँगा नहीं हो पाता है। यह विशेष रूप से सच है, जब बोलने वाला अपने शब्दों के कारण हुए पीड़ा को नहीं समझता है और कभी माफी नहीं मांगता है।

जिस तरह पुष्टि के सबसे मजबूत शब्द किसी व्यक्ति के महत्व से सम्बन्धित होते हैं, ठीक उसी तरह सबसे खराब, सबसे अधिक आहत करने वाले बयान व्यक्तिगत् हमला करने वाले होते हैं। उदाहरण के लिए, “काश मैं आपसे कभी मिला ही न होता।”

इससे भी अधिक बदतर कथन वे हैं, जो व्यक्ति के आवश्यक चरित्र के बारे में कुछ घोषित करते हैं "आप ____ हैं।” व्यवहार के बारे में हानि पहुँचाने वाले बयानों में वे बयान शामिल हैं, जो "आप हमेशा ____" या "आप कभी नहीं ____" से शुरू होते हैं। उन कथनों का अर्थ यह है कि आवश्यक, अपरिवर्तनीय खामियों के कारण व्यक्ति में सुधार होने की संभावना नहीं है।

यदि कोई घायल हो गया है - खासकर यदि वह अपनी प्राथमिक प्रेम वाली भाषा में घायल हो गया है - तो वह स्वाभाविक रूप से आगे आहत होने से पीछे हटने की कोशिश करेगा। जो लोग नकारात्मक शब्दों का प्रयोग करते हैं, वे आम तौर पर सकारात्मक शब्दों के प्रति उदार नहीं होते हैं, इसलिए सुनने वाले को यह उम्मीद कम ही होती है कि वह अपने व्यवहार में बदलाव लाकर बेहतर इलाज पा सकेगा। वह अपने व्यवहार में सुधार करने के लिए प्रेरित नहीं होगा जिससे कि वह प्रेम प्राप्त कर सके।

कभी-कभी क्रोधित लोग आहत करने वाली बातें कहते हैं, क्योंकि वे किसी को ठेस पहुँचाना चाहते हैं। कई बार, बोलने वाले के इरादे अच्छे होते हैं, फिर भी उनके शब्द आहत करने वाले होते हैं। कुछ लोग किसी को बेहतर व्यवहार करने के लिए मजबूर करने के लिए नकारात्मक शब्दों का उपयोग करते हैं, लेकिन यह लगभग कभी काम नहीं करता है।

► एक छात्र को समूह के लिए कुलुस्सियों 3:8 पढ़ना चाहिए। विश्वासियों को इन तरीकों से परमेश्वर और दूसरों के विरुद्ध पाप नहीं करना चाहिए।

सामूहिक चर्चा के लिए

► अपने शब्दों में सच्चे प्रेम का वर्णन करें। पवित्र आत्मा को हमें दूसरों से वैसा प्रेम करने में सक्षम होने में क्यों मदद करनी चाहिए जैसा हमें करना चाहिए?

► समझाएँ कि किसी से बिना शर्त प्रेम करने का क्या मतलब है। आपके प्रति परमेश्वर के निस्वार्थ प्रेम का क्या महत्व है?

► अपने जीवनसाथी या बच्चे के प्रति उनकी प्रेम की प्राथमिक भाषा में प्रेम व्यक्त करना विशेष रूप से महत्वपूर्ण क्यों है?

► पुष्टि के शब्द प्राप्त करना आपके लिए किस प्रकार सहायक रहा है?

► इस सप्ताह आपने पुष्टि के शब्दों के साथ अपने परिवार के सदस्यों के प्रति अपने प्रेम का प्रदर्शन कैसे किया है?

प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता,

मुझे सचेचे, बिना शर्त वाले प्रेम के बारे में सीखने के लिए धन्यवाद। अपने शब्द में इसका वर्णन करने और मेरे प्रति अपने प्रेम के माध्यम से इसे दिखाने के लिए धन्यवाद।

मुझे अपने परिवार से प्रेम करना और उसकी सेवा करना सीखने में मदद करें जैसे मसीह ने मुझसे प्रेम किया और मेरी सेवा की। मुझे अपने जीवनसाथी, बच्चों, भाई-बहनों और माता-पिता की भलाई पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाएँ।

मेरे द्वारा कहे गए शब्दों के महत्व की याद दिलाने के लिए धन्यवाद। मुझे उन शब्दों के लिए खेद है, जो मैंने बोले हैं, जो दूसरों को ठेस पहुँचाने वाले और आपका अपमान करने वाले हैं। कृपया मुझे यह याद रखने में मदद करें कि मेरे शब्द सकारात्मक, रचनात्मक और चँगाई से भरे हुए होने चाहिए।

आमीन

पाठ सम्बन्धी नियत कार्य

(1) एक मजबूत वैवाहिक जीवन जीने वाले दम्पति से बात करें, उनसे अपने लिए उनके जीवन से सीखने वाले प्रश्नों को पूछें। जब आप बातचीत पूरी कर लें, तो उनके द्वारा साझा किए गए गूढ़-ज्ञान के बारे में दो अनुच्छेदों को लिखें और जो कुछ भी आप अपने विवाह में लागू करना चाहते हैं, उसके बारे में लिखें।

यहाँ पूछे जाने वाले प्रश्नों के संबंध में कुछ विचार दिए गए हैं:

- आपके व्यक्तित्व के बीच कुछ अंतर क्या हैं, जिन्होंने आपके रिश्ते को प्रभावित किया है?
- इन मतभेदों के कारण आपमें से हर एक कैसे विकसित हुआ है?
- आपको अपनी अपेक्षाओं, दृष्टिकोण और व्यवहार को कैसे समायोजित करना होगा जिससे कि आप एक-दूसरे का सम्मान और सेवा कर सकें?
- एक दूसरे के प्रति अपना प्रेम दिखाने के लिए कुछ व्यावहारिक तरीके क्या हैं?
- आपका जीवनसाथी क्या करता है या क्या कहता है, जिससे आपको यह जानने में मदद मिलती है कि आपको प्रेम किया जाता है?
- आपके जीवनसाथी के साथ आपके रिश्ते ने परमेश्वर के साथ आपके रिश्ते को कैसे प्रभावित किया है?

(2) नीतिवचन 31:10-31 में लेखक ने अपनी पत्नी के लिए पुष्टि के कई शब्द शामिल किए हैं। उसके व्यवहार और शब्दों का वर्णन हमें उसके चरित्र के बारे में बताता है। वह किस तरह की बातों के लिए अपनी पत्नी की पुष्टि करता है? इन बातों के लिए आयतों में देखें:

- उसका रंग - रूप
- उसकी उपलब्धियाँ और सेवा
- उसका चरित्र और प्रयास
- एक व्यक्ति के रूप में वह कौन है
- एक विश्वासी के रूप में वह कौन है

इन आयतों में जिस बात पर ज़ोर दिया गया है, उससे हम क्या सीख सकते हैं?

पाठ 9

प्रेम की पाँच भाषाएँ - भाग 2

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में, छात्र यह करने लगेंगे:

(1) उन पाँच भाषाओं को समझें जिनमें प्रेम व्यक्त किया जाता है।

(2) पाँच प्रेम भाषाओं में से प्रत्येक के दुरुपयोग या उपेक्षा से सम्बन्धित खतरों पर चर्चा करें।

(3) बच्चे के भावनात्मक भण्डार के भरे होने के लाभों का वर्णन करें।

(4) परिवार के निकट सदस्यों की प्राथमिक प्रेम वाली भाषाओं की पहचान करें।

(5) प्रेम की पाँच भाषाओं में से प्रत्येक में परिवार के सदस्यों के प्रति प्रेम दिखाने के लिए विशिष्ट तरीकों की सूची बनाएँ।

(6) परिवार के सदस्यों के प्रति उनकी प्राथमिक प्रेम वाली भाषाओं में प्रेम को दिखाने के लिए प्रतिबद्ध रहें।

परिचय

पिछले पाठ में, हमने आत्म-समर्पण करने वाले, बिना शर्त वाले प्रेम के बारे में सीखा। हमने यह भी सीखा कि कम से कम पाँच अलग-अलग तरीके (भाषाएँ) हैं, जिनमें प्रेम का इजहार किया जा सकता है। अधिकांश लोग स्वाभाविक रूप में मुख्य रूप से उन पाँच तरीकों में से एक या दो तरीकों से प्रेम को पहचानते हैं और व्यक्त करते हैं।

हमने पुष्टि के शब्दों पर चर्चा की और परिवार के सदस्यों तक अपने प्रेम का संचार करने के व्यावहारिक तरीके खोजे। इस पाठ में, हम प्रेम की अन्य चार भाषाओं के बारे में जानेंगे, फिर अपने बच्चों के प्रति अपना प्रेम दिखाने के लिए विशिष्ट अनुप्रयोग बनाएँगे।

प्रेम की भाषा 2: गुणवत्ता से भरा समय

जिन लोगों की प्राथमिक प्रेम वाली भाषा में गुणवत्ता से भरा समय होता है, उन्हें तब सबसे अधिक प्रेम महसूस होता है, जब दूसरे जानबूझकर उनके साथ रहने के लिए समय निकालते हैं। यह समय सावधानीपूर्वक एक साथ रहने, एक दूसरे पर ध्यान केंद्रित करने के लिए आरक्षित है। यह आनंद मनाने और संगति का समय है।

गुणवत्ता से भरा समय आकस्मिक या अतिरिक्त नहीं है। यदि आप यातायात में फंस गए हैं या किसी नियुक्ति का इंतज़ार कर रहे हैं, तो आपको समय का बुद्धिमानी से उपयोग करना चाहिए, लेकिन वह समय आमतौर पर एक साथ उद्देश्यपूर्ण

गुणवत्ता से भरे समय के समान नहीं होता है। आपका जीवनसाथी या आपका बच्चा आपके साथ किसी परियोजना पर काम कर सकता है, और यह मूल्यवान है, लेकिन साथ में बिताया गया समय हमेशा आपके साथ गुणवत्ता से भरा समय बिताने की उनकी ज़रूरत को पूरा नहीं कर सकता है।

निर्बाध बातचीत गुणवत्ता से भरे समय बिताने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक है। ऐसी बातचीत में प्रत्येक व्यक्ति दूसरे की बात ध्यान से सुन रहा होता है। प्रत्येक व्यक्ति लिखित संदेश और फोन जैसी रुकावटों को खारिज कर देता है, ताकि वह दूसरे व्यक्ति और चर्चा पर ध्यान केंद्रित कर सके।

यहाँ कुछ अन्य तरीके दिए गए हैं, जिनसे आप दिखा सकते हैं कि आप ध्यान से सुन रहे हैं:

1. **आँखों से संपर्क बनाए रखे।**

2. **सक्रियता से सुनें।** दूसरा व्यक्ति जो कह रहा है, उसका उत्तर दें। बस यह मत सोचिए कि आप आगे क्या कहना चाहते हैं। इसके बजाय, दूसरा व्यक्ति क्या सोच रहा है और क्या कह रहा है, इसे समझने के लिए जाँच करने के लिए समय निकालें। आप कुछ ऐसा कहकर पुष्टि कर सकते हैं कि आप सही ढंग से समझते हैं, "यदि मैं आपको सही ढंग से सुन रहा हूँ, तो आपको ऐसा लगता है…"

3. **बीच में रुकावट ना डाले।** सुनने वाला अक्सर सोचता है कि वह विचार को समझता है और फिर तुरंत अपनी राय देने के लिए बीच में आ जाता है। इससे बोलने वाले को ऐसा महसूस होता है कि जैसे सुनने वाले ने वास्तव में समझने के लिए समय ही नहीं लिया।

4. **केवल तथ्यों की नहीं, भावनाओं की भी सुनें।** जब हम दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण को समझने की कोशिश करते हैं, तो हम उन्हें दिखाते हैं कि हम सोचते हैं कि वे मूल्यवान हैं। अपने दिल से सुनकर, हम बता रहे हैं कि उनकी राय और भावनाएँ हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं; और वे स्वयं हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं!

सबसे अच्छी गुणवत्ता वाला समय वह है, जब आप एक-दूसरे के साथ वार्तालाप करने के अलावा कुछ नहीं कर रहे होते हैं, लेकिन साथ में बिताया गया समय अन्य प्रकार से भी मूल्यवान होता है। परिवार हर दिन भोजन के दौरान एक साथ गुणवत्ता से भरे समय को बिता सकते हैं, एक साथ भोजन करते समय उद्देश्यपूर्ण ढंग से एक-दूसरे पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

छोटे बच्चों के पास कहानियाँ पढ़ना, एक साथ खेलना, या साथ में कुछ मनोरंजक करना अन्य तरीके होते हैं, जिनसे परिवार एक साथ गुणवत्ता से भरा समय बिता सकते हैं। साथ मिलकर कोई ऐसा परियोजना या कलात्मक कार्य करना जो केवल मनोरंजन के लिए हो, न कि स्कूल, या काम, या सेवा के लिए, भी गुणवत्ता से भरा समय होता है।

जब कोई परिवार से दूर हो तो फोन पर बात करके एक साथ गुणवत्ता से भरा समय बिताया जा सकता है।

गुणवत्ता से भरा समय एक-दूसरे पर ध्यान केंद्रित करने और एक-दूसरे के साथ का आनंद लेने के लिए आरक्षित, अविचलित,

इत्मीनान से लिया गया समय है। हर दिन अपने जीवनसाथी और बच्चों के साथ कुछ गुणवत्तापूर्ण समय आरक्षित करना सबसे अच्छा है।

जब समय आरक्षित नहीं है

जब जीवनसाथी या माता-पिता सेवकाई में अगुवे होते हैं, तो परिवार के साथ गुणवत्ता से भरा समय आरक्षित करना विशेष रूप से कठिन होता है। पास्टर के बच्चों को अक्सर लगता है कि कोई और फोन करके उनके पिता का ध्यान आकर्षित कर सकता है, लेकिन वह उनके लिए समय निकालने में बहुत व्यस्त होते हैं। ऐसा लग सकता है कि आमतौर पर सेवा के लिए परिवार का समय ही बलिदान कर दिया जाता है।

सेवकाई में किसी व्यक्ति के लिए रुकावटें पूरी तरह से टाली नहीं जा सकती हैं, लेकिन आपको अपने परिवार के लिए समय आरक्षित करने का प्रयास करना चाहिए। यदि आप ऐसा करते हैं, तो वे आपके नियमित दायित्वों और आने वाली अतिरिक्त, अनिवार्य रुकावटों को समझने की अधिक संभावना रखते हैं।

जिस व्यक्ति की प्राथमिक प्रेम की भाषा गुणवत्ता से भरा समय है, वह तब कम प्रेम महसूस करता है, जब उसके पास अपने परिवार के साथ उद्देश्यपूर्ण, केंद्रित समय नहीं होता है। उन्हें सबसे अधिक दु:ख तब महसूस होता है, जब गुणवत्ता से भरे समय को प्राथमिकता नहीं दी जाती है, और जब रुकावटें आने पर गुणवत्ता से भरे समय की योजनाओं को रद्द कर दिया जाता है। यह उसके लिए कठिन होता है, जब उसका परिवार उसके साथ समय बिताने में बहुत व्यस्त होता है। जब परिवार के सदस्य उसकी बात पूरे ध्यान से नहीं सुनते तो वह स्वयं को कम महत्व वाला महसूस करता है।

यदि आप अपने जीवनसाथी या बच्चे पर व्यक्तिगत् ध्यान देने में असफल हो रहे हैं, तो हो सकता है कि उन्हें आपके प्रति वह प्रेम महसूस न हो जो आप उनसे करते हैं, भले ही आप उनके लिए कुछ भी कर रहे हों। एक आदमी शायद अपने परिवार के लिए कड़ी मेहनत कर रहा हो, फिर भी उसकी पत्नी को यह महसूस हो सकता है कि उसे कोई प्रेम नहीं करता, क्योंकि वह अत्याधिक व्यस्तता के कारण उसके साथ समय नहीं बिता पाता है।

एक जवान लड़का अपने पिता के पास एक कहानी सुनाने गया जो उसने हाल ही में सुनी थी। पिता एक पुस्तक पढ़ रहा था, लेकिन बात सुनने के लिए एक मिनट रुक गया, फिर अपनी पुस्तक पढ़ने लगे जबकि उनका बेटा कहानी के बीच में था। लड़के को जीवन भर याद रहा कि उस पल उसे कैसा महसूस हुआ था।

► आपके परिवार के लिए गुणवत्ता से भरा समय आमतौर पर कैसा होता है? आपको किन कठिनाइयों को दूर करना होगा ताकि आप एक साथ सार्थक समय बिता सकें?

प्रेम की भाषा 3: उपहार

जिन लोगों की प्राथमिक प्रेम की प्राथमिक भाषा उपहार प्राप्त करना है, उन्हें तब सबसे अधिक प्रेम महसूस होता है, जब दूसरे

उन्हें कुछ ऐसा देते हैं, जिससे पता चलता है कि वे उनके बारे में सोच रहे थे।

जो उपहार किसी को प्रेम का अहसास कराते हैं, वे उपहार सोच-समझकर दिए जाते हैं। इन्हें प्राप्त करने वाले के हितों को ध्यान में रखकर चुना जाता है। हो सकता है कि वे आवश्यक रूप से व्यावहारिक या आवश्यक न हों। तथापि प्रेम के उपहार सिर्फ इसलिए नहीं दिए जाते क्योंकि देने वाला अब उन्हें नहीं चाहता। उपहार उद्देश्यपूर्ण चुने या देने वाले द्वारा बनाए जाने चाहिए।

एक उपहार जो किसी को प्रेम का अहसास कराता है, उसका महंगा होना जरूरी नहीं है। यह कुछ ऐसा हो सकता है, जो कुछ समय बना रहे, जैसे कि विशेष तरह का भोजन या टफ़ी; या यह देने वाले के साथ रिश्ते का एक स्थायी दृश्यमान अनुस्मारक हो सकता है। किसी ऐसे व्यक्ति के लिए जिसकी प्रेम की प्राथमिक भाषा उपहार प्राप्त करना है, उसके लिए जन्मदिन, वर्षगाँठ और छुट्टियाँ बहुत महत्वपूर्ण होती हैं। परिवार के सदस्यों के लिए इस व्यक्ति के लिए एक विशेष उपहार के साथ इन दिनों को याद रखना विशेष रूप से महत्वपूर्ण होता है। इन विशेष दिनों पर उपहार न प्राप्त करना इस व्यक्ति के लिए विशेष रूप से पीड़ा से भरा होता है।

हालाँकि, उपहार देना विशेष दिनों तक ही सीमित नहीं होना चाहिए; यह जीवन का एक निरंतर चलने वाला तरीका होना चाहिए। किसी ऐसे व्यक्ति का जीवनसाथी, माता-पिता या बच्चा जिसकी प्रेम की प्राथमिक भाषा उपहार प्राप्त करना है, उसे ऐसे उपहारों की तलाश करने की आदत बनानी चाहिए, जो उनके प्रियजन को यह याद रखने में मदद करें कि उनके बारे में सोचा जाता है और उसे प्रेम किया जाता है।

एक पत्नी जिसकी प्रेम की प्राथमिक भाषा उपहार प्राप्त करना है, वह बहुत अप्रिय महसूस कर सकती है, यदि वह सोचती है कि उसके पति ने उसे उपहार के रूप में कुछ लाकर खर्च बचाने की कोशिश की है, जो वैसे भी जरूरी था। शायद उसे एक नए झाड़ू की ज़रूरत है, और वह उसे एक लाकर देता है। नया झाड़ू रखना उसके लिए अच्छा है, लेकिन वह उपहार उसे प्रेम का एहसास दिलाने में मदद नहीं करेगा।

उपहार तब महत्वपूर्ण होते हैं, जब वे दर्शाते हैं कि व्यक्ति प्राप्तकर्ता को समझता है और उसकी परवाह करता है। वे तब महत्वपूर्ण होते हैं, जब उनकी आवश्यकता नहीं थी। एक उपहार तब महत्वपूर्ण होता है, जब इसमें कुछ विचार, प्रयास और लागत लगाई गई हो।

जिन बच्चों की प्रेम की प्राथमिक भाषा उपहार प्राप्त करना है, वे तब अधिक प्रेम महसूस करते हैं, जब उनके पिता उनके लिए आइसक्रीम खरीदते हैं, बजाय इसके कि जब वह उनके स्कूल का बिल चुकाते हैं, भले ही स्कूल का बिल बहुत बड़ा और अधिक महत्वपूर्ण हो। यह माँग करने के बजाय कि परिवार के सदस्य आपकी सराहना करे उसके लिए जिसे आप उन्हें नियमित रूप से प्रदान करते हैं, कुछ ऐसा करने के तरीके खोजें जो उनके लिए विशेष हों।

कुछ लोग अपने बच्चों या जीवनसाथी को ऐसा बना देते हैं कि वे हर एक चीज़ की माँग करें। एक व्यक्ति जो किफायती है

और शायद ही कभी अपने लिए चीजें खरीदता है, उसके लिए उदार होना और अनावश्यक लगने वाले उपहार देना आसान नहीं हो सकता है। वह नहीं चाहता कि उसके परिवार के सदस्य उपहारों की अपेक्षा करें। लेकिन अगर उसका जीवनसाथी या बच्चा है, जिसके लिए उपहार महत्वपूर्ण हैं, तो उसे अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति पर काबू पाने के लिए काम करना चाहिए। उसे उपहारों को वैसे ही देखने का प्रयास करना चाहिए जैसे वे उन्हें महत्वपूर्ण और सार्थक मानते हैं। जब उपहार देते हैं, तो खुलकर, खुशी से दें!

► एक छात्र को समूह के लिए 2 कुरिन्थियों 9:6-9 पढ़ना चाहिए। इस आयत में, पौलुस कुरिन्थियों के विश्वासियों से आग्रह कर रहा है कि वे अपने साथी विश्वासियों को उदारतापूर्वक दान दें, जो जरूरतमंद हैं। इन आयतों में से उदारता के लिए चार या पाँच प्रेरणाएँ पहचानने का प्रयास करें। इस परिच्छेद के सिद्धांत हमारे परिवारों में उदारता पर किस प्रकार लागू होते हैं?

► आपके परिवार में उपहार देने का क्या स्थान है? क्या आपको उपहार देकर प्रेम का इजहार करने में कोई कठिनाई महसूस होती है? कौन – कौन सी कठिनाइयाँ हैं और आप उन पर कैसे जीत प्राप्त कर सकते हैं?

प्रेम भाषा 4: सेवा के कार्य

जिन लोगों की प्रेम की प्राथमिक भाषा सेवा का कार्य है, उन्हें सबसे अधिक प्रेम तब महसूस होता है, जब दूसरे उनके लिए कुछ करते हैं।

सेवा का कार्य व्यावहारिक आवश्यकताओं को पूरा करता हैं। वे ऐसी चीज़ें हो भी सकती हैं और नहीं भी जिन्हें व्यक्ति स्वयं करने में असमर्थ था। सेवा किसी को पानी पिलाने जितनी सरल हो सकती है। हो सकता है कि यह किसी बीमार व्यक्ति की देखभाल हो। यह ज़रूरत की स्थिति में मदद हो।

अधिकांश परिवारों में, लंबे समय तक ऐसा समय आएगा जब परिवार के एक सदस्य को निरंतर व्यक्तिगत् देखभाल की आवश्यकता होगी। व्यक्ति के प्रति परिवार के प्रेम और प्रतिबद्धता के कारण वे निरंतर सेवा के अनेक कार्य करते रहते हैं। भले ही इतना समय सेवा के कार्यों के लिए समर्पित है, तथापि परिवार के सदस्यों को अन्य, अधिक सार्थक तरीकों से भी प्रेम का प्रदर्शन करना याद रखना चाहिए, खासकर यदि इस व्यक्ति की प्रेम की प्राथमिक भाषा सेवा के कार्य नहीं है।

सेवा के कुछ कार्य आम तौर पर नियमित होते हैं और इन्हें आसानी से अनदेखा किया जा सकता है या हल्के में लिया जा सकता है। कई महिलाएँ अपने दैनिक खाना पकाने और गृह व्यवस्था के माध्यम से प्रेम का इजहार कर रही हैं। एक आदमी अपने परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए काम कर सकता है। यदि आप पहले से ही इस तरह से रोजमर्रा के तरीकों से अपने परिवार की सेवा कर रहे हैं, तो भी आपको प्रेम की प्राथमिक भाषा के साथ परिवार के किसी सदस्य के लिए सेवा के कार्य करने के विशेष तरीकों की तलाश करनी चाहिए।

जब एक पत्नी अपने पति की छोटी-छोटी जरूरतों में कोई दिलचस्पी नहीं दिखा रही होती, तो वह इस प्रेम भाषा को बोलने में असफल हो रही है। शायद वह सोचती है कि, “वह अपने लिए खुद पानी ला सकता है।” लेकिन अगर वह उसके लिए पानी

लाती, तो यह उसके लिए उसके विशेष प्रेम को व्यक्त करता।

उसी तरह, एक पति को भी चिन्ता दिखानी चाहिए। जब वह अपनी पत्नी को उस कार्य से छुट्टी देता है, जो वह आमतौर पर करती है, तो उसके लिए यह कार्य करके, वह उसकी भूमिका का सम्मान कर रहा है और पहचान रहा है कि उसका काम कठिन और महत्वपूर्ण है।

एक पति को लग सकता है कि वह पहले से ही काफी काम करता है, और घर के सभी कामों की देखभाल करना उसकी पत्नी का काम है। वह यह भी सोच सकता है कि उसे उससे अधिक कुशल होना चाहिए। यदि वह मानता है कि घर के काम उसकी शान को नीचा करते हैं, तो इससे पता चलता है कि वह महिलाओं को नीचा और कम कार्यों के योग्य मानता है। महिलाएँ नीच नहीं हैं, और घर का काम घर के बाहर के काम से अधिक तुच्छ काम नहीं है।

एक आदमी को ऐसा लग सकता है कि जब वह घर पर मदद करता है, तो वह एक नौकर (अपनी पत्नी से नीचे) की भूमिका निभा रहा है, लेकिन यह सच नहीं है। यदि वह स्वेच्छा से मदद करता है, तो वह कार्य का मूल्य और उस व्यक्ति का मूल्य दिखाता है, जिसकी वह मदद कर रहा है। उनकी सेवा उस व्यक्ति का सम्मान करती है, जो सामान्य रूप से कार्य करता है और उनके प्रति अपनी प्रशंसा दिखाता है। उसकी पत्नी उसे नौकर के रूप में नहीं बल्कि अधिक सम्मानित रूप में देखेगी।

यदि लोग झिझकते हुए और अनिच्छा से मदद करते हैं, तो इसका मतलब यह है कि उन्हें मदद करने के लिए मजबूर किया जा रहा है। उनकी सेवा का कार्य प्रेम का संचार नहीं करता। यदि वे खुशी-खुशी सेवा के कार्य करते हैं और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करते हैं, तो यह दर्शाता है कि वे सेवा करने का चुनाव स्वतंत्र रूप से कर रहे हैं, क्योंकि कोई भी उन्हें इस तरह सेवा करने के लिए मजबूर नहीं कर सकता है। यह आनंदमय सेवा उनके प्रेम का स्पष्ट रूप से संचार करती है। इससे उन्हें अपने प्रियजन का सम्मान अर्जित करने में भी मदद मिलती है।

► आपके लिए अपने परिवार की सेवा करना सबसे कठिन कब होता है? सेवा को प्रेम की एक अभिव्यक्ति के रूप में सोचने से आपका दृष्टिकोण कैसे बदल जाता है?

प्रेम की भाषा 5: शारीरिक स्पर्श

जिन लोगों की प्रेम की प्राथमिक भाषा शारीरिक स्पर्श है, उन्हें सबसे अधिक प्रेम तब महसूस होता है, जब उनके परिवार के सदस्यों द्वारा उन्हें प्रेम से छुआ जाता है।

शारीरिक स्पर्श के माध्यम से स्नेह दिखाने के विभिन्न तरीके हैं। यह कुछ रिश्तों और कुछ-कुछ परिस्थितियों में उपयुक्त हैं, लेकिन अन्य रिश्तों में उपयुक्त नहीं हैं। इसके कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं:

- एक दूसरे को गले से लगाना
- किसी की पीठ या कंधे पर हाथ रखना

- किसी के कंधे पर हाथ रखकर आराम करना
- किसी की पीठ या कंधे को थपथपाना
- एक दूसरे का हाथ पकड़कर
- एक साथ बैठना
- एक दूसरे को चूमना
- पीठ को मलना
- बच्चे को गोद में उठाना
- बच्चे के बालों को सुलझाना या कंघी करना
- जब कोई बीमार हो या अन्य शारीरिक कमजोरी हो तो कोमल, सौम्य देखभाल देना

जब कोई व्यक्ति कठिन समय से गुज़र रहा हो तो शारीरिक स्पर्श भी विशेष रूप से सार्थक हो सकता है। दुःख, दर्द, अकेलेपन या निराशा के समय में, किसी ऐसे व्यक्ति को गले से लगाना अधिक सार्थक हो सकता है, जिसकी प्रेम की प्राथमिक भाषा किसी भी शब्द या सेवा के कार्य की तुलना में शारीरिक स्पर्श है।

जिस व्यक्ति की प्रेम की प्राथमिक भाषा शारीरिक स्पर्श है, उसके लिए यह महत्वपूर्ण है कि यदि संभव हो तो बीमार होने पर भी अपने प्रेम को शारीरिक रूप से व्यक्त करते रहें। याद रखें कि प्रेम बिना शर्त और आत्म-बलिदान है। लूका 15:20 में पिता ने अपने पश्चाताप करने वाले बेटे को गले लगाया और चूमा, हालाँकि उसका बेटा हर तरह से बदबूदार, गंदा और अप्रिय था।

शारीरिक स्पर्श की प्रेम वाली भाषा जरूरी नहीं कि यौन-क्रिया के बारे में हो। यौन क्रिया स्पर्श की एक श्रेणी है। छूने और छूए जाने की इच्छा यौन गतिविधियों में प्रेरित और व्यक्त हो सकती है, लेकिन अकेले यौन गतिविधि उस व्यक्ति के लिए पर्याप्त नहीं होगी जिसकी प्रेम की प्राथमिक भाषा स्पर्श है।

शारीरिक स्पर्श के माध्यम से प्रेम महसूस करने की इच्छा एक व्यक्ति को अनैतिक यौन गतिविधियों के प्रति आकर्षित कर सकती है। माता-पिता के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे अपने बेटों और बेटियों को उचित, गैर-यौन शारीरिक स्पर्श की पर्याप्त अभिव्यक्ति दें, ताकि उनके बच्चों की शारीरिक स्पर्श की ज़रूरतें पूरी हो सकें। जो बच्चा प्रेम महसूस करता है, उसे प्रलोभन का विरोध करने के लिए अधिक प्रोत्साहन मिलता है।

शारीरिक स्पर्श के पाप

जिनके प्रेम की प्राथमिक भाषा स्पर्श है, वे विशेष रूप से शारीरिक भ्रष्टता से प्रभावित होते हैं। क्रोध में किसी पर हमला करना (गलातियों 5:20), किसी को अपमानित करने के लिए उसके मुँह पर थप्पड़ मारना (मत्ती 5:39) या अधिकार के दुरुपयोग के रूप में किसी को पीटना (मत्ती 24:48-49) बुराई है। इन आयतों के कारण, हम जानते हैं कि माता-पिता को कभी भी अपने बच्चों को चोट पहुँचाने का अधिकार नहीं है, भले ही वे क्रोधित या निराश महसूस करें। परमेश्वर यह भी कहता है कि बच्चों

को उनके माता-पिता को मारना बुरी बात है (निर्गमन 21:15)।

माता-पिता द्वारा नम्रता की भावना से बच्चों को दिया गया उचित, नियंत्रित, शारीरिक अनुशासन (कुलुस्सियों 3:21), सुधार और धार्मिकता की शिक्षा के उद्देश्य से, पापपूर्ण नहीं है। इसके बजाय, यह माता-पिता से परमेश्वर की अपेक्षा है, जो उन्हें अपने बच्चों की आत्माओं को बचाने में सक्षम बनाता है (नीतिवचन 13:24, नीतिवचन 19:18, नीतिवचन 29:15, इब्रानियों 12:5-7)।

अनाचार (लैव्यव्यवस्था 20:11-12, 14) सहित सभी यौन अनैतिकता और दुर्व्यवहार बुरा है।

अपने प्रेम की प्राथमिक भाषा की पहचान करना

लोग हमेशा अपने प्रेम की प्राथमिक भाषा से जागरूक नहीं है। वे उन तरीकों के बारे में नहीं सोचते जिससे अक्सर दूसरों पर प्रेम प्रगट करते हैं। उन्हें शायद इस बात की जानकारी नहीं होती कि दूसरे ऐसा क्या करते हैं, जिससे उन्हें प्रेम का एहसास होता है। प्रेम की पाँच भाषाओं के बारे में आप क्या जानते हैं, इस पर विचार करने के लिए कुछ समय निकालें।

► आप कौन सी प्रेम भाषा से सबसे स्वाभाविक रूप से और सबसे अधिक बार दूसरों के प्रति अपना प्रेम व्यक्त करते हैं?

►प्रेम के विषय में आपकी प्राथमिक और द्वितीयक भाषाएँ क्या हैं? यदि आपको यह समझने में परेशानी हो रही है कि प्रेम की कौन सी अभिव्यक्ति आपके लिए सबसे अधिक मायने रखती है, तो आपकी मदद के लिए यहाँ कुछ प्रश्न दिए गए हैं:

- ऐसी कौन सी चीज़ों के उदाहरण हैं, जो आपको खुश करते हैं?
- आपकी पसंदीदा यादें क्या हैं?
- आप किस बारे में शिकायत करते हैं (खामोशी में भी)?
- आपको क्या दु:खदायी लगता है?

प्रेम की पाँच भाषाएँ और बच्चे

सभी लोगों को नियमित रूप से सभी तरह की प्रेम की पाँच भाषाओं में प्रेम की अभिव्यक्तियाँ प्राप्त करने की आवश्यकता है, लेकिन यह बच्चों के लिए विशेष रूप से सच है। संतुलित, भावनात्मक रूप से स्वस्थ बच्चे बनने के लिए, उन्हें लगातार और बार-बार बताया और दिखाया जाना चाहिए कि उनके माता-पिता उन्हें बिना शर्त प्रेम करते हैं। जब माता-पिता अपने बच्चों के प्रति अपने प्रेम को हर दिन कई बार विभिन्न तरीकों से प्रदर्शित करते हैं, तो यह उनके बच्चों के दिलों की मिट्टी को, पोषण देने वाली हल्की बारिश की तरह होता है।

यह मत समझिए कि आपके बच्चे उनके प्रति आपके प्रेम को जानते हैं और महसूस करते हैं। उन्हें बार-बार और नियमित रूप से आपके प्रेम को उनके प्रेम की प्राथमिक भाषा के साथ-साथ प्रेम की अन्य भाषाओं में प्रदर्शित होते देखना चाहिए।

एक बच्चे के प्रेम की प्राथमिक भाषा का निर्धारण

गैरी चैपमैन और रॉस कैंपबेल ने इन विचारों को सूचीबद्ध किया है की आप किस तरह से अपने बच्चे के प्रेम की प्राथमिक भाषा की खोज कर सकते है:[35]

1. देखें कि आपका बच्चा आपसे कैसे प्रेम अभिव्यक्त करता है।
2. देखें कि आपका बच्चा दूसरों से कैसे प्रेम अभिव्यक्त करता है।
3. सुनें कि आपका बच्चा अक्सर क्या अनुरोध करता है।
4. ध्यान दें कि आपका बच्चा किस के बारे में ज्यादा शिकायत करता है।
5. अपने बच्चे को दो विकल्पों में से एक विकल्प दें।

पाँच वर्ष की आयु से पहले बच्चे के प्रेम की प्राथमिक भाषा का निर्धारण करना संभव नहीं हो सकता है।

बच्चों के लिए प्रेम भाषाओं पर विशेष टिप्पणियाँ

हम यहाँ प्रेम की हर एक भाषा के बारे में विस्तार से नहीं बताएँगे क्योंकि पहले हर एक के ऊपर चर्चा की गई थी। इसके बजाय, हम बच्चों के प्रति प्रेम दिखाने के लिए केवल कुछ विशेष आशय और अनुप्रयोगों पर ध्यान देंगे।

पुष्टि के शब्द

पुष्टि करना तब विशेष रूप से कठिन लगता है, जब एक व्यक्ति अधिकतर गलत कर रहा हो या अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रहा हो। लेकिन अगर आप कुछ ईमानदार और सकारात्मक कहने में सक्षम हों, तो यह आपके बच्चों को प्रेरित करेगा और इस बात की अधिक संभावना है कि वे आगे बढ़ने में सक्षम होंगे।

गुणवत्ता से भरा समय

परिवारों के लिए यह बहुत फायदेमंद है कि वे दिन में कम से कम एक बार एक साथ भोजन करें और उस दौरान एक-दूसरे के साथ मिलने-जुलने पर ध्यान दें।

कई बच्चों वाले परिवारों में, एक बच्चे के साथ गुणवत्ता से भरा समय बिताने की उपेक्षा करना आसान होता है। हालाँकि, अलग-अलग बच्चों के साथ कुछ विशेष करने के लिए समय निकालने से उन्हें उनके प्रति आपके प्रेम को महसूस करने में मदद मिलेगी। एक साथ अकेले समय बिताने से उन्हें व्यक्तिगत् विचार साझा करने का एक सुरक्षित अवसर मिलता है, जिसे वे अपने भाई-बहनों या परिवार के अन्य सदस्यों के सामने साझा करने में अनिच्छुक हो सकते हैं।

---

[35] Dr. Gary Chapman and Dr. Ross Campbell, *The Five Love Languages of Children*, (Northfield Publishing, Chicago, 1997), 101-103.

अक्सर, बच्चे अचानक अपने माता-पिता में से किसी एक के साथ अकेले में गुणवत्ता से भरा समय बिताने का अनुरोध करेंगे। कभी-कभी ।रात में सोने के समय बच्चा खुले मन से बोलेगा और किसी ऐसी चीज़ के बारे में बात करना चाहेगा जो उसके दिल पर बोझ बन रही हो। इन क्षणों में बहुत महत्वपूर्ण है कि माता-पिता समय निकाल कर अपने बच्चों की बात सुने। कई बार, एक बच्चा किसी आत्मिक विषय को लेकर परेशान हो, और निजी तौर पर अपनी माँ या पिता के पास आकर, वह आत्मिक मदद मांग रहा होता है। इस समय में माता-पिता के पास विशेष अवसर होता है कि वह अपने बच्चों को यीशु के बारे में बताएँ।

अपने बच्चों के साथ गुणवत्ता से भरे समय बिताते हुए, उनसे खुलकर प्रश्न पूछना सीखें जिससे आपको यह समझने में मदद मिलेगी कि वे कैसे सोच रहे हैं और क्या महसूस कर रहे हैं। खुले प्रश्नों का उत्तर "हाँ" या "नहीं" में नहीं दिया जा सकता है। खुले प्रश्नों का कोई विशेष उत्तर नहीं होता है। खुले-प्रश्न आमतौर पर "क्यों…" "कैसे…" या "क्या…" से शुरू होते हैं। खुली-बातचीत की शुरुआत ऐसे वाक्यांशों से की जाती है, जैसे "मुझे इसके बारे में बताएँ…" या "आप किस बारे में सोचते हैं…"

जैसे ही आपका बच्चा आपके प्रश्न का उत्तर देता है, सुनिश्चित करें कि आप उसके उत्तर को ध्यान से सुनें और सही उत्तर दें। कुछ मामलों में, आप एक अनुवर्ती प्रश्न पूछना चाहेंगे। अन्य समय में, आप यह सुनिश्चित करने के लिए स्पष्टीकरण देना चाहेंगे कि आप समझ रहे हैं कि वे क्या समझाने की कोशिश कर रहे हैं। कभी-कभी आपको उनकी उस बात की पुष्टि करनी चाहिए जो वे समझ रहे हैं या महसूस कर रहे हैं। यह महत्वपूर्ण है कि बच्चे को ऐसा महसूस न हो कि उसका साक्षात्कार लिया जा रहा है, बल्कि बातचीत स्वाभाविक हो। आपकी सावधानी आपके बच्चे को यह महसूस करने में मदद करेगी कि उसकी बात सुनी जाती है, उसे महत्व दिया जाता है और उससे प्रेम किया जाता है।

वास्तव में समय निकालकर किसी बच्चे को एक कहानी कहते हुए सुनना भी उनके प्रति आपके प्रेम का संचार करता है, जो उनके लिए बहुत सार्थक है। बच्चों को कहानियाँ सुनाने या किताबें पढ़ने के लिए समय निकालना भी एक साथ गुणवत्ता से भरा समय साझा करने का एक शानदार तरीका है।

एक साथ गेम खेलना या किसी मज़ेदार परियोजना पर एक साथ काम करना अपने बच्चों के साथ गुणवत्ता से भरे समय को साझा करने के अन्य तरीके हैं।

कुछ माता-पिता अपने बच्चों को पर्याप्त गुणवत्ता से भरे समय को नहीं देते हैं। वे अपने बच्चों को उपहार देकर इसकी भरपाई करने की कोशिश करते हैं। उपहार गुणवत्ता से भरे समय का स्थान नहीं ले सकते हैं। बच्चों को अपने माता-पिता के साथ बहुत अधिक गुणवत्ता से भरे समय को बिताने की ज़रूरत होती है, चाहे उनकी प्रेम की प्राथमिक भाषा कोई भी क्यों न हो। उपहार आपके बच्चों के साथ समय बिताने की जगह कोई भी नहीं ले सकता है।

.उपहार

बहुत सारे माता-पिता अपने बच्चों के लिए खिलोना या दिलचस्प पुस्तक शायद ही कभी खरीदते है, क्योंकि उन्हें ये चीजें

जरूरी नहीं लगती हैं। जबकि ये चीजें प्रेम की अभिव्यक्ति होने के अलावा, बच्चों के विकास के लिए सहायक हो सकती है।

सेवा के कार्य

सेवा कार्यों में अपने बच्चे के प्रति प्रेम व्यक्त करने के कुछ तरीके:

- उनके जन्मदिन पर उनका पसंदीदा भोजन तैयार करें
- जब वे भीमार हों तो उनकी कोमलता से देखभाल करे
- स्कूल का काम करने में अपने बच्चे की सहायता करें
- अपने बच्चे के साथ घर का कार्य करें और उनके कार्यों पर उनको शाबाशी दें
- अपने बच्चे के साथ अपने घर में किसी अन्य व्यक्ति की मदद के लिए कुछ करें

शारीरिक स्पर्श

सब शिशुओं और छोटे बच्चे को शारीरिक स्पर्श द्वारा प्रेम का अनुभव होना चहिए। शिशुओं की व्यावहारिक आवश्यकताएँ होती हैं, जैसे उनको खाना खिलाना और उनके डायपर बदलना, लेकिन उन्हें गोद में उठाना, गले लगाने, सहलाने और चूमने की भी ज़रूरत होती है। यह कोमल शारीरिक स्पर्श एक तरह से प्रेम का संचार करता है, जिसे वे महसूस करते हैं और यह उनके भावनात्मक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।

एक पिता के लिए अपने बेटों के साथ धींगा-मस्ती करना प्रेम का इज़हार हो सकता है। परन्तु प्रतियोगिता चोट पहुँचाने वाली, हावी होने वाली, नियंत्रण से बाहर या गुस्सा पैदा करने वाली नहीं होनी चाहिए।

माता-पिता के कार्यों और शब्दों का दीर्घकालिक-प्रभाव

अपने बच्चों के साथ व्यवहार करते समय माता-पिता को परमेश्वर के नमूने का अनुसरण करना चाहिए। वह हमेशा अपने बच्चों की देखभाल पूर्ण, आत्म-समर्पण, बिना शर्त प्रेम के साथ करता है। वह अपने बच्चों के प्रति अपने प्रेम **के कारण** उन्हें अनुशासित करता है, सुधारता है और प्रशिक्षित करता है (इब्रानियों 12:5-7)। यह पिता और बच्चे के रिश्ते के संदर्भ में है कि वह विश्वासियों के जीवन में उन्हें अपने जैसा बनाने के लिए काम करता है (इब्रानियों 12:10-11)।

यह सही नहीं है की माता-पिता का प्रेम अपने बच्चों के प्रति उनके व्यवहार पर निर्भर हो। बेशक, व्यवहार के लिए सकारात्मक पुरस्कार या नकारात्मक परिणाम बाल-प्रशिक्षण का उचित हिस्सा हैं, लेकिन व्यवहार के कारण *प्रेम की अभिव्यक्ति* नहीं दी जानी चाहिए या रोकी नहीं जानी चाहिए।

यदि कोई बच्चा लगातार अपने माता-पिता के बिना शर्त प्रेम का अनुभव करता है, तो वह अपने लिए परमेश्वर के प्रेम को अधिक आसानी से समझेगा और उस पर भरोसा करेगा। हालाँकि, जिन लोगों के साथ बचपन में दुर्व्यवहार किया गया या उनकी उपेक्षा की गई, उनके लिए बड़े होने के बाद भी एक प्रेमी स्वर्गीय पिता को समझना और उस पर भरोसा करना अधिक

कठिन है।

बच्चों की अपने बारे में समझ-विशेषकर एक व्यक्ति के रूप में उनका महत्व-लगभग हमेशा उसी से आता है, जो वे दूसरों से सुनते और समझते हैं। उनके माता-पिता के कार्य और शब्द सबसे प्रभावशाली होते हैं, लेकिन रिश्तेदारों और दोस्तों का भी बड़ा प्रभाव होता है। बच्चों को प्रेम की वह अभिव्यक्ति मिलती है या नहीं, जिसकी उन्हें ज़रूरत है, तथापि यह उनकी खुद-की-छवि का हिस्सा है। जब बच्चों से प्रेम छीन लिया जाता है, या बच्चे भावनात्मक या शारीरिक शोषण का अनुभव करते हैं, तो यह उनके खुद-के-महत्व के बारे में उनके दृष्टिकोण को इस तरह से नुकसान पहुँचाता है, जो उनके पूरे जीवन को प्रभावित करता है।

माता-पिता के शब्द बच्चों की स्वयं की समझ को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए:

- **पुष्टि के शब्द:** "इतनी मेहनत करने के लिए मुझे तुम पर गर्व है! मैं जानता हूँ तुम कर सकते हो!" वह बच्चों को बताता है कि प्रयास सार्थक है, और आप यह विश्वास करते हैं कि वे उपलब्धि हासिल करने वाले हो सकते हैं।
- **ऐसे शब्द जो विनाशकारी हैं:** "तुम बहुत आलसी हो, मैं किसी भी चीज के लिए तुम पर निर्भर नहीं रह सकता!" इससे बच्चे को यह विश्वास हो जाता है कि वे बदलने में असमर्थ हैं; यहाँ कोई कारण नहीं है कि उन्हें बदलने या आपका सम्मान अर्जित करने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि आप उन्हें पहले ही छोड़ चुके हैं। इससे बच्चों को यह महसूस हो सकता है कि आपने उन्हें अस्वीकार कर दिया है।
- **पुष्टि के शब्द:** "कोई बात नहीं। कई बार हम सब गलतियाँ करते हैं, और फिर हम सीखते हैं कि अगली बार और अच्छा कैसे करना है।" यह बच्चों को बताता है कि गलतियाँ करना सुरक्षित है - उनके प्रति आपका प्रेम उनके उत्तम प्रदर्शन पर निर्भर नहीं है। यह बच्चों को यह भी बताता है कि उन्हें बढ़ने में सक्षम होने की उम्मीद करनी चाहिए, प्रयास करते रहने का एक कारण है।
- **ऐसे शब्द जो विनाशकारी होते हैं:** "तुम बहुत मुर्ख हो, तुम हमेशा सब कुछ बिगाड़ देते हो।" यह बच्चों को इस बात पर विश्वास कराती है कि वह फिर से प्रयास करना निराशा भरा है। यह बहुत असानी से उन्हें बता सकते है कि उनका महत्म उत्तम प्रदर्शन पर अधारित है; और चूँकि वे हमेशा सब कुछ बिगाड़ देते हैं, वे कभी भी महत्वपूर्ण होने के योग्य नहीं हो सकते। वे कभी भी आपके या किसी और के प्रेम के लायक नहीं होंगे।

एक व्यक्ति के रूप में एक बच्चे की स्वयं के बारे में समझ उस प्रेम से आकार लेती है, जो उससे किया जाता है या उससे नहीं किया जाता है। दूसरों के साथ स्वस्थपूर्ण तरीके से जुड़ने की उसकी क्षमता या तो उसके माता-पिता के साथ उसके रिश्ते के कारण विकसित होती है या बाधित होती है। जिस बच्चे को अच्छी तरह से प्रेम किया जाता है, वह आत्म-समर्पण, बिना शर्त वाले प्रेम के साथ अन्य लोगों से प्रेम करना सीख सकता है। उसके पास प्रेम का भण्डार भी है, जिससे वह आकर्षित हो सकता है।

वास्तविक प्रेम बच्चों के लिए भावनात्मक ईंधन है, जैसा कि वयस्कों के लिए है।

एक पूर्ण भावनात्मक भण्डार के लाभ

पूर्ण भावनात्मक ईंधन का भण्डार होने से बच्चों को कई तरह से लाभ होता है। जब बच्चे जानते हैं कि उन्हें प्रेम किया जाता है, तो उनमें चुनौतियों का सामना करने और उचित विकास करने के लिए आवश्यक ताकत और स्थिरता होती है।

जो बच्चे जानते हैं कि उन्हें बिना शर्त प्रेम किया जाता है, तो वे भावनात्मक रूप से सुरक्षित होते हैं। इस वजह से, वे अपने माता-पिता से और भी ज्यादा अनुशाशन, सुधार और मार्गदर्शन स्वीकार करने के लिए तैयार होते है। वे साथियों के दबाव के कारण होने वाले प्रलोभन का विरोध करने में भी अधिक सक्षम हैं, क्योंकि वे जो हैं, उसमें सुरक्षित हैं और उन्हें दूसरों के सामने खुद को साबित करने की आवश्यकता नहीं होती है।

एक लड़की जो आमतौर पर लड़कों के साथ प्रेम का इजहार करती रहती है, वह इस तरह का व्यवहार कर सकती है, क्योंकि उसे डर है कि वे उसे पसंद नहीं करेंगे या अन्यथा उस पर ध्यान नहीं देंगे। एक लड़की जो लड़कों से शर्माती है, उसे डर हो सकता है कि अगर वह सचमुच अपना व्यक्तित्व व्यक्त करेगी तो वे उसे पसंद नहीं करेंगे। जिन बेटियों को अपने पिता से समर्थन और स्नेह मिलता है, वे लड़कों के साथ खिलवाड़ या शर्मीलेपन के बिना स्वस्थपूर्ण तरीके से बातचीत कर सकती हैं। वे अपने पिता के प्रेम के कारण अपनी पहचान को लेकर सुरक्षित हैं।

प्रेम की सभी पाँच भाषाओं में बार-बार व्यक्त किया गया सच्चा, बिना शर्त वाला माता-पिता का प्रेम बच्चों को बहुत से नुकसान से बचाता है। जिन बच्चों को अच्छी तरह से प्रेम किया जाता है, वे आमतौर पर उन लोगों से प्रेम और सुरक्षा नहीं चाहते हैं, जो उन्हें नुकसान पहुँचाने का इरादा रखते हैं।

संक्षेप में, एक बच्चे के रूप में पूर्ण भावनात्मक ईंधन से भराभण्डार रखने के कई लाभ हैं:

- एक व्यक्ति के महत्व और उसके स्रोत की सही समझ
- प्रयास, गलतियों, विकास और बिना शर्त वाले प्रेम की सही समझ
- दूसरों से अच्छा तरह प्रेम करना सीखने की क्षमता
- चुनौतियों का सामना करने और ठीक से विकास करने के लिए ताकत और स्थिरता
- भावनात्मक सुरक्षा
- अनुशासन, सुधार और मार्गदर्शन स्वीकार करने की क्षमता
- साथियों के गलत प्रभावों को अस्वीकार करने की क्षमता
- भविष्य के रिश्तों में दुर्व्यवहार के प्रति संवेदनशीलता का न होना

► आपने और कौन से तरीके देखें है, जिनसे बच्चों को अच्छी तरह प्रेम पाने से लाभ होता है?

एक खाली भावनात्मक भण्डार के नुकसान

जो बच्चे प्रेम महसूस नहीं करते वे मार्गदर्शन का विरोध कर सकते हैं, क्योंकि उनमें अपनी माँ या पिता को खुश करने की प्रेरणा की कमी होती है। पूर्ण भावनात्मक ईंधन वाले भण्डार के बिना, कई बच्चों में माता-पिता के साथ वफादारी का एक मजबूत, सकारात्मक संबंध नहीं होता है, जो उनका नेतृत्व करने की कोशिश कर रहे होते हैं।

जिन बच्चों के भावनात्मक ईंधन वाले भण्डार खाली होते हैं, वे परिवार के सदस्यों के साथ स्वस्थ, प्रेमपूर्ण संबंधों वाले बच्चों की तुलना में दुर्व्यवहार के प्रति कहीं अधिक संवेदनशील होते हैं। चूँकि उन्हें प्रेम महसूस नहीं होता, इसलिए वे उन लोगों से प्रेम की तलाश कर सकते हैं, जो उनका इस्तेमाल करना चाहते हैं या उन्हें नुकसान पहुँचाना चाहते हैं।

मजबूत परिवारों के गुण

इन पाठों में हमने प्रेम की पाँच प्राथमिक भाषाओं के बारे में सीखा है। हालाँकि व्यक्तियों के पास आमतौर पर प्रेम की एक या दो प्राथमिक भाषाएँ होती हैं, प्रत्येक व्यक्ति को नियमित रूप से सभी पाँच तरीकों से प्रेम करने की आवश्यकता होती है। एक स्वस्थ परिवार वह होता है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन सकारात्मक शब्द बोलकर, एक साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताकर, सेवा करके और प्रेम भरा स्पर्श प्रदान करके उद्देश्यपूर्ण ढंग से दूसरों के साथ संबंधों का पोषण करता है। एक-दूसरे को उपहार देना भले ही रोज़मर्रा की बात न हो, लेकिन फिर भी यह परिवार के भीतर स्वस्थ रिश्तों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

► आपके परिवार में प्रेम सबसे अधिक बार कैसे व्यक्त किया जाता है? क्या प्रेम सभी पाँच प्रेम भाषाओं में व्यक्त होता है? प्रेम की अभिव्यक्तियाँ कितनी बार साझा की जाती हैं?

14,000 परिवारों के 25-वर्षीय गैर-धार्मिक अध्ययन से पता चला कि विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के कई स्वस्थ, सफल और संतुलित परिवार छह सामान्य गुणों को साझा करते हैं।[36] इनमें से कुछ गुण सीधे तौर पर विभिन्न प्रेम भाषाओं से सम्बन्धित हैं, जो प्रेम की विभिन्न अभिव्यक्तियों के महत्व पर जोर देते प्रतीत होते हैं। स्टिनेट और बीम ने प्रत्येक के लिए उन छह गुणों और विवरणों को सूचीबद्ध किया है:

1. **प्रतिबद्धता।** मजबूत परिवारों के सदस्य एक-दूसरे के कल्याण और खुशी को बढ़ावा देने के लिए समर्पित होते हैं। वे परिवार की एकता को महत्व देते हैं।

2. **सराहना और स्नेह।** मजबूत परिवारों के सदस्य अक्सर एक-दूसरे की सराहना करते हैं। वे महसूस कर सकते हैं कि उनका परिवार अच्छा है।

---

[36] Dr. Nick & Nancy Stinnett and Joe & Alice Beam, *Fantastic Families: 6 Proven Steps to Building a Strong Family*, (Brentwood, TN: Howard Books, 2008)

3. **सकारात्मक संचार।** अच्छे परिवारों के सदस्यों में अच्छा संचार कौशल होता है और वे एक-दूसरे के साथ बातचीत करने में काफी समय बिताते हैं।

4. **एक साथ समय।** मजबूत परिवार एक-दूसरे के साथ भरपूर मात्रा में समय-गुणवत्ता से भरा समय बिताते हैं।

5. **आत्मिक-कल्याण।** चाहे वे धार्मिक सेवाओं में जाएँ या ना जाएँ, मजबूत परिवारों को जीवन में अधिक अच्छाई या सामर्थ्य की भावना होती है। वह विश्वास उन्हें सामर्थ्य और उद्देश्य देता है।

6. **तनाव और संकट से निपटने की क्षमता।** मजबूत परिवारों के सदस्य तनाव या संकट को विकास के अवसर के रूप में देखने में सक्षम होते हैं।

व्यक्तिगत् अनुप्रयोग

इन दोनों पाठों में हमने कई बातों पर विचार किया है। हमने सच्चे प्रेम की चर्चा से शुरुआत की, फिर पाँच भाषाओं की पहचान की जिनमें प्रेम आमतौर पर संप्रेषित किया जाता है। हमने भावनात्मक ईंधन वालेभण्डार के बारे में सीखा और अपने परिवार के सदस्यों को उनकी प्रेम की प्राथमिक भाषा में उनके प्रति अपने प्रेम का अनुभव करने की आवश्यकता के बारे में सीखा। हमने इस बारे में बात की कि कैसे एक परिवार के भीतर व्यक्तित्व के अंतर के कारण हमारे बीच प्रेम बढ़ सकता है।

उसके बाद, हमने प्रेम पाँच भाषाओं में से प्रत्येक की गहराई से खोज की, प्रत्येक के उदाहरणों को देखा, और प्रत्येक की उपेक्षा या दुरुपयोग होने पर होने वाले नुकसान को देखा। हमने सीखा कि भावनात्मक ईंधन वाले भण्डार भरे होने से बच्चों को कैसे फायदा होता है, और जब उनके भण्डार ख़त्म हो जाते हैं, तो उन्हें कैसे परेशानी होती है। हमने अपने बच्चों के प्रति अपना प्रेम व्यक्त करने के बारे में अधिक विस्तार से बात की। फिर, हमने देखा कि कैसे प्रेम की पाँच भाषाओं का अभ्यास स्वस्थ परिवारों के छह सामान्य गुणों से जुड़ा हुआ है।

जब हम इन पाठों का समापन करेंगे, तब हम आपकी व्यक्तिगत् ज़िम्मेदारी पर चर्चा करेंगे - अर्थात् आप क्या कर सकते हैं और आपने जो सीखा है, उसके साथ आपको क्या करना चाहिए।

(1) आप अपने परिवार से प्रेम करने के लिए जिम्मेदार हैं।

आपको अपने परिवार के सदस्यों द्वारा आपसे प्रेम करने की प्रतीक्षा किए बिना, किसी भी तरह से बदलाव के लिए तैयार रहना चाहिए। सच्चा प्रेम तब तक इंतजार नहीं करता जब तक सामने वाला आपसे प्रेम न जताए। यह स्वयं को तब भी अभिव्यक्त करता है, जब दूसरा व्यक्ति सबसे कम योग्य लगता है, क्योंकि प्रेम प्राप्तकर्ता की योग्यता पर आधारित नहीं होता है।

(2) आप अपने परिवार के प्रति अपने प्रेम को उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण तरीकों से व्यक्त करने की पूरी कोशिश करने के लिए जिम्मेदार हैं।

यह संभव है कि आपको एक या अधिक भाषाओं में प्रेम का प्रदर्शन करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करना होगा जो स्वाभाविक रूप से आपके पास नहीं आते हैं। सबसे पहले, प्रेम की कुछ अभिव्यक्तियाँ आपको अप्राकृतिक, अजीब या मूर्खतापूर्ण लग सकती हैं।

अपने परिवार के सदस्यों के प्रति प्रेम दिखाने के अवसरों पर ध्यान देना सीखें। इस बात के प्रति सचेत रहें कि किसी निश्चित समय पर आपके परिवार के सदस्यों को किस चीज़ की आवश्यकता हो सकती है। यहाँ प्रेम की प्रत्येक भाषा के लिए कुछ उदाहरण दिए गए हैं:

- **पुष्टि के शब्द:** सोचिए, "______ ने अभी जो कहा उसके बारे में शायद वह अनिश्चित महसूस करता है। लेकिन उसने जो कहा वह सही था। मुझे पुष्टि की कुछ बातें कहनी हैं।"
- **मूल्यवान समय:** पूछें, "क्या आप इसके बारे में बात करना चाहेंगे?" फिर आप जो कर रहे हैं, उसे रोकें, उन्हें अपना पूरा ध्यान दें और अपनी शारीरिक भाषा से दिखाएँ कि आप वास्तव में उनकी बात सुन रहे हैं।
- **उपहार:** जैसे ही आप उन्हें उपहार सौंपें, कहें, "मैंने इसे देखा और इसने मुझे आपके बारे में सोचने पर मजबूर कर दिया।"
- **सेवा के कार्य:** ऊपर उठें और पूछें, "क्या मैं आपके लिए वह ला सकता हूँ?" या "क्या मैं इसमें आपकी मदद कर सकता हूँ?"
- **शारीरिक स्पर्श:** उनके पास जाएँ और कहें, "आप ऐसे दिखते हैं कि जैसे आप गले लगा सकते हैं" जब आप उन्हें अपनी बाहों में लपेट लेते हैं।

(3) **आपकी भावनाओं के लिए आप स्वयं जिम्मेदार हैं।**

परमेश्वर ने आपको दूसरों के साथ अच्छा संबंध बनाए रखने के लिए बनाया है। लेकिन यह संभव हो या ना हो, परमेश्वर खुद ही आपका अंतिम स्रोत और संतुष्टि है। आपकी भावनात्मक भलाई के लिए आखिर में आपका परिवार ज़िम्मेदार नहीं है। परमेश्वर आपसे संपूर्णता से प्रेम करता है, हालाँकि कोई और कभी नहीं कर सकता। यदि आप उसके प्रेम में बने रहते हैं, तो वह आपकी किसी भी कमी को पूरा कर सकता है (यूहन्ना 15:9-11)।

हो सकता है कि आपका परिवार प्रेम की आपकी प्राथमिक भाषा में आपके प्रति प्रेम व्यक्त न करे। शायद वे प्रेम की आपकी प्राथमिक भाषा और आपकी भावनात्मक ज़रूरतों से अनजान हैं। शायद उनके पास आपके लिए उस तरीके से प्रेम व्यक्त करने की प्रेरणा की कमी है, जो आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण है। आप उन्हें यह समझाने में सक्षम हो सकते हैं कि आप सबसे अधिक प्रेम कैसे महसूस करते हैं। लेकिन आप उन्हें इस तरह से अपने प्रति प्रेम व्यक्त करने के लिए बाध्य नहीं कर सकते हैं।

शायद आपका परिवार अन्य तरीकों से आपके प्रति अपना प्रेम व्यक्त कर रहा है। जैसे-जैसे आप प्रेम की भाषाओं से अवगत होते चले जाते हैं, वैसे-वैसे आप नोटिस करना शुरू कर देंगे कि आपका परिवार पहले से ही आपके प्रति अपना प्रेम कैसे दिखा रहा है। हालाँकि आप उन्हें बदल नहीं सकते हैं, लेकिन आप उनके प्रेम के भावों को स्वीकार करना और उस प्रेम के लिए अपनी सराहना प्रदर्शित करना चुन सकते हैं।

प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता,

मुझे मेरा परिवार देने के लिए धन्यवाद। उनमें से प्रत्येक को उतना महत्व देने में मेरी सहायता करें जैसा मुझे करना चाहिए, और उनमें से प्रत्येक के साथ एक अच्छा रिश्ता विकसित करने में मेरी सहायता करें।

मुझे मेरे परिवार के प्रति प्रेम दिखाने के तरीकों पर विचार करने का अवसर देने के लिए धन्यवाद। मुझे यीशु की तरह बनना सीखने में मदद करें: अपने परिवार को आशीष देने और प्रोत्साहित करने के लिए अपना समय, भावनात्मक और शारीरिक ऊर्जा और संसाधन दें। मुझे विनम्र हृदय रखने में मदद करें, ताकि मैं दूसरों की जरूरतों को अपनी जरूरतों से अधिक प्राथमिकता दूँ। मुझे परिवार के प्रत्येक सदस्य के प्रति अपना प्रेम व्यक्त करने के अवसरों के बारे में जागरूक होने में मदद करें।

आपने मुझे दिखाया है कि सच्चा प्रेम क्या होता है। आप मुझसे चाहते हैं कि मैं अपने परिवार के प्रति वही प्रेम का वादा करूँ जो आपने मुझसे किया है। मैं अपने जीवनसाथी और बच्चों को बिना शर्त, आत्म-समर्पण वाला प्रेम देना चुनता हूँ। जिन तरीकों से मैं असफल हुआ हूँ, उनके लिए मुझे अनुग्रह और दया दें। मुझे उनसे वैसा प्रेम करने में सक्षम बनाएँ जैसा मुझे करना चाहिए।

आमीन

पाठ सम्बन्धी नियत कार्य

(1) अपने जीवनसाथी और अपने प्रत्येक बच्चे की संभावित प्रेम की प्राथमिक भाषाओं के बारे में सोचें। अपने परिवार के सदस्यों के नाम सूचीबद्ध करें। फिर प्रत्येक की प्रेम प्राथमिक एक या दो भाषाओं की सूची बनाएँ।

(2) प्रेम की किन अभिव्यक्तियों के लिए आपको अतिरिक्त प्रयास की आवश्यकता होगी? उनको चिन्हित करें। आप उन तरीकों से अपने परिवार के प्रति अपने प्रेम को जानबूझकर कैसे व्यक्त करना शुरू करेंगे, इसके लिए कुछ विचार लिखें।

(3) अपनी संस्कृति की जाँच करें, विशेषकर अपने सामाजिक समूह की। प्रेम पाँच भाषाओं की सूची बनाएँ। आपकी संस्कृति में, प्रेम की प्रत्येक भाषा का प्रदर्शन कैसे किया जाता है? क्या पाँच में से कोई ऐसा है, जिसे आमतौर पर नज़रअंदाज कर दिया जाता है? ऐसे कौन से विशिष्ट तरीके हैं, जिनसे आपके सामाजिक समूह के लोग आपकी संस्कृति में सामान्य से बेहतर तरीके से प्रेम का प्रदर्शन कर सकते हैं? इन प्रश्नों का उत्तर देते हुए कई अनुच्छेद लिखें।

पाठ 10
निःसंतान होने का मुद्दा

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में, छात्र यह करने लगेंगे:

(1) बाइबल के दृष्टिकोण से बाँझपन को समझें और उसका जवाब दें।

(2) प्रत्येक व्यक्ति को परमेश्वर का स्वरूप धारण करने वाले व्यक्ति के रूप में महत्व दें।

बुसाबा का दुःख

बुसाबा का जन्म एक एशियाई देश में हुआ था। जब उसने एक युवा व्यवसायी से शादी की तो वह खुश थी, और उन्हें उम्मीद थी कि वे एक साथ खुशहाल जीवन बिताएँगे। कई साल बीत गए, और बुसाबा की कोई संतान नहीं थी। एक डॉक्टर ने उन्हें बताया कि बुसाबा बच्चा पैदा नहीं कर सकती। उसका पति बहुत दुखी और क्रोधित था। अंततः उसने बुसाबा को तलाक देकर दूसरी महिला से शादी करने का निर्णय लिया। बुसाबा अब बूढ़ा हो गयी है। वह एक छोटे से घर में अकेली रहती है और उसकी जिंदगी में कोई रिश्तेदार शामिल नहीं है। क्योंकि वह बौद्ध है, उसे उम्मीद है कि अगले जन्म में उसके बच्चे होंगे और उसकी शर्म ख़त्म हो जाएगी।

►यदि आप बुसाबा के समुदाय में पास्टर होते, तो आप उससे क्या कहते? बुसाबा के लिए मसीही संदेश क्या है?

इस पाठ में हम निःसंतान होने के मुद्दे पर बाइबल के दृष्टिकोण को देखेंगे।

बच्चे और परमेश्वर की आशीष की योजना

परमेश्वर ने पहले पुरुष और स्त्री को बनाने के तुरंत बाद, उनसे कहा कि बच्चे पैदा करो और मनुष्य की आबादी को बढ़ाओ और पृथ्वी को भर दो (उत्पत्ति 1:28)।

पुराने नियम में, परमेश्वर ने कभी-कभी न केवल एक व्यक्ति को बल्कि एक परिवार की कई पीढ़ियों को आशीष देने का वादा किया था। उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने अब्राहम को आशीषों का वादा किया था, जो अब्राहम को व्यक्तिगत् रूप से नहीं बल्कि बाद की पीढ़ियों को मिलेंगे। परमेश्वर ने अब्राहम से वादा किया कि उसके वंश गिनती में समुद्र की रेत के समान होंगे। अब्राहम का पुत्र इसहाक आश्चर्यजनक तरीके से गर्भ में पैदा हुआ। फिर जैसे-जैसे परिवार हर पीढ़ी के साथ बढ़ता गया, बढ़ती हुई गिनती ने दर्शाया कि परमेश्वर अपना वादा पूरा कर रहा था।

निर्गमन 23:25-27 में परमेश्वर ने इस्राएल से कहा कि जब वे अपने नए क्षेत्र में आगे बढ़ेंगे तो वह उन्हें आशीष देगा।

परमेश्वर ने इस्राएल से वादा किया कि वह उनके भोजन पर आशीष देगा, बीमारी दूर करेगा, बांझपन या गर्भपात नहीं होने देगा और उनके शत्रुओं को नष्ट कर देगा। ये वादे इस्राएल की आज्ञाकारिता पर निर्भर थे, और परमेश्वर ने उसकी आवश्यकताओं का वर्णन किया (जैसे कि निर्गमन 23:32 में आदेश है)। वादे देश से किए गये थे, व्यक्तियों से नहीं। देश की सामान्य आज्ञाकारिता या अवज्ञा से लोग प्रभावित होंगे। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति बीमार हो सकता है, या कोई महिला निःसंतान हो सकती है, अपने स्वयं के पाप के कारण नहीं बल्कि इसलिए क्योंकि वे एक ऐसे देश में थे, जो परमेश्वर के प्रति वफादार नहीं था। इसलिए, हो सकता है कि शायद महिला का निःसंतान होना उसके अपने पाप का परिणाम न हो।

व्यवस्थाविवरण 7:12-15 इस्राएल देश के लिए वादों वाला एक अंश है। यहाँ समृद्धि होगी, कोई बीमारी नहीं होगी, और मनुष्यों या जानवरों के लिए कोई बांझपन नहीं होगी। आयत 12 कहती है कि इस्राएलियों को ये आशीषें मिलेंगी यदि वे परमेश्वर की आज्ञा का पालन करेगा क्योंकि परमेश्वर ने उनके पूर्वजों के साथ एक वाचा बाँधी थी। यदि देश परमेश्वर के प्रति वफादार नहीं होता, तो इस्राएल में एक व्यक्ति गरीब हो सकता था, या एक महिला निःसंतान हो सकती थी।

अपने लोगों के लिए परमेश्वर की योजना में बच्चे महत्वपूर्ण थे। इस पाठ्यक्रम के अन्य भागों में, हम इसी बारे में बात कर रहे हैं कि बच्चों को कैसे महत्व दिया जाना चाहिए, क्योंकि वे परमेश्वर के स्वरूप में बने हैं। प्रत्येक बच्चा मूल्यवान है और उसके साथ प्रेम और देखभाल से व्यवहार किया जाना चाहिए। हालाँकि, कभी-कभी लोगों को लगता है कि एक बच्चा मूल्यवान है, क्योंकि वह भविष्य में परिवार को मजबूत रख सकता है। कभी-कभी एक पिता बच्चों को महत्व देता है, क्योंकि वे उसकी अपनी पहचान का विस्तार होते हैं। हमें यह याद रखने की ज़रूरत है कि परमेश्वर अपने उद्देश्यों के लिए बच्चे देता है (मलाकी 2:15)।

► समूह को भजन संहिता 127:3-5 को एक साथ देखना चाहिए जब कोई इसे ज़ोर से पढ़ता है।

बाइबल का यह अंश कहता है कि बच्चे परमेश्वर की ओर से आशीष हैं। वे एक विरासत की तरह हैं, जिसे परमेश्वर आशीष देता है। वे परमेश्वर की ओर से प्रतिफल हैं। वे परिवार की भविष्य की संरक्षण और सुरक्षा हैं।

दो आशीषे जिनके बारे में कभी-कभी बाइबल में एक साथ बात की जाती है, वे हैं लंबी उम्र और पोते-पोतियाँ। अय्यूब धन्य था, क्योंकि उसके दस बच्चे थे और वह चार पीढ़ियों को देखने के लिए पर्याप्त समय तक जीवित रहा (अय्यूब 42:13, 16)। भजन सहिंता 128:6 की आशीष अपने पोते-पोतियों को देखने के लिए जीवित रहने का उपहार है।

परमेश्वर ने योनादाब के परिवार को इस वादे के साथ आशीष दी कि परिवार की अगली पीढ़ी का नेतृत्व करने के लिए हमेशा एक व्यक्ति होगा (यिर्मयाह 35:19)। परमेश्वर ने राजा दाऊद के परिवार से वादा किया था कि उसके पास सिंहासन पर बैठने के लिए हमेशा एक व्यक्ति होगा (2 शमूएल 7:16)।

इस तरह हम देखते हैं कि एक परिवार के लिए परमेश्वर की आशीष में आमतौर पर बच्चे शामिल होते हैं, और बच्चे एक ऐसा तरीका है, जिससे परमेश्वर की आशीष भविष्य की पीढ़ियों तक जाती है।

निःसन्तान होने के विषय में बाइबल सम्बन्धी समझ

कुछ मामलों में निःसन्तान होने का मतलब यह हो सकता है कि परमेश्वर ने एक परिवार को श्राप दिया हो। बाइबल हमें ऐसे मामलों के बारे में बताती है, जहाँ परमेश्वर ने परिवारों को बांझ होने का श्राप दिया था। उदाहरण के लिए, क्योंकि राजा अबीमेलेक ने गलत किया था, इसलिए परमेश्वर ने उसके घर की सभी महिलाओं को तब तक बच्चे पैदा करने से रोक दिया जब तक कि उसने अपनी गलती को सुधार नहीं लिया (उत्पत्ति 20:18)। महिलाएँ दोषी नहीं थीं, लेकिन उन्हें राजा के पाप का परिणाम भुगतना पड़ा।

आदम और हव्वा के पाप करने के बाद, परमेश्वर ने कहा कि दुनिया उनके पाप से प्रभावित होगी। श्राप में कठिन मानवीय रिश्ते, बच्चे पैदा करने में पीड़ा और दुःख, कठिन काम, खेती के लिए पृथ्वी का प्रतिरोध और अंत में मृत्यु शामिल थी (उत्पत्ति 3:14-19)। आदम के बाद से प्रत्येक मनुष्य ने व्यक्तिगत् रूप से कोई पाप करने से पहले ही, जन्म से ही श्राप का अनुभव किया है। यहाँ तक कि यीशु, जो बिल्कुल पापरहित था, उसने मानवीय शरीर के साथ सृष्टि में प्रवेश किया और श्राप की स्थितियों को सहन किया। इसलिए, हमें यह नहीं कहना चाहिए कि एक व्यक्ति का कष्ट उसके अपने पाप के कारण है। हम सभी की उम्र बढ़ती है, हम बीमार पड़ते हैं, हम कई तरह से पीड़ित होते हैं और अंततः मर जाते हैं। ये सभी समस्याएँ, बच्चे पैदा करने की समस्याओं के साथ, आदम के पहले पाप के परिणाम हैं।

आदम के मूल पाप के अलावा, हम अपने पूर्वजों के पापों से प्रभावित होते हैं, क्योंकि उनके कार्यों ने उस समाज का निर्माण किया, जिसमें हम पैदा हुए हैं। हम अपने परिवार, समुदाय और राष्ट्र के पापों से प्रभावित होते हैं। दुनिया में हर जगह विश्वासी ऐसे समाज द्वारा बनाई गई स्थितियों को सहन करते हैं, जिन पर उनका नियंत्रण नहीं होता है। एक परिवार गरीबी का अनुभव कर सकता है, क्योंकि उसके पास स्वतंत्रता और अवसर कम है। एक बच्चा शारीरिक दोष के साथ पैदा हो सकता है, भले ही उसने पाप करने का कोई विकल्प नहीं चुना हो (यूहन्ना 9:1-3)।

परमेश्वर बच्चों को देने के बारे में उन कारणों से निर्णय नहीं लेता जिन्हें हम समझ सकते हैं। कई बार जो लोग लापरवाह, विद्रोही पाप में रहते हैं, उनके कई बच्चे होते हैं और वे उनका पालन-पोषण उस तरह से नहीं करते जिससे परमेश्वर की महिमा हो (भजन सहिंता 17:14)। कभी-कभी विश्वासयोग्य विश्वासियों के बच्चे नहीं होते हैं। निःसंदेह हमें यह नहीं मानना चाहिए कि एक व्यक्ति के विशेष पाप के परिणामस्वरूप निःसंतान होना आया है।

हम जानते हैं कि परमेश्वर जब चाहे तब चँगाई और आशीष में हस्तक्षेप कर सकता है, लेकिन सामान्य तौर पर, विश्वासी दुनिया की परिस्थितियों को सहन करते हैं। हम विश्वास के साथ उस समय की प्रतीक्षा करते हैं, जब परमेश्वर अपनी सृष्टि का नवीनीकरण करेगा (रोमियों 8:18-23)।

किसी महिला को निःसंतान होने के लिए दोष देना सही नहीं है, मानो कि उसे अपने पाप के कारण ही वह श्राप मिला हो। इसी तरह, जब एक अजन्मा बच्चा जन्म से पहले मर जाता है, तो मृत्यु आमतौर पर माँ के किसी भी कार्य के कारण नहीं होती है।

आदम के पाप, दूसरों के पाप और दुनिया की सामान्य स्थिति के कारण लोग कई तरह से पीड़ित होते हैं। क्योंकि सभी ने पाप किया है, मानवता दुनिया की स्थिति के लिए एक साथ दोषी है, लेकिन लोग विभिन्न विशिष्ट तरीकों से पीड़ित होते हैं।

परमेश्वर के आश्चर्यकर्म

यीशु ने चँगाई देकर और अन्य आश्चर्यकर्म करके परमेश्वर का प्रेम दिखाया। बाइबल में दर्ज पूरे इतिहास में, हम लोगों के लिए परमेश्वर के आश्चर्यकर्म के कई उदाहरण देखते हैं।

परमेश्वर चाहता है कि हम इस सुंदर दुनिया में खुशी से और बिना कष्ट के रहें (उत्पत्ति 1:28, 31, 1 तीमुथियुस 6:17)। हालाँकि, परमेश्वर की पहली प्राथमिकता हमें पाप से बचाना है. ताकि हम उसके साथ एक अनन्त रिश्ते का आनंद ले सकें। पापियों के उद्धार में समय लगता है, क्योंकि लोगों को पश्चाताप करने और विश्वास करने का निर्णय लेना पड़ता है। यदि परमेश्वर अब सभी कष्टों को समाप्त कर दे, तो कुछ ही लोग पश्चाताप करेंगे, क्योंकि वे पाप की बुराई को नहीं समझेंगे। इसलिए अभी, जब तक पूरी दुनिया में सुसमाचार का प्रचार किया जा रहा है, तब तक आम तौर पर पीड़ा जारी रहेगी। हम यह उम्मीद नहीं कर सकते कि आश्चर्यकर्म हमारी सभी समस्याओं का समाधान कर देंगे और हमारे सारे कष्टों को दूर कर देंगे, हालाँकि परमेश्वर कभी-कभार हमारे लिए चमत्कार करता हैं। अंततः, उन लोगों के लिए सभी कष्ट समाप्त हो जाएँगे जो परमेश्वर के साथ संबंध में आते हैं। लेकिन इस बीच, परमेश्वर हमारे कष्टों में हमारे साथ दुःखी होता है (यूहन्ना 11:35) और हमें कई तरीकों से सांत्वना देता है (2 कुरिन्थियों 1:3-7)।

परमेश्वर के आश्चर्यकर्म में से एक निःसंतान स्त्री को बच्चों की माँ बनाना है (भजन सहिंता 113:9)।

बाइबल में कम से कम छह बार दर्ज है, जब परमेश्वर ने एक निःसंतान महिला को बेटा दिया। हालाँकि परमेश्वर ने यह चमत्कार कई बार किया है, ये छह बार दर्ज किया गया है, क्योंकि बच्चे इतिहास में महत्वपूर्ण थे। इसहाक का जन्म सारा से हुआ (उत्पत्ति 21:1-3)। याकूब और एसाव का जन्म रिबका से हुआ (उत्पत्ति 25:21, 25-26)। यूसुफ का जन्म राहेल से हुआ (उत्पत्ति 30:22-24)। शिमशोन का जन्म मानोह की पत्नी से हुआ था (न्यायियों 13:2-3, 24)। शमूएल का जन्म हन्ना से हुआ (1 शमूएल 1:20)। यूहन्ना का जन्म इलीशिबा से हुआ था (लूका 1:13, 57)।

इन छह मामलों में से प्रत्येक में, दम्पति को दुःख का अनुभव हुआ, क्योंकि पत्नी निःसंतान थी। बाइबल के अभिलेख में, परमेश्वर ने महिला के बच्चे की कमी के लिए किसी को दोषी नहीं ठहराया। बाइबल इस बात का कोई संकेत नहीं देती कि परमेश्वर माता-पिता में से किसी से अप्रसन्न था। लूका 1:5-7 कहता है कि जकरयाह और इलीशिबा परमेश्वर के सामने धर्मी थे, पूरी तरह से उसकी आज्ञाओं का पालन करते थे, फिर भी वे बुढ़ापे तक निःसंतान थे। ऐसा कोई अभिलेख नहीं है कि इन छह लेखों में से किसी भी माता-पिता ने आश्चर्यकर्म के लिए प्रार्थना करते समय पश्चाताप किया या पाप कबूल किया। माता-पिता को भेजे गए परमेश्वर के संदेशों में उनके पहले से बच्चे न होने के कारण का उल्लेख नहीं होता है। ये मामले इस तथ्य को दर्शाते हैं कि निःसंतान होने के लिए लोगों को व्यक्तिगत् रूप से दोषी नहीं ठहराया जाना चाहिए।

हमारे लिए यह प्रार्थना करना उचित है कि परमेश्वर बच्चों की आशीष देंगे, लेकिन आखिर में, हमें परमेश्वर के फैसले को स्वीकार करना होगा। हमें यह नहीं मानना चाहिए कि हर मामले में एक बच्चा देना परमेश्वर की इच्छा है, जैसे परमेश्वर बीमारी के हर मामले को ठीक नहीं करता है या हर तरह की पीड़ा को दूर नहीं करता है।

प्रेरित पौलुस ने उस चीज़ के बारे में तीन बार प्रार्थना की जो उसके शरीर में कांटे के समान थी (2 कुरिन्थियों 12:8-10)। हम नहीं जानते कि असल में समस्या क्या थी, लेकिन ऐसा लगता है कि यह कुछ शारीरिक समस्या थी। यह कुछ ऐसा था कि उसे उम्मीद थी कि परमेश्वर बदल देगा, इसलिए उसने आश्चर्यकर्म के लिए प्रार्थना की। परमेश्वर ने उससे कहा कि वह काँटा हटाने के बदले वह अनुग्रह देगा जो कमज़ोरी से भी बड़ा होगा। पौलुस ने कहा कि यह विशिष्ट कमजोरी परमेश्वर की महिमा करेगी क्योंकि इससे उसे परमेश्वर की शक्ति दिखाने में मदद मिली। पौलुस ने आगे कहा कि वह कमजोरियों और कष्टों से खुश होगा, क्योंकि वे एक माँग को पूरा करते हैं जिससे कि परमेश्वर की महिमा की जा सके।

प्रेरित पौलुस विश्ववास का एक नायक था, लेकिन उसे वे आश्चर्यकर्म नहीं मिले जिन्हें वह हमेशा चाहता था। उसने परमेश्वर की इच्छा को स्वीकार कर लिया। हालाँकि हम हमेशा परमेश्वर की आशीष के आश्चर्यकर्म को प्राथमिकता देते हैं, हमें परमेश्वर के निर्णयों को स्वीकार करना चाहिए। कभी-कभी वह हमारी कमज़ोरियों को दूर करने के तरीके से अधिक महिमा पाता है।

► ऐसे समय का उदाहरण दीजिए जब परमेश्वर ने आपके जीवन में उस आश्चर्यकर्म को दिखाते हुए अपनी चिन्ता दिखाई हो, जिसकी आपको आशा थी।

निस्संतान होने पर सांस्कृतिक प्रतिक्रियाएँ

बच्चों के लिए महत्व देने के मामले में सभी संस्कृतियाँ एक जैसी नहीं होती हैं। कुछ देशों में, परिवार कई बच्चे पैदा करना चाहते हैं। बच्चे उस काम में मदद कर सकते हैं, जिससे परिवार की सहायता होती है। बड़े परिवार के सदस्य, चचेरे भाई-बहनों और चाचाओं तथा अन्य लोगों के साथ, जरूरत पड़ने पर सदस्यों की रक्षा और देखभाल करते हैं। बड़े परिवार में प्रत्येक पत्नी बच्चे पैदा करके सदस्यों को जोड़ना चाहती है। जिस व्यक्ति के कई बच्चे हों, विशेषकर बेटे हों, वह बड़े परिवार में महत्वपूर्ण होता है। परिवार से अपेक्षा की जाती है कि वह परिवार के बुजुर्ग सदस्यों की देखभाल करे।

अन्य देशों में, अधिकांश परिवार शहरों या कस्बों में रहते हैं और उनकी सहायता पिता और माता के रोजगार से होती है। शहर में बच्चे परिवार की सहायता करने में कम सक्षम होते हैं। बच्चों को पालन-पोषण और शिक्षा देना महँगा हो सकता है। समय के साथ, चूंकि परिवार कई पीढ़ियों से शहर में रहते हैं, इसलिए वे कम बच्चे चाहते हैं। कई शहरी परिवार केवल एक या दो बच्चे ही चाहते हैं।

कई संस्कृतियों में बच्चों का महत्व इतना मजबूत है कि प्रत्येक दम्पति को सम्मानित और महत्वपूर्ण महसूस करने के लिए बच्चे पैदा करने चाहिए। एक निःसंतान महिला को लगता है कि वह अपनी सबसे महत्वपूर्ण भूमिका में असफल हो रही है। जो महिला कभी विवाह नहीं करती, वह शर्मिंदा महसूस करती है, क्योंकि उसके कोई बच्चे नहीं हैं और उसे किसी की पत्नी

बनने के लिए नहीं चुना गया है।

कई संस्कृतियों में परिवार चाहते हैं कि अगली पीढ़ी में परिवार का नेतृत्व करने और उसे मजबूत करने के लिए बेटे हों। बेटियों को बहुत कम महत्व दिया जाता है। बच्चियों का गर्भपात कराया जा सकता है या उन्हें छोड़ दिया जा सकता है। कुछ देशों ने समय से पहले अजन्मे बच्चे के लिंग का पता लगाना गैरकानूनी बना दिया है, क्योंकि बहुत से परिवार अजन्मी बेटियों को मार देते हैं। हम पवित्रशास्त्र से जानते हैं कि लड़कियों की गरिमा और महत्व लड़कों के बराबर है, क्योंकि वे सभी परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए हैं (उत्पत्ति 1:27)। इसलिए, जो परिवार मसीह का अनुसरण कर रहे हैं, उन्हें बेटों और बेटियों दोनों को समान रूप से महत्व देना चाहिए, चाहे उनकी संस्कृति में कुछ भी सामान्य हो।

यदि किसी परिवार को किसी बच्चे पर गर्व करने की तीव्र आवश्यकता है, तो वे शारीरिक या मानसिक रूप से विकलांग बच्चे को अस्वीकार कर सकते हैं। कुछ देशों में, कई विकलांग बच्चे अनाथालयों में इसलिए हैं, क्योंकि उनके माता-पिता उन्हें नहीं चाहते हैं। बच्चों के साथ यह व्यवहार गलत है, क्योंकि वे परमेश्वर के स्वरूप में बने हैं और उनकी क्षमताओं या सीमाओं की परवाह किए बिना, उनकी दृष्टि में अनमोल हैं।

कुछ संस्कृतियों में बहुविवाह की प्रथा बच्चों के महत्व पर आधारित है। एक पुरुष कई पत्नियाँ रखकर अपने बच्चों को बढ़ाना चाहता है। बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर की योजना है कि एक पुरुष की एक पत्नी हो (उत्पत्ति 2:22-24, 1 तीमुथियुस 3:2)।

पुराने नियम में ऐसे समय दर्ज हैं, जब एक पत्नी बच्चे पैदा करने के लिए अपने पति को एक दासी देती थी। पत्नी को अपने नौकर के बच्चों से दर्जा प्राप्त हुआ। याकूब की पत्नियाँ राहेल और लिआ:, प्रत्येक ने याकूब को एक दासी दी ताकि अधिक बच्चों के माध्यम से प्रतिष्ठा प्राप्त कर सके।

बच्चों को जोड़ने के लिए नौकरों के इस्तेमाल से रिश्ते उलझ गए। सारा ने हाजिरा को अब्राहम को यह आशा करते हुए दे दिया कि अगर हाजिरा को बच्चा हुआ तो उसकी अपनी स्थिति बेहतर होगी (उत्पत्ति 16:2-6)। हाजिरा गर्भवती हो गई और उसने महसूस किया कि वह सारा से श्रेष्ठ है। सारा ने अपना अधिकार स्थापित करने की कोशिश करते हुए उसे कड़ी सज़ा दी।

लेलिया का जन्म पश्चिमी अफ़्रीकी देश में हुआ था। शादी के तीन साल बाद भी उसकी कोई संतान नहीं थी। लेलिया की संस्कृति में, एक बच्चे को गोद लेने से किसी महिला का खुद का बच्चा न होने की शर्म दूर नहीं होती है। लेलिया को गाँव के एक गरीब परिवार में एक महिला मिली जो गर्भवती थी और उसने उसके बच्चे को खरीदने की व्यवस्था की। लेलिया ने कई महीनों तक खुद को गर्भवती दिखाने के लिए अपनी शर्ट के नीचे कुछ पहना था। जब बच्चे के जन्म का समय हुआ, तो लेलिया ने प्रसव के लिए अस्पताल जाने का नाटक किया, फिर गाँव से बच्चे को लेकर घर आ गई।

यदि कोई परिवार मुख्य रूप से अपने परिवार के लाभ के लिए बच्चे चाहता है, तो वे परमेश्वर के स्वरूप में बने एक इंसान के रूप में बच्चे को महत्व देने में विफल हो सकते हैं। वे किसी विकलांग बच्चे को प्रेम करने और स्वीकार करने से इंकार कर

सकते हैं। वे बेटी को अस्वीकार कर सकते हैं, क्योंकि वे बेटा चाहते हैं। वे निःसंतान महिला को लज्जित और बेकार महसूस कराते हैं। वे अनाथ या बेघर बच्चों को गोद लेने का मूल्य नहीं देखते हैं। ये सभी दृष्टिकोण और कार्य स्वार्थपूर्ण और गलत हैं। जब हम इनमें से किसी भी कारण से लोगों के साथ बुरा व्यवहार करते हैं, तो हम अपने सृष्टिकर्ता का अपमान करते हैं (निर्गमन 4:11, नीतिवचन 14:31)।

हेनरी VIII 1509-1547 तक इंग्लैंड का राजा था। वह एक बेटे की बहुत ज्यादा चाहत रखता था। क्योंकि उसकी पत्नी की एक बेटी थी, लेकिन बेटा जीवित नहीं था, हेनरी ने उसे तलाक दे दिया और दूसरी महिला से शादी कर ली। जब उसकी दूसरी पत्नी को बेटा नहीं हुआ तो उसने उस पर देशद्रोह का आरोप लगाया और उसे फाँसी देने का आदेश दिया।

चिकित्सा विज्ञान ने साबित कर दिया है कि पुरुष का शुक्राणु बच्चे का लिंग निर्धारित करता है। महिला का शरीर यह तय नहीं करता कि उसे बेटा होगा या बेटी। हालाँकि, कई पुरुष अपनी पत्नियों से इसलिए नाराज़ रहे हैं, क्योंकि उनकी बेटियाँ हैं, बेटे नहीं।

यूसुफ नाम के एक व्यक्ति और उसकी पत्नी की दो बेटियाँ थीं। जब यूसुफ की पत्नी अपने तीसरे बच्चे को जन्म देने के लिए अस्पताल गई, तो यूसुफ को एक बेटे की उम्मीद थी। तीसरी संतान बेटी थी। यूसुफ इतना अधिक क्रोधित था कि उसने अपनी पत्नी से मिलने या अस्पताल का बिल चुकाने के लिए अस्पताल जाने से इनकार कर दिया।

अय्यूब 24 में, अय्यूब ने एक दुष्ट व्यक्ति के कार्यों का एक लंबा विवरण दिया गया है। लिखा हुआ एक कार्य यह है कि दुष्ट व्यक्ति निःसंतान स्त्री के साथ बुरा व्यवहार करता है (अय्यूब 24:21)। जब निःसंतान स्त्री के साथ निर्दयी व्यवहार किया जाता है, तो परमेश्वर प्रसन्न नहीं होता।

► आपकी संस्कृति बच्चों को किस प्रकार महत्व देती है? ऐसे कौन से कारण हैं, जिनकी वजह से लोग बच्चे पैदा करना चाहते हैं?

► आपकी संस्कृति में रीति-रिवाजों के कारण क्या अन्याय होते हैं?

परमेश्वर क्या कहता है

पवित्र शास्त्र में दर्ज छह वर्णनों में जब परमेश्वर ने एक निःसंतान महिला को बेटा दिया, तो माता-पिता को पहले निःसंतान होने के लिए किसी भी तरह से दोषी नहीं ठहराया गया था। वास्तव में, जोड़ों को विशेष पुत्रों के माता-पिता बनने के लिए परमेश्वर द्वारा विशेष रूप से चुना गया था। जकरयाह और इलीशिबा को धर्मी कहा गया (लूका 1:5-6)। हमें यह कभी नहीं मानना चाहिए कि एक महिला निःसंतान है, क्योंकि उसने परमेश्वर को प्रसन्न नहीं किया है।

अय्यूब 24:21 कहता है कि निःसंतान स्त्री के साथ दुर्व्यवहार करना दुष्ट व्यक्ति का कार्य है। परमेश्वर निःसंतान महिला का न्याय नहीं करता या उसके साथ दुर्व्यवहार नहीं करता, और न ही हमें करना चाहिए।

यशायाह 56:4-5 में परमेश्वर उस व्यक्ति से बात करता है, जो बच्चे पैदा करने में असमर्थ है। परमेश्वर कहता हैं कि यदि यह मनुष्य परमेश्वर की आज्ञा का पालन करेगा और उसकी वाचा के अनुसार जीवन व्यतीत करेगा, तो उसके पास बेटे-बेटियों से कहीं बेहतर पद और प्रतिष्ठा मिलेगी।

प्रेरित पौलुस ने स्वयं को तीमुथियुस (1 तीमुथियुस 1:2) और तीतुस (तीतुस 1:4) और उनेसिमुस (फिलेमोन 10) का पिता बताया। उसने स्वयं को कुरिन्थियों के विश्वासियों का पिता कहा (1 कुरिन्थियों 4:15)। वह उसका शारीरक पिता नहीं था, बल्कि आध्यात्मिक पिता था। उसका आध्यात्मिक पिता बनना अधिक महत्वपूर्ण था।

मत्ती 12:46-50 हमें उस समय के बारे में बताती है, जब यीशु शिक्षा दे रहा था, तो उसकी माँ और भाई उससे मिलने आए। यीशु ने अपने सुननेवालों से पूछा, "मेरी माता कौन है, और मेरे भाई कौन हैं?" फिर उसने कहा कि जो लोग परमेश्वर की इच्छा पर चलते हैं, वे उसके भाई, और बहनें, और माँ हैं। हम जानते हैं कि यीशु को अपने परिवार की चिन्ता थी; क्रूस पर भी उसने अपनी माँ की देखभाल की व्यवस्था की (यूहन्ना 19:26-27)। लेकिन यीशु कह रहा था कि आत्मिक परिवार जैविक परिवार से भी अधिक महत्वपूर्ण है।

विश्वास का परिवार जैविक परिवार का स्थान नहीं लेता है, लेकिन विश्वास के परिवार में किसी व्यक्ति का स्थान उसे सबसे महत्वपूर्ण पहचान देता है। कलीसिया में इस्तेमाल किए गए *भाई* और *बहन* शब्द विश्वास के परिवार में रिश्तों के महत्व को दर्शाते हैं (कुलुस्सियों 1:2)।

दबोरा एक भविष्यद्वक्ता थी, जिसने इस्राएल के लिए न्यायी के रूप में कार्य किया (न्यायियों 4:4)। दबोरा ने एक सताने वाले राष्ट्र से मुक्ति के लिए युद्ध के माध्यम से इस्राएल राष्ट्र का नेतृत्व भी किया। न्यायियों 5:7 में, दबोरा ने स्वयं को इस्राएल में एक माँ कहा। बाइबल में दबोरा के जैविक बच्चों का कभी उल्लेख नहीं है, लेकिन वह इस्राएल के लिए एक माँ थी, क्योंकि उसने अपनी अगुवाई से लोगों की देखभाल की।

प्रेरित पतरस ने कहा कि जो महिलाएँ सारा के उदाहरण का अनुसरण करती हैं, वे उसकी बेटियाँ हैं। कल्पना कीजिए कि उस बयान से सारा को कितना बड़ा दर्जा दिया गया है! यह स्थिति उसके विश्वास और आज्ञाकारिता के उदाहरण पर आधारित है, न कि इसहाक की माँ के रूप में उसकी भूमिका पर।

वे सभी लोग जो विश्वास के द्वारा अनुग्रह से बचाए गए हैं, अब्राहम की संतान कहलाते हैं (गलातियों 3:7)। अब्राहम को लाखों विश्वासियों के पिता के रूप में उच्च सम्मान दिया गया है। अब्राहम और सारा के उदाहरणों से हम देखते हैं कि परमेश्वर आत्मिक पितृत्व और मातृत्व का अत्याधिक सम्मान करता है।

प्रेरित पौलुस ने अविवाहित रहने के लाभों का वर्णन किया। अविवाहित व्यक्ति कई अन्य जिम्मेदारियों के बिना भी परमेश्वर को प्रसन्न करने पर ध्यान केंद्रित कर सकता है (1 कुरिन्थियों 7:32-35)। भले ही अविवाहित व्यक्ति निःसंतान हो, तथापि पौलुस ने कहा है कि अविवाहित रहना सर्वोत्तम है, यदि व्यक्ति शुद्ध जीवन जी सकता है। इन कथनों के कारण, हम निश्चिंत

हो सकते हैं कि कुछ लोगों के लिए अकेला रहना परमेश्वर की इच्छा है।

अकेले रहने की तरह ही, निःसंतान होने के भी फायदे हैं। जिस प्रकार परमेश्वर के पास उन लोगों के लिए विशेष अवसर हैं, जो अविवाहित हैं, उसके पास उन लोगों के लिए भी अवसर हैं, जो विवाहित हैं, लेकिन निःसंतान हैं। हालाँकि उन्होंने निःसंतान रहना नहीं चुना, फिर भी उन्हें परमेश्वर के लिए काम करने की पूरी कोशिश करनी चाहिए।

अकेलेपन, निःसंतान, और हमारी किसी भी अन्य स्थिति में, हम भरोसा कर सकते हैं कि परमेश्वर हमारे माध्यम से हमें और दूसरों को आत्मिक लाभ पहुँचाने के लिए काम करेगा (रोमियों 8:28)।

ऐसे कई बच्चे हैं, जिनके पास देखभाल करने वाले माता-पिता की कमी है। यह संभव है कि कोई भी अपने जीवन में इस आवश्यकता को पूरा नहीं करेगा जब तक कि विश्वास के परिवार में कुछ व्यक्ति या दम्पति उनके प्रति प्रेम दिखाने का प्रयास नहीं करते।

हमें अपने शरीरों को परमेश्वर को बलिदान के रूप में चढ़ाने, परमेश्वर की भक्ति में जीने के लिए बुलाया गया है (रोमियों 12:1)।

सारांश बिंदु

1. बच्चे परमेश्वर की आशीष है, और एक दम्पति के लिए यह प्रार्थना करना सही है कि परमेश्वर उन्हें बच्चे दें।
2. यह मान लेना गलत है कि आश्चर्यकर्म रूप से बच्चा देना हमेशा परमेश्वर की इच्छा होती है। वह हमेशा एक बच्चा देना नहीं चुनता, जबकि वह हमेशा हर दूसरी ज़रूरत के लिए आश्चर्यकर्म नहीं करता।
3. निःसंतान होने के लिए किसी महिला या दम्पति को दोषी ठहराना गलत है। मानवीय स्थिति आदम के पाप, हमारे पूर्वजों के पाप और हमारे समाज के पापों से प्रभावित हुई है।
4. हमें बेटों और बेटियों दोनों को समान रूप से प्रेम और महत्व देना चाहिए, क्योंकि वे परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए हैं।
5. एक व्यक्ति आत्मिक पिता या माता हो सकता है, जो जैविक बच्चों के बिना भी कई पीढ़ियों को प्रभावित करता है।
6. परमेश्वर अविवाहित और निःसंतान लोगों को सेवा के विशेष अवसर देता है।
7. हमें खुद को परमेश्वर के प्रति समर्पित करना चाहिए और उन परिस्थितियों में उनकी महिमा करनी चाहिए जो वह हमारे लिए चुनता है।

पास्टर की सेवकाई

दुर्भाग्य से, कई स्थानों पर कलीसियाओं ने निःसंतान होने के मुद्दे से निपटते समय परमेश्वर के वचन से अधिक अपनी संस्कृतियों का पालन किया है।

एक पास्टर को अपने लोगों को निःसंतान होने को बाइबल के दृष्टिकोण से देखना सीखाना चाहिए, विशेष रूप से जैसा कि पिछले भाग में संक्षेप में बताया गया है।

यदि पास्टर किसी निःसंतान दम्पति के लिए आश्चर्यकर्म की प्रार्थना कर रहा है, तो उसे विश्वास की जिम्मेदारी पत्नी या पति पर नहीं डालनी चाहिए। जब यीशु ने एक छोटे बच्चे को चँगा किया या मृतकों को जीवित किया, तो चँगाई पाया हुआ या पुनर्जीवित व्यक्ति को अपने आश्चर्यकर्म पर विश्वास नहीं था। यदि पास्टर को विश्वास है कि परमेश्वर आश्चर्यकर्म करना चाहता है, तो पास्टर को विश्वास रखना चाहिए और विश्वास की कमी के लिए पत्नी या पति को दोष नहीं देना चाहिए।

रोमियों 12:15 में हमें रोने वालों के साथ रोने को कहा गया है। एक पास्टर को अपनी मंडली के लोगों के दुःख के बारे में पता होना चाहिए। उसे उन लोगों को प्रोत्साहित करने और सांत्वना देने की पहल करनी चाहिए जो नि:संतान या बच्चे के खोने के कारण शोक मना रहे हैं। एक दम्पति अपने अजन्मे बच्चे की मृत्यु पर भी शोक मनाता है, जो जन्म तक जीवित नहीं था। याद रखें कि पत्नी और पति दोनों ही पीड़ित हैं, भले ही वे इसे अलग-अलग तरीकों से दिखाते हों। भले ही वे इसे अलग-अलग तरीकों से दिखाते हों। एक पास्टर को दुःखी लोगों के परामर्श के लिए उसके पास आने का इंतज़ार नहीं करना चाहिए। एक पास्टर को अपनी मंडली को एक-दूसरे को प्रोत्साहित करने वाला और सहयोगी बनना सीखाना चाहिए।

पास्टर को रिश्ते बनाने और वृद्ध जोड़ों या निःसंतान व्यक्तियों की देखभाल करने में मंडली का नेतृत्व करना चाहिए। विश्वास के परिवार के सदस्यों को प्रेम दिखाकर, एक साथ समय बिताकर और व्यावहारिक जरूरतों में मदद करके उनके साथ माता-पिता या दादा-दादी के रूप में व्यवहार करना चाहिए।

पास्टर को अविवाहित और निःसंतान लोगों को कलीसिया और समुदाय की सेवा और आशीष देने के तरीके खोजने में मदद करनी चाहिए। पास्टर को विश्वास के परिवार में प्रत्येक व्यक्ति के महत्व की पुष्टि करनी चाहिए।

सामूहिक चर्चा के लिए

► आपकी संस्कृति के लोग बच्चों को कैसे देखते हैं? वे निःसंतान होने को कैसे देखते हैं?

► आपकी संस्कृति में विश्वास रखने वाले लोग बच्चों को किस प्रकार देखते हैं? आपकी संस्कृति में विश्वास करने वाले निःसंतान होने को किस प्रकार देखते हैं?

► इस पाठ में प्रस्तुत पवित्र शास्त्र के सिद्धांतों का अध्ययन करने से बांझपन के बारे में आपकी समझ कैसे बदल गई है या कैसे चुनौती मिली?

► क्या आपकी कलीसियाई परिवार में ऐसा कोई दम्पति हैं, जो बांझपन से जूझ रहा हैं? यदि हाँ, तो आपकी कलीसिया कैसे सहायक हो सकती है और उन्हें अपने संघर्षों को साझा करने के लिए कैसे एक सुरक्षित स्थान प्रदान कर सकती है?

प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता,

मसीही परिवारों के लिए धन्यवाद। उन पतियों और पत्नियों के लिए धन्यवाद जो आपके लिए जी रहे हैं, और जो वे आपके राज्य में जो योगदान देते हैं, उसके लिए धन्यवाद।

हम उन दम्पति के लिए प्रार्थना करते हैं, जो बांझपन का अनुभव कर रहे हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि आप उनके दिलों को सांत्वना देंगें और प्रोत्साहित करेंगे। उन्हें यह जानने में मदद करें कि बच्चे पैदा करने में उनकी असमर्थता के बावजूद भी, आपका प्रेम उनके लिए अटल है।

यदि यह आपकी इच्छा है कि वे जैविक बच्चे पैदा करें, इसे आपके समय में संभव बनाने के लिए हम आप पर भरोसा करते हैं। चाहे आप उन्हें अपने बच्चे दें या न दें, उन्हें दूसरों के लिए आत्मिक पिता और माता बनने में मदद करें।

सभी विश्वासियों को प्रत्येक व्यक्ति को आपकी छवि में बने व्यक्ति के रूप में महत्व देने में सहायता करें।

आमीन

पाठ सम्बन्धी नियत कार्य

(1) दो पन्नों का एक लेख लिखें जिसमें आप:

- बच्चों और बांझपन के संबंध में अपने समाज के दृष्टिकोण का वर्णन करें।
- बच्चों के बारे में पवित्रशास्त्र की शिक्षा को स्पष्ट करें।
- बाँझपन के बारे में पवित्र शास्त्र की शिक्षा को स्पष्ट करें।
- पवित्र शास्त्र के सिद्धांतों से स्पष्ट करें कि एक विवाहित जोड़े को उनके बांझपन के लिए दोषी क्यों नहीं ठहराया जाना चाहिए।

(2) बांझपन से जूझने वालों को प्रोत्साहित करें।

विकल्प 1: लिखित रूप में वर्णन करें कि आप किसी ऐसे व्यक्ति के प्रति अपनी करुणा और देखभाल कैसे प्रदर्शित कर सकते हैं, जो बांझपन के दुःख से जूझ रहा है। कुछ ऐसी चीज़ों के नाम बताने में स्पष्ट रहें, जो आप कर सकते हैं या कह सकते हैं कि यह मसीह में आपके भाई या बहन के लिए एक आशीष होगी।

विकल्प 2: अपने किसी परिचित को जो बांझपन के दुःख से जूझ रहा है, प्रोत्साहन की एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें। समझने की कोशिश करें वे क्या अनुभव कर रहें हैं। उन्हें बताएँ कि आपको उनकी परवाह है कि वे कैसा महसूस कर रहे हैं। उन्हें बताएँ कि आप उनके लिए प्रार्थना कर रहे हैं। जब आप उन्हें लेख दें, तो उन्हें सुनने के लिए उपलब्ध रहें या उचित तरीके से उनके प्रति अपनी देखभाल प्रदर्शित करें।

जन्म नियंत्रण

पाठ 11 को जारी रखने से पहले, कक्षा को **परिशिष्ट ख का अध्ययन और चर्चा** करनी चाहिए। यह जन्म नियंत्रण की एक संक्षिप्त चर्चा है, जो विवाह और परिवार से सम्बन्धित एक महत्वपूर्ण विषय है।

पाठ 11

एक बच्चे का विकास और देखभाल

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में, छात्र यह करने लगेंगे:

(1) हर एक व्यक्ति को रचने में परमेश्वर के अद्भुत कार्य की सराहना करें।

(2) विश्वास रखें कि मानवीय जीवन पवित्र है।

(3) गर्भधारण के समय से ही मानवीय जीवन को बचाने के लिए प्रेरित रहें।

(4) बच्चों के स्वस्थ विकास के लिए माता-पिता की देखभाल के महत्व को समझें।

छोटे जुड़वाँ बच्चे

मार्क और मैरी भारत में रहते थे। उनकी शादी को कुछ साल हो गए थे और उनका कोई भी बच्चा नहीं था, तभी अचानक उन्हें एक अवसर मिला। मैरी के एक रिश्तेदार ने जुड़वाँ लड़कियों को जन्म दिया था और उसने महसूस किया की वह उनकी देखभाल नहीं कर सकती थी। मार्क और मैरी ने दोनों छोटी बच्चियों के उपहार को बड़ी खुशी से स्वीकार कर लिया, लेकिन उन्हें मुशकिलों का सामना करना पड़ा। बच्चियों का जन्म बहुत पहले हो गया था और उनका वजन लगभग 1.3 किलोग्राम ही था। नए माता-पिता को छोटी बच्चियों को खिलाने और उनकी देखभाल करने का प्रयास करते समय दोस्तों से बहुत कम मदद या सलाह मिली थी। उन्होंने कई रातें कम नींद के साथ बिताईं, लेकिन बच्चियाँ जीवित रहीं और बड़ी होकर सुन्दर, स्वस्थ बच्चियाँ बन गईं।

एक शिशु

गर्भावस्था के दौरान शिशु का विकास

► एक छात्र को समूह के लिए भजन संहिता 139:13-18 पढ़ना चाहिए।

यह आयत हमें बताती है कि गर्भ से ही परमेश्वर हमें जानता है, अर्थात् हमारे शरीर को रचने से भी पहले (आयत 16)। आपके जन्म से पहले ही परमेश्वर आपको जानता है और उसके पास आपके लिए योजना है।

जैसे ही पुरुष का शुक्राणु महिला के अंडाणु के साथ मिलता है, तो उसी क्षण गर्भ धारण होता है। उस क्षण, एक नया मानवीय जीवन-एक नया व्यक्ति-अस्तित्व में आता है! उस व्यक्ति की सारी आनुवंशिक जानकारी उस एक नई कोशिका में मौजूद

होती है। गर्भ धारण के 24 घंटे के अंदर वह कोशिका दो कोशिकाओं में विभाजित हो जाती है। उनमें से प्रत्येक कोशिका दो और कोशिकाओं में विभाजित हो जाती है। जैसे-जैसे प्रत्येक कोशिका दो भागों में विभाजित होती जाती है, कोशिकाओं की सँख्याएँ बढ़ती चली जाती हैं। लगभग एक सप्ताह के भीतर, बच्चा, अब कई कोशिकाओं के साथ, अपनी माँ के गर्भ के अंदर जुड़ जाता है, जहाँ वह बढ़ता और विकसित होता रहता है। हर एक कोशिका में उस व्यक्ति (डीएनए) को बनाने के लिए "कोड" होती है। कोशिकाएँ कोड के निर्देशों का पालन करती हैं और शरीर के प्रत्येक भाग को बनाने में विशेषज्ञ होती हैं।

तीसरे सप्ताह तक, बच्चे की रीढ़ की हड्डी और मस्तिष्क बनना शुरू हो जाता है। गर्भावस्था के चौथे सप्ताह के आसपास, बच्चे की आँखें बननी शुरू हो जाती हैं, दिल काम करना शुरू कर देता है और बच्चे की बाहें बननी शुरू हो जाती हैं। गर्भावस्था के 12वें सप्ताह तक बच्चे के शरीर में सभी आवश्यक अंग विकसित हो जाते हैं।

गर्भधारण के 14 सप्ताह बाद, एक बच्चे की अनूठी ऊँगलियों के निशान पूरी तरह से बन जाते हैं। गर्भावस्था के 16-24 सप्ताह तक, एक माँ अपने बच्चे को अपने गर्भ में हिलता हुआ महसूस कर सकती है। लगभग 26-28 सप्ताह में बच्चे के फेफड़े सांस लेने के लिए पर्याप्त विकसित हो जाते हैं और बच्चे का वजन लगभग 0.9 किलोग्राम होता है। शिशु आमतौर पर गर्भधारण के बाद लगभग 38-40 सप्ताह बाद पैदा होता हैं। हर एक बच्चा हमारे कर्ता परमेश्वर द्वारा रची गई एक अद्भुत, विशेष रचना है।

► एक छात्र को समूह के लिए सभोपदेशक 11:5 पढ़ना चाहिए।

यह वास्तव में अद्भुत है कि कैसे परमेश्वर एक बच्चे को उसकी माँ के गर्भ में बनाता है, और विकसित करता है। लोग कभी भी इस प्रक्रिया या इसमें शामिल सभी चीजों को पूरी तरह से समझ नहीं सकते। फिर भी, सभी महाद्वीपों, समाजों और संस्कृतियों में, मनुष्य का विकास एक ही क्रम का अनुसरण करता है। सृष्टिकर्ता की रचना उत्तम है!

► एक छात्र को समूह के लिए अय्यूब 10:8-12 पढ़ना चाहिए।

इन आयतों में अय्यूब उन उपमाओं का उपयोग करता है, जो गर्भाधारण और उसकी माँ के गर्भ में एक बच्चे के विकास का उल्लेख करती हैं। अय्यूब हमें बताता है कि सृष्टिकर्ता परमेश्वर जीवन का दाता है।

परमेश्वर के स्वरूप में रचे होने का महत्त्व

उत्पत्ति 1:26-27 और उत्पत्ति 9:6 हमें बताती हैं कि हम परमेश्वर के स्वरूप में रचे गये हैं। समस्त मानवीय जीवन पवित्र है। इस कारण से, किसी भी मनुष्य की हत्या करना पाप है (उत्पत्ति 9:5, निर्गमन 20:13)।

यहेजकेल 16:20-21, 36, 38 में परमेश्वर उन लोगों के खिलाफ कठोरता से बात करता है, जो एक बच्चे के जीवन को समाप्त करते हैं। वह इस्राएलियों को मूर्तियों पर बच्चों के बलिदान के बारे में चेतावनी देता है और घोषणा करता है कि उनका न्याय कठोर होगा।

यशायाह 46:3-4 में, परमेश्वर मानवीय विकास के सभी चरणों में मानवता की देखभाल की बात करता हैं, जब वह यह कहता हैं:

> हे याकूब के घराने, हे इस्राएल के घराने के सब बचे हुए लोगो, मेरी ओर कान लगाकर सुनो; तुम को मैं तुम्हारी उत्पत्ति ही से उठाए रहा और जन्म ही से लिए फिरता आया हूँ। तुम्हारे बुढ़ापे में भी मैं वैसा ही बना रहूँगा और तुम्हारे बाल पकने के समय तक तुम्हें उठाए रहूँगा। मैं ने तुम्हें बनाया और तुम्हें लिए फिरता रहूँगा; मैं तुम्हें उठाए रहूँगा और छुड़ाता भी रहूँगा।

यह कितना सुन्दर वादा है!

सभी लोगों का मूल्य है, इसमें अजन्मे बच्चे, विकलांग, विशेष आवश्यकता वाले लोग और बुजुर्ग शामिल हैं। किसी व्यक्ति का मूल्य इस बात पर निर्भर नहीं होता कि वह क्या कर सकता है या अकेले होने पर जीवित रह पाएगा या नहीं। हर एक व्यक्ति का मूल्य है, क्योंकि सभी लोग परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए हैं।

बाइबल हमें बताती है कि गर्भाधारण के समय से ही हर एक बच्चा परमेश्वर की दृष्टि में अनमोल है (भजन संहिता 139:13-18)। इस वजह से, हम जानते हैं कि गर्भधारण के क्षण से ही हम एक व्यक्ति हैं। जानबूझकर गर्भपात के माध्यम से गर्भावस्था को समाप्त करना एक व्यक्ति की हत्या करना है।

अजन्मे बच्चों के जीवन की रक्षा करने और माताओं की सेवा करने के लिए मसीह का अनुसरण करने वालों को कम से कम चार तरीकों से काम करना चाहिए।

1. उन्हें ऐसे कानून बनाने और निर्णय लागू करने के लिए अपनी सरकारों और अपने देश की कानून प्रद्धतियों को प्रभावित करना चाहिए, जो अजन्मे शिशुओं की हत्या करने से बचाते हैं।
2. उन्हें उन गर्भवती महिलाओं को व्यावहारिक मदद देनी चाहिए जो महसूस करती हैं कि गर्भपात ही उनका एकमात्र विकल्प है, ताकि वे अपने बच्चों के जीवन की रक्षा करने में सक्षम महसूस करें।
3. उन्हें अवांछित बच्चों की देखभाल करनी चाहिए।
4. उन्हें उन महिलाओं को अनुग्रह और आत्मिक सहायता प्रदान करनी चाहिए जो पिछले गर्भपात के अपराध से पीड़ित हैं।

अजन्मे बच्चे की देखभाल

यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि माँ अपने गर्भ में जिस बच्चे को पालती है, उसकी एक शाश्वत नियति होती है। वह व्यक्ति सदैव अस्तित्व में रहेगा। इस कारण से, माता-पिता को अपने बच्चों के जीवन के सभी पहलुओं में देखभाल करनी चाहिए: शारीरिक, मानसिक, सामाजिक/भावनात्मक और आत्मिक!

►एक छात्र को समूह के लिए मत्ती 18:2, 10 पढ़ना चाहिए।

एक पुरुष का व्यवहार उसके अजन्मे बच्चे के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है और उसे पहली बार पिता बनने से भी रोक सकता है। शराब, कोकीन या धूम्रपान पुरुष के शुक्राणु को नुकसान पहुँचा सकता है और बांझपन (गर्भाधारण असंभव होना) या गर्भपात (गर्भावस्था के दौरान स्वाभाविक रूप से बच्चे की मृत्यु) की संभावना बढ़ सकती है।

एक गर्भवती माँ द्वारा नशीली दवाओं (निर्धारित या अवैध), शराब या सिगरेट जैसे हानिकारक पदार्थों का उपयोग उसके बच्चे को स्थायी रूप से नुकसान पहुँचा सकता है। ऐसे पदार्थ शिशु के विकास में बाधा डालते हैं और शिशु शारीरिक या मानसिक समस्याओं के साथ पैदा होता है।[37]

अजन्मे बच्चे के विकास के दौरान सबसे महत्वपूर्ण समय में से एक वह होता है, जब अंग और ऊतक पहली बार विकसित हो रहे होते हैं, खासकर गर्भावस्था के 3-4 सप्ताह के बीच। इस दौरान, कई महिलाओं को अभी तक पता नहीं होता कि उनके गर्भ में एक बच्चा पल रहा है!

► एक छात्र को समूह के लिए 1 कुरिन्थियों 10:31 पढ़ना चाहिए।

हालाँकि एक माँ अपने अजन्मे बच्चे के स्वास्थ्य को नियंत्रित नहीं कर सकती है, लेकिन उसे यह सुनिश्चित करके बच्चे की संभव मदद करनी चाहिए कि उसे अच्छा पोषण मिल रहा है और हानिकारक पदार्थों से परहेज किया जा रहा है। परमेश्वर कहता है कि बच्चे अनमोल हैं, और जब हम उनके साथ ऐसा व्यवहार करते हैं, तो हम परमेश्वर की महिमा करते हैं।

यह एक दुःखद घटना है, जब एक अजन्मा बच्चा जन्म लेने तक जीवित नहीं रहता है। आमतौर पर अजन्मे बच्चे की मृत्यु माँ के किसी भी काम का परिणाम नहीं होती। यह माता-पिता के लिए बहुत बड़ी हानि की भावना है, और अन्य विश्वासियों को इस समय उन्हें सांत्वना देने का प्रयास करना चाहिए।

जन्म

हालाँकि बच्चे के जन्म के अनुभव को लेकर कई सांस्कृतिक अंतर मिलते हैं, लेकिन दुनिया में हर जगह महिलाओं के लिए बहुत कुछ समान है। उत्पत्ति 3:16 में, परमेश्वर ने कहा: “मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दुःख को बहुत बढ़ाऊँगा; तू पीड़ित होकर बालक उत्पन्न करेगी; और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा।”

सदियाँ बीत गईं हैं, और परमेश्वर के वचन अभी भी पूरी दुनिया में सत्य हैं। आदम और हव्वा के पहले पाप का प्रभाव अभी भी बच्चे के जन्म की प्रक्रिया में महसूस किया जाता है। यहाँ तक कि यीशु की माँ मरियम भी इस प्रभाव से रहित न रही,

---

[37] ग्रेग कुक और जोन कुक (Greg Cook & Joan Cook), *द वर्ल्ड ऑफ चिल्ड्रन (The World of Children),* 3रड ईड. (Pearson Education, 2013), 85।

उसने भी प्रसव पीड़ा का अनुभव किया (लूका 2:6-7)।

बचपन

शारीरिक विकास

एक बच्चा पहले से बता दिए गए चरणों में शारीरिक क्षमताओं का विकास करता है। बच्चा पहले अपना सिर ऊपर उठाएगा, फिर बैठेगा, फिर रेंगेगा, फिर चलेगा। जब इनमें से कुछ भी अपेक्षित समय सीमा के भीतर नहीं होता है, तो माता-पिता चिंतित हो जाते हैं। जैसे-जैसे बच्चे बढ़ते हैं, हम उन्हें 4-5 साल की उम्र तक कूदते, चढ़ते और दौड़ते हुए देखने की उम्मीद करते हैं। वे दूध पीने से लेकर ठोस आहार खाने तक प्रगति करते हैं। परिवार के सदस्य अपने बच्चे के इन प्राकृतिक शारीरिक विकासों का उत्साह बढ़ाते हैं और उन्हें प्रोत्साहित करते हैं।

मानसिक विकास

देखभाल करने वाले नवजात शिशु की पहली किलकारी सुनते हैं और उम्मीद करते हैं कि लगभग दो महीने की उम्र में बच्चा खुश आवाजें निकालेगा। इसके बाद, बच्चा बड़बड़ाता है और आवाजें दोहराना शुरू कर देता है। लगभग छह महीने की उम्र में बच्चे के “माँ” या “डैडी” कहने से माता-पिता उत्साहित हो जाते हैं। बच्चे आमतौर पर एक साल की उम्र तक शब्द बोलने लगते हैं और दो साल की उम्र तक पूरे वाक्य बोलने लगते हैं।

छोटे बच्चे अपनी याद की हुई बातों से हमें हैरान कर देते हैं। वे कई सवाल पूछते हैं। अगर आपने उनके साथ कुछ विशेष करने का वादा किया है, तो वे हमेशा याद रखते हैं। उनका मानसिक विकास परमेश्वर की योजना के कारण होता है, लेकिन माता-पिता और अन्य देखभाल करने वालों का पोषण बच्चों को उनकी पूरी क्षमता से विकसित होने में मदद करने में बहुत बड़ा अंतर डालता है।

सामाजिक और भावनात्मक विकास

बच्चों को स्वस्थ रहने के लिए अपने माता-पिता की मदद की आवश्यकता होती है, ताकि वे शारीरिक रूप से विकसित हो सकें। हालाँकि, उन्हें अपने सामाजिक और भावनात्मक विकास के लिए प्रोत्साहन की और भी अधिक आवश्यकता है। माता-पिता, शिक्षकों और अन्य देखभाल करने वालों को जानबूझकर हर एक बच्चे को सामाजिक और भावनात्मक रूप से विकसित करने में मदद करनी चाहिए।

जैसे ही माता-पिता निम्नलिखित सूची में दिखाई गई चीजें करते हैं, उनके बच्चों को सामाजिक और भावनात्मक रूप से विकसित और परिपक्व होने में मदद मिलती है।

► इस सूची को पढ़ें। दूसरी बार फिर से सूची को देखें। हर एक वस्तु के अलावा जिसे आप एक अभिभावक के रूप में पहले से ही अच्छा करने का प्रयास कर रहे हैं, उस विशिष्ट तरीके का एक उदाहरण लिखें, जिसे आप कर रहे हैं। जिन पर आप

जानबूझकर काम नहीं कर रहे हैं, उनके बगल में एक सही का चिह्न लगाएँएँ। उनमें से प्रत्येक के अलावा, कुछ ऐसा लिखें जिसे आप शुरू कर सकें। यदि आप माता-पिता नहीं हैं, तो आप सूची में उन वस्तुओं का चयन कर सकते हैं, जिन पर आप उन बच्चों के लिए काम कर सकते हैं, जो आपके रिश्तेदार हैं या जो आपके परिवार के करीब हैं।

.ऐसे तरीके जिनसे आप अपने बच्चों को परिपक्व होने में मदद कर सकते हैं.[38]

(1) अपनी खुद की देखभाल करने के द्वारा

- अपने खुद के तनाव को संभाले।
- अपने परिवार के संसाधनों का प्रबंध करें।
- अन्य माता-पिता को सहायता प्रदान करें।
- जरूरत पड़ने पर दूसरों से समर्थन मांगें और स्वीकार करें।
- अपनी खुद की ताकत और पालन-पोषण की ताकत को पहचानें।
- बच्चे के पालन-पोषण के लक्ष्य निर्धारित करने में स्पष्ट उद्देश्य रखें।

(2) समझ से

- अपने बच्चों और उनके विकास को देखें और समझें।
- पहचानें कि बच्चे अपने आस-पास होने वाली घटनाओं से कैसे प्रभावित होते हैं और कैसे उस पर प्रतिक्रिया करते हैं।

(3) मार्गदर्शन के द्वारा

- उपयुक्त आदर्श, वांछित व्यवहार।
- उचित सीमाएँ स्थापित करें और बनाए रखें।
- बच्चों को जिम्मेदारी सीखने के अवसर प्रदान करें। (अवसर उनके विकास के चरण के लिए उपयुक्त होने चाहिए।)
- समस्या का समाधान निकालने के कौशल सिखाएँ।
- बच्चों की गतिविधियों पर ध्यान दें।
- अन्य बच्चों और वयस्कों के साथ बच्चों के संचार और अनुभवों की निगरानी करें।

---

[38]अडापटड फरोम चार्ल्स ए. स्मिथ, ईटी ए ऐल.(Charles A. Smith, et al.), *नेशनल एक्सटेंशन पेरेंट एजुकेशन मॉडल (National Extension Parent Education Model.)*। (Manhattan, Kansas: Kansas Cooperative Extension Service, 1994)। रिटराईवड फरौम https://www.k-state.edu/wwparent/nepem/nepem.pdf ओन जुलाई 31, 2023।

(4) पोषण करने के द्वारा

- स्नेह और करुणा व्यक्त करें।
- बच्चों में आत्म-सम्मान और आशा पैदा करें।
- बच्चों की भावनाओं और विचारों को सुनें और उन पर ध्यान दें।
- दयालुता सिखाएँ।
- बच्चों के पोषण, आश्रय, कपड़े, स्वास्थ्य और सुरक्षा आवश्यकताओं को प्रदान करें।
- बच्चों के साथ जीवन का आनंद मनाएँ।
- बच्चों को पारिवारिक इतिहास और सांस्कृतिक विरासत से लगाव महसूस करने में मदद करें।

(5) प्रेरणा देकर

- बच्चों को अपने बारे में, दूसरों के बारे में और अपने आस-पास की दुनिया के बारे में सिखाएँ।
- जिज्ञासा, कल्पना और ज्ञान की खोज को प्रोत्साहित करें।
- सीखने की लाभदायक स्थितियाँ बनाएँ।
- बच्चों को जानकारी संसाधित करने और प्रबंधित करने में सहायता करें।

(6) हिमायत करने के द्वारा

- अपने बच्चों और बच्चों के समुदाय को लाभ पहुँचाने के लिए सामुदायिक संसाधन खोजें, उपयोग करें और बनाएँ।
- बच्चों और परिवारों के लिए सहायक वातावरण बनाने के लिए सामाजिक परिवर्तन को प्रेरित करें।
- परिवार, पड़ोस और सामुदायिक समूहों के साथ संबंध बनाएँ।

आत्मिक विकास

क्योकीं परमेश्वर ने हमें आत्मिक जीवन के साथ रचा है (उत्पत्ति 2:7), हमें अपने बच्चों को विश्वास सिखाना चाहिए और उन्हें परमेश्वर के साथ संबंध में रहने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

► छात्रों को समूह के लिए भजन संहिता 78:5-8 और व्यवस्थाविवरण 6:4-9 पढ़ना चाहिए। आप किस तरह से अपने परिवार को परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना सिखा रहें हैं? ऐसे कौन से क्षेत्र हैं, जिनमें आपको विकास करने की आवश्यकता है?

हमें अपने परिवारों को सिखाने के लिए परमेश्वर के आदेशों को गंभीरता से लेना चाहिए। अन्यथा, हम परमेश्वर की आज्ञाकारिता में जीने में असफल हो जाते हैं, और हमारे बच्चे भी परमेश्वर के अधिकार को अस्वीकार कर देंगे

बच्चों को पढ़ाने के विभिन्न रूप हैं, जिनमें शामिल हैं: बाइबल पढ़ना, यीशु के गीत गाना, बाइबल की आयतों को याद करना, प्रार्थना करना, पढ़ाने के लिए प्रश्नों और उत्तरों का उपयोग करना और दैनिक बातचीत करना। कलीसिया में भाग लेना पूरे परिवार के लिए भी महत्वपूर्ण है।

कभी-कभी माता-पिता बच्चों को सोते समय पकड़ कर विश्वास और यीशु के प्रेम के गीत गाते हैं। जब बच्चे अपने माता-पिता की प्रेमपूर्ण देखभाल का अनुभव करते हुए परमेश्चर के प्रेम और विश्वासयोग्यता के बारे में सुनते हैं, तो उनका विश्वास मजबूत हो जाता है।

उपसंहार

जब आप माता-पिता होते हैं, तो आपके दिन लंबे होते हैं। वे व्यस्त हैं; वे थके हुए हैं; वे आपके अपने नहीं हैं। हालाँकि, रोने-धोने, गिरे हुए दूध, गंदे डायपर और कभी न ख़त्म होने वाली दैनिक दिनचर्या के बीच, रुकने और दृष्टिकोण हासिल करने के लिए समय निकालें। याद रखें कि आप परमेश्वर के बच्चों में से एक की देखभाल कर रहे हैं, जिसे उन्होंने अपनी शाश्वत योजना के तहत आपको सौंपा है। वह आपसे अपने बच्चों के लिए एक आदर्श घर, एक प्रभावशाली आय-व्यय योजना, पसंदीदा भोजन या महंगे कपड़े रखने के लिए नहीं कह रहा है। वह आपसे जो पूछ रहा है, वह यह है:

> तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना। और ये आज्ञाएँ जो मैं आज तुझ को सुनाता हूँ वे तेरे मन में बनी रहें; और तू इन्हें अपने बाल–बच्चों को समझाकर सिखाया करना, और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इनकी चर्चा किया करना। (व्यवस्थाविवरण 6:5-7)

सामूहिक चर्चा के लिए

► आपके समुदाय में बच्चों की देखभाल के किन पहलुओं की अक्सर उपेक्षा की जाती है?

► परिवारों को किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है? इस पाठ में वर्णित बच्चे की देखभाल करना उनके लिए आसान क्यों नहीं है?

► विश्वासी गर्भवती माताओं को अपनी और अपने अजन्मे बच्चों की देखभाल में कैसे मदद कर सकते हैं?

► मसीही परिवार छोटे बच्चों और उनकी माताओं के जीवन को आशीष देने के लिए कैसे मिलकर काम कर सकते हैं?

►कलीसिया ऐसी सेवकाई का आयोजन कैसे कर सकती है, जहाँ छोटे बच्चों की ज़रूरतों की देखभाल की जाती हो?

प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता,

हम आपकी आराधना करते हैं, हमारे अद्‌भुत सृष्टिकर्ता। आपने हमें हमारी माता के गर्भ में रचा और जीवन भर हमारी देखभाल की। हमारे जन्म से पहले ही आप हमारे बारे में सब कुछ जानते थे।

कमजोर लोगों की रक्षा के लिए हम जो कर सकते हैं, वह करने में हमारी मदद करें, जिनमें वे भी शामिल हैं, जो अभी अपनी माँ के गर्भ में हैं। उनको भी आशीष दें जो गर्भवती माताओं की सेवा कर रहे हैं।

बच्चे पैदा करने और उनको बड़ा करने के विशेषाधिकार और जिम्मेदारी के साथ हम पर भरोसा करने के लिए धन्यवाद। जैसे ही आप हमारे बच्चों की सृष्टि करते हैं और उनका विकास करते हैं, हमें उनकी देखभाल और उनके प्रशिक्षण में चौकस और मेहनती होने में मदद करें।

हम अपने बच्चों के पालन-पोषण में आपके प्रति आज्ञाकारी रहना चाहते हैं। हमें अपने बच्चों के सामने आपका अच्छी तरह से प्रतिनिधित्व करने में मदद करें। हमें अपने बच्चों को आपसे प्रेम करना और आपकी आज्ञा का पालन करना सिखाने में सक्षम बनाएँ।

आमीन

पाठ सम्बन्धी नियत कार्य

(1) 2 तीमुथियुस 1:3-5 पढ़ें; 1 कुरिन्थियों 4:17; फिलिप्पियों 2:19-23। इन प्रश्नों का उत्तर देते हुए एक अनुच्छेद लिखें:

- किन दो महिलाओं का उल्लेख किया गया है और एक परिवार में उनकी क्या भूमिका थी?
- जाहिर तौर पर उनका तीमुथियुस पर क्या प्रभाव पड़ा?
- आरंभिक कलीसिया के जीवन पर उनकी प्रतिष्ठा का क्या प्रभाव पड़ा?

(2) इस पाठ्यक्रम के दौरान आपके द्वारा याद किए गए बाइबल के अंशों की समीक्षा करें: व्यवस्थाविवरण 6:4-9, रोमियों 6:11-14, कुलुस्सियों 3:5-7, और वे आयतें जिन्हें आपने पाठ 5, के कार्य 4 में याद करने के लिए चुना है। जब आप उन पर काम कर रहे हैं, तो ये आयतें आपको कैसे प्रभावित करती हैं?

(3) भजन संहिता 78:4-8 याद करें। अगली कक्षा की शुरुआत में, जो आपने याद किया है, उसमें से आयतों को लिखें या हवाला दें।

(4) विशेष तौर पर आपके परीवार में हर एक व्यक्ति की व्यक्तिगत् जरूरतों के लिये प्रार्थना करें। खुद के लिये प्रार्थना करें। परमेश्वर आपको किस प्रकार का परिवारिक सदस्य बनने के लिए बुला रहे हैं?

पाठ 12

उद्देश्य के साथ बच्चे का पालन-पोषण

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में, छात्र यह करने लगेंगे:

(1) परमेश्वर ने जो माता-पिता को जिम्मेदारियाँ दी हैं, उनकी व्याख्या करें।

(2) आरंभिक चरित्र विकास के महत्व को समझें।

(3) जीवन के नौ क्षेत्रों में बच्चों के विकास के लिए जानबूझकर योजना बनाने के लिए तैयार रहें।

(4) बच्चे की स्वतंत्र इच्छा और बच्चे पर बाहरी प्रभावों के बीच होने वाली परस्पर-क्रिया की व्याख्या करें।

(5) बच्चों के प्रति वफादारी से भरे शिष्यत्व के लिए प्रतिबद्ध रहें।

जोनाथन एडवर्ड्स, एक पारिवारिक विरासत के पिता

जोनाथन एडवर्ड्स एक सम्मानित पास्टर और ईश-वैज्ञानिक थे, जो 1700 के दशक में रहे। वह और उनकी पत्नी सारा ग्यारह बच्चों के माता-पिता थे। सारा एक अद्भुत पत्नी और माँ थीं, जिसका अपने बच्चों के चरित्र निर्माण पर जबरदस्त प्रभाव था। जोनाथन खुद एक समर्पित पिता थे। हमें बताया गया है कि "हर रात जब श्री एडवर्ड्स घर पर होते थे, तब वह अपने परिवार के साथ बातचीत करता हुआ एक घंटा बिताते थे और फिर हर एक बच्चे के लिए आशीष की प्रार्थना करता था।"[39]

1800 सदी के एक शिक्षक ने ए. ई. विनशिप ने जोनाथन और सारा एडवर्ड्स की विरासत पर शोध किया और जोनाथन की मृत्यु के 150 साल बाद तक के उनके वंशजों का पता लगाया। उन्होंने पाया कि एडवर्ड्स की विरासत में यह कुछ शामिल हैं:

- 1 संयुक्त राज्य अमेरिका के उपराष्ट्रपति
- 1 लॉ स्कूल के अध्यक्ष
- 1 मेडिकल स्कूल के अध्यक्ष

---

[39]यह हवाला और इस भाग की जानकारी लैरी बैलार्ड (Larry Ballard), "मल्टीजेनरेशनल लेगेसीज़-द स्टोरी ऑफ़ जोनाथन एडवर्ड्स," ("Multigenerational Legacies – the Story of Jonathan Edwards") YWAM फ़ैमिली मिनिस्ट्रीज़ (YWAM Family Ministries), 1 जुलाई, 2017 से आई है। https://www.ywam-fmi.org/news/multigenerational-legacies-the-story-of-jonathan-edwards/ जनवरी 11, 2021 से लिया गया है।

- 3 संयुक्त राज्य अमेरिका के सीनेटर
- 3 राज्यपाल
- 3 मेयर
- 13 कॉलेज के अध्यक्ष
- 30 न्यायाधीश
- 60 चिकित्सक
- 65 प्राध्यापक
- 75 सेना के अधिकारी
- 80 सार्वजनिक कार्यालय अधिकारी
- 100 वकील
- 100 पास्टर/चर्च के अगुवे
- 285 कॉलेज के स्नातक

ऐसी फलदायक विरासत कैसे संभव है? एडवर्ड्स के ग्यारह बच्चों के जीवन में क्या निवेश किया गया था, जिससे ऐसे वंशज पैदा हुए, जो ईमानदारी, जिम्मेदारी, नेतृत्व और समाज की सेवा के लिए प्रसिद्ध हुए? निःसंदेह जोनाथन एक धर्मी और मेहनती पिता थे, जो अपने बच्चों के लिए एक विश्वासयोग्य आदर्श रहे थे।

बाइबल हमें बताती है कि माता-पिता की पसंद भविष्य की पीढ़ियों में उनके बच्चों के परमेश्वर के साथ संबंध को प्रभावित करती है।

► छात्रों को समूह के लिए व्यवस्थाविवरण 5:9-10 और व्यवस्थाविवरण 7:9 पढ़ना चाहिए।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि एक व्यक्ति के माता-पिता ने क्या विकल्प चुना है, प्रत्येक व्यक्ति के पास परमेश्वर की सेवा करने और अपने बच्चों के लिए एक धर्मी माता-पिता बनने का अवसर है। आप और आपके वंशज ईमानदारी से प्रभु की सेवा कर सकते हैं और उसकी आशीष और अनुग्रह का अनुभव कर सकते हैं। क्या आप ऐसे माता-पिता बनने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जो ईमानदारी से परमेश्वर की सेवा करते हैं और अपने बच्चों को भी परमेश्वर के बारे में बताते हैं?

एक बच्चे का परमेश्वर से परिचय

जब परमेश्वर ने पहली बार याकूब से बात की, तो उसने यह नहीं कहा, “मैं जगत का परमेश्वर हूँ, ” या “मैं वह परमेश्वर हूँ जिसने संसार को रचा है, ” हालाँकि यह कथन सच हैं। “मैं यहोवा, तेरे दादा अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का भी परमेश्वर हूँ” (उत्पति 28:13)। याकूब ने परमेश्वर के साथ अपना रिश्ता किसी भी पूर्व-ज्ञान के बिना शुरू नहीं किया था। वह परमेश्वर को अपने पिता और अपने दादा की शिक्षा के द्वारा जानता था।

अब्राहम ने परमेश्वर की अराधना की एक परंपरा शुरू की थी। अब्राहम के कारण और बहुतों ने परमेश्वर पर विश्वास किया, इससे पहले भी उसका परमेश्वर से आमना-सामना हुआ था। जब अब्राहम के सेवक एलीआजर ने प्रार्थना की, तो उसने अपने स्वामी अब्राहम के परमेश्वर यहोवा से बात की (उत्पत्ति 24:12)।

इसके बाद परमेश्वर को कई बार इस तरह से पहचाना गया जैसे "अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर" (उदहारण के लिए, निर्गमन 3:15)। अगली पीढ़ी में, यूसुफ, ने उन वादों का उल्लेख किया जो परमेश्वर ने अब्राहम इसहाक और याकूब के साथ किया था (उत्पत्ति 50:24)। यूसुफ को उम्मीद थी कि उसका परिवार परमेश्वर के पिछली पीढ़ी के साथ वादों के कारण वफादार रहेगा।

► जिस तरीके से परमेश्वर ने खुद को ज़ाहिर किया, इस से हम उन तरीकों के बारे में क्या सीखते हैं, जिन से लोग परमेश्वर को जानते हैं?

लोग आमतौर पर केवल परमेश्वर के सिद्धांतों को सुनने से ही परमेश्वर के साथ संबंध में नहीं आते हैं। आमतौर पर लोग परमेश्वर के बारे में उन लोगों के जीवन को देखकर सीखते हैं, जो परमेश्वर के साथ संबंध रखते हैं। **सबसे बड़ा आत्मिक प्रभाव उन माता-पिता से मिलता है, जो परमेश्वर के प्रति समर्पित हैं।**

विचार के लिए यहाँ कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण व्यक्तिगत् प्रश्न दिए गए हैं: आपके बच्चे आपके जीवन को देखकर परमेश्वर के बारे में क्या सीखते हैं? क्या आपके बच्चे परमेश्वर के प्रति वफादार रहना चाहते हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के साथ आपके रिश्ते को देखते हैं?

माता-पिता की जिम्मेदारी

परमेश्वर माता-पिता को बहुत बड़ी जिम्मेदारी देता है। लड़के को उसी मार्ग की शिक्षा दे जिसमें उसको चलना चाहिए, और वह बुढ़ापे में भी उससे न हटेगा (नीतिवचन 22:6)।

माता-पिता को अपने बच्चों को परमेश्वर का अनुसरण करना सिखाना चाहिए। माता-पिता को अपने बच्चों का मार्गदर्शन और प्रशिक्षण करने की जिम्मेदारी समझनी चाहिए।

बच्चों को प्रशिक्षित करने की ज़िम्मेदारी सबसे पहले माता-पिता की है, न कि समाज, स्कूल या कलीसिया की। एक माता-पिता को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उसके बच्चे कलीसिया में हैं, लेकिन उसे यह नहीं मानना चाहिए कि कलीसिया उसके बच्चे को उसके लिए प्रशिक्षित करेगी।

► एक छात्र को समूह के लिए इफ़िसियों 6:1-4 पढ़ना चाहिए। पिताओं को क्या करना चाहिए?

बच्चों को प्रशिक्षित करना सिर्फ माँ की जिम्मेदारी नहीं है। अपने परिवार की आत्मिक सुरक्षा की सर्वोच्च जिम्मेदारी पिता की होती है।

माता-पिता की अपने बच्चों को जीवन के लिए प्रशिक्षित करने की गंभीर जिम्मेदारी है। जीवन के लिए प्रशिक्षित होने का मतलब एक व्यवसाय के लिए प्रशिक्षित होना नहीं है; इसका मतलब है, सही ढंग से जीने के लिए प्रशिक्षित होना, एक ऐसा जीवन जिसे परमेश्वर आशीष देता है। माता-पिता को अपने बच्चों को इस आशा में पाप का अनुसरण नहीं करने देना चाहिए कि वे बाद में परिवर्तित हो जायेंगे।

पवित्र शास्त्र हमें चेतावनी देता हैं कि हम संसार के ग़लत दर्शन न सीखें।

► एक छात्र को समूह के लिए कुलुस्सियों 2:8 पढ़ना चाहिए।

यह पद हमें चेतावनी देता है कि गलत दर्शन पर विश्वास करके और गलत जीवनशैली अपनाकर हम ठगे जा सकते हैं। दुनिया हमारे बच्चों को मसीह का अनुसरण करने के बजाय दुनिया के तौर-तरीके सिखाकर हमसे उनका अधिकार छीन सकती है।

यह बात सबसे अच्छी है, अगर बच्चों को पूरी शिक्षा मसीही शिक्षकों और माता-पिता से मिले। उन जगहों पर जहाँ मसीही स्कूल उपलब्ध नहीं हैं, माता-पिता को अभी भी यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चा जीवन का सही दृष्टिकोण सीख रहा है। धर्मनिरपेक्ष शिक्षा बच्चे को नास्तिकता, विकासवाद और मानवतावाद सीखा सकती है। बच्चे विशेष रूप से झूठी शिक्षाओं के प्रति संवेदनशील होते हैं (इफ़िसियों 4:14), और माता-पिता को अपने बच्चों को बचाना चाहिए। पास्टर को सीखना चाहिए कि ऐसे सिद्धांत का प्रचार कैसे किया जाए, जो लोगों को गलत दर्शनों से बचाता है। पास्टर और शिक्षकों को परिवारों को अपने बच्चों को सच्चाई में स्थापित करने में मदद करने के लिए जानकारी प्रदान करनी चाहिए।

आरंभिक प्रशिक्षण

► किसी ने *चिल्ड्रेन आर वेट सीमेंट*। नामक पुस्तक लिखी। आपको क्या लगता है कि उस शीर्षक का क्या मतलब है?

माता-पिता को यह महसूस करना चाहिए कि जब बच्चे छोटे होते हैं, तब से ही जीवन के बारे में सीखते हैं और निर्णय लेते हैं कि क्या महत्वपूर्ण है। जब बच्चा छोटा होता है, तब से ही चरित्र का निर्माण होता है।

अधिकांश शिष्यत्व की शिक्षा बच्चों के किशोरावस्था तक पहुँचने से पहले होती है। बाइबल में साक्षरता लक्ष्य, चरित्र लक्ष्य और व्यक्तिगत्, सामाजिक और आत्मिक आदतें अधिकांशत: किशोरावस्था से पहले विकसित किए जाने चाहिए।

पाँच साल की उम्र से पहले ही एक बच्चा यह बुनियादी बातें सीख लेता है कि लोग एक-दूसरे से कैसे सम्बन्धित हैं और किस तरह के व्यवहार से उसे वांछित परिणाम मिलते हैं। वह जानता है कि निष्पक्षता की उम्मीद करनी चाहिए या नहीं और दण्ड और पुरस्कार लगातार मिलते हैं या नहीं। वह जानता है कि क्या उससे प्रेम किया जाता है। वह जानता है कि उसकी भावनाएँ दूसरों के लिए मायने रखती हैं या नहीं। वह जानता है कि जब वह गलती करता है तो उसे क्षमा किया जा सकता है कि नहीं। उसने अपनी गलतियों और पापों को स्वीकार करना या छिपाना सीख लिया है। उसने तय कर लिया है कि अधिकार में बैठे हुए लोगों पर उसकी परवाह करने और वादे निभाने के

लिए भरोसा किया जा सकता है या नहीं।

बच्चे अपने माता-पिता के शब्दों और उदाहरणों से सीखते हैं, तब भी जब माता-पिता उन्हें सिखाने की कोशिश नहीं कर रहे होते (इफ़िसियों 5:1)। वयस्कों के उदाहरण बच्चों को जीवन की अवधारणा प्रदान करते हैं। बच्चे यह देखकर सीखते हैं कि वयस्कों के लिए क्या महत्वपूर्ण है। बच्चे वयस्कों को देखकर सीखते हैं कि दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करना है, परिस्थितियों पर कैसे प्रतिक्रिया देनी है और जिम्मेदारियों को कैसे पूरा करना है। यह शिक्षा तब शुरू होती है, जब बच्चा पैदा होता है।

कभी-कभी माता-पिता सोचते हैं कि जब वे बच्चे को समझाते हैं कि उसे क्या करना चाहिए तब ही वे उन्हें शिक्षा देते हैं। हालाँकि, किसी भी समय जब बच्चा माता-पिता को देखता है, तब भी माता-पिता उन्हें शिक्षा दे रहे होते हैं।

एक बच्चा वयस्कों को देखता है और सीखता है कि तनाव पर कैसे प्रतिक्रिया करनी है। वह अजनबियों के साथ व्यवहार करना सीखता है। वह सीखता है कि नीचले स्तर के लोगों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। वह आलोचना का जवाब देना सीखता है। माता-पिता हमेशा पढ़ाते रहते हैं, तब भी जब वे नहीं जानते कि वे पढ़ा रहे हैं।

यदि बच्चे की लगातार आलोचना की जाती है, तो वह अपनी गलतियों को छिपाना, बहाने बनाना और दूसरों को दोष देना सीखता है। वयस्क होने पर वह निंदा करने वाला, पाखंडी और गुमसुम रहने वाला होगा। अगर घर में हमेशा झगड़ा होता रहेगा तो वह डरपोक या आक्रामक हो जाएगा। यदि परिवार के सदस्य उसका उपहास करते हैं, तो वह लोगों से मिलना-जुलना बंद कर सकता है या दूसरों को धमकाने वाला बन सकता है। यदि उसके माता-पिता उसे हमेशा शर्मिंदगी महसूस कराते हैं, तो वह अपराध-बोध के साथ जीना सीख जाता है, उसे कभी यह महसूस नहीं होता कि परमेश्वर ने उसे स्वीकार कर लिया है। यदि वह अपने माता-पिता द्वारा चाहे गए व्यवहार को कभी पूरा नहीं कर पाता है, तो वह अंत में इसका विद्रोह करेगा और अन्य विद्रोहियों के समूह में शामिल हो सकता है, जो उसके लिए एक परिवार बदलने का कारण बन जाएगा।

यदि लोग उसके साथ धैर्य रखते हैं, तो वह दूसरों के साथ धैर्य रखना सीखता है। अगर लोग उसे प्रोत्साहित करते हैं, तो वह प्रयास करने के लिए आश्वस्त रहता है। यदि उसकी प्रशंसा की जाती है, तो वह मूल्यवान महसूस करता है और दूसरों को श्रेय देने को तैयार रहता है। यदि वह निष्पक्षता देखता है, तो वह निष्पक्ष होना चाहता है।

यदि एक माता-पिता नियम तोड़ते हैं, लेकिन अपने बच्चे से अपनी आज्ञापालन करवाते हैं, तो बच्चा सोचता है कि एक दिन वह भी इतना बड़ा हो जाएगा कि नियम तोड़ सके। यदि माता-पिता दूसरों के प्रति निर्दयी हैं, तो बच्चा इतना मजबूत बनने की आशा कर सकता है कि वह दूसरों के प्रति निर्दयी हो सके। यदि माता-पिता सोचते हैं कि बच्चे की समस्याएँ और ज़रूरतें महत्वपूर्ण नहीं हैं, तो बच्चा सोचता है कि एक दिन वह एक वयस्क बन जाएगा, जो अपना ख्याल खुद रख सकता है और दूसरों की ज़रूरतों को मना कर सकता है।

माता-पिता को लगातार परमेश्वर के प्रति समर्पण प्रदर्शित करना चाहिए। उनके बच्चों को पता होना चाहिए कि उनके माता-पिता परमेश्वर के वचन का पालन करते हैं। यदि कोई माता-पिता दिखाता है कि उसकी अपनी इच्छा परमेश्वर के अधिकार

से अधिक महत्वपूर्ण है, तो उसके बच्चे भी उसी तरह से जीने की उम्मीद करेंगे। माता-पिता को अक्सर बच्चों को निर्णय के कारणों और विचार किए गए कारकों के बारे में बताना चाहिए। यह बच्चे को निर्णय लेना सिखाते हैं।

बच्चे तब सीखते हैं, जब माता-पिता उनके साथ खेलते हैं। उन्हें दूसरों के प्रति निष्पक्षता, विचारशीलता और जवाबदेही सीखनी चाहिए। खेलों से बच्चे के कौशल का विकास होता है। पारिवारिक खेलों के उद्देश्यों में सीखना, व्यक्तिगत् विकास और परिवार के सदस्यों के साथ संबंधों का आनंद लेना शामिल है। पारिवारिक खेल में प्रतिस्पर्धा अच्छी है, लेकिन दूसरों पर हावी होने के उद्देश्य से नहीं होनी चाहिए ताकि विजेता श्रेष्ठता की भावना का आनंद ले सके। खेल के दौरान विचार करने योग्य प्रश्न यह है, “क्या हर कोई खेल का आनंद ले रहा है?” यदि केवल विजेता ही खेल का आनंद लेता है, तो एक गलत उद्देश्य पूरा हो रहा है। यदि लोग खेल के दौरान क्रोधित या निराश हो रहे हैं, तो खेल सही उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर रहा है।

माता-पिता अपने बच्चे का मूल्य तब दिखाते हैं, जब वे बच्चे की गतिविधियों के लिए समय निकालते हैं। माता-पिता को अपने बच्चे को स्कूल परियोजनाओं में मदद करनी चाहिए, खिलौने बनाना या मरम्मत करने में मदद करनी चाहिए, बच्चे को घर में व्यक्तिगत् स्थान प्रदान करना चाहिए, उसकी कहानियाँ और चुटकुले सुनने चाहिए और जब वह परेशान हो तो उसे आराम देना चाहिए।

माता-पिता को अपने बच्चे के स्कूल के शिक्षकों को जानना चाहिए। उन्हें अपने बच्चे की स्कूल की स्थिति के बारे में जानने के लिए शिक्षकों के साथ किसी भी निर्धारित बैठक में भाग लेना चाहिए। यदि संभव हो तो माता-पिता दोनों को जाना चाहिए। अगर पिता नहीं जाते तो ऐसा लगता है कि उनके बच्चे से ज्यादा जरूरी दूसरी बातें हैं। माता-पिता को शिक्षकों से श्रेणी और स्कूल में होने वाले क्रिया-कलापों के बारे में प्रश्न पूछना चाहिए। यदि शिक्षक जानते हैं कि माता-पिता रुचि रखते हैं, तो शिक्षकों द्वारा बच्चे के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ करने और बच्चे को दुर्व्यवहार से बचाने की अधिक संभावना होती है।

जो लोग एक परिवार के रूप में एक साथ रहते हैं, वे एक-दूसरे को बहुत अच्छी तरह से जानते हैं। वे एक-दूसरे की ज़रूरतों और गलतियों के बारे में सीखते हैं। वे एक-दूसरे से प्रेम कर सकते हैं और उस प्रेम का प्रदर्शन दुनिया में किसी और प्रेम से भी अधिक कर सकते हैं। यदि वे एक-दूसरे से प्रेम नहीं करते हैं, तो वे किसी दूसरे की तुलना में एक-दूसरे को अधिक नुकसान पहुँचा सकते हैं। कुछ लोग अपने परिवार के सदस्यों के साथ अजनबियों से भी बदतर व्यवहार करते हैं। मसीही घर एक ऐसा स्थान होना चाहिए, जहाँ धैर्य, क्षमा, देखभाल और दया दिखाई जाती है।

बाल मजदूरी

एक छोटे बच्चे को प्रतिदिन खेलने और आराम के लिए समय की आवश्यकता होती है। एक बच्चे को आराम करने, अपनी कल्पना का उपयोग करने, किताबें पढ़ने, कुछ बनाने में, खेलने और प्राकृतिक वातावरण का आनंद लेने के लिए समय की आवश्यकता होती है। ऐसे हालात में जहाँ परिवार रोजाना भोजन जुटाने या अन्य कार्य करने के लिए मिलकर काम करता हैं, बच्चों के लिए परिवार के काम में हिस्सा लेना अच्छा हो सकता है, लेकिन माता-पिता को कुछ अन्य मूल्यों को भी याद रखना

चाहिए।

एक बच्चे के लिए लंबे समय तक काम करना न केवल शारीरिक रूप से कठिन होता है, बल्कि इसलिए भी क्योंकि बच्चे को दिया जाने वाला काम आमतौर पर दोहराव वाला और नीरस होता है। वह उन गतिविधियों के लिए समय चाहता है, जिनमें उसकी कल्पना का उपयोग होता है। अगर एक बच्चे को इतना काम करना पड़े कि उसका खाली समय सिर्फ खाने और सोने में व्यतीत हो, ताकि वह फिर से काम कर सके तो यह एक दु:ख की बात है।

> "जब एक व्यक्ति में युवाओं के प्रति सहानुभूति नहीं रह जाती है, तो पृथ्वी पर उसकी उपयोगिता लगभग समाप्त हो जाती है।"

कुछ परिवार आर्थिक रूप से संघर्ष करते हैं और सोचते हैं कि उन्हें अपने बच्चों के काम से आय की आवश्यकता है। हालाँकि, यदि वे अपने बच्चों को शिक्षित करने में विफल रहते हैं, तो उनके परिवार की स्थिति कभी नहीं बदल सकती है। यदि एक बच्चा स्कूल जाने के बजाय काम करता है, तो संभव है वह अपना जीवन कम वेतन पर काम करके बिताएगा। अधिकांश व्यवसाय के अवसर उसके लिए सुलभ नहीं होंगे।

कुछ लोग अपने खुद के बच्चों को शिक्षा प्रदान करते हैं, लेकिन गरीब परिवारों के बच्चों को खेतों में या घरेलू काम में या सड़क पर सामान बेचने में लंबे समय तक नियोजित करके उनका गलत फायदा उठाने को तैयार रहते हैं, यह जानते हुए भी कि वे शिक्षित नहीं हो रहे हैं। मसीहियों को अपने समुदाय के परिवारों के लिए बेहतर समाधान खोजने के लिए मिलकर काम करना चाहिए।

बच्चे काम का आनंद ले सकते हैं, यदि उनके पास ऐसे कार्य हैं, जो उन्हें उपलब्धि का एहसास दिलाते हैं। यदि माता-पिता प्रोत्साहित करें तो वे अपने माता-पिता के साथ काम करने का आनंद भी ले सकते हैं। माता-पिता को अपनी अपेक्षाओं में उचित होना चाहिए कि एक बच्चा क्या कर सकता है और उन्हें सकारात्मक तरीके से रचनात्मक प्रतिक्रिया देनी चाहिए, ताकि उनके बच्चे सीखने और बढ़ने के लिए प्रेरित हों।

बच्चों को भरोसेमंद और संपूर्ण बनाने के लिए दैनिक जिम्मेदारियाँ को निभाना सिखाना अच्छा है। माता-पिता को मौखिक रूप से उन चारित्रिक गुणों की पुष्टि करनी चाहिए, जो वे अपने बच्चे में काम करते समय देखते हैं, जैसे की पहल, परिश्रम, सावधानी और दृढ़ता। माता-पिता को अपने बच्चों को परमेश्वर के वचन में सिखाए गए कार्य के सिद्धांत सिखाने चाहिए।

बच्चों के लिए पैसा कमाने का अवसर पाना अच्छा है, जिसे वे खर्च करना चुन सकते हैं। वे अपने काम का मूल्य सीखते हैं और सर्वोत्तम लाभ के लिए अपने पैसे का उपयोग करना सीखते हैं। एक बच्चा जो पैसा कमाने के लिए काम करता है, उसे यह एहसास हो सकता है कि उसे अपना सारा पैसा मीठी संतरी गोलियों पर खर्च नहीं करना चाहिए; वह कुछ ऐसा खरीदना चाहता है, जिसे वह रख सके। माता-पिता को अपने बच्चों को धन के बारे में सोचने और उसका उपयोग भक्तिमय तरीकों से करने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए।

बच्चों और किशोरों के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यों से परिचित होना अच्छा है, जो उनकी क्षमताओं को विकसित करते हैं। यह अच्छा है अगर एक युवा व्यक्ति को सीखने के लिए विभिन्न कौशल वाले लोगों के साथ काम करने का अवसर मिले।

► आपके समाज में बाल मजदूरी की कौन सी स्थितियाँ मौजूद हैं? माता-पिता को क्या करना चाहिए? कलीसिया को क्या करना चाहिए?

उद्देश्यपूर्ण बाल विकास

माता-पिता अपने बच्चों के चरित्र विकास के लिए जिम्मेदार हैं। एक मसीही जोड़ा, मैट और मैरी फ्रीडमैन ने उन गुणों को सूचीबद्ध किया है, जिनसे वे अपने बच्चों के विकास में मदद करना चाहता था। सूची बनाने के बाद, उसने इसकी समीक्षा की और उन कार्यों की योजना बनाई जो उसके बच्चों को इनमें से प्रत्येक गुण विकसित करने में मदद करेंगे। प्रक्रिया बहुत जल्द समाप्त नहीं होगी। ये गुण अचानक से प्रकट नहीं होते। माता-पिता को अपने बच्चों के पालन-पोषण में वर्षों तक उद्देश्यपूर्ण और सुसंगत रहना चाहिए। नीचे दी गई सूची में फ़्रीडेमैन्स द्वारा सूचीबद्ध कुछ गुण हैं।[40] अन्य गुणों को सूची में जोड़ा गया है।

[40] **मैट फ्रीडमैन** (Matt Friedeman), *डिसिपलशिप इन द होम (Discipleship in the Home),* (Wilmore: Francis Asbury Society, 2010), 31-33।

वर्ग	18 वर्ष की आयु तक प्राप्त होने वाले गुण
आत्मिकता	• जान लें कि वे अनन्त मूल्य वाले परमेश्वर के प्रतिरूप के पदाधिकारी हैं • जान लें कि वे पापी हैं, जिन्हें एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है • मसीह के साथ वायदा करें • प्रतिदिन भक्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करें • आत्मिक वरदानों का अभ्यास करें • मसीही सेवा के लिए तैयार रहें • विवाह तक यौन संबंध से शुद्ध रहें
बाइबल साक्षरता	• मूलभूत मसीही सिद्धांतों को समझें • मुख्य आयतों को याद करे (300 आयतें) • बाइबल की कहानियों को जानें • बाइबल की किताबें जानें • दस आज्ञाओं और पहाड़ी उपदेश को जानें • संपूर्ण बाइबल में पाप और मुक्ति के सुसमाचार के विषय देखें
बाइबल का वैश्विक दृष्टिकोण	• जानें कि अपने विश्वास की रक्षा कैसे करें • बाइबल के दृष्टिकोण से जीवन के बड़े प्रश्नों का उत्तर देने में सक्षम हों। • समझें कि विश्व धर्मों और पंथों के बीच मसीहियत को क्या अद्वितीय बनाता है
बुद्धि (शिक्षा)	• यदि संभव हो तो मसीही शिक्षा प्राप्त करें • शिक्षाप्रद वीडियो पढ़ने या सुनने के अनुशासन में स्थापित रहें • उनके उपहार और बुलाहट के आधार पर, कॉलेज या व्यावसायिक प्रशिक्षण में भाग लें
चरित्र	• आत्म-संयम का अभ्यास करें • विनम्र बनें—माफी मांगने में सक्षम हों • अधिकारियों के प्रति सम्मान प्रदर्शित करें • दयालुता से बोलो • समय का बुद्धिमानी से उपयोग करना सीखें—सोशल मीडिया, मनोरंजन आदि के उपयोग में स्वयं को अनुशासित करें।

पैसा और सेवा	• गरीबों के लिए परमेश्वर की चिंता को समझें • उदारता का अभ्यास करें और गरीबों की सेवा करें • दशमांश देने और बचत करने का अभ्यास करें • वित्तीय बजट का उपयोग करना सीखें
रिश्ते	• भाई-बहनों से प्रेम और मेल-मिलाप करे • सामाजिक परिवेश में सामान्य शिष्टाचार प्रदर्शित करें • जानें कि एक वफादार दोस्त कैसे बनें • वयस्कों से सम्मान और आत्मविश्वास के साथ बात करने में सक्षम हों
स्वास्थ्य	• अच्छी स्वच्छता का अभ्यास करें • नियमित रूप से व्यायाम करें • जो भी खाना परोसा जाए, वही खाएँ • जब संभव हो तो स्वस्थ भोजन चुनें
कौशल	• परमेश्वर ने उन्हें जो वरदान दिये हैं, उनका विकास करें • निरंतर अभ्यास के अनुशासन के माध्यम से उनके कौशल का विकास करें

मैट फ़्रीडमैन ने बताया कि इन गुणों को सूचीबद्ध करने के बाद उन्होंने और उनकी पत्नी ने क्या किया।

> जैसे ही हमारे पास कागज के एक पन्ने पर उपरोक्त [गुण] थे, हमने पन्ने के बीच में एक रेखा खींची और खुद से पूछा, “अब, हमारे बच्चों में गुण विकसित करने के लिए हमें क्या करना होगा]?” कागज़ के पन्ने के बाईं ओर, हमने [हमारी] माता-पिता की जिम्मेदारियाँ लिखीं।[41]

अगर यह बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी लगती है, तो बस याद रखें कि परमेश्वर ने हमें अपने बच्चों को शिष्य बनाने के लिए 16-18 साल दिए हैं। यह महत्वपूर्ण है:

1. शिष्यत्व योजना को लागू करें।
2. पारिवारिक अनुष्ठान स्थापित करें, जैसे दैनिक भोजन और कुछ मिनटों का संरचित शिक्षण/प्रशिक्षण।

[41] **मैट फ्रीडमैन** (Matt Friedeman), **डिसिपलशिप इन द होम** (Discipleship in the Home), (Wilmore: Francis Asbury Society, 2010), 33।

3. सिखाने और प्रशिक्षित करने के कई अवसरों का उपयोग करते हुए, शिष्यत्व को रोजमर्रा की जिंदगी का एक स्वाभाविक हिस्सा बनाएँ।

4. अपने बच्चों के लिए लगातार परमेश्वर के वचन से प्रार्थना करें।

5. असफल होने पर भी कभी हार न मानें।

► ऊपर दिए गए लेख से कुछ बातों को चुनें और वर्णन करें कि माता-पिता उन लक्ष्यों को उद्देश्यपूर्ण ढंग से प्राप्त करने के लिए क्या कर सकते हैं।

मानवीय इच्छा का कारक

► कभी-कभी एक व्यक्ति कहता है कि, "मेरे अनुभवों ने मुझे उस तरह का व्यक्ति बना दिया है, जैसा मैं हूँ।" इसी तरह का एक कथन है "एक व्यक्ति अपने पर्यावरण का उत्पाद है।" क्या ये कथन सत्य हैं?

मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है। लोग वास्तविक चुनाव करते हैं और वे सहज प्रवृत्ति या वातावरण से नियंत्रित नहीं होते हैं। पूरे पवित्र शास्त्र में परमेश्वर लोगों को सही काम करने और बुराई को अस्वीकार करने के लिए कहता है।[42] परमेश्वर लोगों का न्याय उनके निर्णयों के आधार पर करता है।

हमारा वातावरण और अनुभव हमें प्रभावित करता हैं, परन्तु वे हमें नियंत्रित नहीं कर सकता, क्योंकि परमेश्वर के स्वरूप में मनुष्य के रूप में हम वास्तविक विकल्प बनाते हैं। इसका मतलब यह है कि एक बच्चा ऐसे विकल्प चुन सकता है, जो उस घर और वातावरण के विपरीत हों, जहाँ उसका पालन-पोषण हुआ हो। एक बच्चा जो ऐसे बुतपरस्त घर से आया हो जहाँ पापमय जीवन सामान्य था, पश्चाताप कर सकता है और परमेश्वर के लिए जी सकता है। मसीही घर का एक बच्चा परमेश्वर का अनुसरण न करने का विकल्प चुन सकता है।

हालाँकि लोग वास्तविक चुनाव करते हैं, लेकिन वे पूरी तरह से स्वतंत्र नहीं हैं। बाइबल हमें बताती है कि हम ऐसे स्वभाव के साथ पैदा हुए हैं, जिसमें पाप करने की इच्छा है (भजन संहिता 51:5, भजन संहिता 58:3)। मनुष्य में अधिकार का विरोध करने की स्वाभाविक इच्छा होती है, अपनी दिशा खुद चुनें, प्रलोभन के आगे झुकें, दूसरों को धोखा दें और स्वार्थी बनें (इफ़िसियों 2:1-3)। बच्चे तटस्थ नहीं हैं, किसी भी दिशा में ले जाने का इंतज़ार कर रहे हैं। बच्चे अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए तुरंत तरीके खोज लेते हैं, भले ही उन्हें जो चाहिए उसे पाने के लिए झूठ बोलना पड़े और अवज्ञा करनी पड़े। इसके अलावा, हम जानते हैं कि शैतान उन्हें धोखा देने और उनकी परीक्षा लेने की कोशिश करता है (इफ़िसियों 2:2, प्रकाशितवाक्य 12:9)।

---

[42] यहोशू 24:14-15, यहेजकेल 33:10-11, प्रकाशितवाक्य 22:17

माता-पिता को यह समझना चाहिए कि बच्चे को सही कार्य करने के लिए सिर्फ निर्देश काफी नहीं है। यह एक आत्मिक संघर्ष है (गलातियों 5:17)। माता-पिता को प्रार्थना करनी चाहिए कि परमेश्वर का आत्मा बच्चे को प्रभावित करे और उसका नेतृत्व करे। माता-पिता को अच्छे आत्मिक आदर्श बनने के लिए बुद्धि और सामर्थ्य के लिए परमेश्वर पर निर्भर रहना चाहिए। माता-पिता को उत्साहपूर्वक प्रार्थना करनी चाहिए कि उनका बच्चा कम उम्र में ही पश्चाताप करे और आत्मिक नये जन्म का अनुभव करेगा।

भले ही बच्चा परिवर्तित हो गया हो, माता-पिता को यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि बच्चा एक परिपक्व मसीही जैसा होगा। उसके दृष्टिकोण और भावनाएँ एक जैसी नहीं होंगी। वह कभी-कभी प्रलोभन के आगे झुक सकता है। जब तक बच्चा सही करने की इच्छा दिखाता है, माता-पिता को बच्चे को यह कहकर हतोत्साहित नहीं करना चाहिए कि वह एक मसीही की तरह जीवन जीने में असफल हो रहा है। इसके बजाय, माता-पिता को बच्चे के अच्छे व्यवहार की सराहना करनी चाहिए और उसे अपने संघर्षों में परमेश्वर की मदद के लिए प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

यद्यपि प्रत्येक मनुष्य पाप की प्रवृत्ति के साथ पैदा होता है, प्रत्येक मनुष्य को परमेश्वर की आवश्यकता भी होती है। पवित्र आत्मा हर एक व्यक्ति से बात करता है और परमेश्वर के साथ संबंध बनाने की इच्छा देता है। हम जानते हैं कि परमेश्वर हमारी सहायता करता है, जब हम अपने बच्चों को परमेश्वर का वचन सिखाते हैं। परमेश्वर का आत्मा बच्चे के अंदर एक अधिवक्ता की तरह है, जो सत्य की पुष्टि करता है और उसे परमेश्वर के साथ संबंध बनाने की इच्छा देता है।

पारिवार में प्रार्थना का समय

परिवारों को प्रतिदिन कुछ मिनटों के लिए बाइबल पढ़ने, चर्चा करने और प्रार्थना करने के लिए मिलना चाहिए। माता-पिता दोनों और घर के सभी बच्चों को इसमें भाग लेना चाहिए। पिता को नेतृत्व करना चाहिए, लेकिन वह परिवार के सदस्यों को पवित्र शास्त्र पढ़ने और विभिन्न तरीकों से भाग लेने के लिए कह सकता है।

प्रार्थना के समय हमेशा एक ही तरीके को नहीं अपनाना चाहिए। इस समय कई प्रकार के प्रारूप हो सकते हैं, और इसमें बाइबल की कहानियाँ, मसीही इतिहास और मिशन सम्बन्धी कहानियाँ, प्रश्नों की चर्चा, सैद्धांतिक सच्चाइयों को सिखाने के लिए याद किए गए प्रश्नों और उत्तरों का उपयोग करना, मसीही किताबें पढ़ना, मसीही भजन, बाइबल को याद करना, नाटक, और प्रार्थना करने के विभिन्न तरीके शामिल हो सकते हैं।

प्रार्थना के समय की गतिविधि का उदाहरण: बाइबल की एक कहानी चुनें और परिवार के सदस्यों से उस पर अभिनय करने को कहें।

पास्टर को अपनी कलीसिया को पारिवार मे प्रार्थना करने में समय बिताने के बारे में सिखाने चाहिए। माता-पिता को याद रखना चाहिए कि परेमश्वर ने उन्हें अपने बच्चों को परमेश्वर का वचन सिखाने की जिम्मेदारी दी है (व्यवस्थाविवरण 6:5-7)।

सामूहिक चर्चा के लिए

► इस पाठ की कुछ अवधारणाएँ क्या हैं, जो आपके लिए नई हैं? आपने जो सत्य सीखा है, उसे लागू करने के लिए आप क्या योजना बनाते हैं?

► कलीसिया परिवारों को मजबूत करने और बच्चों के पालन-पोषण में माता-पिता की मदद करने के लिए क्या कर सकती है?

► कलीसिया के लोग बच्चों को मसीह का अनुसरण करने के लिए प्रशिक्षित करने की चुनौती में मदद करने के लिए कैसे मिलकर काम कर सकते हैं?

► परिवारों द्वारा अपनाई जाने वाली दैनिक अभ्यास के कुछ उदाहरण क्या हैं?

प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता,

परिवार को बनाने और लोगों को माता-पिता होने का सौभाग्य प्रदान करने के लिए धन्यवाद।

आपकी तरह हमें भी अपने बच्चों से प्रेम करने में मदद करें। हमें हमेशा यह याद रखने में मदद करें कि वे आपको जानने और आपकी सेवा करने के लिए बनाए गए हैं।

हमें वह प्रेम, धैर्य और समझ दें जो हमें बच्चों को आपका अनुसरण करने के लिए प्रशिक्षित करने और प्रभावित करने के लिए चाहिए।

हमारी कलीसिया में विश्वासियों के परिवारों, युवाओं और बच्चों को विश्वास और आज्ञाकारिता में मजबूत बनाने में सक्षम बनाएँ।

आमीन

पाठ सम्बन्धी नियत कार्य

(1) निम्नलिखित अनुच्छेदों में से प्रत्येक का अध्ययन करें। माता-पिता की ज़िम्मेदारी के बारे में पवित्र शस्त्र क्या सिखाता है, इसके बारे में तीन पृष्ठ लिखने के लिए इन अनुच्छेदों का उपयोग करें:

- उत्पत्ति 18:17-19
- व्यवस्थाविवरण 6:4-9
- भजन संहिता 78:1-8
- कुलुस्सियों 3:21
- इफ़िसियों 6:4
- 1 तीमुथियुस 3:4-5, 12
- 2 तीमुथियुस 3:14-17
- मत्ती 18:5-6

(2) आप माता-पिता हैं या नहीं, इस पाठ में दी गई तालिका में सूचीबद्ध पाँच गुणवत्ता से भरे लक्ष्यों का चयन करें। अपने बच्चों को पाँच चयनित गुणों के लक्ष्यों में से प्रत्येक तक पहुँचने में मदद करने के तीन व्यावहारिक साधन लिखें।

(3) यदि आप माता-पिता हैं, तो अपने बच्चों के साथ दैनिक प्रार्थना करने की एक योजना और अपनी प्रतिबद्धता लिखें। अपनी योजना और प्रतिबद्धता के लिए खुद को किसी के प्रति जवाबदेह रखें।

पाठ 13
बच्चों के पालन-पोषण के मुद्दे

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में, छात्र यह करने लगेंगे:

(1) बच्चों के अनुशासन और सुधार पर परमेश्वर का दृष्टिकोण अपनाएँ।

(2) बच्चों के शिष्यत्व के लिए एक अच्छा घरेलू वातावरण बनाने के लिए प्रतिबद्ध रहें।

(3) परमेश्वर के प्रति बच्चे की जिम्मेदारी को समझें।

(4) दैनिक पालन-पोषण की स्थितियों के लिए व्यावहारिक विचारों से सुसज्जित रहें।

सुज़ाना वेस्ली, एक उद्देश्यपूर्ण माँ

सुज़ाना वेस्ली ने 19 बच्चों को जन्म दिया, लेकिन समय की परिस्थितियों के कारण उनमें से नौ बच्चे अधिक समय तक जीवित नहीं रहे। उन्होंने जिन 10 बच्चों का पालन-पोषण किया उनमें जॉन और चार्ल्स वेस्ली भी शामिल थे। उनके बेटे जॉन ने, वयस्क होने के बाद, उनसे बच्चों को पालने के तरीकों का विवरण लिखने के लिए कहा, और उन्होंने उसे इस विवरण के साथ एक पत्र भेजा।[43]

जैसे ही बच्चे बोलना शुरू करते थे, उन्हें प्रभु की प्रार्थना सिखाई जाती थी और वे इसे हर सुबह और शाम दोहराते थे। बच्चे प्रतिदिन पवित्र शास्त्र का एक अध्याय एक साथ पढ़ते थे। उन दिनों में ज्यादातर महिलाएँ कम पढ़ी-लिखी थीं, लेकिन सुज़ाना ने इस बात पर ज़ोर दिया कि सभी बच्चों को पढ़ना चाहिए। उसने काम सीखने की अपेक्षा साक्षरता को प्राथमिकता दी।

सुज़ाना ने कहा, “स्व-इच्छा सभी पापों और दु:खों की जड़ है।” उसने अपने बच्चों को अपनी लालसा पर नियंत्रण रखना और अधिकार के अधीन रहना सिखाया। उसने कहा कि आज्ञाकारिता के हर कार्य की सराहना की जानी चाहिए, भले ही वह पूरी तरह से न किया गया हो। गलतियाँ बर्दाश्त की जा सकती हैं, लेकिन जानबूझकर की गई हर अवज्ञा को दंडित किया जाना चाहिए।

---

[43] एलिजा क्लार्क (Eliza Clark), *सुज़ाना वेस्ली (Susanna Wesley),* (London: W. H. Allen & Co, 1886), 30-36। ऑनलाइन यहाँ उपलब्ध है: https://archive.org/details/susannawesley00clariala/page/30/.

परिवार हमेशा एक साथ खाना खाता था और बच्चे बिना किसी शिकायत के जो परोसा जाता था उसे खाना सीख जाते थे।

सुधार और अनुशासन

बाइबल हमें बताती है कि, "लड़के के मन में मूढ़ता की गाँठ बन्धी रहती है…" (नीतिवचन 22:15) भजन संहिता लिखने वाला कहता है कि बच्चे पैदा होते ही झूठ बोलते है, "वे पेट से निकलते ही झूठ बोलते हुए भटक जाते हैं" (भजन संहिता 58:3)। क्योंकि यह सच है कि माता-पिता अपने बच्चों को सही करने के लिए जिम्मेदार हैं।

यदि आपने तीन साल के बच्चे को अभी एक कटोरा आइसक्रीम खाने या अभी एक साल बाद आइसक्रीम फैक्ट्री का मालिक होने के बीच विकल्प दिया है, तो वह अभी आइसक्रीम खाना पसंद करेगा। भले ही माता-पिता ने बच्चे को विकल्प समझाए हों, लेकिन अगर बच्चा वास्तव में अपना निर्णय लेता है, तो वह अब आइसक्रीम ही चुनेगा। यह उदाहरण हमें दिखाता है कि किसी बच्चे को सुधारने के लिए *स्पष्टीकरण* पर्याप्त नहीं है।

एक बच्चे को सही और गलत का स्पष्टीकरण करना सुधारने के लिए पर्याप्त नहीं है, क्योंकि

1. एक बच्चा परिपक्व तर्क को नहीं समझ सकता (1 कुरिन्थियों 13:11)।
2. एक बच्चा अपने कार्यों के पूर्ण और दीर्घकालिक परिणाम नहीं देख सकता है।
3. एक बच्चा इतना परिपक्व नहीं होता कि वह अपनी लालसा और इच्छाओं को तर्क से नियंत्रित कर सके।

हो सकता है कि एक बच्चे को शारीरिक पीड़ा पहुँचाना क्रूर लगे, लेकिन एक प्रेम करने वाले माता-पिता बदतर हानि को रोकने के लिए ऐसा करते हैं: "जो बेटे पर छड़ी नहीं चलाता वह उसका बैरी है, परन्तु जो उस से प्रेम रखता, वह यत्न से उसको शिक्षा देता है" (नीतिवचन 13:24)। उदाहरण के लिए, एक छोटा बच्चा जो आग के पास खेलता है, वह आग में गिर सकता है और उसे बड़ी चोट लग सकती है, क्योंकि वह खतरे को नहीं समझता है। लेकिन अगर उसकी माँ आग के बहुत करीब जाने पर उसे थप्पड़ मारती है, तो छोटा दर्द बड़े दर्द को आने से रोक देता है।

कुछ लोगों ने ऐसे लोगों से शारीरिक शोषण का अनुभव किया है, जो उनसे प्रेम नहीं करते थे। उनका अनुभव उन्हें किसी बच्चे को शारीरिक रूप से दंडित करने के विचार से नफरत करता है। हालाँकि, जो माता-पिता *उचित* सुधार की उपेक्षा करते हैं, वे बाद में अपने बच्चे के लिए बहुत परेशानी का कारण बनते हैं।

► छात्रों को समूह के लिए नीतिवचन 19:18 और नीतिवचन 29:17 पढ़ना चाहिए।

सुधार तब शुरू होना चाहिए जब बच्चा इतना बड़ा हो जाए कि वह समझ सके कि वह अपने माता-पिता का विरोध कर रहा है। यहाँ तक कि एक बहुत छोटा बच्चा भी जानता है कि वह कब सहयोग करने से इनकार कर रहा है।

अधिकांश सुधार तब किया जाना चाहिए, जब बच्चा छोटा और कोमल हो (नीतिवचन 22:15)। जिस प्रकार मिट्टी समय के साथ कोठर हो जाती है और उसे मनचाहे आकार में ढालना अधिक कठिन हो जाता है, उसी प्रकार समय बीतने के साथ एक

बच्चे का चरित्र बनाना अधिक कठिन हो जाता है। यदि कोई बच्चा 10 साल की उम्र के बाद लगातार अपने माता-पिता की अवज्ञा कर रहा है, तो माता-पिता उसे सुधारने में सफल नहीं हो रहे हैं, और उनकी अंतिम सफलता की संभावना बहुत कम होती जा रही है। जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता चला जाता है, वैसे-वैसे शारीरिक सुधार कम और कम प्रभावी होता जाता है। माता-पिता के लिए यह सोचना ग़लत है कि जब बच्चा बड़ा हो जाएगा तो सुधार करना आसान होगा; यह और अधिक कठिन हो जाएगा और असंभव हो जाएगा।

जब एक बच्चा युवा वयस्क हो जाता है, उसे अब एक बच्चे की तरह शारीरिक रूप से सुधारा नहीं जा सकता है। एक युवक या युवती को सम्मान की ज़रूरत होती है, भले ही उनका व्यवहार परिपक्व न हो। माता-पिता सुधार के अन्य तरीकों का उपयोग कर सकते हैं, जैसे कि बच्चे के मनोरंजन या फोन के समय या सामाजिक गतिविधियों को सीमित करना, लेकिन प्रेम और सावधानीपूर्वक संचार सबसे महत्वपूर्ण होगा। माता-पिता को यह एहसास होना चाहिए कि युवा व्यक्ति वास्तविक निर्णय ले रहा है, और यद्यपि माता-पिता का प्रभाव है, वह युवा व्यक्ति को व्यक्तिगत् इच्छा-शक्ति का प्रयोग करने और निर्णयों के परिणामों का अनुभव करने से नहीं रोक सकते।

कुछ माता-पिता निश्चित नहीं हैं कि बच्चे को शारीरिक दंड देते समय उन्हें कितना कठोर दंड देना चाहिए। यदि एक बच्चा सुधार के बाद भी क्रोधित और विद्रोही व्यवहार कर रहा है, तो सज़ा कठोर नहीं थी (यह सिद्धांत उस बच्चे के मामले में लागू नहीं होता है, जो इतनी आयु का हो गया है कि उसे शारीरिक दंड देकर भी प्रभावशाली तरीके से सुधारा नहीं जा सकता है)। सुधार इतना गंभीर होना चाहिए कि बच्चे को अपनी अवज्ञा पर पछतावा हो और वह अधिकार के अधीन होने का निर्णय ले। सुधार से चोट नहीं लगनी चाहिए। सुधार जो त्वचा पर चोट या निशान का कारण बनता है, जो कुछ मिनटों से अधिक समय तक रहता है, वह बहुत गंभीर हो सकता है।

परमेश्वर अपने बच्चों के साथ किस प्रकार व्यवहार करता है, यह समझाने के लिए बाइबल शारीरिक दण्ड के उदाहरण का उपयोग करती है।

► छात्रों को समूह के लिए नीतिवचन 3:11-12 और इब्रानियों 12:5-8 पढ़ना चाहिए।

पवित्र शास्त्र के ये अंश हमें बताते हैं कि परमेश्वर अपने बच्चों को अनुशासित करता है, क्योंकि वह उनसे प्रेम करता है। उसी तरह, एक पिता अपने बेटे को अनुशासन देता है, क्योंकि वह उससे प्रेम करता है। उचित अनुशासन प्रेम की निशानी है। अनुशासन की कमी प्रेम की कमी है।

शारीरिक सुधार बच्चे को आत्म-नियंत्रण सिखाता है, क्योंकि वह प्रलोभन का विरोध करना सीखता है, यह जानते हुए कि अगर वह गलत करेगा तो उसे दंड दिया जाएगा। जैसे-जैसे वह गलत काम करने के प्रलोभन का विरोध करता है, उसका चरित्र मजबूत होता जाता है। जब वह परिपक्व हो जाएगा, तो वह प्रलोभन का विरोध करेगा, क्योंकि वह परिणामों को समझता है, शारीरिक दंड की वजह से नहीं। हालाँकि, जिस बच्चे को लगातार सुधारा नहीं जाता है, वह एक वयस्क बन जाता है, जो

प्रलोभन का विरोध करने में बहुत कमजोर होता है, भले ही वह जानता हो कि यह उसके लिए बुरा है।

एक ऐसे माता-पिता की कल्पना करें जो अपने बच्चे को खाने के लिए केवल मीठी संतरी गोलियाँ ही देते हैं, क्योंकि बच्चा इसे चाहता है। वह बच्चे को दु:खी नहीं करना चाहते, लेकिन वह बच्चे को नुकसान पहुँचा रहे हैं। इसी तरह, एक माता-पिता जो हमेशा बच्चे के व्यवहार के प्रति झुकते हैं, वे बच्चे के चरित्र और भविष्य की स्थितियों को नुकसान पहुँचाते हैं। बाइबल यहाँ तक कहती है कि यदि माता-पिता अपने बच्चे को नहीं सुधारते तो वह उससे घृणा करते हैं (नीतिवचन 13:24)।

एक बच्चा जो सीमाओं के बिना घर में रहता है, वह खुश नहीं है। सीमाएँ सुरक्षा लाती हैं। यदि एक बच्चा सीखता है कि बहस करने और उपद्रव करने से उसे जो चाहिए वह मिल जाता है, तो वह हर समय ऐसा करेगा, लेकिन वह खुश नहीं होगा। बच्चे तब खुश होते हैं, जब वे सुरक्षित होते हैं और सीमा के भीतर निर्देशित होते हैं, उन्हें यह महसूस नहीं होता कि उन्हें कुछ भी हासिल करने के लिए संघर्ष करना होगा और नियंत्रण का विरोध करना होगा। एक अनुशासनहीन बच्चा शायद ही कभी खुश रहता है।

जब बच्चा वयस्क हो जाएगा तो दुनिया उसे वह नहीं देगी जो वह चाहता है। यदि वह असभ्य, स्वार्थी और गैर-जिम्मेदार है, तो उसका सम्मान और प्रचार नहीं किया जाएगा। एक माता-पिता को अपने बच्चे का पालन-पोषण ऐसे करना चाहिए, जो उसे जीवन के लिए तैयार करे। माता-पिता को यह याद रखना चाहिए कि वे बच्चों का पालन नहीं कर रहे हैं; वे वयस्कों का पालन कर रहे हैं।

माता-पिता को यह समझाना और दिखाना चाहिए कि उनके बच्चे के प्रति उनका सुधार उनको एक अच्छे चरित्र वाले व्यक्ति के रूप में विकसित होने में मदद करने के उद्देश्य से है, जिस पर भरोसा किया जा सकता है और उसका सम्मान किया जा सकता है।

► छात्रों को समूह के लिए नीतिवचन 22:15, नीतिवचन 23:13-14, और नीतिवचन 29:15 पढ़ना चाहिए।

याद रखें कि सुधारने का उद्देश्य बच्चे का विकास करना है। जब बच्चा समझता है कि उसने गलत किया है और उसे पहले से ही पछतावा है, तो शारीरिक सुधार आवश्यक नहीं हो सकता है। उद्देश्य सुधारना है, न्याय नहीं; माता-पिता को यह सुनिश्चित करने की ज़रूरत नहीं है कि बच्चे को वह सज़ा मिले जिसका वह हकदार है।

► माता-पिता का सुधार उस व्यक्ति के कार्यों से किस प्रकार भिन्न है, जो लोगों को अपनी मनमानी करने के लिए धमकाता है और शारीरिक नुकसान पहुँचाने की खतरे में डालता है?

एक हिंसक व्यक्ति जो चाहता है, उसे पाने के लिए दूसरे लोगों को नुकसान पहुँचाने को तैयार रहता है। एक माता-पिता अपने बच्चे से प्रेम करते हैं। शारीरिक सुधार बच्चे के लाभ के लिए है। एक प्रेम करने वाले माता-पिता बच्चे को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहते। एक व्यक्ति यह महसूस नहीं कर सकता कि एक खतरे में डालने वाला या सताने वाला उससे प्रेम करता है, लेकिन एक बच्चा यह जान सकता है कि उसे सुधारे जाने पर भी प्रेम किया जाता है। वह महसूस कर सकता है कि उसके

माता-पिता के अधिकार के कारण उसका जीवन बेहतर है।

कुछ माता-पिता क्रोध या क्रूरता के कारण गंभीर और असंगत रूप से सज़ा देते हैं। वे अपने बच्चे को शारीरिक और भावनात्मक रूप से ठेस पहुँचाते हैं। वे अपने बच्चों को खुद का तनाव और हताशा को दूर करने के लिए दंड देते हैं। यह एक गंभीर समस्या है, इसे देखने वाले अन्य लोगों को बर्दाश्त नहीं करना चाहिए। दोस्तों, पड़ोसियों और रिश्तेदारों को उस व्यक्ति को रोकना चाहिए जो बच्चे के साथ दुर्व्यवहार कर रहा है। दुर्व्यवहार करने वाले माता-पिता को रिश्तेदारों, दोस्तों या पास्टर से मदद लेनी चाहिए। बच्चे की सुरक्षा करना ज़रूरी है।

► कुछ माता-पिता गलत काम करने पर अपने बच्चों को सार्वजनिक रूप से अपमानित करते हैं। क्या यह सुधार का अच्छा तरीका है?

► एक छात्र को समूह के लिए इफ़िसियों 6:4 पढ़ना चाहिए।

बच्चे को यह सुनिश्चित करना होगा कि उसके माता-पिता उससे प्रेम करते हैं और उनका सुधार उसके लाभ के लिए है। जब एक बच्चे को उसके माता-पिता द्वारा अपमानित किया जाता है, तो उसे प्रेम का एहसास नहीं होता है। वह कड़वाहट से भर सकता है और महसूस कर सकता है कि उसके माता-पिता का अधिकार डरावना है, जिससे उसे बचना होगा। माता-पिता को अपने बच्चों को निजी तौर पर सुधारना चाहिए और अन्य लोगों की उपस्थिति में उन्हें शर्मिंदा नहीं करना चाहिए। माता-पिता को अपने बच्चों को नम्रता और धैर्य के साथ निर्देश देना और सुधारना चाहिए।[44] नीतिवचन 16:21ब हमें बताती है "मधुर वाणी के द्वारा ज्ञान बढ़ता है।"

► कल्पना कीजिए कि आपने अपने बच्चे को अपने जानवरों की देखभाल करने के लिए कहा। जब आप शाम को घर आते हैं, तो देखते हैं कि जानवरों को चारा नहीं दिया गया। आप पूरे दिन काम करके थक गए हैं, लेकिन आपको आराम करने से पहले जानवरों को चारा खिलाना है, क्योंकि आपके बच्चे ने आज्ञा नहीं मानी। क्या आपको गुस्सा होना चाहिए? क्या माता-पिता का अपने बच्चे पर गुस्सा होना गलत है?

माता-पिता को यह याद रखना चाहिए कि सुधारने से बच्चे को लाभ होगा। जब माता-पिता क्रोधित होते हैं, क्योंकि उन्हें अपमानित महसूस होता है या क्योंकि बच्चे की अवज्ञा से उन्हें असुविधा होती है, तो उनके पास क्रोध होता है, जो कुछ भी अच्छा नहीं कर सकता (याकूब 1:20)। उनका गुस्सा आत्म-केंद्रित होता है।

एक माता-पिता सही प्रकार का गुस्सा इस तरह व्यक्त कर सकते हैं: "बेटा, तुमने जानवरों को चारा नहीं खिलाया जैसा मैंने तुमसे कहा था। जानवर भूखे थे, और अगर मैं उन्हें खाना नहीं खिलाता तो वे पूरी रात भूखे रहते। पूरे दिन काम की थकावट

[44] हालाँकि 2 तीमुथियुस 2:24-25 और गलातियों 6:1 को कलीसिया में पाप से निपटने के निर्देश के रूप में लिखा गया था, इसके साथ ही जो गलत हैं, उन्हें सुधारते समय धैर्य और नम्रता प्रदर्शित करने का निर्देश पालन-पोषण के संदर्भ में लागू होता है।

के बावजूद मुझे उन्हें चारा खिलाना पड़ा। मुझे गुस्सा आ रहा है, क्योंकि मैं नहीं चाहता कि तुम उस प्रकार के व्यक्ति बनो जो अपनी जिम्मेदारी को नजरअंदाज करके दूसरों की जरूरतों को नजरअंदाज करता हैं। नीतिवचन 12:10 सिखाता है, धर्मी अपने पशु के भी प्राण की सुधि रखता है, परन्तु दुष्टों की दया भी निर्दयता है।"

रेबेका ने अपने बच्चों से कहा कि वे उस कमरे में खाना या पानी न ले जाएँ जहाँ फर्श पर नया कालीन बिछा है। अगले दिन उसने वहाँ एक बच्चे को खाना खाते देखा, और उसने उसे डाँटा। बाद में एक बच्चा जूस का गिलास लेकर कालीन पर चला गया और उसने उसे डाँटा। अगले कुछ दिनों में बच्चे कभी-कभी उस कमरे में पीने की चीज़े ले जाते थे, लेकिन रेबेका व्यस्त थी और उसने उन्हें नहीं सुधारा। फिर एक दिन उसके बेटे ने कालीन पर कोका-कोला गिरा दिया। रेबेका गुस्से में थी और उसने उसे पीटा।

► रेबेका के अपने बच्चों को सुधारने के तरीके में क्या गलत है?

रेबेका का नियम था कि बच्चों को कालीन वाले कमरे में खाना या पीने का सामान नहीं ले जाना चाहिए, लेकिन फिर वह उनके नियम तोड़ने को तब तक बर्दाश्त करती रही जब तक कोई दुर्घटना न हो गई। उसने नियम तोड़ने की बजाय दुर्घटना की सज़ा दी। यह बच्चों को सिखाता है कि वे तब तक नियम तोड़ सकते हैं, जब तक वे बुरे परिणामों को रोक सकते हैं। यह विचार बुरे चरित्र का विकास करता है, क्योंकि यह सभी नियम तोड़ने का आधार है। एक व्यक्ति नियम तोड़ता है, क्योंकि वह सोचता है कि जैसा वह चाहता वैसा परिणाम प्राप्त कर सकता है और बुरे परिणामों से बच सकता है। माता-पिता को दुर्घटनाओं के लिए बच्चों को दंड देने के बजाय अवज्ञा को सुधारना चाहिए।

माइकल ने अपने बेटों से कहा कि वे हर शाम को अपनी साइकिलें गैराज में रखा करें। एक सप्ताह तक हर दिन, जब माइकल घर आता था, साइकिलें बाहर ही रहती थीं। फिर एक दिन काम के दौरान माइकल का एक औजार खो गया, गलती से उसकी ऊँगली में चोट लग गई और घर जाते समय उसका टायर पंचर हो गया। जब वह घर पहुँचा तो साइकिलें बाहर ही थीं, और उसने अपने बेटों को सज़ा दी।

► अपने बेटों को सुधारने के माइकल के तरीके में क्या गलत है?

कई माता-पिता जब अच्छी मनोदशा में होते हैं, तो अवज्ञा को सहन कर लेते हैं और जब वे क्रोधित होते हैं, तो अवज्ञा का दंड देते हैं। जब तक माता-पिता उन्हें लगातार नहीं सुधारते, बच्चे आज्ञापालन करना नहीं सीखते।

► निम्नलिखित बातों को देखें और बताएँ कि प्रत्येक महत्वपूर्ण क्यों है। यदि माता-पिता इन निर्देशों का पालन नहीं करते हैं, तो क्या होगा?

- आवश्यकताएँ बच्चे की क्षमताओं और परिपक्वता के अनुरूप होनी चाहिए।
- केवल जानबूझकर की गई अवज्ञा का दंड दे, दुर्घटनाओं का नहीं।
- नियम और आवश्यकताएँ स्पष्ट और समझने योग्य होनी चाहिए।

- जब बच्चा अवज्ञा करता है, तो माता-पिता को समझाना चाहिए कि बच्चे को क्या करना चाहिए था।
- कभी भी किसी बच्चे को उस बात के लिए सज़ा न दें जो उसके नियंत्रण में नहीं थी।

बच्चों से व्यावहारिक निर्देश

कई साल पहले, ब्रिटिश मनोवैज्ञानिक, डॉ. आर.एफ. हर्ट्ज़ ने एक शोध परियोजना का संचालन किया। उसने 24 देशों के 8 से 14 वर्ष की आयु के 100,000 बच्चों से माता-पिता के लिए व्यवहार के नियमों की एक सूची बनाने को कहा। इस शोध में परमेश्वर के वचन का अधिकार नहीं है, लेकिन यह हमें कुछ ऐसी ज़रूरतें दिखाता है, जो बच्चे महसूस करते हैं। यहाँ कुछ सबसे आम प्रतिक्रियाएँ दी गई हैं:

- अपने बच्चों के सामने झगड़ा न करें।
- बच्चे से झूठ मत बोलो।
- हमेशा बच्चों के प्रश्नों का उत्तर दें।
- अपने सभी बच्चों के साथ एक समान स्नेह से व्यवहार करें।
- माता-पिता और बच्चों के बीच दोस्ती होनी चाहिए।
- अपने बच्चों के दोस्तों के साथ स्वागत आगंतुकों के रूप में व्यवहार करें।
- अपने बच्चों को उनके दोस्तों की उपस्थिति में दोष न दें और न ही दंडित करें।
- अपने बच्चे की अच्छी बातों पर ध्यान केंद्रित करें और उसकी असफलताओं पर ज़्यादा ज़ोर न दें।
- अपने स्नेह और अपनी मनोदशा में स्थिर रहें।

जब एक माता-पिता लगातार बच्चों की उपस्थिति में एक दूसरे की आलोचना करते हैं, तो बच्चे यह मान सकते हैं कि उन्हें भी असहमत माता-पिता से असहमत होने और उनके दोष देखने में सक्षम होना चाहिए।[45] माता-पिता को अपनी असहमतियों पर निजी तौर पर चर्चा करनी चाहिए और सहयोगपूर्वक पालन करने के लिए नीतियाँ विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

माता-पिता को बच्चे से झूठ नहीं बोलना चाहिए (कुलुस्सियों 3:9), यहाँ तक कि उसे सहयोग करने या उसकी चिंताओं को दूर करने का कारण बताने के लिए भी नहीं। जब एक बच्चे को पता चलता है कि उसके माता-पिता उससे झूठ बोलते हैं, तो वह सुरक्षित महसूस नहीं करता है। कुछ माता-पिता डरे हुए होने पर अपने बच्चों को सांत्वना देने या निर्देशित करने में असमर्थ होते हैं, क्योंकि बच्चे माता-पिता की बातों पर विश्वास नहीं करते हैं।

► उपर के खंड में से किसी एक बात को चुनें और उन समस्याओं का वर्णन करें जिनके परिणामस्वरूप माता-पिता उस दिशा का पालन नहीं करते हैं।

---

[45] निर्देश और सिद्धांत इफ़िसियों 4:29-32, इफ़िसियों 5:33 में से; 1 पतरस 3:7-12 सभी यहाँ लागू होते हैं।

एक मसीही का घर

►जब एक अजनबी आपके घर आता है, तो क्या वह तुरन्त देख लेता है कि यह वह घर है, जहाँ मसीही रहते है? कैसे?

► एक छात्र को समूह के लिए व्यवस्थाविवरण 6:6-9 पढ़ना चाहिए।

इस्राएलियों को अपना ध्यान बच्चों के चरित्र को आकार देकर उनके भविष्य को आकार देना था। उन्हें यह कैसे करना था? उन्हें अपने बच्चों को बाइबल सिद्धांतों में प्रशिक्षित करने के लिए एक संरक्षित वातावरण रखना था। उन्हें हर जगह पवित्र शास्त्र प्रदर्शित करना था ("उन्हें अपने घर की चौखट पर और अपने द्वारों पर लिखें।") न केवल पवित्र शास्त्र को अक्षरश: घर में चिपकाया जाना था, बल्कि सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि घर में हर चीज पवित्र शास्त्र के अनुरूप होनी थी।

इन परिवारों की एक दीवार पर दस आज्ञाएँ और दूसरी दीवार पर एक पापी, मनोरंजन करने वाले सांसारिक व्यक्ति की तस्वीर नहीं होती। यह एक बच्चे की मूल्यों की समझ के लिए बहुत भ्रमित करने वाला होगा।

बच्चे अनजाने में उन चीज़ों से प्रभावित होते हैं, जो वे हर दिन देखते और सुनते हैं। यदि उनके घर में कोई रेडियो स्टेशन हमेशा बजता रहता है, तो वे उस संगीत के मूल में मौजूद कुछ दर्शन को आत्मसात कर लेते हैं।

माता-पिता के लिए अपने बच्चों को हर बुरे दर्शन या सांसारिक प्रभाव से बचाना असंभव है, लेकिन मसीही माता-पिता को अपने बच्चों को जो कुछ भी सुनते और देखते हैं, उसका परमेश्वर के वचन के द्वारा मूल्यांकन करना सिखाना चाहिए। यीशु ने प्रार्थना की, "मैं यह विनती नहीं करता कि तू उन्हें जगत से उठा ले; परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्ट से बचाए रख…सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य" (यूहन्ना 17:15, 17)।

बच्चे ध्यान देते हैं कि उनके माता-पिता किसे नायक के रूप में सराहते हैं। वे जानते हैं कि उनके माता-पिता किसका सम्मान करते हैं। एक माता-पिता के लिए अपने बच्चों को मसीह की सच्चाई सिखाना अनुचित है, जबकि वह स्वयं सांसारिक और अनैतिक लोगों की प्रशंसा करते हैं। ऐसा करने वाले माता-पिता अपने बच्चे से कहते हैं कि उसे एक वफादार मसीही बनने की तुलना में अपने बच्चे के एक सफल मनोरंजन करने वाले बनने में अधिक खुशी होगी।

कुछ माता-पिता सोचते हैं कि अपने बच्चे को पाप किए जाने वाली चीज़ों के संपर्क में आने देना ठीक है, यदि वे अपने बच्चे को समझाते हैं कि वे चीज़ें गलत क्यों हैं। हालाँकि, इस बारे में सोचें: यदि आप अपने बच्चे को सही भोजन खिलाने की कोशिश कर रहे थे, तो आप उसके सामने मीठी संतरी गोलियाँ और केक का ढेर नहीं रखेंगे, फिर यह समझाने की कोशिश करें कि उसे सब्जियाँ क्यों खानी चाहिए। विटामिन के बारे में सभी विवरण उसकी स्वाभाविक इच्छाओं को दूर नहीं कर सके जो मीठी संतरी गोलियों को देखते ही उत्तेजित हो जाती हैं।

कुछ माता-पिता इस बात की परवाह किए बिना कि उनके बच्चे क्या देख रहे हैं, टेलीविजन को हर समय चालू रखने की अनुमति देते हैं। एक मसीही को याद रखना चाहिए कि समाज सिखाता है कि पाप तब तक ठीक है, जब तक परिणाम नियंत्रित

हों। टेलीविज़न ऐसे लोगों को दिखाता है, जो बिना किसी परिणाम के पाप में जी रहे हैं, लेकिन यह वास्तविक जीवन का सच्चा वर्णन नहीं है। टेलीविजन बच्चे को यह सोचने पर मजबूर कर देता है कि उसके माता-पिता उसे जीवन का आनंद लेने से रोक रहे हैं, और वह उस समय का इंतजार करता है, जब वह उस काम को कर सकेगा जिसे वह चाहता है।

कई मसीही ऐसे रिश्तेदारों के साथ घरों में रहते हैं, जो मसीही नहीं हैं। उन मामलों में, घर ऐसा वातावरण नहीं है, जो गलत प्रभावों से सुरक्षित हो। मसीही माता-पिता के लिए प्रेम, विश्वासयोग्यता, पवित्रता और खुशी का उदाहरण स्थापित करना महत्वपूर्ण है, साथ ही प्रार्थना करते हुए कि पवित्र आत्मा बच्चे को जीवन में सही दिशा चुनने में मदद करेगी।

अधूरा परिवार

क्योंकि परिवार परिपूर्ण नहीं होता है, रिश्तों में अक्सर पिछली गलतियों और अनसुलझे संघर्षों का इतिहास होता है।

यहाँ तक कि मसीही माता-पिता भी पूर्ण नहीं हैं। वे हमेशा नियम बनाने और लागू करने में सुसंगत नहीं हो सकते हैं। वे अपने बच्चों की किशोर अवस्था की स्थिति को नहीं समझते हैं-नई पीढ़ी में चीजें बदल गई हैं। उन्हें हमेशा अपने बच्चे के वास्तविक मुद्दों के प्रति पर्याप्त सहानुभूति नहीं होती है। उनका रवैया हमेशा सबसे अच्छा नहीं होता और वे दु:ख देने वाले शब्द कह सकते हैं।

परमेश्वर ने पहले लोगों को बनाया और परिवार को आकार दिया। उसने एक आदमी बनाया, उसके लिए एक पत्नी बनाई और उन्हें पालने के लिए बच्चे दिए। परमेश्वर सब कुछ जानता है। परमेश्वर जानता था कि माता-पिता गलतियाँ करेंगे, लेकिन फिर भी उसने माता-पिता बनाने की योजना बनाई। उसने देखा कि लोगों में मौजूद सभी कमियों के बावजूद यह अभी भी सबसे अच्छा तरीका है। यहाँ परिवार व्यवस्था के अनेक लाभ हैं, भले ही वह उत्तम न हो।

यह तथ्य कि परमेश्वर ने माता-पिता बनने का आविष्कार किया, बच्चों के लिए महत्वपूर्ण है। इसका मतलब यह है कि जब बच्चे विद्रोह करते हैं, तब वे परमेश्वर द्वारा स्थापित व्यवस्था को अस्वीकार करने का निर्णय ले रहे होते हैं। परमेश्वर ने कहा, "हे बालको, प्रभु में अपने माता–पिता के आज्ञाकारी बनो" (इफ़िसियों 6:1)। माता-पिता परमेश्वर की योजना के विरुद्ध विद्रोह करते हैं, जब वे परमेश्वर द्वारा दी गई जिम्मेदारियों को पूरा नहीं करते हैं। परमेश्वर की योजना को अस्वीकार करना परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह करना है।

बच्चों को पालने में जिम्मेदारी

मात-पिता के इस दृश्य में, जिम्मेदारी के तीन क्षेत्र हैं। बच्चे का उत्तरदायित्व का एक क्षेत्र होता है। माता-पिता के पास जिम्मेदारी का एक क्षेत्र होता है। परमेश्वर के पास जिम्मेदारी का एक क्षेत्र होता है। हम पहले ही इन पिछले दो पाठों में माता-पिता की ज़िम्मेदारी पर बहुत विस्तार से विचार कर चुके हैं। अब हम बच्चों के जीवन और बच्चों की जिम्मेदारियों में परमेश्वर की भागीदारी पर विचार करेंगे।

बच्चों के जीवन में परमेश्वर का कार्य

1. परमेश्वर चाहता है कि बच्चे यीशु में विश्वास के माध्यम से उसके साथ व्यक्तिगत् संबंध बनायें। (मत्ती 18:1-6 और मत्ती 19:13-15 को पढ़ें।)

2. परमेश्वर हमारे बच्चों को अपने साथ इस रिश्ते में लाने के लिए वफादार है। (यूहन्ना 6:44 को पढ़ें।)

3. परमेश्वर अपने वचन के माध्यम से हमारे बच्चों से बात करता हैं। (2 तीमुथियुस 3:14-15 को पढ़ें।)

बच्चे परमेश्वर के साथ रिश्ते में

1. बच्चों को उनके पापों से क्षमा किया जा सकता है (1 यूहन्ना 2:12)।
2. बच्चे परमेश्वर को जान सकते हैं (1 यूहन्ना 2:13)।
3. बच्चे परमेश्वर के साथ संबंध में विकसित हो सकते हैं (1 शमूएल 2:26)।
4. बच्चे परमेश्वर की आराधना कर सकते हैं (मत्ती 21:15-16)।
5. बच्चों और युवाओं का उपयोग परमेश्वर द्वारा किया जा सकता है (योएल 2:28)।

पवित्र शास्त्र में परमेश्वर द्वारा अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए बच्चों और युवाओं का उपयोग किए जाने के विभिन्न उदाहरण हैं: शमूएल, नामान की पत्नी की दासीलड़की, वह लड़का जिसके भोजन को यीशु ने भीड़ को खाना खिलाने के लिए उपयोग किया, दानिय्येल, यूसुफ, दाऊद और मरियम, कुछ नाम है।

बच्चे की जिम्मेदारी

परमेश्वर के वचन के अनुसार, बच्चे की ज़िम्मेदारी अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करना है (इफ़िसियों 6:1-3)। कई बार यदि माता-पिता गलत हों तो क्या होगा? बच्चे को अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करनी चाहिए और अपनी ज़िम्मेदारी को इस पर निर्भर नहीं रखना चाहिए कि माता-पिता कैसा करते हैं। वह बच्चे की जिम्मेदारी नहीं है। उसकी जिम्मेदारी सिर्फ आज्ञा का पालन करना है।

यदि बच्चा निर्णय लेता है कि वह तब ही आज्ञा का पालन करेगा जब वह सोचता हो कि उसके माता-पिता सही हैं, तब तो माता-पिता के पास कोई अधिकार ही नहीं रहेगा। यह वैसा नहीं हो सकता जैसा परमेश्वर चाहता था, क्योंकि यह पालन-पोषण की पूरी व्यवस्था को नष्ट कर देगा।

माता-पिता अधिकार का उपयोग कैसे करते हैं, इसके लिए बच्चा ज़िम्मेदार नहीं है। उसकी खुद की जिम्मेदारी आज्ञा का पालन करना है। क्या होगा यदि माता-पिता बच्चे को कुछ गलत करने के लिए कहें, जैसे कि उसके लिए फ्रिज में से बीयर लेकर आए? माता-पिता सही हैं या नहीं, यह तय करने की जिम्मेदारी बच्चे की नहीं है। वह सम्मानपूर्वक अपनी राय रख सकता है, लेकिन उसे उसका पालन करना होगा।

चोट पहुँचाने वाला शारीरिक शोषण या ऐसे अनैतिक कार्य जिनकी सूचना किसी ऐसे उच्च अधिकारी को दी जानी चाहिए जो बच्चे को बचाने में सक्षम है, आज्ञापालन न करने का एक अपवाद हो सकते हैं।

बच्चों को अपने माता-पिता के साथ जो समस्याएँ होती हैं, वे आम तौर पर इसलिए नहीं होती क्योंकि वे यह सवाल करते हैं कि क्या कोई आदेश मसीही सिद्धांतों के अनुरूप है। विद्रोही बच्चा आम तौर पर साधारण मामलों पर अपने माता-पिता से विरोध करता है, जैसे कि अपने कमरे की सफाई करना, घर का काम करना, एक निश्चित समय पर घर पर रहना और उसके मनोरंजन पर रोक लगाना।

विद्रोही बच्चा माता-पिता के अधिकार की धारणा का विरोध यह दावा करते हुए कर रहा है कि उसका हक है कि वह निर्णय ले सकता है कि उसके माता-पिता गलत हैं। उसका विरोध स्वतंत्रता, स्व-संप्रभुता और व्यक्तिगत् शासन के अधिकार की मूल इच्छा से आता है। एक व्यक्ति यह कौन सी उम्र में पाता है? कभी नहीं।

स्वतंत्रता की ऐसी धारणा एक भ्रम है। आपके पास हमेशा जिम्मेदारियाँ होंगी जो अन्य लोगों को ध्यान में रखते हुए आती हैं। हमेशा ऐसे कार्य होंगे, जिन्हें आप जानते हैं कि आपको करने चाहिए, भले ही आपकी माँ आपको बताने के लिए मौजूद न हों। एक व्यक्ति जो अन्य लोगों के प्रति बिना किसी प्रतिबद्धता के जीने पर जोर देता है, वह दर्द और विनाश का एक निशान छोड़ जाता है, जिससे उस पर भरोसा करने वाले और उस पर निर्भर रहने वाले किसी भी व्यक्ति को चोट पहुँचती है।

कभी-कभी बच्चों को अपने माता-पिता की चिंताओं से ठेस पहुँचती हैं, उन्हें लगता है कि माता-पिता को उन पर अधिक भरोसा करना चाहिए। यदि एक बच्चा माता-पिता की चिंताओं को समझने और उनका सम्मान करने का प्रयास कर सकता है, तो माता-पिता बच्चे पर अधिक भरोसा कर सकते हैं और प्रतिबंधों को अनुकूल बनाने के लिए तैयार हो सकते हैं। जब एक बच्चा माता-पिता की चिंताओं को अस्वीकार कर देता है, तो माता-पिता को लगता है कि उन्हें उस पर और अधिक प्रतिबंध लगाने की आवश्यकता है।

गलतियों को स्वीकार करना

बहुत से लोग किसी रिश्ते में गलती स्वीकार करने से डरते हैं, क्योंकि उन्हें डर होता है कि स्वीकार करने से वह भविष्य के संघर्षों में कमजोर हो जाएँगे। वास्तव में, ईमानदार होने और जो सही है, उसे करने के लिए तैयार रहने की स्थिति सबसे मजबूत स्थिति है। उस स्थिति में आने और उसमें बने रहने का एकमात्र तरीका यह है कि आपने जो गलतियाँ की हैं, उन्हें स्वीकार करें, जो सही है, उसे करना शुरू करें और जब भी आप गलती करते हों तो उसे सुधारने के लिए तैयार रहें।

कभी-कभी अधिकार में बैठा व्यक्ति चाहता है कि उसके अधीन रहने वाले उसकी गलतियाँ स्वीकार करें लेकिन वह खुद की गलतियाँ स्वीकार करने को तैयार नहीं होता क्योंकि उसे लगता है कि इससे उसका अधिकार कम हो जाएगा। यह गलत है। यदि अधिकार में बैठा व्यक्ति ग़लतियाँ स्वीकार नहीं कर सकता, तो उसके अधीन रहने वाले उस पर भरोसा नहीं कर सकते। यह सिद्धांत माता-पिता सहित अधिकार के हर एक पद पर लागू होता है।

माता-पिता, यदि आप अपने बच्चे के साथ झगड़ते हैं, तो संभव है कि आपने कुछ गलतियाँ की हैं, जिन्हें स्वीकार करने की आवश्यकता है। हो सकता है कि बच्चा आपकी गलतियों से अपने गलत काम को सही ठहरा रहा हो। अपने कठोर शब्दों, जल्दबाज़ी में दिये गए जवाब और किसी स्थिति को समझने में विफलता के लिए माफी माँगें। जब तक आप ऐसा नहीं करेंगे तब तक संभव है कि झगड़ा समाप्त करने की दिशा में कोई प्रगति न हो, क्योंकि, "परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है।" (याकूब 4:6)

चाहे आप माता-पिता हों या बच्चे, आपको अपनी गलतियों को स्वीकार करना होगा। पश्चाताप, क्षमा याचना, और परमेश्वर द्वारा दिये गये अधिकार के प्रति लगातार समर्पण आमतौर पर दूसरों से बेहतर सहयोग प्राप्त करेगा, लेकिन यही कारण नहीं है कि आपको ऐसा करना चाहिए। आपको परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए ऐसा करना चाहिए।

जब आप अपने द्वारा की गई गलतियों को स्वीकार करते हैं, तो आपको यह सुनिश्चित करने की जरूरत नहीं है कि दूसरे व्यक्ति को उसकी गलतियों के लिए दोषी ठहराया जाए। अपने गलत कार्यों का बहाना बनाने के लिए दूसरे व्यक्ति की गलतियों का उपयोग न करें।

रिश्ते में तुरंत सुधार हो सकता है, या इसमें समय लग सकता है। कभी-कभी लोगों को बदलने से पहले यह देखना पड़ता है कि बदलाव वास्तविक है या नहीं। लेकिन आपके लिए जो सही है, उसे करने का कारण किसी और को बदलना नहीं है। आपको वह करने की ज़रूरत है, जो परमेश्वर आपसे करवाना चाहता है। हो सकता है कि दूसरा व्यक्ति नहीं बदलेगा, लेकिन आपके पास स्पष्ट विवेक होगा और परमेश्वर की आशीष होगी, क्योंकि आप अपनी जिम्मेदारी पूरी कर रहे हैं। अपनी जिम्मेदारी पूरी करने के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखें।

जीवन के हर एक क्षेत्र में परमेश्वर के अधिकार के अधीन रहने का महत्व

ज़िविया नाम के एक छोटे से द्वीप की कल्पना करें। ग्रेकिया नाम का एक नज़दीक पाए जाने वाला द्वीप ज़िविया को जीतना चाहता है। ग्रेकिया के शासक ने ज़िविया की सरकार से वादा किया कि अगर ज़िविया ग्रेकिया को अपने द्वीप के मध्य में सिर्फ 10 एकड़ जमीन दे तो दोनों देशों में शांति हो सकती है। क्या यह शांति के लिए अच्छा समाधान होगा? यदि ज़िविया दुश्मन को अपने क्षेत्र के बीच में एक क्षेत्र देता है, तो दुश्मन उस क्षेत्र से फैलकर और अधिक जीत हासिल कर सकता है।

अपने जीवन को विभिन्न क्षेत्रों वाले एक राज्य के रूप में कल्पना करें। इसमें एक क्षेत्र रोजगार या स्कूल हो सकता है। दूसरा क्षेत्र आपका मनोरंजन है। और फिर कोई और क्षेत्र परिवार के सदस्यों के साथ आपका रिश्ता है। और भी कई क्षेत्र हैं।

संपूर्ण राज्य आपके जीवन के सभी क्षेत्रों के साथ, परमेश्वर के अधिकार के अधीन होना चाहिए। यदि एक क्षेत्र, परिवार के सदस्यों के साथ संबंध, परमेश्वर के अधिकार के अधीन नहीं है, तो क्या होगा? आपने शैतान को उस क्षेत्र में आने की अनुमति दी है। उस क्षेत्र से वह आपके जीवन के अन्य क्षेत्रों पर आक्रमण करना शुरू कर देगा। इसी तरह, यदि कोई व्यक्ति अपने मनोरंजन में अशुद्ध है, तो उसके जीवन के अन्य क्षेत्रों पर शैतान द्वारा आक्रमण किया जाएगा। एक मसीही को अपने जीवन

के हर क्षेत्र में परमेश्वर के अधिकार के अधीन रहना चाहिए।

माता-पिता के करने के लिये कुछ बातें

► छात्रों को समूह के लिए इफ़िसियों 6:4, कुलुस्सियों 3:21, 1 कुरिन्थियों 13:11, और कुलुस्सियों 3:8 को पढ़ना चाहिए।

यदि आपका बच्चा भावुक है, क्रोध या निराशा व्यक्त कर रहा है, तो वह सोचता है कि आप उसे नहीं समझते हैं। वह शायद सोचता है कि आप उसको सुनने और समझने में कोई दिलचस्पी नहीं रखते।

सुनने और समझने की कोशिश करें। यदि आप बार-बार उसकी समस्याओं को मामूली या उपहास कहकर खारिज कर रहे हैं, तो आप नहीं समझते कि वह वास्तव में क्या सामना कर रहा है। यदि यह उसे एक बड़ी समस्या लगती है, तो यह उसके विश्वास और चरित्र के लिए एक चुनौती है। यदि आप यह नहीं समझते हैं कि वह इतनी दृढ़ता से प्रतिक्रिया क्यों कर रहा है, तो आप स्थिति में निहित महत्व को नहीं समझते हैं।

कभी भी अपने बच्चे का साथ न छोड़ें और ऐसे बयान न दें जिससे लगे कि आपने हार मान ली है।

यह मत सोचिए कि आपके सभी बच्चे एक जैसे हैं।

► एक छात्र को समूह के लिए इफ़िसियों 4:30-32 पढ़ना चाहिए।

जब समस्याएँ आती हैं, तो पिछली असफलताओं को याद न करें। बच्चा अपनी पिछली असफलताओं को आज के लिए व्यर्थ मानना चाहता है। वह सोचता है कि वह अब अलग है और आपके लिए उसे उसकी पिछली गलतियों को याद दिलाना अनुचित है। हालाँकि, उससे यह अपेक्षा न करें कि वह आपके प्रति इतना उदार होगा।

सामूहिक चर्चा के लिए

► इस पाठ की कुछ अवधारणाएँ क्या हैं, जो आपके लिए नई हैं? क्या आप कुछ चीज़ें साझा करेंगे, जिन्हें आप अपने व्यवहार में बदलने की योजना बना रहे हैं?

► आगे उन तरीकों पर चर्चा करें जिनसे कलीसिया परिवार के रूप में घर पर जीवन को बेहतर बनाने और कलीसिया के बच्चों की मदद करने के लिए मिलकर कार्य कर सकते हैं।

प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता,

हम चाहते हैं कि हमारा घर प्रेम, सुरक्षा और आशीष का स्थान बनें। हम जो कुछ भी करते हैं, उसमें शुद्ध और प्रेम के साथ करने में हमारी सहायता करें।

मसीही शिक्षा और व्यवहार में सुसंगत रहने में हमारी सहायता करें। हमारे बच्चों को आपका अनुसरण करने की इच्छा दें।

हमारे हर एक बच्चे के प्रति विश्ववासयोग्य रहने के लिए धन्यवाद। हम जानते हैं कि आपका आत्मा उनके मनों में कार्य कर रहा है।

आमीन

पाठ सम्बन्धी नियत कार्य

(1) परिवारों के लिए बाइबल के सात निर्देशों की एक सूची तैयार करें। फिर वास्तविक जीवन स्थितियों के लिए विशेष अनुप्रयोगों की सूची बनाएँ। हर एक अनुप्रयोग को समझाते हुए एक अनुच्छेद लिखें (सात अनुच्छेद)।

(2) नीचे दिए गए विषयों में से एक को चुनें। नीतिवचन की पुस्तक पढ़ें और इस विषय को संबोधित करने वाली नीतिवचनों की एक सूची बनाएँ। नीतिवचन इस विषय के बारे में क्या कहते हैं, इसका सारांश देते हुए दो अनुच्छेद लिखें। फिर एक माता-पिता अपने बच्चे या किशोर को सिद्धांत कैसे सिखा सकते हैं, इसके बारे में तीन अनुच्छेद लिखें। विषय:

- सच बोलना
- वित्त
- बुद्धि और धन के मूल्यों में अंतर
- विश्वसनीयता
- यौन शुद्धता
- दीनता
- निर्देश एवं सुधार प्राप्त करना
- मेहनती होना/पहल करना
- आनंद के बारे में परमेश्वर क्या कहता हैं
- वार्तालाप
- दूसरों के साथ संबंध
- उदारता

पाठ 14

किशोरावस्था तक पालन-पोषण

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में, छात्र यह करने लगेंगे:

(1) किशोरावस्था के लिए परमेश्वर की प्राथमिकताओं को समझें।

(2) किशोरों को उनके वयस्कता की तैयारी के लिए प्रभावित करने और प्रशिक्षित करने की जिम्मेदारी लें।

(3) किशोरों के साथ अच्छा, उपयोगी संबंध विकसित करने के लिए प्रेरित हों।

(4) किशोरावस्था की चुनौतियों का सामना करते हुए बाइबल के सिद्धांतों का पालन करने के लिए तैयार रहें।

मार्था - घर पर एक प्रशिक्षक

हर शाम, मार्था अपने दो बच्चों के साथ प्रार्थना और पवित्रशास्त्र पढ़ने का समय निकालती थी। वह पवित्रशास्त्र की कुछ आयतों को पढ़ती थी, हर आयत के अंत में रुककर जीवन में अनुप्रयोगों के बारे में बात करती थी। जब उसके बच्चे किशोर हो गए, तो मार्था ने उन्हें बारी-बारी से पवित्रशास्त्र की आयतों को पढ़ने और समझाने दिए। उन्होंने पवित्रशास्त्र को अच्छी तरह से समझाया, क्योंकि उन्होंने अपनी माँ के उदाहरण से सीखा था।

किशोरावस्था का समय

हर समाज में बचपन और वयस्क के बीच के जीवन के समय का एक नाम होता है। यह वह समय है, जब एक युवा में कामुकता जैसी रुचि होने लगती है, लेकिन वह अभी तक वयस्क जिम्मेदारी लेने में सक्षम नहीं होता है। कुछ देशों में, एक व्यक्ति 18 वर्ष की आयु में कानूनी रूप से वयस्क होता है। उन देशों में, 18 वर्ष से कम उम्र का कोई भी व्यक्ति माता-पिता की अनुमति के बिना शादी नहीं कर सकता, सेना में सेवा नहीं कर सकता, या कानूनी अनुबंध नहीं कर सकता।

किशोरावस्था की उम्र हर जगह बिल्कुल एक जैसी नहीं होती। कुछ ऐसे समाज हैं, जहाँ एक व्यक्ति 18 वर्ष की आयु से पहले वयस्क के रूप में रहने के लिए तैयार होता है, जब वह उन कामों को करना सीख जाता है, जो एक वयस्क करता है। अन्य समाजों में, कोई व्यक्ति 18 वर्ष की आयु के बाद भी शिक्षा पूरी करते समय कई वर्षों तक माता-पिता पर निर्भर रहता है।

► आपके समाज में बचपन और वयस्क के बीच के चरण में युवाओं का वर्णन करने के लिए किस शब्द का उपयोग किया जाता है?

► वयस्क क्या है?

वयस्क की एक परिभाषा जो लोगों और जानवरों दोनों के लिए उपयोग की जाती है, वह यह है: एक व्यक्ति जो शारीरिक रूप से परिपक्व हो गया है। हालाँकि, मानवीय वयस्कता का अर्थ शारीरिक परिपक्वता से कहीं अधिक है। एक युवा व्यक्ति का आकार और ताकत एक वयस्क के बराबर हो सकती है, फिर भी वह वयस्क जिम्मेदारियां लेने के लिए तैयार नहीं हो सकता है।

► शारीरिक परिपक्वता के अलावा वयस्कों में क्या विशेषताएँ होती हैं?

आम तौर पर, एक वयस्क वह व्यक्ति होता है, जो खुद को निर्देशन करने और खुद निर्णयों की जिम्मेदारी लेने में सक्षम होता है। यह परिभाषा ठीक नहीं है, क्योंकि खुद की जिम्मेदारी के स्तर काफी अलग होते हैं। हर एक व्यक्ति जो अकेला नहीं है, वह दूसरे लोगों से प्रभावित होता है, और यहाँ तक कि वयस्क भी हर निर्णय में पूरी तरह से आज़ाद नहीं होता है। हालाँकि, वयस्कता की पहचान आम तौर पर खुद के निर्णय लेने और उसके लिए जिम्मेदार होने से होती है। किशोरावस्था के अंत तक व्यक्ति को खुद निर्णय लेने के लिए तैयार होना चाहिए। माता-पिता का लक्ष्य किशोरों को उस जिम्मेदारी के लिए तैयार करना है।

यीशु ने एक पुत्र की कहानी बताई जिसने अपने पिता से अपने हिस्से की मांग की, जो अभी भी जीवित था (लूका 15:11-32)। पुत्र ने पैसे ले लिए और बेतहाशा बर्बाद कर दिए। यह एक ऐसे व्यक्ति का उदाहरण है, जो किशोरावस्था को पार करके वयस्क बन गया है, लेकिन सही निर्णय लेने के लिए तैयार नहीं था। ऐसे कई युवा वयस्क हैं, जो अपने द्वारा लिए गए गलत निर्णयों के कारण मुसीबतों का अनुभव कर रहे हैं, क्योंकि वयस्कता की आज़ादी और जिम्मेदारी लेने से पहले उनका विकास अच्छी तरह से नहीं हुआ था।

परमरेश्वर के वचन में किशोरावस्था का बहुत ज्ञान है, जो मानवीय विकास का एक महत्वपूर्ण समय है।

शारीरिक और मानसिक विकास

► एक छात्र को समूह के लिए लूका 2:40, 52 पढ़ना चाहिए।

यीशु ने किशोरावस्था में प्रवेश किया और मानसिक और शारीरिक रूप से विकसित हुआ। इन दो आयतों के बीच यीशु द्वारा शिक्षकों से बात करने के लिए मंदिर जाने के बारे में लिखा है। वह सिर्फ शारीरिक रूप से नहीं बढ़ रहा था, बल्कि वह आज़ाद होने के भी योग्य महसूस कर रहा था। वह अपने परिवार और दोस्तों के अलावा दूसरों के साथ भी विचार साझा करने के लिए तैयार रहता था।

उपदेशकों के साथ यीशु की बातचीत पर मरियम और यूसुफ आश्चर्यचकित थे, लेकिन फिर मरियम ने यीशु से कहा कि वह और यूसुफ तीन दिनों से चिंतित थे (लूका 2:46-48)। यीशु ने कहा कि उन्हें चिंतित नहीं होना चाहिए था, क्योंकि वह अपने

पिता का कार्य शुरू कर रहा था (लूका 2:49)। एक किशोर के रूप में उसे अपने जीवन के जुनून को पुरा करने की इच्छा महसूस हुई। हालाँकि, वह घर लौट आया और अपनी किशोरावस्था के बाकी के साल अपने माता-पिता की अधीनता में बिताये (लूका 2:51)।

प्रारंभिक किशोरावस्था के दौरान, एक बच्चे का शरीर एक वयस्क की तरह बदल जाता है। बच्चे की लंबाई तेजी से बढ़ सकती है। शरीर के कई अंगो पर बाल उगने लगते हैं। आवाज भारी हो सकती है। एक पिता या माँ को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनका बच्चा यह समझे कि परिवर्तन सामान्य हैं। परमेश्वर ने मनुष्य के सामान्य शारीरिक और मानसिक विकास की योजना बनाई है।

अपने बच्चे के साथ अच्छे संबंध रखने से उन्हें जीवन के इस चरण के दौरान आपके साथ खुलकर बातचीत करने में सक्षम महसूस करने में मदद मिलेगी। एक बच्चा जो इन चीजों के बारे में अपने माता-पिता से बात करने में सहज महसूस नहीं करता है, उसे गुप्त भय हो सकता है और वह दोस्तों या ऑनलाइन से जानकारी मांग सकता है।

भावनात्मक विकास

किशोरावस्था केवल पहले की तरह बच्चे के जीवन की निरंतरता नहीं है। माता-पिता का यह सोचना गलत है कि वे किशोरों को वैसे ही निर्देश देना और पढ़ाना जारी रख सकते हैं, जैसे वे एक छोटे बच्चे को करते हैं। किशोरों का मन और रुचियाँ बदल रही हैं। वह वयस्क आज़ादी, सफलता और सम्मान की इच्छा महसूस करता है। यदि किशोरों के साथ छोटे बच्चों जैसा व्यवहार किया जाता है, तो वे निराश हो जाते हैं।

पूरे पवित्र शास्त्र में युवाओं के बुद्धिमानी भरे निर्णय लेने के उदाहरण हैं, जैसा कि यीशु ने किया था, या ख़राब निर्णय लेने के, जैसा कि हम यीशु द्वारा बताई गई कहानी में पढ़ते हैं (लूका 15:11-32)। माता-पिता को यह समझने की ज़रूरत है कि उनका बेटा या बेटी भावनात्मक रूप से कैसे विकसित हो रहे हैं। माता-पिता का लक्ष्य युवा व्यक्ति को भावनाओं सहित सभी क्षेत्रों में आत्म-नियंत्रण विकसित करने में मदद करना है, ताकि पिता या माँ के नियंत्रण की अब आवश्यकता न रहे।

▶ इफ़िसियों 6:1-4 पढ़ें। इस परिच्छेद से हमें क्या विशेष दिशाएँ मिलती हैं?

बच्चों से माता और पिता दोनों की आज्ञा मानने की अपेक्षा की जाती है, जिसका अर्थ है कि पिता और माता को सहयोग करना चाहिए। यह अनुच्छेद माता-पिता की आज्ञाकारिता को परमेश्वर की आज्ञा मानने की प्रतिज्ञा से जोड़ता है। जो माता-पिता अपने बच्चों को आज्ञापालन करना नहीं सिखाते, वे उन्हें परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए तैयार नहीं कर रहे हैं। माता-पिता होने के नाते बच्चों को अपने विरुद्ध विद्रोह करने देना उन्हें परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए तैयार करना है।

यह पवित्र शास्त्र पिता को विशेष निर्देश देता है। पिता को इस तरह से अनुशासन देना चाहिए कि बच्चे सही कार्य करने से निराश या हतोत्साहित न हों। सज़ा और सुधार आवश्यक हैं, और वे बच्चे को तुरंत खुश नहीं करते हैं, लेकिन पिता को सुसंगत और प्रेम करने वाला होना चाहिए। यानी पिता को बच्चे के भावनात्मक विकास के बारे में कुछ समझना चाहिए।

पिता को केवल सुधारना नहीं चाहिए, बल्कि आत्मिक पोषण और शिक्षा भी देनी चाहिए। हम अपने बच्चों का विकास केवल उनकी गलतियों की सजा देकर नहीं करते। हमें अपने बच्चों को समझने और प्रोत्साहित करने की कोशिश करनी चाहिए। हम परमेश्वर के सत्य का उपयोग करते हैं, केवल अपनी आवश्यकताओं का नहीं। हम दिखाते हैं कि हम भी परमेश्वर की आज्ञाकारिता में जी रहे हैं।

जब एक बच्चा अपने बचपन के वर्षों के दौरान सम्मान और आज्ञापालन करना सीख जाता है, तो एक किशोर का प्रशिक्षण बहुत आसान हो जाता है! जब बच्चे छोटे थे तब माता-पिता ने जो संबंध स्थापित किया था, वह किशोरों के अनुभवों में शारीरिक, भावनात्मक और आत्मिक परिवर्तनों के दौरान मदद करेगा। पालन-पोषण को आसान बनाने के लिए कोई दिशा-निर्देश नहीं हैं, लेकिन जल्दी ही अच्छे संबंध स्थापित करने से किशोरावस्था के दौरान संचार संभव हो जाता है।

माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे सुनें, लेकिन अक्सर पिता या माँ को पहले सुनना चाहिए। कृपया, खुद के लिए और उनके लिए - अपना फोन, पुस्तक, कार्य, या जो कुछ भी आप कर रहे हैं, तो उसे छोड़ दें और जब उन्हें बात करने की ज़रूरत हो तो उन पर ध्यान दें। उनकी बात ऐसे सुनें जैसे कोई और बात मायने नहीं रखती। उनकी गलतियों को सुधारे बिना तब तक सुनें जब तक आप वास्तव में समझ न लें कि वे क्या कहना चाहते हैं। उन्हें यह महसूस करने की ज़रूरत है कि आप वास्तव में उन्हें और उनके दृष्टिकोण को महत्व देते हैं, और आप एक व्यक्ति के रूप में उनका सम्मान करते हैं। भले ही उन्हें आपकी सलाह पसंद न आए, लेकिन जब उन्हें पता चलेगा कि आपने वास्तव में उनकी बात सुनी है, तो वे इसका अधिक सम्मान करेंगे।

जब कोई युवा व्यक्ति हताशा, क्रोध, व्यक्त कर रहा हो तो उसे सुनना मुश्किल लग सकता है। याद रखें कि युवा व्यक्ति खुद की भावनाओं को पूरी तरह से नहीं समझता है। कभी-कभी एक युवा व्यक्ति वही कहता है, जो वे कहते हैं, क्योंकि उसकी भावनाएँ उसकी परिस्थितियों, रिश्तों और शरीर से प्रभावित होती हैं। ये सभी चीजें एक किशोर की भावनाओं को प्रभावित कर सकती हैं: स्कूल से तनाव, दोस्तों द्वारा स्वीकार किए जाने का दबाव, शारीरिक परिवर्तनों के बारे में चिंता, मूल्यवान या सम्मानित महसूस न करने पर नाराजगी, उनके हार्मोन क्या कर रहे हैं, और असंगत नींद की आदतों से उनकी थकान।

आत्मिक विकास

▶ सभोपदेशक 11:9-12:1, 13 पढ़ें। आप एक युवा व्यक्ति को इन आयतों के आदेशों को कैसे समझाएँगे?

संसार युवा लोगों के लापरवाह और अनैतिक व्यवहार को माफ कर सकता है, लेकिन ये आयतें युवाओं को याद रखने के लिए कहती हैं कि वे अपने कार्यों के लिए परमेश्वर के प्रति जवाबदेह हैं। वह उनका न्यायी है।

जीवन की अलग-अलग गतिविधियों के दौरान परमेश्वर के वचन को सिखाना जीवन के इस चरण में अभी भी बहुत महत्वपूर्ण है (व्यवस्थाविवरण 6:6-7)। हालाँकि, यह बहुत मुश्किल है, क्योंकि किशोर परिवार से बाहर कई गतिविधियों में व्यस्त हो जाते हैं। उसकी अपनी रुचियाँ हैं, शैक्षिक गतिविधियाँ हैं, खेल गतिविधियाँ और दोस्तों के समूह हैं। उसके माता-पिता हर

समय उसके साथ नहीं रह सकते, लेकिन परमेश्वर है, और माता-पिता को उसके लिए प्रार्थना करने में विश्वासयोग्य होना चाहिए। पिताओं और माताओं को विशेष बातचीत के लिए समय निकालने के लिए परमेश्वर से ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। माता-पिता के लिए अपने युवा व्यक्ति के जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़े रहना और जागरूक रहना बहुत महत्वपूर्ण है।

▶1 थिस्सलुनीकियों 2:11-12 को एक साथ पढ़ें। परमेश्वर ने पिताओं को अपने बढ़ते बच्चों के साथ संबंधों में क्या जिम्मेदारी दी है?

क्योंकि मुश्किल स्पष्ट नहीं हैं, इसलिए माता-पिता केवल यह न मान लें कि सब कुछ ठीक है। अपने बेटे या बेटी से अपेक्षा करें कि वे प्रलोभनों का सामना करें और कमजोरियों का अनुभव करें, क्योंकि उनके साथ ऐसा होगा! उन्हें उनके वित्त, वे अपना समय कैसे व्यतीत करते हैं, वे जीवन में क्या चुनाव कर रहे हैं और उनकी यौन शुद्धता के लिए जवाबदेही प्रदान करें। दूसरों से ज्ञान और सलाह मांगें। चिंता करने वाले शिक्षकों और अन्य लोगों की बात सुनें। भले ही आप अपने बच्चे के बारे में किसी और की राय से सहमत न हों, फिर भी आपको सुनना चाहिए और अपने बच्चे की ज़रूरतों को समझने की कोशिश करनी चाहिए।

अपने किशोरों के लिए प्रार्थना करें और उन्हें बताएँ कि आप उनके लिए प्रार्थना कर रहे हैं। वह सुने कि आप उनके लिए प्रार्थना करते हैं। जिन विशेष विषय के लिए आप प्रार्थना कर रहे हैं, उनके साथ बाँटे। उदाहरण के लिए, आप कह सकते हैं कि, "मैं प्रार्थना कर रहा हूँ कि तुम धार्मिकता के भूखे और प्यासे हों (मत्ती 5:6); और जैसे हिरनी जल के लिये हाँफती है, वैसे ही तुम परमेश्वर के लिये प्यासे हो जाओ (भजन संहिता 42:1)। मैं परमेश्वर से विनती कर रहा हूँ कि वह तुमको अपनी आत्मा से भर दे (इफ़िसियों 5:18) ताकी तुम उससे अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखो और अपने पड़ोसी[या भाई-बहन] से अपने समान प्रेम रखो (मत्ती 22:37-39)।"

▶ पवित्र शास्त्र की दूसरी कौन सी आयतें हैं, जिससे आप अपने किशोर के लिए प्रार्थना कर सकते हैं?

अंत में, अपने किशोरों के साथ इस आत्मिक यात्रा पर, परमेश्वर के वचन का प्रयोग करें:

- एक उदाहरण बनें: नियमित रूप से अपनी बाइबल का अध्ययन करने में निजी समय बिताएँ। अपने बेटे या बेटी से बात करें कि परमेश्वर आपको क्या सिखा रहा है और आप परमेश्वर के वचन को अपने जीवन में कैसे लागू कर रहे हैं। भले ही उनके पास उत्साही प्रतिक्रिया नहीं है या बातचीत जारी नहीं रखते हैं, वे सुन रहे हैं और वचन से प्रभावित हो रहे हैं!

- एक परिवार के रूप में एक साथ मिलकर पवित्र शास्त्र की आयतों को याद करें और हर दिन के भोजन के समय या दिन के अंत में आयतों को बोलें।

- नीतिवचन की पुस्तक से एक समय में एक आयत पढ़ें और उस पर बातचीत करें। नीतिवचन रोजमर्रा की जिंदगी के लिए व्यावहारिक ज्ञान के साथ, छोटी प्रार्थना के समय के लिए एक अद्भुत पुस्तक है। यह ढेर सारी बातचीत के

अवसर प्रदान करती है और बहुत बड़ा प्रभाव डालती है।

- पूरे पवित्र शास्त्र में निर्देश, सिद्धांत और उदाहरण जीवन के हर पहलू पर लागू होते हैं, इसलिए अपने बेटों और बेटियों के साथ परमेश्वर के सभी वचनों का अध्ययन करें।

सामाजिक विकास

लूका 2:52, वह आयत है, जो एक किशोर के रूप में यीशु के विकास का वर्णन करती है, कहती है कि वह दूसरों के साथ अपने संबंधों में भी विकसित हुआ। परमेश्वर को हमारे संबंधों में बहुत रुचि है। उसने हमें मानवीय संपर्क और संगति के लिए बनाया है।

परिवार के सदस्यों के अलावा, हम सहपाठियों, पड़ोसियों, कलीसिया के समूहों, कार्य देनेवालों, शिक्षकों और अन्य अगुवों और मीडिया से प्रभावित होते हैं। अच्छे या बुरे, हमउम्र साथी आमतौर पर सबसे प्रभावशाली होते हैं। मसीही माता-पिता को अपने बच्चों और युवाओं के सामाजिक सम्बन्धों पर नज़र रखनी चाहिए।

जैसे-जैसे आपका युवा व्यक्ति वयस्कता की ओर बढ़ता है, सावधानीपूर्वक और प्रार्थनापूर्वक विचार करें कि वे कितना खुद को संभाल सकता है। अपने परिवार के कंप्यूटर और यंत्रिक उपकरणों पर, पासवर्ड और विशेष ऐप्स का उपयोग करें जो आपके परिवार को बुरी सामग्री तक पहुँचने से बचा सकते हैं। उपकरणों के उपयोग के लिए समय सीमा निर्धारित करें। वेबसाइटों, फिल्मों, टीवी कार्यक्रमों और सोशल मीडिया की निगरानी करें। जिस तरह आप अपने किशोर को अपने पड़ोस में कुछ लोगों के साथ समय बिताने की अनुमति नहीं देंगे, उसी तरह उन्हें अपने इलेक्ट्रॉनिक उपकरण पर गलत लोगों का अनुसरण करने या उनसे जुड़ने की अनुमति भी न दें।

▶ केवल अपने युवाओं की सुरक्षा करना ही काफी नहीं है। किशोरावस्था में, आप अपने बेटे या बेटी को खुद के बुद्धिमान निर्णय लेने की जिम्मेदारी लेने के लिए भी तैयार कर रहे हैं, जो परमेश्वर का सम्मान करते हैं और उनके प्राणों की रक्षा करते हैं। ऐसे कौन से तरीके हैं, जिनसे आप अपने किशोरों को तकनीकी उपयोग और उनको सामाजिक दुनिया में जिम्मेदारी और जवाबदेही सिखा सकते हैं?

युवा लोग दोस्तों का ऐसा समूह बनाते हैं, जो एक साथ अधिक समय बिताते हैं। वे रुचियों को साझा करना सीखते हैं, जैसे एक ही प्रकार के मनोरंजन का आनंद लेना। वे कलीसिया, अपने माता-पिता, स्कूल और अन्य संस्थानों के प्रति एक जैसा व्यवहार करना शुरू कर देते हैं। माता-पिता अक्सर अपने किशोरों के व्यवहार में बदलाव को देखकर आश्चर्यचकित रह जाते हैं। युवा लोग कभी-कभी अप्रत्याशित टिप्पणियाँ और आलोचनाएँ करते हैं और उन शब्दावली का उपयोग करते हैं, जो उन्होंने दोस्तों से सीखी हैं। दोस्तों का समूह एक वैकल्पिक परिवार बन जाता है, जो अपने सदस्यों को सहमति प्रदान करता है। एक युवा व्यक्ति वैकल्पिक परिवार के प्रति अत्यधिक आकर्षित होता है, यदि उसका खुद का परिवार उसे महत्व, पहचान और सहमति की भावना नहीं देता है।

माता-पिता के लिए किसी किशोर को दोस्तों के समूह से बाहर निकालना या उसके प्रभाव को सीमित करना बहुत कठिन होता है। जब माता-पिता समूह या व्यक्तियों की आलोचना करते हैं, तो बच्चा उनका बचाव करना चाहता है और महसूस करता है कि माता-पिता उसे नहीं समझते हैं। एक पिता या माँ देखभाल, रुचि और प्रेम दिखाकर किशोर की मदद कर सकती हैं। जब माता-पिता युवा व्यक्ति की भावनात्मक जरूरतों को पूरा करता है, तो वे वैकल्पिक परिवार के रूप में दोस्तों के समूह पर निर्भर नहीं होता है।

▶ कई परिवारों के माता-पिता अपने किशोरों की मदद के लिए एक साथ कैसे कार्य कर सकते हैं?

▶ आपकी कलीसिया किशोरों के माता-पिता की सहायता कैसे कर सकती है, जब वे अपने युवाओं को स्वस्थशील, सामाजिक जीवन जीने में मदद करते हैं, जिससे परमेश्वर का सम्मान होता है?

वयस्कों में परिवर्तनकाल के समय कठिनाइयाँ

एक बच्चा एक ही समय में वयस्क नहीं बन जाता। एक बच्चा कई वर्षों तक चलने वाले परिवर्तनकाल से गुजरता है।

पुरे पवित्र शास्त्र में से, नीतिवचन की पुस्तक विशेष रूप से युवा लोगों के लिए लिखी गई थी। नीतिवचन में, राजा सुलैमान ने अपने बेटे को संबोधित किया है, जो जीवन के बारे में सीख रहा था और वैश्विक नजरिया विकसित कर रहा था। सुलैमान ने अपने बेटे से जीवन के हर क्षेत्र के बारे में बात की, परमेश्वर के तरीकों को चुनने के प्रतिफलों के बारे में और परमेश्वर के तरीकों को अस्वीकार करने के खतरों के बारे में।

बचपन और किशोरावस्था की मान्यताएँ और उस दौरान चुने गए विकल्प व्यक्ति के जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। जैसा कि हम वयस्कता में परिवर्तनकाल की कई चुनौतियों पर विचार करते हैं, हम इस बारे में सोचेंगे कि परमेश्वर का वचन हमारे युवाओं के किशोरावस्था के वर्षों में कैसे मदद कर सकता है।

चुनौती 1: किशोर को जो कुछ सिखाया गया है, वह उसका मूल्यांकन करता है और निर्णय लेता है कि वह किस पर विश्वास करेगा।

एक किशोर चाहता है कि उसकी मान्यताएँ उसके मन में स्पष्ट हों, इसलिए वह जो सिखाया गया है, उसका मूल्यांकन करता है और उस पर सवाल उठाता है। ऐसा हो सकता है कि वह अपने माता-पिता द्वारा सिखाई गई हर बात को स्वीकार नहीं करेगा। माता-पिता उस जोखिम से डरते हैं। यदि वे उसे उन मुद्दों को समझने में मदद करने में असमर्थ महसूस करते हैं, जिन पर वह विचार कर रहा है, तो वे उसके साथ फिर से एक बच्चे की तरह व्यवहार करना शुरू कर सकते हैं, और मांग कर सकते हैं कि वह बिना किसी सवाल के उनकी मान्यताओं को स्वीकार कर ले। इससे किशोर को लगता है कि वे उसे अपने बारे में सोचने नहीं दिया जा रहा।

माता-पिता को धैर्यपूर्वक मान्यताओं के कारणों को समझाने चाहिए और किशोर को अन्य लोगों से बात करने का अवसर

देना चाहिए जो समझाने में मदद कर सकते हैं।

▶ नीतिवचन 23:22-23 एक साथ पढ़ें।

इन आयतों में, परमेश्वर कहता है कि एक युवा व्यक्ति को अपने माता-पिता की बुद्धि की बातें सुननी चाहिए। एक पिता या माँ अपने किशोर के लिए यह चुनाव नहीं कर सकते, लेकिन वे एक अच्छा संबध विकसित कर सकते हैं। यदि माता-पिता अपने बेटे या बेटी के साथ खुले और सम्मानजनक संचार में रहते हैं, तो यह उनके किशोरों को चुनाव के लिए प्रोत्साहित करेगा।

चुनौती 2: किशोर निर्णय लेने की जिम्मेदारी लेना शुरू कर देता है।

एक किशोर यह समझने लगा है कि निर्णय कैसे लिए जाते हैं, और वह स्वयं निर्णय लेने में सक्षम महसूस करता है, लेकिन उसके माता-पिता और अन्य लोग उसकी पसंद को सीमित कर देते हैं। वह उनके अधिकार के खिलाफ विद्रोह करने के लिए प्रलोभित होता है, क्योंकि उसे लगता है कि उन्हें उसकी क्षमता का एहसास नहीं है। यदि वह विद्रोह करता है, तो माता-पिता स्वाभाविक रूप से उस पर अधिक प्रतिबंध लगाकर प्रतिक्रिया करते हैं।

माता-पिता को अपने बच्चों के जीवन के इस चरण के लिए एक अच्छी नींव रखनी चाहिए जब वे बहुत छोटे हों। वे अपने बच्चों को दिखा सकते हैं कि उन्हें उनसे जो चाहिए वह उनकी खुद की भलाई के लिए है, जैसे परमेश्वर का अनुशासन हमारी भलाई के लिए है (इब्रानियों 12:9-10)। माता-पिता यह प्रदर्शित कर सकते हैं कि वे केवल ऐसे नियम नहीं बना रहे हैं, जो माता-पिता के रूप में उनके लिए सुविधा लाएँगे।

दूसरा, माता-पिता धीरे-धीरे अपने बच्चों को उनके बचपन और किशोरावस्था के दौरान बड़े और अधिक महत्वपूर्ण निर्णयों की जिम्मेदारी दे सकते हैं। यह युवाओं को जिम्मेदारी का अभ्यास करने, अपनी विश्वास्योग्यता साबित करने और वयस्कता के लिए तैयार करने में सक्षम बनाता है।

माता-पिता अभी भी अपने किशोर बच्चों के लिए सीमाएँ निर्धारित करने के लिए परमेश्वर के प्रति जिम्मेदार हैं (1 तीमुथियुस 3:4), लेकिन किशोरावस्था वयस्कता की तैयारी के वर्ष हैं, जब युवा व्यक्ति अपनी पसंद के लिए परमेश्वर के प्रति पूरी तरह से जिम्मेदार हो जाएगा। माता-पिता को अपने किशोर बच्चों को आने वाले समय के लिए तैयार करना चाहिए। नीतिवचन एक पिता द्वारा अपने बेटे से बुद्धिमान निर्णय लेने के लिए लिखे गये हैं। सुलैमान जानता था कि एक माता-पिता के रूप में वह अपने बेटे के लिए चुनाव नहीं कर सकता, लेकिन वह सही चुनाव को सबसे आकर्षक बना सकता है।

चुनौती 3: किशोर बच्चों में वयस्क जैसी परिपक्वता नहीं होती।

किशोर बच्चे शायद उन खतरों और जोखिमों को नहीं समझ पाते जिनसे उनके माता-पिता को चिंता होती है। किशोरावस्था के बच्चों को आमतौर पर लगता है कि वे अपने लक्ष्य हासिल कर सकते हैं और खतरों से बच सकते हैं। वे अक्सर निराश

महसूस करते हैं कि उनके माता-पिता को उनकी क्षमताओं और विवेक पर भरोसा नहीं है।

नीतिवचन हमें दिखाते हैं कि माता-पिता के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे अपने किशोर बच्चों को न केवल बताएँ कि क्या सही है और क्या गलत है या केवल उनके लिए सीमाएँ निर्धारित करें, बल्कि हर एक चुनाव के परिणामों के बारे में अपने किशोरों से बात करें। इस निर्देश को सुनना युवा व्यक्ति की परिपक्वता से सोचना सीखने में मदद करेगा।

▶ 1 पतरस 5:5 को एक साथ पढ़ें।

एक युवा व्यक्ति जो सबसे बुद्धिमान कार्य कर सकता है, वह यह है कि अपने माता-पिता के अधीन रहे और उनकी सही सलाह को सुने। जैसा कि 1 पतरस 5:5 हमें दिखाता है, जो युवा ऐसा करता है, उस पर परमेश्वर की विशेष कृपा होती है।

चुनौती 4: किशोर में एक वयस्क की इच्छाएँ होती हैं, लेकिन उसके पास वयस्क के विशेषाधिकार नहीं होते हैं।

वयस्कों के पास विवाह, संपत्ति का मालिक, नेतृत्व की स्थिति और निर्णय लेने की आज़ादी सहित कई विशेषाधिकारों के अवसर हैं। क्योंकि किशोर बच्चों को ये सौभाग्य अभी नहीं मिल सकते हैं, हालाँकि इनके लिए उनकी स्वाभाविक इच्छाएँ होती हैं, वे निराशा महसूस करते हैं। उनकी इच्छाएँ प्रलोभनों का कारण बनती हैं। 2 तीमुथियुस 2:22 युवाओं को यह जानने में मदद करता है कि इस कशमकश में क्या करना है।

▶ 2 तीमुथियुस 2:22 को एक साथ पढ़ें।

परमेश्वर उन युवाओं पर अनुग्रह करता है, जो उसकी आज्ञा मानना चाहते हैं। वह उन्हें अधिकारियों के अधीन होने में मदद करेगा और उनकी खुद की इच्छाओं को पूरा करने से इनकार करेगा जो उसके समय या इच्छा से बाहर हैं। वह मसीही किशोर बाच्चों को समझ, चरित्र और जीवन कौशल में वृद्धि करके वयस्कता की तैयारी के लिए इन इच्छाओं को प्रेरणा में बदलने में मदद करेगा।

चुनौती 5: किशोर दूसरों में असंगतता देखता है और इससे आहत होता है।

कई बार, किशोरों को ऐसे कई लोगों से निराशा हुई है, जिन्हें बेहतर उदाहरण और बेहतर आत्मिक अगुवा होना चाहिए था। जब ऐसा होता है, तो किशोर हर किसी पर अविश्वास करने लगते हैं। इस कारण से, कलीसिया के अगुवे और माता-पिता के रूप में आपके लिए सुसंगत, मसीही जीवन जीना आवश्यक है। आपके जीवन में विसंगतियों के परिणामस्वरूप युवा लोगों को अनंत काल नरक में बिताना पड़ सकता है। हालाँकि यीशु बच्चों की बात कर रहे थे, किशोरों की नहीं, मत्ती 18:6 निश्चित रूप से यहाँ लागू होता है।

▶ मत्ती 18:6 को एक साथ पढ़ें।

मसीही युवा व्यक्ति एक उदाहरण हो सकता है, भले ही उसने इसे दूसरों द्वारा एक आदर्श के रूप में नहीं देखा हो। पुराने

नियम में, शमूएल इसका एक उदाहरण है। शमूएल का पालन-पोषण एक ऐसे याजक के परिवार में हुआ, जो अधर्मी और कई मायनों में भ्रष्ट था, फिर भी उसने छोटी उम्र से ही परमेश्वर के लिए जीने का निर्णय लिया (1 शमूएल 1:20; 1 शमूएल 2:11-18, 22-26)। एक बच्चे और किशोर के रूप में भी, उसने एक पवित्र जीवन जिया (1 शमूएल 3:19, 21)।

▶ 1 तीमुथियुस 4:12 को एक साथ पढ़ें।

चुनौती 6: किशोर उत्साहपूर्वक कई निर्णयों और अवसरों का सामना कर रहा है।

किशोर अवसरों से भरी दुनिया देखते हैं। उन्हें अपने जीवन के लिए सही मार्ग खोजने में संघर्ष करना पड़ सकता है। उन्हें विभिन्न लोगों से इसके विपरीत सलाह मिलती है।

वे सोचते हैं कि अवसर लेने के लिए उन्हें किसी को वो देना पड़ेगा जो उन्हें चाहिए। किशोरों के लिए छोटी-छोटी चीजों में वफादार रहने का अभ्यास करना और परमेश्वर पर भरोसा करना महत्वपूर्ण है, कि वह अपने सही समय में उनके लिए और अधिक अवसर खोलेगा।

▶ लूका 16:10 को एक साथ पढ़ें।

किशोरों के लिए परमेश्वर की सलाह को सुनना भी महत्वपूर्ण है।

▶ नीतिवचन 11:14 को एक साथ पढ़ें।

युवा लोग पाएँगे कि परमेश्वर के ज्ञान का पालन करने में आशीष और आज़ादी है।

सामूहिक चर्चा के लिए

► इस पाठ में कौन से विचार आपके लिए सबसे अधिक उपयोगी हैं? वे आपको और आपके परिवार, समुदाय या कलीसिया को कैसे प्रभावित करेंगे?

► यदि आप एक किशोर बेटे या बेटी के माता-पिता हैं, तो जीवन के इस चरण में बच्चे के साथ एक खुला और सम्मानजनक रिश्ता विकसित करने के बारे में आप क्या सलाह साझा कर सकते हैं? अपनी गलतियों के प्रति ईमानदार रहें।

► ऐसी कौन सी व्यावहारिक चीज़ें हैं जो आप अपने युवाओं को बुद्धिमानी से सोचना और अच्छे निर्णय लेने में मदद करने के लिए कर सकते हैं?

► एक माता-पिता के रूप में आप कैसे जानते हैं कि आपके बच्चे के सौभाग्य और जिम्मेदारियों का विस्तार कब करना है?

► किशोरावस्था के दौरान माता-पिता की मुख्य जिम्मेदारियों और बच्चे की मुख्य जिम्मेदारियों का सारांश दें।

► जीवन के ऐसे कौन से क्षेत्र हैं, जिनमें एक पिता को अपने बच्चों के बड़े होने पर उन्हें प्रेरित, सावधान और मार्गदर्शन करना चाहिए?

प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता,

बच्चों को परिपक्व वयस्कता तक बढ़ाने की ज़िम्मेदारी के साथ हम पर भरोसा करने के लिए धन्यवाद। यह जिम्मेदारी कई मायनों में पेचीदी है, और आप हमें इसकी समझ दें।

आपके वचन में, हमने अपने बच्चों को ज्ञान, आत्म-नियंत्रण और आपकी आज्ञाकारिता सिखाने की हमारी ज़िम्मेदारी देखी है। हमें उस समय के लिए खेद है कि हम अपने किशोरों के साथ अपने संबंधों में इन प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित करने में विफल रहे हैं।

जैसे ही हम आपके वचन को पढ़ते हैं और उसका पालन करते हैं, हमें अपने बच्चों की जरूरतों के लिए विशेष ज्ञान दें। यह हमारी सबसे बड़ी इच्छा है कि वे अपने जीवन के सभी दिनों में वफादारी से आपका अनुसरण करें।

आमीन

पाठ सम्बन्धी नियत कार्य

(1) कम से कम तीन पवित्र शास्त्र की आयतों को खोजें जिनका उपयोग आप अपने परिवार में या अपने प्रभाव में किशोरों के लिए प्रार्थना करने के लिए कर सकते हैं। ऐसी पवित्र शास्त्र की आयत खोजें जो इससे सम्बन्धित हों

- उनकी आत्मिक ज़रूरतें
- उनका चरित्र विकास
- चीज़ें और लोग जो उन्हें प्रभावित करते हैं
- वे तरीके जिनसे उन्हें बढ़ने और विकसित होने की आवश्यकता है

इन आयतों को वहाँ लिखें जहाँ आप इन्हें बार-बार देख सकें। हर दिन अपने युवाओं के लिए प्रार्थना करने के लिए इन पवित्र शास्त्र का उपयोग करना शुरू करें।

(2) पाठ के अंत से सामूहिक चर्चा के लिए दो प्रश्न चुनें। हर एक के उत्तर में कम से कम एक अनुच्छेद लिखें।

(3) पढ़ने के लिए पवित्र शास्त्र की एक आयत को चुनें:

- नीतिवचन 4-5
- नीतिवचन 6
- नीतिवचन 23
- नीतिवचन 24

पढ़ते समय, निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार करें। इस अनुच्छेद से...

- एक किशोर बच्चे के माता-पिता की क्या प्राथमिकताएँ होनी चाहिए?
- एक किशोर बच्चे की क्या प्राथमिकताएँ होनी चाहिए?
- एक किशोर बच्चे के माता-पिता का कैसा व्यवहार होना चाहिए?
- एक किशोर बच्चे का कैसा व्यवहार होना चाहिए?
- एक किशोर बच्चे के माता-पिता को क्या करना चाहिए?
- एक किशोर को क्या करना चाहिए?
- माता-पिता और किशोर को जीवन के किन क्षेत्रों के बारे में बात करनी चाहिए?

किसी किशोर के माता-पिता के लिए अनुच्छेद के संदेशों का सारांश देने वाले कथनों की एक सूची लिखें। किसी किशोर बच्चे के लिए अनुच्छेद के संदेशों का सारांश देते हुए कथनों की दूसरी सूची लिखें।

पाठ 15

युवा वयस्क

पाठ के उद्देश्य

इस पाठ के अंत में, छात्र यह करने लगेंगे:

(1) युवा वयस्क के समय की महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों और मुद्दों पर परमेश्वर के दृष्टिकोण को समझें।

(2) युवा वयस्कों को बुद्धिमान निर्णय लेने और परमेश्वर के निर्देशों का पालन करने के लिए प्रभावित करने के लिए तैयार रहें।

मार्कस, एक प्रेरित युवा

जब मार्कस बच्चा था, तो उसके माता-पिता ने उसे अच्छा कार्य करना सिखाया। जब भी उसे कार्य करने और पैसे कमाने का मौका मिलता था, तो वह खुश होता था। वह हर उस कार्य को करने के लिए हमेशा तैयार रहता था, जिसके लिए उसे कोई रखता था। एक युवा के रूप में उसने घरं को अहातों में कार्य किया, अखबार को पहुँचाया और साइकिलों की मरम्मत की। मार्कस को एक व्यापारी बनने में रुचि थी, लेकिन वह जानता था कि परमेश्वर उसे सेवकाई में बुला रहा था। मार्कस ने एक बाइबल संस्थान में अध्ययन किया। संस्थान में अपने खर्चों का भुगतान करने के लिए उसने उस कार्यालय की सफाई, भोजनालय का कार्य और इसके अहाते का कार्य किया। जब उसने स्नातक प्राप्त की, तो उसने सेवा शुरू की, लेकिन कभी-कभी घरों में रंग करता था या इमारतों की मरम्मत का कार्य करता था, क्योंकि उसको सेवकाई में पूरी तरह से सहायता नहीं मिल रही थी। उसने हमेशा लाभ कमाने के बजाय सेवकाई की जिम्मेदारियों और व्यक्तिगत् विकास को अपनी प्राथमिकता बनाने की कोशिश की, भले ही उसके पास पत्नी और बच्चे थे। आख़िरकार वह समय आ गया, जब उसको सेवकाई से पूरी सहायता मिलने लगी।

परिपक्वता और चरित्र

► छात्रों को समूह के लिए 1 तीमुथियुस 4:12 और विलापगीत 3:27 पढ़ना चाहिए।

1 तीमुथियुस एक युवा वयस्क को लिखा गया था, जो कई कलीसियाओं की देखरेख के लिए जिम्मेदार था। 1 तीमुथियुस 4:12 में हम देखते हैं कि परमेश्वर विश्वास करने वाले युवा वयस्कों से अपने चरित्र और व्यवहार में आदर्श बनने की अपेक्षा करता है। उसे मसीही सिद्धांतों में स्थापित होने को प्राथमिकता देनी चाहिए। उसे दूसरों के साथ हर बातचीत में पवित्रता और निस्वार्थ प्रेम दिखाना चाहिए। उसके व्यवहार और बोली से परमेश्वर का आदर होना चाहिए और उसकी महिमा होनी चाहिए।

विश्वासी युवा वयस्कों को सावधान, उद्देश्यपूर्ण जीवन जीना चाहिए। जीवन के इस चरण के दौरान परमेश्वर ने उन्हें जो ताकत दी है, उसका दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। उन्हें सीखने, कौशल विकसित करने, दूसरों की सेवा करने और जिम्मेदारी लेने के अवसरों को बर्बाद नहीं करना चाहिए। किशोरावस्था और शुरुआती वयस्कता के वर्षों को स्वार्थी महत्वाकांक्षाओं पर खर्च नहीं करना चाहिए। ये वर्ष विकास और सेवा के लिए प्रमुख हैं। परमेश्वर युवा विश्वासियों को आत्म-नियंत्रण सीखने में सक्षम बना सकता है, ताकि वे उसके लिए फलदायी हों।[46]

कार्य

कार्य पर दृष्टिकोण

कुछ संस्कृतियों में, लोगों को अधिक कार्य न करते हुए बैठे देखना आम बात है, भले ही वे युवा और स्वस्थ हों। हालाँकि उनकी ज़रूरतें होती हैं और वे दूसरों के लिए ज़िम्मेदार होते हैं, लेकिन उनके पास कार्य करने की प्रेरणा नहीं होती है। उनका कहना है कि अगर उन्हें अच्छे वेतन पर कार्य मिलेगा तो वे कार्य करेंगे। वे कम वेतन पर कार्य करने या छोटे दर्जे वाला कार्य करने को तैयार नहीं हैं। यदि उन्हें व्यक्तिगत् रूप से लाभ नहीं होगा तो वे अपने पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए कार्य करने को तैयार नहीं हैं।

कभी-कभी जिन लोगों को नौकरी पर रखा जाता है, वे नौकरी पाने के लिए उत्साहित होते हैं। हो सकता है कि वे ऐसे देश में रहते हों जहाँ बड़ी सँख्या में लोगों को अच्छा रोजगार नहीं मिल पाता। वे कंपनी की वर्दी पहनने का आनंद लेते हैं और अपने रोजगार की स्थिति पर गर्व करते हैं। लेकिन जब वे अपनी स्थिति का आनंद लेते हैं, तो वे इस बारे में ज्यादा नहीं सोचते कि मालिक या ग्राहकों की सेवा कैसे करें। उन्हें कंपनी का हिस्सा होने पर गर्व होता है, लेकिन उन्हें इस बात का एहसास नहीं होता कि उन्हें कार्य पर क्यों रखा गया है।

कार्य करने से इनकार करने वाले लोगों के विपरीत, कुछ लोग पेशा या पैसा कमाने पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। शायद वे ऐसी जगह चले गए, जहाँ रोजगार के लिए उनके घर की तुलना में बहुत अधिक वेतन मिलता है। वे कार्य करना चाहते हैं और जितना हो सके उतना पैसा कमाना चाहते हैं। वे जीवन के अन्य महत्वपूर्ण हिस्सों की उपेक्षा करते हैं, जैसे कि परमेश्वर और अपने परिवार के साथ अपने संबंधों का पोषण करना।

किसी एक समाज में लोग ये कार्य कर सकते हैं, लेकिन विश्वासियों को बस वही नहीं करना चाहिए जो उनकी संस्कृति में सामान्य है। इसके बजाय, उन्हें पता लगाना चाहिए कि परमेश्वर क्या कहता है, और फिर उसका पालन करना चाहिए। बाइबल कार्य, परिश्रम और उत्पादकता के बारे में बहुत कुछ कहती है।[47]

---

[46] इस विषय के बारे में अधिक जानकारी के लिए, Shepherds Global Classroom से उपलब्ध आत्मिक निर्माण का पाठ 12 देखें।

[47] इस विषय के बारे में अधिक जानकारी के लिए, Shepherds Global Classroom से उपलब्ध व्यावहारिक मसीही जीवन का पाठ 3

कार्य की उत्पत्ति

परमेश्वर रचनात्मक है (भजन संहिता 104:24)। परमेश्वर उत्पादक है (भजन संहिता 104)। परमेश्वर कार्य कर रहा है, व्यक्तिगत् लोगों के जीवन में और हर समय के संसारिक मामलों में शामिल है (यूहन्ना 5:17)। जब परमेश्वर ने लोगों को बनाया, तो उसने उन्हें अपने स्वरूप में बनाया, अर्थात् खुद का प्रतिबिंब। वह चाहता था कि लोग उसकी रचना के रचनात्मक और उत्पादक प्रबंधक बनें। परमेश्वर ने मानव जाति को पृथ्वी, समुद्र और आकाश के हर जानवर पर प्रभुता दी (उत्पत्ति 1:26)। उसने लोगों को पृथ्वी के संसाधनों का प्रबंधक बनाया (उत्पत्ति 1:28-30)।

कार्य मानव जीवन के लिए परमेश्वर की योजना का हिस्सा है। शुरू से ही, परमेश्वर ने लोगों को बड़ी ज़िम्मेदारी दी है। हम में से हर एक उसे इस बात का उत्तर देगें कि उसके पास हमारे लिए जो काम है हमने उसे ईमानदारी से किया है या नहीं।

नीतिवचन से सिद्धांत

नीतिवचन की पुस्तक विशेष रूप से युवा लोगों के लिए लिखी गई थी, जो उन्हें बुद्धिमानी से सोचना और व्यवहार करना सिखाती थी। नीतिवचन कार्य के बारे में बहुत कुछ कहते हैं।

► छात्रों को समूह के लिए हर एक पवित्र शास्त्र की आयत को पढ़ना चाहिए।

नीतिवचन 6:6-11, नीतिवचन 10:5। चींटियाँ लोगों के लिए अच्छा उदाहरण हैं।

- **वे लगन से कार्य करती हैं, भले ही कोई उन्हें कार्य करने के लिए मजबूर नहीं करता हो।** उन्हें यह बताने वाला कोई नहीं है कि उन्हें क्या करना चाहिए या कैसे करना चाहिए, फिर भी वे उत्पादक हैं। चींटियों से हम सीखते हैं कि हमें कार्य करने के लिए विवश नहीं किया जाना चाहिए। हमें कार्य करना ***चाहिए***, क्योंकि इसी तरह परमेश्वर हमारी ज़रूरतें पूरी करता हैं।

- **जब कार्य करने का समय होता है, तब वे कार्य करती हैं।** कार्य के लिए समय होते हैं, और अन्य गतिविधियों और आराम के लिए भी समय होते हैं। यह पूछने से सहायता हो सकती है, "मुझे इस समय क्या करना चाहिए?"

- **वे तब तक कार्य करती हैं, जब तक कार्य करने का अवसर मौजूद रहता है।** मौसम बदलते हैं, और संसाधन हासिल करने का अवसर ख़त्म हो सकता है। हमारे अवसर भी आते हैं और चले जाते हैं। हमें अभी हमारे पास मौजूद अवसर का उपयोग करना चाहिए, अन्यथा यह बर्बाद हो जाएगा।

- **वे कार्य करती हैं, ताकि बाद में उन्हें उनकी ज़रूरत का भोजन मिल सके।** जब कार्य करने का समय हो तो हमें सोना या आराम नहीं करना चाहिए। हमें अच्छे कार्य में व्यस्त रहना चाहिए, तब यदि हम आलसी हैं, तो हमारी भविष्य

देखें।

की ज़रूरतें पूरी नहीं हो पाएँगी। हमें ***कल की*** जरूरतों को पूरा करने के लिए ***आज*** कार्य करना चाहिए।

नीतिवचन 19:15, नीतिवचन 20:4, नीतिवचन 12:24। परमेश्वर ने संसार को इस प्रकार स्थापित किया है कि हमारे चुनाव का वास्तविक फल होता हैं (गलातियों 6:7)।

यदि हम लगातार आलसी बने रहेंगे तो हम शारीरिक रूप से कमजोर हो जायेंगे। यदि हम लगातार अपने विचारों में आलसी बने रहना चुनते हैं, तो हमारी सीखने, सोचने और तर्क करने की क्षमता कम हो जाएगी।

यदि हम सक्षम होने पर भी कार्य करने से इनकार करते हैं, तो परमेश्वर कहता हैं कि हम बिना भोजन के रहने के योग्य हैं। (2 थिस्सलुनीकियों 3:6-12 को पढ़ें)।

यदि हम मेहनती हैं, तो परमेश्वर हमें अधिक अवसर और बड़ी ज़िम्मेदारी का प्रतिफल देगा।

परमेश्वर ने हमारे चुनाव के लिए सामान्य परिणाम निर्धारित किये हैं। हमें अपने परिणाम चुनने का अधिकार नहीं है, लेकिन हमें यह चुनने का अधिकार है कि हम क्या करेंगे!

नीतिवचन 14:23, नीतिवचन 20:6। कुछ लोग सोचते हैं कि वे बहुत होशियार हैं, लेकिन वे कार्य करने से इनकार कर देते हैं। उन्हें सपने देखना और इस बारे में बात करना पसंद है कि चीजें कैसे की जानी चाहिए, लेकिन वे खुद कुछ नहीं कर रहे हैं। परमेश्वर चाहता है कि हम वास्तव में कार्य करें, न कि केवल इसके बारे में बात करें। वह चाहता है कि हम जिम्मेदारी लें और जो हमने कहा है कि हम करेंगे, उसके प्रति वफादार रहें।

नीतिवचन 15:19। कभी-कभी लोग कुछ करने के ***तरीके*** को लेकर आलसी होते हैं। वे आसान रास्ता चुनते हैं, भले ही उसका परिणाम अच्छा न हो। हो सकता है कि वे कुछ कम खर्चीला कार्य कर रहे हों, लेकिन वे जो कर रहे हैं, वह समय के साथ नहीं टिकेगा। हो सकता है कि उनकी विधि में कम प्रयास की आवश्यकता हो, लेकिन तैयार उत्पाद खराब गुणवत्ता वाला होगा। हो सकता है कि वे चुनौतियों से निपटने और जो सही है, उसे करने के लिए तैयार होने के बजाय अन्य लोगों के दबाव में आ रहे हों।

► आप ऐसे कौन से उदाहरण सोच सकते हैं, जहाँ लोग कुछ करने के तरीके में आलसी हैं?

यह नीतिवचन हमें सिखाता है कि जब हम जो करते हैं, उसे करने में आलसी होते हैं, तो यह बाद में हमारे लिए और दूसरे लोगों के लिए समस्याएँ पैदा करता है। लेकिन जब हम सही कार्य करते हैं, तो हमें अच्छे परिणाम का प्रतिफल मिलेगा। हमें अभी सावधान और संपूर्ण रहना चाहिए, ताकि हम बाद में उत्तम परिणामों का आनंद उठा सकें।

► आप ऐसे कौन से उदाहरण सोच सकते हैं, जब आलस के कारण बाद में कठिनाई और परेशानी हुई? आप कौन से उदाहरण सोच सकते हैं, जब वफ़ादारी और परिश्रम के अच्छे परिणाम आए हों?

नीतिवचन 12:11, नीतिवचन 21:20, नीतिवचन 28:19। युवा वयस्कों, परमेश्वर ने आपको ताकत और स्वास्थ्य इसलिए नहीं दिया है कि आप उन्हें फालतू के कामों में बर्बाद कर सकें। उसने आप पर भरोसा किया है कि आप अपनी शारीरिक और मानसिक क्षमताओं के अच्छे प्रबंधक हों। उसने आपको अपनी सेवा करने का अवसर दिया है। एक वफ़ादार भण्डारी होने के नाते आपको आत्मसंयम की आवश्यकता होगी। आप सुख की हर इच्छा पूरी नहीं कर पाएँगे। आपको परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए अपनी ताकत, संसाधनों और समय पर ध्यान केंद्रित करना होगा।

परमेश्वर आपसे अपेक्षा करता है कि आप अपनी, अपने परिवार की ज़रूरतें (1 तीमुथियुस 5:8), और उन लोगों की ज़रूरतें पूरी करें जो मदद के योग्य हैं और जिनके पास उन्हें प्रदान करने के लिए कोई और नहीं है (1 तीमुथियुस 5:3-16, इफ़िसियों 4:28, याकूब 1:27, याकूब 2:15-16)।

1 थिस्सलुनीकियों 4:11-12 कहता है,

> ... चुपचाप रहने और अपना–अपना कार्य –काज करने और अपने अपने हाथों से कमाने का प्रयत्न करो; ताकि बाहरवालों से आदर प्राप्त करो, और तुम्हें किसी वस्तु की घटी न हो।

यह विश्वासियों के लिए परमेश्वर की इच्छा है।

► विश्वासियों को किस प्रकार का कार्य करने के लिए तैयार रहना चाहिए? क्या स्थिति मायने रखती है? यदि हाँ, तो किस प्रकार याँ किस हद तक?

हम वित्त पर चर्चा करके कार्य के विषय पर आगे बढ़ेंगे। हमने अभी सबसे महत्वपूर्ण कारणों पर चर्चा की है कि परमेश्वर हमसे कार्य करवाना चाहता है, जिसमें हमारी जरूरतों और दूसरों की जरूरतों का प्रावधान भी शामिल है। कार्य परमेश्वर की आवश्यक जरूरतों - भोजन और कपड़े - को पूरा करने का सामान्य तरीका है (1 तीमुथियुस 6:8)। कई जगहों पर लोग कार्य करके पैसा कमाते हैं, जिसे वे भौतिक प्रावधानों पर खर्च करते हैं। अन्य स्थानों पर, लोगों को पैसे के बजाय भोजन, संपत्ति या सेवा से भुगतान किया जाता है। किसी भी तरह से, परमेश्वर लोगों की जरूरतों को उनकी मेहनत के माध्यम से पूरा कर रहा है।

वित्त

पवित्र शास्त्र के कई आयतें पैसे के विषय को संबोधित करती हैं। हम पैसे के बारे में कैसे सोचते हैं और उसके साथ कैसा व्यवहार करते हैं, इसका परमेश्वर और अन्य लोगों के साथ हमारे संबंधों पर बहुत प्रभाव पड़ता है। क्योंकि यह बहुत महत्वपूर्ण है, परमेश्वर चाहता हैं कि हमें पैसे और उसके उपयोग की सही समझ हो।[48]

---

[48] इस विषय के बारे में अधिक जानकारी के लिए, Shepherds Global Classroom से उपलब्ध व्यावहारिक मसीही जीवन का पाठ 9 देखें।

नीतिवचन से सिद्धांत

► छात्रों को समूह के लिए हर एक पवित्र शास्त्र की आयत को पढ़ना चाहिए।

हमारी सुरक्षा का स्रोत क्या है?

1. अंत में परमेश्वर ही धर्मियों का दाता है (नीतिवचन 10:3)।
2. हमें धन से प्रेम और उस पर भरोसा नहीं करना चाहिए, क्योंकि वे शक्ति में सीमित और अवधि में अस्थायी हैं (नीतिवचन 11:4, 28)।

► कौन से विचार, दृष्टिकोण और कार्य किसी व्यक्ति के दाता और सुरक्षा के रूप में परमेश्वर में विश्वास प्रदर्शित करते हैं?

कई चीज़ें अमीर होने से भी अधिक महत्वपूर्ण हैं; उदाहरण के लिए:

1. दूसरों के साथ अच्छे संबंध रखना (नीतिवचन 15:17)।
2. ज्ञान और बुद्धि होना (नीतिवचन 8:10-11)।
3. परमेश्वर का भय मानना और उसके साथ सही संबंध में रहना (नीतिवचन 15:16)।
4. अच्छा चरित्र होने के कारण सम्मान पाना (नीतिवचन 11:16)।
5. विश्वासयोग्य, ईमानदार और दयालु होना (नीतिवचन 19:22)।

► आपकी परिस्थितियों के कारण इनमें से कौन सा आपके लिए सबसे चुनौतीपूर्ण है?

धन के सही प्रबंधन के सिद्धांत:

1. मेहनत, ईमानदारी के साथ काम करके धन कमाएँ (नीतिवचन 10:4)।
2. समय के साथ धैर्यपूर्वक धन इकट्ठा करें (नीतिवचन 13:11)।
3. अपनी कमाई का पहला भाग परमेश्वर को देकर उसका सम्मान करें (नीतिवचन 3:9-10)।
4. गरीबों के प्रति उदार रहें (नीतिवचन 11:24-25, नीतिवचन 14:21, नीतिवचन 19:17, नीतिवचन 21:13)।

► आपको इनमें से किससे सबसे अधिक संघर्ष करना पड़ता है?

धन के दुरुपयोग के विरुद्ध चेतावनी:

1. धन पाने के लिए कभी भी परमेश्वर के वचन की अवज्ञा न करें (नीतिवचन 10:2, नीतिवचन 15:27)।
2. जल्दबाजी या लापरवाही से निर्णय न लें (नीतिवचन 21:5)।
3. दूसरों का ऋण चुकाने का वादा न करें (नीतिवचन 6:1-5; नीतिवचन 17:18)।

► नीतिवचनों में से कौन सा सिद्धांत आपकी संस्कृति में सबसे अधिक नजरअंदाज किया जाता है?

करीबी दोस्त

► छात्रों को समूह के लिए नीतिवचन 13:20 और 1 कुरिन्थियों 15:33 पढ़ना चाहिए।

करीबी दोस्ती एक युवा वयस्क के जीवन में सबसे मजबूत प्रभावों में से एक है। लोग आमतौर पर उन लोगों के करीबी दोस्त बन जाते हैं, जो उनके मूल्यों को साझा करते हैं। लेकिन दोस्ती हर एक व्यक्ति को बेहतर के लिए या बदतर के लिए बदल देती है। समय के साथ किसी के साथ करीबी दोस्ती का आप पर प्रभाव *पड़ेगा*। आपके दृष्टिकोण, दर्शन, प्राथमिकताएँ, व्यवहार, विकल्प और चरित्र प्रभावित होंगे। आपके सबसे करीबी दोस्त आपको अपने उदाहरण से प्रभावित करेंगे, लेकिन आपकी पसंद के प्रति अपनी सहमति या असहमति और अपने प्रेरक शब्दों से भी आपको प्रभावित करेंगे।

► प्रत्येक छात्र को इनमें से प्रत्येक प्रश्न के उत्तर में 1-5 विशेष लोगों के नाम लिखने चाहिए:

- सहमती और पुष्टि के लिए मैं आमतौर पर किसकी ओर देखता हूँ?
- मैं अपने जीवन की समस्याओं के बारे में किससे बात करूँ?
- जब मुझे कोई निर्णय लेना होता है तो मैं किसकी सलाह लेता हूँ?
- किसका व्यवहार मुझ पर प्रभाव डाल रहा है?
- मैं किसके दर्शन साझा करूँ?

उन लोगों के बारे में सोचें जिनके नाम आपने लिखे हैं। उनका चरित्र कैसा है? उनका व्यवहार कैसा है? वे कैसा बोलते हैं? यदि आप उनके उदाहरण का अनुसरण करते हैं, तो क्या आप मसीह का अनुसरण कर रहे हैं? (1 कुरिन्थियों 11:1)। क्या ये वे लोग हैं, जो इन विशेषताओं से चिह्नित हैं:

- वे यहोवा का भय मानते हैं (व्यवस्थाविवरण 10:12, 20, भजन संहिता 112:1)।
- उन्हें परमेश्वर के वचन द्वारा आकार दिया जा रहा है (यूहन्ना 17:14-17)।
- वे हर बात में प्रभु को प्रसन्न करना और उसकी आज्ञा मानना अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता बनाते हैं (2 कुरिन्थियों 5:9-10)।

क्या वे आपको परमेश्वर के साथ करीब से, आज्ञाकारी से चलने के लिए प्रभावित कर रहे हैं? क्या वे आपको बताते हैं कि सत्य क्या है (क्या परमेश्वर के वचन के साथ मेल खाता है), या क्या वे आपको वह बताते हैं, जो सुनने में आसान है? क्या वे आपको वह करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, जो आप करना चाहते हैं, या क्या वे आपको वह करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं जो परमेश्वर की दृष्टि में सही है, भले ही वह कठिन हो?

एक बार एक युवक था, जो प्रभावशाली था। अन्य युवा अपने व्यवहार की सहमति के लिए उसकी ओर देखते थे। जब उन्होंने

कुछ व्यंग्यात्मक या भद्दा कहा, तो उन्होंने उसकी ओर देखा, यह देखने के लिए कि क्या वह मुस्कुरा रहा है। जब वे कुछ विद्रोह करते थे, तो वे यह देखने के लिए देखते थे कि क्या वह आँख झपकाकर अपनी सहमति जताएगा। वे उसे प्रसन्न करना चाहते थे। लेकिन उनमें से कोई भी इन सवालों पर विचार करने के लिए नहीं रुका: मुझे ***उसकी*** सहमति क्यों चाहिए? क्या वह ऐसा व्यक्ति है, जिसे मुझे खुश करने की कोशिश करनी चाहिए? क्या उसका चरित्र और व्यवहार मेरे लिए अच्छा आदर्श है?

इन मुद्दों पर सोचने के लिए प्रयास करना पड़ता है। विश्वासियों को उद्देश्यपूर्ण होना चाहिए कि वे किसे अपने सबसे करीबी दोस्त और सबसे बड़े प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में चुनते हैं। निःसंदेह, परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग उन लोगों को प्रभावित करें जो आत्मिक रूप से अपरिपक्व हैं या जो अभी भी अविश्वासी हैं, लेकिन वे लोग हमारे सबसे करीब के साथी, सलाहकार और प्रभावशाली व्यक्ति बनने के योग्य नहीं हैं। हमें उनकी सहमति नहीं मांगनी चाहिए।

► एक विद्यार्थी को समूह के लिए भजन संहिता 101 पढ़ना चाहिए।

यह भजन संहिता राजा दाऊद द्वारा लिखा गया था। वह यहोवा का भय मानता था। उसने प्रभु को वचन दिया कि वह ईमानदारी का जीवन जीएगा। वह जानता था कि जिन लोगों को उसने अपने ऊपर प्रभाव डालने की अनुमति दी है, वे या तो उसे उस वादे को पूरा करने में मदद करेंगे या उसे उससे दूर रखेंगे। इस वजह से, उसने केवल वफादार, भक्त लोगों को ही अपने ऊपर प्रभाव डालने वालों के रूप में चुनने का निश्चय किया।

हम दाऊद की तरह राजा नहीं हैं और आमतौर पर हमारे पास दुष्टों को सज़ा देने का अधिकार या जिम्मेदारी नहीं है, जैसा कि दाऊद ने करने का वादा किया था। फिर भी, हमें अन्य तरीकों से दाऊद के उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए। हमें ईमानदारी से जीवन जीने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए। हमें यह निर्धारित करना चाहिए कि हम केवल परमेश्वर के लोगों को ही अपने सबसे करीबी दोस्त और सबसे बड़े प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में चुनेंगे।

निर्णय लेना

प्रारंभिक वयस्कता कई निर्णय लेने का समय है, जिनमें से कुछ के आजीवन (या यहाँ तक कि ***अनन्त***) के परिणाम होंगे।[49] निम्नलिखित कुछ प्रश्न हैं, जिन्हें हमें अपनी पसंद पर विचार करते समय ध्यान में रखने चाहिए:

- **क्या यह क्रिया उसके अनुरूप है, जो परमेश्वर मुझे बनाना चाहता है?** समाज हमें बताता है, "हम अपने आप में बनें रहें।" "अपने प्रति ईमानदार रहें।" "अपने दिल की सुनें।" लेकिन हमें मसीह के प्रति सच्चा होने के लिए बुलाया गया है, खुद के प्रति नहीं। वास्तव में, वह हमें अपनी इच्छाओं को "नहीं" कहने के लिए कहता है, जब वे उसकी

[49] इस विषय के बारे में अधिक जानकारी के लिए, Shepherds Global Classroom से उपलब्ध व्यावहारिक मसीही जीवन का पाठ 5 देखें। ।

आज्ञाकारिता के साथ टकराव में हों (मत्ती 16:24-26)। परमेश्वर हमें अपनी धार्मिकता के मानक के अनुसार जीने के लिए कहता है। वह उन लोगों का वर्णन करता है, जो धन्य होंगे, जो उससे डरते हैं और हर बात में उसकी आज्ञा मानते हैं (भजन संहिता 15, भजन संहिता 112, मत्ती 5:3-11)। जैसे-जैसे हम ईमानदारी से उसका अनुसरण करते हैं, हम वैसे लोग बन जाते हैं, जैसा परमेश्वर चाहता है कि हम बनें।

- **इस कार्य से मेरी प्रतिष्ठा पर क्या प्रभाव पड़ेगा?** हम जो भी चुनाव करते हैं, उससे हम अपनी प्रतिष्ठा बनाते हैं (नीतिवचन 20:11)। यह सच है कि हमें सबसे ज़्यादा इस बात की परवाह करनी चाहिए कि परमेश्वर हमारे बारे में क्या सोचता है। लेकिन जब हम ईमानदार लोगों के रूप में जाने जाते हैं, तो हम दूसरों को सही के लिए प्रभावित करते हैं और मसीह के लिए विश्वसनीय गवाह बन जाते हैं। नीतिवचन 22:1 हमें बताता है कि हमें भौतिक धन की बजाय अच्छी प्रतिष्ठा को प्राथमिकता देनी चाहिए।

- **इस चुनाव के क्या परिणाम होंगे?** नीतिवचन 22:3 हमें दिखाता है कि हमें आज अच्छे चुनाव कर के भविष्य के लिए तैयारी करनी चाहिए। जब हम अपने चुनाव के बारे में सोच रहे हैं, तो हमें प्रत्येक के परिणामों पर विचार करना चाहिए। हमारी पसंद का हमारे अपने जीवन और दूसरों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

नीतिवचन 4:23 हमें बताता है कि हमारा चुनाव और व्यवहार हमारे हृदय की प्रेरणाओं से आता है। यदि हम अच्छे चुनाव करना चाहते हैं, जो परमेश्वर को प्रसन्न करें, तो हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम उसके प्रति वफादार रहें (व्यवस्थाविवरण 6:2, 5-6, व्यवस्थाविवरण 13:4)।

शारीरिक स्वास्थ्य

युवा वयस्क व्यक्तिगत् चुनाव के लिए जिम्मेदार होते हैं, जिसमें वे क्या खाते हैं, उनकी शारीरिक गतिविधि और व्यायाम दिनचर्या और नींद की आदतें शामिल हैं। इन सभी क्षेत्रों में आत्म-नियंत्रण महत्वपूर्ण है (1 कुरिन्थियों 9:27)। विश्वासियों को याद रखना चाहिए कि उनका शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर हैं और उन्हें मसीह के लहू से छुटकारा मिला है (1 कुरिन्थियों 6:19-20)। क्योंकि हम भी परमेश्वर के सेवक हैं, हमें अपने शरीर का ख्याल रखना चाहिए और इनमें से प्रत्येक गतिविधि में अच्छे चुनाव के लिए खुद को अनुशासित करना चाहिए, ताकि हम उसके लिए अपना सर्वश्रेष्ठ दिखा सकें।[50]

► छात्रों को समूह के लिए 1 कुरिन्थियों 6:12-13, 19-20, और 1 कुरिन्थियों 10:31 पढ़ना चाहिए।

पिछले सप्ताह अपने भोजन के चुनाव और भागों के बारे में सोचें। हो सकता है कि आपने भरपूर मात्रा में भोजन किया हो, आप क्या खा सकते हैं, इसके लिए कई चुनाव आपके पास हो सकते हैं। हो सकता है कि आपके पास खाने के लिए बहुत कम

---

[50] इस विषय के बारे में अधिक जानकारी के लिए, Shepherds Global Classroom से उपलब्ध व्यावहारिक मसीही जीवन का पाठ 13 देखें। ।

हो, चुनाव भी कम हों। किसी भी तरह, आपके खान-पान से परमेश्वर की महिमा होनी चाहिए। यदि यीशु को आपके साथ बैठकर भोजन करने के लिए आमंत्रित किया जाना संभव होता, तो क्या आप वही भोजन और भाग चुनेंगे जो आप आमतौर पर चुनते हैं? यह एक मूर्खतापूर्ण प्रश्न हो सकता है, लेकिन शायद यह भोजन करते समय विचारशील, आभारी और आत्म-नियंत्रित रहने की याद दिलाता है।

नींद एक और क्षेत्र है, जिसमें विश्वासियों को आत्म-नियंत्रण दिखाना चाहिए। हमें आलसी नहीं होना चाहिए और बहुत अधिक सोना नहीं चाहिए (नीतिवचन 6:10-11, नीतिवचन 20:13), फिर भी परमेश्वर ने हमारे शरीर को नियमित और पर्याप्त आराम की आवश्यकता के लिए बनाया है (भजन संहिता 3:5)। स्वस्थ वयस्कों को आमतौर पर हर रात 6-8 घंटे की नींद की आवश्यकता होती है।

सभोपदेशक 5:12 हमें बताती है कि नींद उन लोगों का प्रतिफल है जो परिश्रम करते हैं। नीतिवचन 3:24 और भजन संहिता 4:8 मीठी, शांतिपूर्ण नींद की बात करता हैं, जो परमेश्वर अपनी सन्तान को देता हैं। यह नींद का वह प्रकार है, जो हमारे शरीर को तरोताज़ा करता है। परमेश्वर की शांति से, हम दिन भर की चिंताओं से यह जानते हुए मुक्त हो जाते हैं, कि एक विश्वासयोग्य परमेश्वर हमें देख रहा है। आरामदायक नींद शरीर और दिमाग को स्फूर्ति प्रदान करती है, हमें आगे की गतिविधियाँ और सेवकाई के लिए तैयार करती है।

नीतिवचन की पुस्तक के एक भाग में नीतिवचन 3:24 आयत पाई जाती है, जिसमें ज्ञान, समझ और विवेक से भरा हुआ जीवन जीने के निर्देश शामिल हैं। यदि आप मीठी नींद चाहते हैं, तो आपको अपने जीवन के दूसरे क्षेत्रों में बुद्धिमानी से चुनाव करना चाहिए, जिसमें आप टेलीविजन या फिल्में देखने, इंटरनेट चलाना या स्मार्टफोन का उपयोग करने और दोस्तों के साथ कितना समय बिताते हैं।

नींद इस बात से प्रभावित हो सकती है कि आपने दिन भर में कितना भोजन किया और कितना खाया, आपने कितना व्यायाम किया, किसी कठिन परिस्थिति को कैसे संभाला, या आपने अपना पैसा कैसे खर्च किया। नींद तब मीठी हो सकती है जब दूसरों के साथ हमारे रिश्ते गलातियों 5:22-23 में सूचीबद्ध आत्मा के फल की विशेषताओं से भरे हों।

► उपरोक्त पवित्र शास्त्र की आयतों को पढ़ने के लिए समय निकालें। इन आयतों में दिए गए सिद्धांतों के अनुसार अपनी नींद का मूल्यांकन करें। क्या आप अपने शरीर को परमेश्वर की इच्छा के अनुसार ठीक से काम करने के लिए आवश्यक आराम दे रहे हैं? भजन संहिता की आयतों के संदर्भ पर ध्यान दें: दाऊद बहुत तनावपूर्ण स्थिति में लिख रहा है और फिर भी वह नींद के माध्यम से अपने शरीर को बहाल करने में मदद करने में परमेश्वर की विश्वासयोग्यता की गवाही देता है।

तनाव से निपटना

परमेश्वर की योजना के अनुसार, वयस्क के शुरुआती वर्ष कई ज़िम्मेदारियों और देखभाल से भरे होते हैं, जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है और तनाव पैदा होता है (विलापगीत 3:27)। हो सकता है कि एक व्यक्ति शिक्षा पूरी करने, व्यवसाय

शुरू करने और नौकरी या कई नौकरियाँ करने का प्रयास कर रहा हो। ऐसे कई रिश्ते हैं, जिन पर एक युवा वयस्क को जानबूझकर ध्यान देने की आवश्यकता होती है। वित्त, परिवहन ज़रूरतें और घर सभी पर ध्यान देने की ज़रूरत है, लेकिन ये तनाव का कारण बनते हैं।

तनाव को "उन घटनाओं के प्रति शारीरिक और भावनात्मक प्रतिक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है जो हमें धमकी या चुनौती देती हैं।".[51] इस बारे में सोचें कि आप अपनी परिस्थितियों को कैसे देखते हैं। आप जिस स्थिति का अनुभव कर रहे हैं उससे मानसिक रूप से कैसे निपटते हैं?

जब कोई चीज़ आपके भविष्य में होती है, तो आप उसके बारे में कैसे सोचते हैं? संभावनाओं के बारे में आप स्वयं को किन भावनाओं को महसूस करने की अनुमति देते हैं? कौन सा दृष्टिकोण इस बात को प्रभावित करता है कि आप उस स्थिति से कैसे निपटेंगे? आपका सामान्य स्वभाव और व्यक्तित्व क्या है (नीतिवचन 15:15)?

आपका दृष्टिकोण, स्वभाव और व्यक्तित्व सभी प्रभावित करता हैं कि आप जीवन की स्थितियों पर कैसे प्रतिक्रिया देते हैं और आप किस स्तर के तनाव का अनुभव करेंगे। जबकि तनाव जीवन का एक सामान्य हिस्सा है, आप तनाव को कैसे संभालते हैं, यह एक व्यक्तिगत् मामला है। चिंता कभी-कभी सिरदर्द, मांसपेशियों में दर्द, बीमारी, उच्च रक्तचाप, अल्सर और कई अन्य मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक विकलांगताओं का कारण बनती है (नीतिवचन 12:25)। तनाव के प्रति एक बुरी प्रतिक्रिया मसीह के प्रति आपकी सेवा में बहुत बाधा डाल सकती है। इस वजह से, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि परमेश्वर का वचन हमें चिंता न करने या परेशान न होने के लिए कहता है।

► छात्रों को समूह के लिए मत्ती 6:34, 1 पतरस 5:7, और भजन संहिता 105:4 पढ़ना चाहिए।

जब हम भारी परिस्थितियों का सामना करते हैं, तो हमें परमेश्वर पर भरोसा करना और उस पर निर्भर रहने का चुनाव करना है, जिसकी कोई सीमा नहीं है। वह बल, बुद्धि और भलाई में परिपूर्ण है। वह अपनी सन्तान की पूरी तरह से देखभाल करता है। वह चाहता है कि हम उस पर अपनी निर्भरता का एहसास करें, हर चिंता उस तक पहुँचाएँ और उसके बल को खोजें। जैसा हम करते हैं, वह हमें शांति, आराम और वह सब कुछ दे सकता है, जिसकी हमें ज़रूरत है। अपनी युवावस्था में, हमें परमेश्वर के समक्ष स्थिरता बनाए रखनी सीखनी चाहिए और उसके नेतृत्व करने की प्रतीक्षा करनी चाहिए (भजन संहिता 46:10, विलापगीत 3:25-27)।

▶ उन तनावपूर्ण स्थितियों की सूची बनाएँ जिनका आप अभी अनुभव कर रहे हैं। परमेश्वर के वचन के आधार पर आपकी प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए?

---

[51] रॉबर्ट एस. फेल्डमैन, *डिस्कवरिंग द लाइफस्पैन*, 2रा संपा। (अपर सैडल रिवर, एनजे: पियर्सन, 2012), 317।

सामूहिक चर्चा के लिए

▶ इस पाठ में, आपके लिए कौन से विचार या सिद्धांत नए थे? आपने बाइबल के अन्य किन सिद्धांतों के बारे में सोचा है, जो युवा वयस्क के जीवन के इन क्षेत्रों से सम्बन्धित हैं?

▶ इस पाठ में आपने जो पढ़ा है उससे आपका व्यक्तिगत जीवन किस प्रकार प्रभावित होगा?

▶ आपकी कलीसिया में, युवा वयस्क विश्वासियों के बीच इनमें से किस विषय पर सबसे अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है?

▶ आप उन मसीही युवा वयस्कों को कैसे प्रभावित कर सकते हैं, जिन्हें आप जीवन के इन क्षेत्रों में बाइबल के अनुसार सोचने और व्यवहार करने के लिए जानते हैं?

प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता,

धन्यवाद कि आपका वचन हमें सिखाता है कि जीवन के हर चरण में आपके लिए कैसे जीना है। हमारे युवा वयस्क की उमर में फलदायी और उत्पादक जीवन जीने के लिए हमें तैयार करने के लिए धन्यवाद।

आपके द्वारा हमें दी गई सामर्थ्य, संसाधनों और अवसरों के विश्वासयोग्य प्रबंधक बनकर आपकी महिमा करने में हमारी सहायता करें। दूसरों पर मसीही प्रभाव डालने और मसीही मित्रों और सलाहकारों को चुनने में हमारी सहायता करें।

हम बुद्धिमानीपूर्ण निर्णय लें और अपने शरीर, मन और आत्मा से आपका सम्मान करते रहें।

आमीन

पाठ सम्बन्धी नियत कार्य

(1) 1 तीमुथियुस 4:12 में, पौलुस ने तीमुथियुस को विशेष क्षेत्रों में एक उदाहरण बनने का निर्देश दिया। इनमें से हर एक क्षेत्र, को लिखित रूप में परिभाषित करें। फिर वर्णन करें कि इनमें से हर एक युवा वयस्क के जीवन में कैसे जिया जा सकता है। हर एक के लिए कम से कम एक व्यावहारिक उदाहरण दीजिए।

(2) इस पाठ में से कोई एक विषय चुनें:

- परिपक्वता और चरित्र
- कार्य
- वित्त
- करीबी दोस्त
- निर्णय लेना
- शारीरिक स्वास्थ्य
- तनाव

अपने चुने हुए विषय के बारे में कम से कम तीन अनुच्छेद लिखें:

- उस विषय से सम्बन्धित बाइबल सिद्धांतों का सारांश प्रस्तुत करें।
- उन सिद्धांतों का पालन करने से आने वाले कुछ सकारात्मक परिणामों की व्याख्या करें।
- इन सिद्धांतों को नजरअंदाज करने पर आने वाले कुछ नकारात्मक परिणामों का वर्णन करें।

जब आप सकारात्मक और नकारात्मक परिणामों के बारे में लिख रहे हों, तो किसी व्यक्ति की पसंद के विभिन्न लोगों पर पड़ने वाले प्रभावों के बारे में अवश्य सोचें: वह व्यक्ति, उनका परिवार, उनका समुदाय और उनका चर्च।

परिशिष्ट क

महिलाओं का सम्मान करना

महिलाओं के प्रति सम्मान का यीशु का उदाहरण

पहली सदी के रोमी संसार और यहूदी धर्म में महिलाओं को पुरुषों से कम माना जाता था। दुनिया भर की कई संस्कृतियों और कई घरों में महिलाओं के प्रति निम्न दृष्टिकोण अभी भी प्रचलित है। महिलाओं का अनादर किया जाता है, उन्हें यौन वस्तु के रूप में इस्तेमाल किया जाता है और उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है। लेकिन महिलाओं के प्रति यीशु का उच्च सम्मान हमारे उदाहरण के रूप में काम करना चाहिए।

यीशु मसीह के लिए, महिलाओं में पुरुषों के समान ही अंतर्निहित गरिमा और मूल्य है। यीशु ने कहा, "जिसने उन्हें बनाया, उसने आरम्भ से नर और नारी बनाया" (मत्ती 19:4, उत्पत्ति 1:27)। महिलाएँ पुरुषों की तरह ही परमेश्वर के स्वरूप में बनाई गई हैं। पुरुषों की तरह, उनमें आत्म-जागरूकता, व्यक्तिगत् स्वतंत्रता, कुछ हद तक खुद के-निर्णय और अपने कार्यों के लिए व्यक्तिगत् जिम्मेदारी होती है। यीशु ने महिलाओं को वास्तविक व्यक्ति के रूप में देखा है, न कि केवल पुरुष की इच्छा की वस्तु के रूप में। उसने उन्हें ऐसे व्यक्तियों के रूप में देखा जिनके लिए वह संसार में आया था (लूका 8:1-3)।

जेम्स बोरलैंड, जॉन पाइपर और वेन ग्रुडेम के साथ, महिलाओं के प्रति यीशु के उच्च दृष्टिकोण और महिलाओं के प्रति उनके सम्मान के ये स्पष्ट उदाहरण पेश करते हैं, जैसा कि चार ससमाचारों में मिलता है:

(1) **यीशु नियमित रूप से सार्वजनिक रूप से महिलाओं को सीधे संबोधित करते थे।**

यीशु के समय में एक व्यक्ति के लिए ऐसा करना असामान्य था (यूहन्ना 4:27)। चेले यीशु को सूखार के कुएँ पर सामरी स्त्री से बात करते देखकर आश्चर्यचकित हुए (यूहन्ना 4:7-26)। उसने व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री से भी खुल कर बात की (यूहन्ना 8:10-11)। लूका लिखता है कि यीशु ने सार्वजनिक रूप से नाईन की विधवा (लूका 7:12-13), लहू बहने से पीड़ित महिला (लूका 8:48, मत्ती 9:22, मरकुस 5:34) और एक महिला से बात की थी, जिसने उसे भीड़ से बुलाया था (लूका 11:27-28)। यीशु ने 18 वर्षों से कुबड़ी एक महिला को संबोधित किया (लूका 13:12) और क्रूस के मार्ग पर महिलाओं के एक समूह को (लूका 23:27-31)।

(2) **यीशु ने महिलाओं से बात करने के तरीके से उनके प्रति अपना सम्मान और उच्च सम्मान दिखाया।**

वह सोच-समझकर, देखभाल के तरीके से बोला। मत्ती, मरकुस और लूका ने दर्ज किया है कि यीशु ने लहु बहने से पीड़ित महिला को "बेटी" के रूप में संबोधित किया और कुबड़ी महिला को "अब्राहम की बेटी" के रूप में संबोधित किया (लूका 13:16)। उन्हें "अब्राहम की बेटी" कहकर यीशु उन्हें "अब्राहम के पुत्रों" के बराबर आत्मिक स्थिति में रखता है।

(3) **यीशु महिलाओं को उनके पाप के लिए व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार ठहराकर उनके अंतर्निहित मूल्य को दर्शाता हैं।**

इसे कुएँ के पास की महिला (यूहन्ना 4:16-18), व्यभिचारी महिला (यूहन्ना 8:10-11), और उस पापी महिला के साथ उसके व्यवहार में देखा जा सकता है, जिसने उसके पैरों का अभिषेक किया था (लूका 7:44-50)। उनके पाप को नज़रअंदाज़ नहीं किया गया बल्कि उसका सामना किया गया। उनके कार्य से पता चला कि प्रत्येक महिला को व्यक्तिगत् स्वतंत्रता थी, वह अपनी पसंद के लिए जिम्मेदार थी, और उसे पाप, पश्चाताप और क्षमा के मुद्दों से व्यक्तिगत् रूप से निपटना चाहिए।

महिलाओं के प्रति यीशु के मूल्य को आज कलीसिया का मार्गदर्शन कैसे करना चाहिए

सेवकाई में और घर में महिलाओं की आदर्श बाइबल आधारित भूमिका पर आज कई कलीसिया और संप्रदायों में चर्चा की जा रही है, जैसा कि होना भी चाहिए, फिर भी परमेश्वर के स्वरूप में बने लोगों के रूप में महिलाओं के मूल्य और समानता पर कभी सवाल नहीं उठाया जाना चाहिए। यीशु ने लगातार एक व्यक्ति के रूप में महिलाओं के मूल्य और गरिमा को दर्शाया। यीशु ने अपने पुनरुत्थान के पहले गवाह के रूप में महिलाओं को ठहराया (यूहन्ना 20:17)। उसने उनकी संगति, प्रार्थना, मसीही सेवा, वित्तीय सहायता, गवाही और साक्षी को महत्व दिया। यीशु ने महिलाओं का सम्मान किया, महिलाओं को शिक्षा दी और सोच-समझकर महिलाओं की सेवा की।

नया नियम में महिलाओं को सम्मान दिया गया

महिलाओं के प्रति सम्मान का यीशु का उदाहरण पवित्र आत्मा के जीवन में देखा जाता है। पिन्तेकुस्त के दिन, पवित्र आत्मा दोनों बेटों और बेटियों, और दास-दासियों पर उंडेला गया (प्रेरितों के काम 2:17-18)। पवित्र आत्मा ने कोई पक्षपात नहीं दिखाया।

रोमियों 16 में, पौलुस ने कलीसिया के सेवक के रूप में फीबे नाम की एक महिला की सराहना की (आयत 1), प्रिसका और अक्विला दोनों की मसीह यीशु में उसके साथी कार्यकर्ताओं के रूप में प्रशंसा की, जिन्होंने उसके जीवन के लिए अपनी जान जोखिम में डाल दी (आयत 3-4), मरियम को एक ऐसी महिला के रूप में सराहा गया जिसने कड़ी मेहनत की (आयत 6), यूनियास को प्रेरितों के बीच अच्छी तरह से जाना जाता था (आयत 7), और अन्य महिलाएँ भी।

1 थिस्सलुनिकियों में पौलुस ने महिलाओं की परमेश्वर द्वारा रचित कोमलता और मातृ प्रेम की सराहना की, जब वह लिखता हैं, "परन्तु जिस तरह माता अपने बालकों का पालन–पोषण करती है, वैसे ही हम ने भी तुम्हारे बीच में रहकर कोमलता दिखाई है" (1 थिस्सलुनिकियों 2:7)। इफ़िसियों में वह पतियों को अपनी पत्नियों से प्रेम करने की आज्ञा देता है, "जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिये दे दिया," और उनके अपने शरीर के रूप में (इफ़िसियों 5:25, 28)। पतरस ने पतियों से निवेदन किया, "बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो… उसका आदर करो" (1 पतरस 3:7)।

स्पष्ट रूप से, प्रारंभिक कलीसिया में महिलाओं को मूल्यवान माना जाता था, और पुरुषों को महिलाओं का सम्मान करना सिखाया जाता था। अब हर जगह आत्मिक अगुवों के लिए महिलाओं के लिए खड़े होने और हर संस्कृति में उनके साथ होने

वाले दुर्व्यवहार के खिलाफ खड़े होने का समय आ गया है। अब समय आ गया है कि हम महिलाओं को उनके सृष्टि कर्ता द्वारा अपने स्वरूप में विशेष रूप से बनाये गए व्यक्तित्व के रूप में महत्व दें। कलीसिया या घर में पुरुष और महिला की भूमिका की कोई भी शिक्षा इसी आधार से शुरू होनी चाहिए, अन्यथा हमारी शिक्षा दुरुपयोग का मार्ग बन जाएगी।

सामूहिक चर्चा के लिए

► उन भेदों का वर्णन करें जिनका अभ्यास आपकी संस्कृति में पुरुषों और महिलाओं के बीच में किया जाता है। बाइबल की सच्चाई को सावधानीपूर्वक लागू करने से उन भेदों को कैसे सुधारा जाएगा?

► आपके देश में कलीसिया महिलाओं के साथ पुरुषों से अलग व्यवहार कैसे करते हैं? क्या कलीसिया और संस्कृति में कोई अंतर है?

► यीशु के उदाहरण के आधार पर, किन रीति-रिवाजों में बदलाव होना चाहिए?

परिशिष्ट ख

जन्म नियंत्रण

गर्भधारण रोकने के उपाय

चिकित्सा विज्ञान ने उन लोगों के लिए गर्भावस्था को रोकने के तरीके विकसित किए हैं, जो यौन गतिविधि तो करना चाहते हैं, लेकिन बच्चे नहीं चाहते हैं। गर्भधारण रोकने के तरीकों के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द *गर्भनिरोधक* है। गर्भनिरोधक के कई तरीके हैं:

1. गोलियाँ जो महिला के शरीर को निषेचित होने के लिए अंडे का उत्पादन करने से रोकती हैं
2. गोलियाँ जो निषेचन के बाद अंडे को नष्ट कर देती हैं
3. शारीरिक उपकरण जो शुक्राणु को महिला में प्रवेश करने से रोकते हैं

हर महीने कुछ दिनों की अवधि होती है, जब एक महिला उपजाऊ होती है। एक जोड़ा महिला के शरीर की सारणी को जान सकता है, ताकि वे उस समय के दौरान यौन गतिविधि से बच सकें जब महिला गर्भवती हो सकती है।

लोगों द्वारा गर्भ निरोधकों का उपयोग करने के कारण

कुछ संगठन उन लोगों में बीमारी के प्रसार को कम करने और गर्भावस्था को रोकने के लिए कंडोम के उपयोग की सलाह देते हैं, जो अपनी यौन गतिविधि को जीवनसाथी तक सीमित नहीं रखते हैं। विवाह के बाहर गर्भ निरोधकों के उपयोग पर यहाँ चर्चा नहीं की गई है। बाइबल विवाह के बाहर यौन गतिविधियों की निंदा करती है। इवैंजेलिकल मसीहियों का मानना है कि बीमारी से बचने और शादी के बाहर गर्भधारण को रोकने का सही तरीका यौन गतिविधि को शादी के लिए आरक्षित करना है।

ऐसे कई कारण हैं, जिनमें कुछ विवाहित जोड़े गर्भ निरोधकों का उपयोग करते हैं:

- कई स्थानों पर चिकित्सा पेशेवर गरीब परिवारों के लिए गर्भ निरोधकों के उपयोग का आग्रह करते हैं, जो कई बच्चों का पालन-पोषण करने के लिए संघर्ष करते हैं, ताकि कम बच्चे पैदा हों।

- कभी-कभी कोई जोड़ा शादी के बाद बच्चे पैदा करने से पहले कुछ समय तक इंतजार करना चाहता है, क्योंकि उन्हें पैसे बचाने या किसी तरह से अपने रहने की स्थिति में सुधार करने की आवश्यकता होती है।

- एक जोड़ा बच्चों के जन्म के बीच के समय को बढ़ाने के लिए गर्भ निरोधकों का उपयोग कर सकता है।

- कभी-कभी एक जोड़ा गर्भ निरोधकों का उपयोग करता है, क्योंकि उन्हें लगता है कि उनके पास उतने बच्चे हैं, जितने वे चाहते हैं और वे इससे अधिक नहीं चाहते हैं।

- कभी-कभी किसी महिला को स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ होती हैं और डॉक्टर उसे गर्भ निरोधकों का उपयोग करने की सलाह देते हैं, क्योंकि गर्भावस्था उसके और बच्चे के लिए खतरनाक हो सकती है।

गर्भ निरोधक के संबंध में कलीसिया के बीच बहस

बाइबल विशेष रूप से इस बारे में नहीं बताती है कि गर्भावस्था को रोकने का प्रयास करना सही है या नहीं। रोमन कैथोलिक चर्च गर्भ निरोधकों के उपयोग की निंदा करता है, लेकिन गर्भावस्था से बचने के लिए सारणी विधि की अनुमति देता है। पूर्वी रूढ़िवादी चर्च के कुछ अगुवे गर्भावस्था की रोकथाम का विरोध करते हैं, लेकिन सभी नहीं। प्रोटेस्टेंट और इवेंजेलिकल कलीसियाओं के बीच, विभिन्न प्रकार के सिद्धांत हैं।

कुछ कलीसिया द्वारा गर्भ निरोधकों को प्रतिबंधित करने के कारणों के रूप में निम्नलिखित बिंदुओं का उपयोग किया जाता है। प्रत्येक के बाद अतिरिक्त दृष्टिकोण देने वाली चर्चा होती है।

(1) बच्चे परमेश्वर की आशीष और विवाह का उद्देश्य हैं।

निःसंतान रहना पाठ बच्चों के लिए परमेश्वर की आशीष का वर्णन करता है। कुछ कलीसिया का मानना है कि बच्चों के प्रति परमेश्वर का मूल्य गर्भ निरोधकों को प्रतिबंधित करने का एक कारण है। अन्य विश्वासी कहेंगे कि यदि उनके बच्चे हैं, तो अतिरिक्त गर्भधारण को रोकना गलत नहीं है, खासकर अगर स्वास्थ्य सम्बन्धी चिंताएँ या आर्थिक चुनौतियाँ हों।

(2) अनैतिक यौन गतिविधियों को उसके परिणामों से बचाने के लिए गर्भ निरोधकों का उपयोग किया जाता है।

यह तथ्य कि उनका उपयोग अनैतिक उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है, वास्तव में विवाहित जोड़ों द्वारा उनके उपयोग के मुद्दे से प्रासंगिक नहीं है।

(3) गर्भनिरोधक यौन क्रिया के उद्देश्य, जो कि बच्चे पैदा करना है, को हटाकर यौन क्रिया को स्वार्थी और अशुद्ध बना देते हैं।

हालाँकि यह सच है कि यौन क्रिया स्वार्थी या अशुद्ध हो सकती है, यह विवाह संबंध का एक हिस्सा है, न कि केवल बच्चे पैदा करने के उद्देश्य से (1 कुरिन्थियों 7:3-5)। बाइबल हमें बताती है कि पति-पत्नी को इसी तरह एक-दूसरे की सेवा करनी चाहिए।

(4) गर्भनिरोधक गर्भधारण को परमेश्वर की पसंद के बजाय मानवीय पसंद बना देते हैं।

कुछ कलीसिया का मानना है कि एक जोड़े को समय या बच्चों की सँख्या को नियंत्रित करने की कोशिश किए बिना, परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए कि उन्हें वे बच्चे मिलेंगे जो उनके पास होने चाहिए। अन्य मसीही कहेंगे कि हम अपने जीवन के सभी पहलुओं के बारे में निर्णय लेने के लिए जिम्मेदार हैं, और यदि हम बाइबल की प्राथमिकताओं का पालन करने का प्रयास कर रहे हैं तो हम गर्भावस्था से बचने के बारे में निर्णय ले सकते हैं।

विवेक की बात

क्योंकि (1) बाइबल गर्भ निरोधकों के बारे में कोई निश्चित् बयान नहीं देती है और (2) इवेंजेलिकल विश्वासियों की इस मुद्दे पर विभिन्न राय है, विश्वासियों को अन्य विश्वासियों के निर्णयों का सम्मान करना चाहिए। एक जोड़े को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे परमेश्वर के प्रति समर्पित हैं और बाइबल की प्राथमिकताओं का पालन कर रहे हैं, फिर यह निर्णय लेते समय परमेश्वर से बुद्धि की प्रार्थना करें।

जब गर्भावस्था होती है, तो बच्चा पैदा करना है या नहीं, इसके बारे में कोई निर्णय नहीं लिया जा सकता है। पवित्र शास्त्र निश्चित् है कि गर्भ में आए शिशु का जीवन समाप्त करना गलत है। क्योंकि मानवीय जीवन गर्भधारण से शुरू होता है, इसलिए वे गोलियाँ जो निषेचन के बाद अंडे को जीवित रहने से रोकती हैं, गलत हैं। जो जोड़ा गर्भ निरोधकों का उपयोग करना चुनते हैं, उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे ऐसी किसी चीज़ का उपयोग कर रहे हैं, जो गर्भावस्था को रोकती है, न कि ऐसी चीज़ का जो निषेचित अंडे की मृत्यु का कारण बनती है।

अनुशंसित संसाधन

विवाह की तैयारी

Drescher, John. *For Better, For Worse*. Morgantown, PA: Masthof Press, 2012.

Thomas, Gary. *Sacred Marriage*. Grand Rapids: Zondervan, 2000.

विवाह

Eggerichs, Emerson. *Love and Respect*. Nashville: Thomas Nelson, 2004.

Thomas, Gary. *Sacred Search*. Colorado Springs: David C Cook, 2013.

लैंगिकता

Ferrer, Hillary. Mama Bear Apologetics Guide to Sexuality: Empowering Your Kids to Understand and Live Out God's Design. Eugene: Harvest House Publishers, 2021.

Sprinkle, Preston. People to Be Loved: Why Homosexuality is not Just an Issue. Grand Rapids: Zondervan, 2015.

Yuan, Christopher. Holy Sexuality and the Gospel: Sex, Desire, and Relationships Shaped by God's Grand Story. New York: Multnomah, 2018.

Shimer, Ted. The Freedom Fight: The New Drug and the Truths That Set Us Free. Houston: High Bridge Books, 2020.

पालन-पोषण

Brown, Nadine M. How to Have Kids with Character (Even if Your Kids are Characters) Wheaton: Tyndale House Publishers, Inc., 1990.

Chapman, Gary and Ross Campbell. The Five Love Languages of Children. Chicago: Northfield Publishing, 1997.

Dobson, James. Bringing up Boys. Wheaton: Tyndale House Publishers, Inc., 2001.

Friedeman, Matt. Discipleship in the Home: Teaching Children. Changing Lives. Wilmore: Francis

Asbury Society, 2010.

Hubbard, Ginger. Don’t Make Me Count to Three! Wapwallopen, PA: Shepherd Press, 2003.

Mulvihill, Josh. Biblical Worldview: What It Is, Why It Matters, and How to Shape the Worldview of the Next Generation. Roanoke: Renewanation, 2019.

Tripp, Tedd. Shepherding a Child’s Heart. Wapwallopen: Shepherd Press, 1995.

परिवार

Garland, David and Diana Garland. *Flawed Families of the Bible*. Grand Rapids, MI: Brazos Press, 2007.

Mally, Sarah and Stephen Mally and Grace Mally. *Making Brothers and Sisters Best Friends*. Marion, IA: Tomorrow’s Forefathers Inc, 2002.

पाठ सम्बन्धी नियत कार्यों के अभिलेख

छात्र का नाम ____

आरंभिक जब प्रत्येक कार्य पूरा हो चुका हो। Shepherds Global Classroom से प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए सभी कार्य सत्र सफलतापूर्वक पूरे होने चाहिए।

पाठ	सत्र कार्य 1	सत्र कार्य 2	सत्र कार्य 3	सत्र कार्य 4
1				
2				
3				
4				
5				
6				
7				
8				
9				
10				
11				
12				
13				
14				
15				

Shepherds Global Classroom से समापन प्रमाणपत्र के लिए आवेदन हमारे वेबपेज www.shepherdsglobal.org पर पूरा किया जा सकता है। प्रमाण पत्र एसजीसी के अध्यक्ष से डिजिटल रूप से उन प्रशिक्षकों और सुविधाकर्ताओं को प्रेषित किए जाएँगे जो अपने छात्र की ओर से आवेदन पूरा करते हैं।